...सार

मुनशी हरिवंशलाल के अधिकार से दूसरा

प्रेस महल्ला रामापुर में छापी गई ॥

सन १८७५ ई०

बनारस

...0 ...
... ५८१
... २१ ६६

पहिलीबार १००० पुस्तकें ... मोल ...

...
पु ...
दयानन्द मा...

स आई

रनहीं वह

श्री म आई

विज्ञापन ३

पाठकों से मेरी यह विनयपूर्वक प्रार्थना है कि इस ग्रंथ के छ-
ापने से मेरा अभिप्राय किसी विशेष मत के खंडन मंडन करने का नहीं
किन्तु इसका मुख्य प्रयोजन यह है कि सज्जन और विद्वान लोग इसको प
क्षपात रहित होकर पढ़ें और विचारें और जिन विषयों में उन को दे-
यानन्द स्वामी के सिद्धांतों से सम्मति न हो उन विषयों पर अपनी अनुम
ति प्रबल प्रमाण पूर्वक लिखें जिससे धर्म का निर्णय और सत्या सत्य की
विवेचना हो मुख से शास्त्रार्थ करने में किसी बात का निर्णय नहीं होता
परन्तु लिखने से दोनों पक्षों के सिद्धांत ज्ञात हो जाते हैं और सत्य विषय
का निर्णय हो जाता है इसलिये आशा है कि सब पंडित और महात्मा
पुरुष इसको यथावत समालोचना करैंगे और यह न समझैंगे कि मुझ
को किसी विशेष मत की [illegible] अभिप्रेत हो छापने में शीघ्रता के का
रण इस ग्रंथ में [illegible] अशुद्धता रह गयी हैं आशा है पाठक गण इस

सत्यार्थ प्रकाशकासूचीपत्रप्रारम्भः प्र

	पृष्ठ	पृष्ठ२६
	१	ओङ्कारादि १०० [illegible] परमेश्वर के न और [illegible] प्रकरण विचार
१	२६	अथ [illegible] का विचार प्रथमःसमुल्लासःसमाप्तः
	२६	बालकोंकी शिक्षाविचारद्वितीयःस[illegible]ल्लास समाप्तः पृष्ठ१०
३	३६	पढ़नेपढानेकी बिधिगायत्र्यर्थ [illegible]समुल्ला-स पृष्ठ५७
३	४०	[illegible]यज्ञपात्र रचनाविधिः
३	[illegible]	[illegible]चर्याश्रम काबिचार
३	[illegible]	[illegible]दिकआठ पदार्थों काबिचार
३	७५	[illegible]आदिसत्यशास्त्रकापठनपाठन क्रमबिचार
३	८२	गुरु और शिष्यों का व्यवहार
३	८९	विद्या पठन की परीक्षा
३	९१	शिक्षा बिचार
३	९२	परोक्षपूर्वकपठनपाठन बिचार बिद्या पठन की प्रशंसा तृतीयः समुल्लासः समाप्तः
४	९४	बिवाह गृहाश्रम बिधिःबिवाह समयेगुणपरीक्षा चतुर्थसमुल्लास पृष्ठ ६०
४	९७	ब्राह्मणादि वर्ण व्यवस्था
४	९९	बिवाह व्यवस्था
४	१०२	ब्राह्मणादिकप्र[illegible]बिवाहोंकेलक्षणऔररीति कथन
४	११२	स्त्रीपुरुष कापरस्पर नियम बिचार
[illegible]	११७	गृहाश्रम मेंकर्त्तव्य बिचारःचतुर्थःसमुल्लास समाप्तः

प्रस्थ विधिः पचम सम्
१५८ सन्यास विधिः
१६९ ग्यारह प्रकार काधर्मी धर्मका
मः समुल्लासः समाप्तः
६ १७४ राजा [illegible] का धर्म वर्णन षष्ठ समुल्ल
ष्ट ४६
६ १८० राजा की शिक्षा और प्रजाकी शि
कालक्षणराजाकोअवश्यकर्त्तव्य तथा प्र
र्त्तव्यता राजाको परम सिद्धि [illegible]काबिच
६ २१५ प्रतिमा पूजन निषेधषष्ठः [illegible]सःसमा
७ २२१ अथ ईश्वरवेद [illegible] व्याख्याईश्वरबि
[illegible] और [illegible]दोंकेकांडो[illegible]
नसप्तमः समुल्लासःसमाप्तः पृष्ट ३२
८ २५३ जगतकी उत्पत्तिस्थिति और प्रलयविष
कावर्णन अष्टमः समुल्लासः समाप्तःपृष्ट१
९ २६६ विद्या अविद्या बंधऔर मोक्ष इनचारप
र्थों कावर्णननवमः समुल्लासःसमाप्तःपृष्ट
१० २९८ आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य
चार पदार्थों का वर्णनदशमः समुल्लास
माप्तःपृष्ट १४
यह पूर्वार्ध का सूचीपत्र समाप्त हुआ
केआगे उत्तरार्द्धकासूचीपत्र कियाजा
११ ३०८ इस अध्याय मे आर्यावर्त्त देश के विष
[illegible]है एकादश समुल्लासःसमाप्तः
१२ ३९६ इस अध्याय मे जैनओबौद्ध काजो संप्रद
केविषय कावर्णनहै द्वादश समुल्लासःसम
प्तः पृष्ट ८७

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	१२	मिदं	मिदश्चं
	२७	साम	नाम
१६	१६	अष्ट	[illegible]
१२	२४	धर्मा [illegible] दिव्य	धर्मान्न [illegible]दितव्यं भूत्यै नप्रमा तव्यं
	१५	जगदीमी	जागदीमी
९७	६	शत्रुओं	शत्रुओंसे
११६	०	वेष्या	वेश्या
१३५	७	गृस्थ	गृहस्थ
१५३	[illegible]	[illegible]	गार्गी
१५५	[illegible]	[illegible]	अप[illegible]
१६५	१७	[illegible]	अल्पान्न भोजन[illegible] वास इन्द्रोंसे विषयोमे प्रवर्त्त इन्द्रियोकानिवृत्त करदे
१६७	२	अहिंसके	अहिंसये
१७०	१४	अहिंस	हिंसा
१७९	१९	बीच्यय	बीच्य
२१९	१७	विद्याकि कीका	विद्यादिकोंका
२२४	१३	अणनामा	[illegible]
२२३	२	होभीजाते है	पृथक्‌भीवे होजाते है
२३३	१५	परमेश्वरके	सदापरमेश्वरके
२३५	१५	कृतससमा	कृतकंसमा

		अशुद्ध	शुद्ध
	३	अभिमा	अणिमा
	२७	दोषण	दोष
२३९	२७	सरीरसे	सरीरीने
२४४	२	इतं	इतक्के
२४४	२	एसे	ऐसेक्के
२४८	२४	पश्चा	यस्य
२५०	२५	नविंत	नवनीत
२५१	२४	तुपर	तूप
२७२	१५	नही	नहीहोत
२७३	२३	लिंगके	लिंगके
२७४	२०	भयमा	[illegible]
[illegible]	[illegible]	अवेगा	आवेगा
२८०	२७	सुख	सुखवा
२८५	१४	साकिल्य	सा[illegible]
२८५	२६	प्रतिषन	प्रतिमं
२८६	१२	होवै उत्तम	[illegible]वै उत्तमसेउत्तम
२८८	२१	कुस्तु	कुस्ती
२८८	२६	रा	राजा
२८८	२७	हतेहै	होतेहैं
२८९	३	चयो	अस्थये
२९१	७	पागा	पायो
२९२	२७	अका[illegible]	आकाश
२९३	२१	पाल[illegible]	पहिले
२९४	१०	जवमे	जीवमे
२९४	१९	मरणका	मरणकाजो
३०३	१	होत्तीहै	होसत्तीहै

२१४			
३२२			
३२२	८		
३२२	८	वर्तमान	
३३२	१	घातककन्या	घातकन्या
३३६	५	यकोरहनेसे	भयकीकरणोंमें
३३६	२०	खंडनही	क्योंखण्डननहीं
३३७	१०	निलेगा	निकलेगा
३४२	८	ऐकचक्र	एकचक्रा
३४२	११	संस्ताराः	संस्काराः
३४४	१३	यागी	योगी
३४६	१३	यावत्पातति	यावत्पतति
३४६	१८	लंप्रा	फलंप्रा
३४८	२२	मुद्रादीक	मुद्रादिक
३५२	२५	दर्श	दर्शन
३५५	२६	हिलनेका	हले...
३६२	२७	किरीकी	किसीकी
३६३	६	पुराणादिक केआगेछूटगया	

		ासा	ऐसी
४०२	१७	अन्याजहै	अन्ययहै
०	१९	मतलके	मालवके
४०३	६	सनः	ततः

अथ सत्यार्थप्रकाश ॥

ओ३म् शन्नो मित्रः शंवरुणः शन्नोभव
त्वर्यमा शन्नइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरु
क्रमः नमोब्रह्मणे नमस्ते वायोत्वमेव प्रत्यक्ष
म्ब्रह्मासि त्वामेवप्रत्यक्षम्ब्रह्मवदिष्यामि ऋतं
वदिष्यामि सत्य म्वदिष्यामि तन्मामवतु तद्
वक्तारमवतु अवतुमामवतु वक्तारम् ओ३म्
शान्ति श्शान्ति श्शान्तिः ॥ १ ॥

ओ३म् । यह जो ओंकार सो बहुत उत्तम परमेश्वर का नाम है क्योंकि तीन जे अ उ और म् अक्षर इसमें हैं वे सब मिल के एक ओम् अक्षर हुआ है इस एक अक्षर से बहुत परमेश्वर के नाम आते हैं जैसे अकार से विराट् अग्नि और विश्व इत्यादिकों का ग्रहण किया है उकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैज आदिकों का ग्रहण किया है मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादिकों का वेदादिक शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है ये सब नाम परमेश्वरही के हैं जो कोई ऐसा कहै कि परमेश्वर से भिन्न अर्थों का ग्रहण क्यों नहीं होता है उससे पूछना चाहिए कि विराट् और अग्नि इत्यादिक जितने नाम हैं वे सब मनुष्य पृथिव्यादिक भूत देवलोक में रहने वाले जे देव और ऐश्वर्यवाले

। लिखे हैं और वे परमेश्वर के भ
आप किन का ग्रहण करते हैं जो आप
... का ग्रहण करते हैं अच्छा तो आप के ग्रहण ...
...या प्रमाण है देव सब प्रसिद्ध हैं और वे उत्तम भी हैं इ...
उन का ग्रहण कर्ता हूं मैं आप से पूछता हूं कि परमेश्व...
क्या अप्रसिद्ध है और परमेश्वर से को... ...म भी है जो आ...
इस प्रमाण से उन का ग्रहण कर्ते हैं ...र परमेश्वर तो क...
अप्रसिद्ध नहीं होता है उस के तुल्य कोई नहीं है तो उत्तम
कैसे कोई होगा इस्से यह आप का कहना मिथ्याही है आप...
कहने में बहुत से दोष भी आवेंगे जैसे कि भोजन के लि...
भोजन करने का पदार्थ किसी ने किसी के पास ...ति से रख...
कहा कि आप भोजन करें और वह उसको ...ाग के अप्रा...
...का तहीं भ्रमण कर उसके ... ...भान न जानना
चाहिए क्योंकि वह उपस्थित नाम समीप आया जो पदार्थ
उसको छोड़ के अनुपस्थित नाम ...प्राप्त जो पदार्थ उसकी
प्राप्ति के लिए श्रम कर्ता है इसी से वह पुरुष बुद्धिमान नहीं
...॥ किञ्च । उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितं याचतइति वाधि-
...यः । वैसाही आप का कथन हुआ क्योंकि उन नामों के
जो उपस्थित अर्थ मनुष्य शुंठ्यादि औषधियों का परित्याग आप
कर्ते हैं और अनुपस्थित जो देव उनके ग्रहण में आप श्रम कर्ते
हैं इसमें कुछ भी प्रमाण वा युक्ति नहीं है और जो आप ऐसा
कहैं कि जहां जिसका प्रकरण है वहां उसी का ग्रहण करना
योग्य है जैसे किसी को कहा कि सैन्धवमानय सैन्धव को तूं ले
आ तब उसको समय का विचार करना अवश्य है क्योंकि सैंधव
तो दो अर्थों ...ा नाम है घोड़े का और लवण का भी है गमन
समय में सैन्धव शब्द सुनके घोड़े को ले आवेगा और भोजन
समय में लवण कोही ले आवेगा तब तो ठीक ठीक होगा और

जो गमन समय में लवण को ला।ब

घोड़े को ले आवै तब उसका स्वामी उसप

कि तूं निर्बुद्धि पुरुष है क्यों कि गमन समय ... ण का

प्रयोजन है और भोजन समय में घोड़े का ... प्रयोजन

जहां जिसको लेआना चाहिये ... उसको ... तूं नहीं ला

आया इस्से तूं मूर्ख है ... से चला जा इस्से क्या आया

कि जहां जिस का ग्रहण करना उचित होवे वहां उसी का

... ना योग्य है यह बात तो आपने अच्छी कही कि

ऐसा ही जानना चाहिए और करना भी चाहिए हम लोगों

को जहां जिसका ग्रहण करना उचित है वहां उसी का ग्रहण

करना चाहिए कि। ओमित्येतदक्षरमुद्गीथ मुपासीत। यह

छान्दोग्य उपनिषद् का बचन है और॥ ओमित्येतदक्षरमिदं

सर्वन्तस्योपव्याख्यानम्। यह मांडूक्य उपनिषद् का बचन है

ओ३म्खम्ब्रह्म। यह यजुर्वेद की संहिता का बचन है॥ ब्रवो

मेतत्। यह कठोपनिषद् का बचन है॥ प्रशासितारं सर्वेषा मणी

यांसमणोरपि। रुक्माभं ... धीगम्यं विद्यात्तंपुरुषम्परम्॥ एतम

ग्निम्वदन्त्येके मनुमन्येप्र ... पतिम्। इन्द्रमेकेपरेप्राण मपरेब्रह्म

शाश्वतम्॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं। सब्रह्मासविष्णु

स्सरुद्रस्सशिवस्सोऽक्षर स्सपरः स्वराट्सइन्द्रस्सकालाग्निस्सचन्द्र

मा: इत्यादिक कैवल्योपनिषद् के बचन हैं। अग्निमीडेपुरोहि

तं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारं ... धातमम्॥ यह ऋग्वेद की

संहिता का मन्त्र है॥ भूरसिभूमिरस्यदितिरसिविश्वधायाविश्व

... वनस्यधर्त्रीं। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं माहिंसी:

... यह यजुर्वेद की संहिता ...

... हवीतये गृणानोहव्यदातये॥ नि ... तास

वेद की संहिता का मन्त्र है॥ शन्नोदेवीरभिष्ट

... । शंयोरभिस्रवन्तुनः॥ यह अथर्ववेद

करणों में इन वचनों से और इन के ठीव
निने से परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि
आ ग्न्यादिक नामों के मुख्य अर्थसे परमेश्वर काही
हण होता निरुक्त व्याकरण और कल्प सूत्रादिक ऋषि
मुनियों के किये व्याख्यानों से ऐसेही ब्रह्मादिकों के किए संहि
ताओं के शतपथादिक ब्राह्मण वेदों के व्याख्यान से भी और क्र
शास्त्रों में भी परमेश्वर का ग्रहण देखने में आता है उन नामों
के अर्थों से और उसी तरह के विशेषणों से भी परमेश्वर का
ग्रहण होता है और का नहीं होता इससे क्या आया कि जहां
जहां प्रार्थना स्तुति सर्वज्ञादि विशेषण और उपासना लिखी
है वहां वहां परमेश्वर काही ग्रहण होता है यह सिद्ध हुआ
और जहां २ ऐसे प्रकरण हैं कि॥ ततोविराडजायत विराजो
अधिपूरुषः श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्निरजायत। तस्माद्वा
अजायन्त पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥ ये सब वचन यजुर्वेद को संहिता
के हैं॥ तस्माद्वा एतस्मादा त्मनआकाशः संभूतः। आकाशाद्वायु:
वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यःपृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्यो
अन्नम् अन्नात्पुरुषः सवाएषपुरुषोऽन्नरसमयः। यह तैत्तिरीयो
पनिषद् का बचन है॥ इत्यादिक प्रकरणों में विराट् इत्यादिक
नामों से परमेश्वर का ग्रहण किसी प्रकार से भी नहीं होता
क्योंकि परमेश्वर का जन्म और मरण कभी नहीं होता है।
इस्से इसी प्रकार के प्रकरणों में विराट् इत्यादिक नामों से
और जन्मादिक विशेषणों से भी परमेश्वर का ग्रहण शिष्टलोगों
को कभी न करना चाहिये विराट् इत्यादिक नामों का अर्थ
क ... नामों से परमेश्वर का ग्रहण हो॥ रा-
... त विराट् शब्द सिद्ध होता है। विविधन्नाम
राजते नाम प्रकाशते सविराट् विविध अर्थात्
... को जो प्रकाश करै उसका नाम विराट् है

अञ्चुगतिपूजनयो: । इस धातु से अग्नि [illegible] ॥

गतेस्त्रयोऽर्था: ज्ञानंगमनम्प्राप्तिश्चेति पूजनन्नामसत्कार: अञ्चति अच्यतेवासोऽयमग्नि: । जो ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ जा[illegible] प्राप्ति होने और पूजा के योग्य है [illegible] नाम अग्नि है ॥ विशप्रवेशने इस धातु से विश्व [illegible] सिद्ध [illegible] है ॥ विशंतिसर्वाणिभूतानि आकाशादीनि[illegible] प्रवेश करते हैं सब आकाशादिक भूत जिसमें उसका [illegible] विश्व है इत्यादिक नाम अकार से [illegible] जाते हैं ॥ हिरण्य[illegible] नाम हिरण्यानि सूर्यादीनिते-जांसि [illegible]धस्य सहिरण्यगर्भ: । अथवा हिरण्यानां सूर्यादीना न्तेजसाङ्गर्भ: हिरण्यगर्भ: । हिरण्यगर्भ शब्द का यह अर्थ है कि जिस्से सूर्यादिक तेज वाले पदार्थ उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं उसका नाम हिरण्यगर्भ है अथवा सूर्यादिक तेजों का जो गर्भ नाम निवास स्थान उसका नाम हिरण्यगर्भ है इसमें यह यजुर्वेद का मंत्र प्रमाण है ॥ हिरण्यगर्भ:समवर्त्तताग्रे भूतस्यजात:पतिरेकआसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥ इत्यादिक मन्त्रों से परमेश्वर काही ग्रहण होता है ॥ वागतिगन्धनयो: । इस धातु से वायु शब्द सिद्ध होता है ॥ गन्धनंहिंसनं वातिसोऽयंवायु: चराचरञ्जगद्धारयतिवासवायु: । जो चराचर जगत् का [illegible]लय करै अथवा धारण करै और सब बलवानों से बलवान होय उसी का नाम वायु है ॥ तिजनिशाने इस धातु से तैजस शब्द [illegible] होता है जो अपने से आपही प्रकाशित होय और सूर्यादिक [illegible] का प्रकाश करने वाला होय उसका नाम तैजस है इत्यादिक [illegible] का उकार से ग्रहण होता है । ईशऐश्वर्यै इस धा[illegible] [illegible] सिद्ध होता है ईष्टेअसौईश्वर: सर्वैश्वर्यवान् योभवेत् [illegible] । जो सत्यविचारशील नाम सत्य जिसका ज्ञान है अनन्त जिसका ऐश्वर्य है उसका नाम ईश्वर है ॥ दोऽवखण्डने । इस धातु से दिति शब्द

सिद्ध होता ... न्नामविनाशः। उससे क्तिन् प्रत्यय करने से दिति शब्द सिद्ध होता है दिति किसका नाम है कि जिसका विनाश होता है उससे जबनञ् समास हुआ तब अदिति शब्द हुआ अदिति नाम जिसका कभी नाश न होय। जो अदिति है वही आदित्य है ज्ञा अवबोधने धातु है उससे प्राज्ञ शब्द सिद्ध हुआ प्रकृष्टश्चासौज्ञश्चप्रज्ञः प्रज्ञएवप्राज्ञः जो ज्ञानी और सब ज्ञानियों से उत्तम ज्ञानवान् है उसका नाम प्राज्ञ है प्रजानाति वा चराचरञ्जगत् सप्रज्ञः प्रज्ञएवप्राज्ञः सब पदार्थों को यथावत् जो जानता है उसका नाम प्राज्ञ है जैसा कि परमेश्वर का ओंकार उत्तम नाम है वैसा कोई भी नहीं इसका बहुत थोड़ा अर्थ किया गया है क्योंकि ओंकार की व्याख्या में और बहुत से अर्थ लिये जाते हैं यह ओंकार का नव नामों से अर्थ तो किया गया वे नव नाम परमेश्वर केही हैं और इस मन्त्र में जितने मित्रादिक नाम हैं उन का अर्थ अब आगे किया जाता है क्योंकि जो प्रार्थना स्तुति और उपासना होती है सो श्रेष्ठही की होती है श्रेष्ठ जो अपने से गुणों में और सत्य सत्य व्यवहारों में अधिक है सोई श्रेष्ठ होता है उन सब श्रेष्ठों में भी परमेश्वर अत्यन्त श्रेष्ठ है क्योंकि परमेश्वर के तुल्य कोई भी न हुआ न है और न होगा जो तुल्य नहीं तो अधिक कैसे होगा कभी न होगा क्योंकि परमेश्वर के न्याय दया सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञान इत्यादिक अनन्त गुण हैं और वे सर्वदा सत्यही हैं इससे सब मनुष्य लोगों को प्रार्थना स्तुति और उपासना परमेश्वरही की करनी चाहिये परमेश्वर से भिन्न किसी की कभी न करनी चाहिये ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक देव और दैत्य दानवादिक भी परमेश्वरही में बिश्वास कर्त्ते हैं उसी की प्रार्थना स्तुति और उपासना कर्ते हैं और किसी की भी नहीं कर्ते इसका बिचार अच्छी रीति से उपासना और मुक्ति के

य में लिखा जायगा पूर्वपक्ष मित्रादि... सखा और
...दिक देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन का ग्रहण
...ना चाहिये उत्तरपक्ष उन का ग्रहण करना योग्य नहीं
के जो किसी का मित्र है वही और का शत्रु भी है और
...ी से उदासीन भी वह देखने में आता है परमेश्वर तो सब
जगत् का मित्रही है और कोई से उदासीन भी नहीं इस से औ
व्यवहार में किसी का मित्र होने किसी का शत्रु होने और किसी
से उदासीन होने से उसका ग्रहण करना योग्य नहीं इस में
महाभाष्य के बचन का प्रमाण भी है। प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने
कार्य्यसंप्रत्ययः गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्य्यसंप्रत्ययः॥ इसका अर्थ यह
है कि प्रधान और अप्रधान गौण और मुख्य के बीच मेंसे प्र-
धान और मुख्यही का ग्रहण होता है जैसे कि किसी से किसी
ने पूंछा कि यह कौन जाता है उसने उस्से कहा कि राजा जाता
है इसमें बिचार करना चाहिये कि राजा के साथ बहुत से
भृत्य हाथी घोड़े और रथ भी जाते थे परन्तु राजा के सामने
उनका ग्रहण नहीं भया न होता है न होगा किंतु राजाही का
हुआ क्योंकि प्रधान और मुख्य के सामने अप्रधान और गौणों
का ग्रहण नहीं होता है वैसेही जो परमेश्वर सभों में प्रधान
और सभों मे मुख्यही है मित्र शत्रु और उदासीन किसी काभी
नहीं इसी से परमेश्वरही का मित्रादिक शब्दों से ग्रहण करना
उचित है। वृञ्वरणे वरईप्सायां॥ इन दो धातुओं से वरुण
शब्द सिद्ध होता है वृणोति सर्वान् शिष्टान् मुमुक्षून्मुक्तान्धर्मात्म
नोयस्सवरुणः। अथवा ब्रियते शिष्टैर्मुमुक्षुभिः मुक्तैः धर्मात्म-
भिः यः सवरुणः परमेश्वरः अथवा वरयति शिष्टादीन् वर्यते वा
शिष्टादिभिः सवरुणः परमेश्वरः जो वृणोति नाम स्वीकार कर्ता
है शिष्ट मुमुक्षु और धर्मात्माओं को उसका नाम वरुण है सो
वरुण नाम परमेश्वर का है। ब्रियते नाम शिष्टादिक जिसका

स्वीकार करते हैं उसका नाम वरुण है अथवा वरयति ना
सब को प्राप्त हो रहा है उसका नाम वरुण है वर्यते नाम
जो सब श्रेष्ठ लोगों को प्राप्त होने के योग्य होय उसका
वरुण है और यह भी अर्थ होता है कि वरुणो नाम वरः
नाम श्रेष्ठः जो सभों से श्रेष्ठ होय उसका नाम वरुण है
परमेश्वरही है और दूसरा कोई भी नहीं। ऋगतिप्रापण
इस धातु से अर्यमा शब्द सिद्ध होता है जो सभों के कर्मों
यथावत् व्यवस्था को जाने और पाप पुण्य करने वालों को यथा
वत् पाप और पुण्यों की प्राप्ति का सत्य सत्य नियम करे उसी
का नाम अर्यमा है इदि परमैश्वर्ये इस धातु से इन्द्र शब्द को
सिद्धि होती है इन्दति परमैश्वर्यवान् योभवति सइन्द्रः जिसका
परम ऐश्वर्य होय उससे अधिक किसी का भी ऐश्वर्य न होवै
उसका नाम इन्द्र है बृहत् शब्द है इसके आगे पति शब्द का
समासहै। बृहतांमहतामाकाशादीनांपतिःबृहस्पतिः। जो बड़ों
से भी बड़ा और सब आकाशादिक और ब्रह्मादिकों का जो
स्वामी है उसका नाम बृहस्पति है। विष्लव्याप्तौ॥ इस धातु
से विष्णु शब्द सिद्ध हुआ है। वेवेष्टिनामव्याप्नोतिचराचरञ्ज
गत्सविष्णुः उरु नाम महान् क्रमः पराक्रमोयस्यसउरुक्रमः जो
सब जगत् में व्यापक होय उरुक्रम नाम अनन्त पराक्रम जिस
का है उसका नाम उरुक्रम वही विष्णु है बृहबृंहिवृद्धौ। इन
धातुओं से ब्रह्म शब्द सिद्ध होता है जो सबके ऊपर विराजमान
होय और सब से बड़ा होय उसका नाम ब्रह्म है वायु का अर्थ
तो ओंकार के अर्थ से किया है वहीं जान लेना चाहिये शम्
नाम है सुखका और कल्याण का भी नः यह पद से हम सब
लोगों का ग्रहण होता है हे परमेश्वर ओंकारादिक जितने
नाम हैं वे आपही के हैं आप प्रत्यक्षही ब्रह्म हैं। त्वामेवप्रत्यक्ष
म्ब्रह्मवदिष्यामि॥ आपही को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगा प्रत्यक्ष नाम

सब जगह में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्बदिष्यामि आप को जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी को ही मैं कहूंगा सत्यम्बदिष्यामि । और सत्यही कहूंगा और करूंगा भी तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु । ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को कहने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करैं और उस आज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय । उसी आज्ञा को मैं जो कहने वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न करूं क्योंकि जो आप की आज्ञा है धर्म रूपीही है जो उस्से विरुद्ध सो अधर्म है उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करैं जब मैं उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस का मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना अवतुमाम-वतुवक्तारम् । यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह आदर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामङ्ग-च्छगच्छ । यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम को शीघ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा करैं और ॐशान्तिश्शान्तिश्शान्तिः । यह जो तीन बार पाठ है उसका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगा-दिकों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता है उसका नाम आधि भौतिक है तीसरा ताप वह है कि वृष्टि का अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत वा उष्णता का होना उसका नाम आधि दैविक ताप है हम लोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति आप की कृपा से होजाय भवान्पूषा मोऽस्तु । आप हम लोगों के अर्थात सब संसार के कल्याण कारक होवें जो आप से भिन्न कोई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इस्से आप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही आप प्रकाशित होवैं इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया और

आगे अन्य नामों के भी अर्थ लिखे जाते हैं ॥ सूर्यआत्माजगत-स्तस्थुषश्च । यह वचन यजुर्वेद का है जगत नाम प्राणियों का जो कि चलते फिरते हैं तस्थुष अप्राणि नाम स्थावर जे कि पर्वत इत्यादिक हैं उन सभों का जो आत्मा होय उसका नाम सूर्य है अतसातत्यगमने । धातु है इस्से आत्म शब्द सिद्ध हुआ अततिसर्वचव्याप्नोतीत्यात्मा । जो सब जगत में व्यापक होय उस्का नाम आत्मा है और परश्चासावात्माचपरमात्मा । जो सब जीवात्माओं से श्रेष्ठ होय उसका नाम परमात्मा है ईश्वर नाम सामर्थ्य वाले का है जो सब ईश्वरों में परम श्रेष्ठ होय उस्का नाम परमेश्वर है ब्रह्मादिक देवों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है जैसा कि मनुष्यों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है वैसेही ब्रह्मादिक देवों में जो सब से श्रेष्ठ होय और चक्रवर्त्यादिक राजाओं से परम नाम श्रेष्ठ होय उसका नाम परमेश्वर है जो सब ईश्वरों का ईश्वर होय और जिसके तुल्य ऐश्वर्यवाला कोई भी न होय उसी का नाम परमेश्वर है षुञ्अभिषवे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने । इन दो धातुओं से सविता शब्द सिद्ध होता है ॥ अभिषवःउत्पादनम् प्राणिगर्भविमोचनञ्च । सुनोति सूते वा उत्पादयति चराचरञ्जगत्ससविता । जो सब जगत् की उत्पत्ति करै उसका नाम सविता है ॥ दिवुक्रीड़ाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु ॥ इस धातु से देव शब्द की सिद्धि होती है । दीव्यतिसदेवः ॥ दीव्यति नाम स्वयं जो प्रकाश स्वरूप होय और जो सब जगत को प्रकाश कर्ता है इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ क्रीड़तेसदेवः क्रीड़ते नाम अपने आनन्द से अपने स्वरूप में आपही जो क्रीड़ा को करै अथवा क्रीड़ा मात्र से अन्य की सहायता के बिना जगत् की क्रीड़ाकी नाईं जो रचै वा सब जगत् के क्रीड़ाओं का आधार जो होय इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ विजिगीषतेसदेवः विजिगीषते

नाम सब का जीतनेवाला और आपतो सदा अजेय है जिसको कोई भी न जीतसकै इस्से परमेश्वर का नाम देवहै व्यवहारयति सदेवः व्यवहारयति नाम न्याय और अन्याय व्यवहारों का जो ज्ञापकनाम उपदेष्टा और सब व्यवहारों का जो आधार भी इस्से परमेश्वर का नाम देव है द्योतयतिनाम । सब प्रकाशों का आधार जो स्वप्रकाश है इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ स्तूयते स देवः । स्तूयते नाम उन लोगों को स्तुति करने के योग्य होय और निन्दा के योग्य कभी न होय इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ मोदयतिसदेवः । मोदयति नाम आप तो आनन्द स्वरूप होवै और औरों को भी आनन्द करावै जिसको दुःख का लेश कभी न होवै इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है ॥ माद्यतिस-देवः । माद्यति नाम आप तो हर्ष स्वरूप होय जिसको शोक का लेश कभी न होय औरों को भी हर्ष करावै इस्से भी पर-मेश्वर का नाम देव है ॥ स्वापयतिसदेवः । स्वापयति नाम प्रलय में सभों को शयन अव्यक्त में जो करावै इस्से परमेश्वर का नाम देव है ॥ कामयते काम्यतेवासदेवः । कामयते काम्यते नाम जिसके सब काम सिद्ध होयँ और जिसकी प्राप्ति की कामना सब शिष्ट लोग करैं इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है ॥ ग-च्छतिगम्यतेवासदेवः । गच्छति गम्यते नाम जो सभों में गत नाम प्राप्त होय जानने के योग्य होय उसको कहते हैं देव देव नाम परमेश्वर का है देव शब्द के एकादश अर्थ हैं ॥ कुविआ-च्छादने । इस धातु से कुवेर शब्द सिद्ध होता है जो आकाशा-दिकों का आच्छादक है उसका नाम कुवेर है इस्से परमेश्वर का नाम कुवेर है ॥ पृथुविस्तारे । इस धातु से पृथिवी शब्द सिद्ध हुआ जो सब आकाशादिकों से विस्तृत है उसका नाम पृथिवी है इस्से परमेश्वर का नाम पृथिवी है ॥ जल घातने । इस धातु से जल शब्द सिद्ध होता है ॥ प्रतिहन्तिअव्यक्तपरमाण्वादीनिप-

रस्यूरंतज्जलम् । जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और बियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इस्से परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में बियोग का करनेवाला वैसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं ॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ अच्छा ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द स सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काशृदीप्तौ । उस्से आकाश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाशतेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इस्से परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इस्से अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिचराचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद में है ॥ अन्नमत्तीत्यन्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उसका नाम अन्नाद है यह बचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंहीं अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छ । इस्से क्या लिया जाता है कि शीघ्रहो तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस विषयमें व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात् । अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में कृमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इससे परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानियस्मिन्सवसुः । अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः । सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो वास कर्ता है उसका नाम वसु है इससे वसु परमेश्वर का नाम है ॥ रुदिर्‌अश्रुविमोचने । रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयत्यन्यायकारिणोजनान्सरुद्रः । रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्यायति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते । यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से विचारता है वही वचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिसको कर्ता है उसी कोही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा को कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इससे जो जैसा कर्ता है सो वैसाही प्राप्त होता है इससे क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं वे सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदनहीं कर्ते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

ता आपोवैनरसूनव: । तायदस्यायनंपूर्व त्तेननारायणःस्मृत: ॥ यह श्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नारसंज्ञा भी जलकी है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका अयन नाम निवासस्थान है इस्से परमेश्वर का नाम नारायण है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है॥ चदिआल्हादे । इस धातु से चन्द्र शब्द सिद्ध होता है ॥ चन्दतिसोयञ्चन्द्र: । जो आल्हाद नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो के सदा आनन्द स्वरूपही रहै जिस्का दु:खका लेश कभी न होय इस्से परमेश्वर का नाम चन्द्र है ॥ मगिधातुर्गत्यर्थ: । मङ्गरलच् इस्से मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गल: । जो आपतो मङ्गल स्वरूपही हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है इस्से परमेश्वर का नाम मङ्गल है ॥ बुधअवगमने । इस धातु से बुध शब्द सिद्ध होता है ॥ बुध्यतेसोयंबुध: । जो आप तो बोध स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इस्से परमेश्वर का नाम बुध है बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है ॥ ईशुचिरपूतीभावे । इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचि-नाम । अत्यन्त पवित्र का जो आप तो अत्यन्त पवित्र होय औरों के पवित्रता का कारण होय इस्से परमेश्वर का नाम शुक्र है चरगतिभक्षणयो: । इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पदसे शनैश्चर शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार के धैर्य का कारण होय इस्से परमेश्वर का नाम शनैश्चर है रहत्यागे । इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब त्यागियों के त्याग का हेतु होय इस्से परमेश्वर का नाम राहु है ॥ कित निवासेरोगापनयनेच । इस्से केतु शब्द सिद्ध होता है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगोंसे रहित होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाशका हेतु होय

इससे परमेश्वर का नाम केतु है ॥ यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु
इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्ज-
नैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा करते हैं उसका नाम यज्ञ
है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और
विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम
यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता
है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और
अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब
दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और
सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़
निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तमदान
वा ग्रहण नहीं है इससे परमेश्वर का नाम होम है ॥ बन्धबन्धने
इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोकालोकांतर
अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपने २
परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करें इस प्रबन्ध के करने से
किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहाय-
कारी होता है वैसे ही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और
सब पदार्थों का रचन करना इससे परमेश्वर का नाम बन्धु है
पा पाने पारक्षणे । इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता
है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को
कर्त्ताही है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और
प्रीति कर्ता है इससे परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है
पितॄणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन
सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पिता-
महानांपिता प्रपितामहः । जगत में जितने पितामहों के पिता
हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह
है ॥ मा माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान कर्ती है और लाड़न कर्ती है तैसे ही सब जगत का मान और लाड़न अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः । चक्षुसश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्याऽस्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ यह केनोपनिषद का बचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ बिषय को ग्रहण कर्ते हैं तथा सब श्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक बिषयों को उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इस्से परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन वाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इस्से परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणी प्राण और चक्षु ये सब हैं बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति । नाम सब को चेताने वाले हैं इस्से परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है ॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति । नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् को मैंही कर्ता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इस्से परमेश्वर का नाम अहङ्कार है ॥ जीवप्राणधारणे । इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है ॥ जीवयतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः । जो सब जीव और प्राणों का जीवन् धारण करने वाला है इस्से परमेश्वर का नाम जीव है ॥ आप्लृव्याप्तौ । इस धातु से अप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है ॥ जनीप्रादुर्भावे इस्से अज शब्द सिद्ध होता है ॥ नजायतइत्यजः । जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इस्से परमेश्वर का नाम अज है ॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म । यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम् । जो सब दिन रहै जिसका नाश कभी न होय ॥ इस्से परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा कहा जाता है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एक रस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न होने से परमेश्वर का नाम अनन्त है टुनदि समृद्धौ। इससे आनन्द शब्द सिद्ध होता है जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्द स्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है ॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान से चित् शब्द का अर्थ जान लेना इससे परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं ॥ शुन्धशुद्धौ। इससे शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्धहोय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है बुध अवगमने। इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है ॥ मुच्लृमोचने। इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है ॥ सदकारणवन्नित्यम्। जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा ॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः। जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है ॥ डुकृञ्करणे। इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है ॥ निर्गतः आकारोयस्मात्स-

निराकारः । जिसका आकार कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम निराकार है ॥ अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनंयस्मात् सनिरञ्जनः । माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इससे क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम निरञ्जन है ॥ गणसंख्याने । इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इसके आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है ॥ गणानांसमूहानांजगतामीशस्सगणेशः । जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है ॥ विश्वस्यईश्वरःविश्वेश्वरः । विश्वनाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है ॥ कूटेतिष्ठतीतिकूटस्थः । जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिसके स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होनेसे परमेश्वर का नाम कूटस्थ है जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वेही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये ॥ शक्लृशक्तौ शक्नोतिययासाशक्तिः । जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इससे परमेश्वर का नाम शक्ति है ॥ लक्षदर्शनाङ्कनयोः । इससे लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सालक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके दिखावे उसका नाम लक्ष्मी है ॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सालक्ष्मीः । जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ लक्ष्यतेवेदादिभिश्शास्त्रैर्ज्ञानिभिश्चसामिलक्ष्मीः । वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लक्ष्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ सरस्वती । इस से सरस् शब्द से मतुप् और ङीप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयत्ज्ञानम् तत्विज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उस्का नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वरही है इसे सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥ सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान् है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय न लेवे और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इसे परमेश्वरका नाम सर्व शक्तिमान् है धर्म न्याय और पक्षपात का त्याग ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ॥ प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का वचन है जो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उस्का नाम न्याय है ॥ न्यायकर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वरही है इसे परमेश्वर का नाम न्यायकारी है ॥ दय दान गति रक्षण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दयन्तेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिर्नाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रक्षण नाम है सब जगत की रक्षा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है ॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम दयालु है ॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवा द्वितीयम् । यह छान्दोग्योपनिषद् का वचन है इस्का अभिप्राय यह है कि हे सौम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक वे उस्से कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोईभी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिस्का नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इस्से श्रुति में सदेव यह वचन का पाठ है ॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजातीयस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसेही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इस्से परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्यायकारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अन्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्ध स्वभाव परमेश्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसकै जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान ऐसा कभी नहीं इस्से परमेश्वर में विजातीय परिच्छेद नहीं परमेश्वर निराकार और निरवयव है वैसेही कोई प्रकार का भेद नहीं है इस्से परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इस्से परमेश्वर का नाम अद्वितीय है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्वितािद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मिन्यस्त्ववातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उस्का नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिसमें जिसको वा उसका नाम अद्वैत है अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वरही का नाम है ॥ निर्गताः जन्मादयः अविद्यादयः सत्त्वादयः गुणाः यस्मात् सनिर्गुणः परमेश्वरः । जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इससे परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिदानन्दादिगुणैः सह वर्त्तमानत्वात्सगुणः अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों के योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसेही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होनेस परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना ॥ सर्वजगतोन्तर्यन्तुं शीलमस्यसोऽन्तर्यामी । जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उससे जानलेना धर्मेण राजते सधर्मराजः अथवाधर्मंराजयतिप्रकाशयति सधर्मराजः । धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशकरने से परमेश्वरका नाम धर्मराज है ॥ सर्वञ्जगत्करोतीतिसर्वजगत्कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्ता है ॥ निर्गतंभयंयस्मात्सनिर्भयः । जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इससे परमेश्वर का नाम

निर्भय है ॥ नविद्यतेआदिःकारणंयस्यसःअनादिः । जिसका कारण कोई भी नहीं और अपने तो सब जगत का आदि कारण है इस्से परमेश्वर का नाम अनादि है ॥ अणोरणीयान्महतोमहीयान् । यह मुण्डकोपनिषद् का बचन है जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इस्से परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥ भगोविद्यतेयस्यसभगवान् । जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है ॥ मानयतिचराचरञ्जगत् । अथवा सर्व्वैर्वेदादिभिश्शास्त्रैः शिष्टैश्चमन्यतेयः समनुः । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इस्से परमेश्वर का नाम मनु है ॥ चिन्तितुंयोग्यश्चित्यःनचिन्त्यो ऽचिन्त्यः । जो बिषयासक्त पुरुषों से चिन्तने में नाम सम्यक् जानने में नहीं आते इस्से परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर जो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उस्का ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक बिन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसेही परमेश्वर का दृढ़ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥ प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः नप्रमेयः अप्रमेयः । जो परिमाणों में जिस्का परिमाण तौलन नहीं होता इतनाहीं परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सक्ता और न जान सक्ता है इस्से परमेश्वर का नाम अप्रमेय है ॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलम-स्यसप्रमादी नप्रमादी अप्रमादी । जिस्का प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इससे परमेश्वर का नाम अप्रमादी है॥ विश्वंबिभर्तीतिविश्वम्भर: । जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है कलसंख्याने । इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है ॥ कलयतिसर्वञ्जगत् सकाल: जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है ॥ प्रीञ्तर्प[illegible]कान्तौच । इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है ॥ प्रीणातिसर्वा[illegible]: । अथवा प्रीयतेधर्मात्मभि:सप्रिय: । जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इससे परमेश्वर का नाम प्रिय है शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इससे परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर है । इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिख दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के बिचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत् ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गलाचरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात । मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इससे यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है ॥ मङ्गलाचरशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम अर्थात् सत्य धर्म जो ईश्वर की आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये ॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठही का है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इससे क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो श्रीगणेशायनमः शिवायनमः सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः । भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवें क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

पु परिग्रहण क्रमांक 502
दयानन्द महिला महाविद्यालय

ऋषि लोक अथ शब्द का और ॐकार शब्द का पाठ आदि में कर्ते हैं सो अधिकारार्थ अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है वा आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना अथवा एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना इस वास्ते ॐकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग कर्ते हैं ॐकारंवेदेषु अथकारंभाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का बचन है वैसेही मैं दिखाता हूं अथशब्दानुशासनम् अथेत्ययंशब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का बचन है ॥ अथातोधर्मजिज्ञासा । यह मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोधर्मंव्याख्यास्यामः । यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है ॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि ॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का बचन है ॥ अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः । यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा । यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत । यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वन्तस्योपव्याख्यानम् । यह माण्डूक्यउपनिषद का बचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगोंने और वेदों मेंभी अथ और ॐकार अग्न्यादिक भी चारों वेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु श्रीगणेशायनमः इत्यादिक बचन किसी वेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इससे क्या जाना जाता है कि वेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरिःओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं यह सत्य है वा नहीं। यह भी मिथ्याही है क्योंकि ओंकार का तो ऋषि ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इस्से हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ओङ्कार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इस्से आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ १॥

अथशिक्षांवक्ष्यामः। मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः। प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उचितहै जन्म से लेके तीनबर्ष अथवा पांचबर्ष पर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में ओषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावै अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिस्से कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिस्से बालकों के भी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी,

अथवा गाय वा भैंसो के दूध से बालकों का पोषण करैं जहां छेरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करैं और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी पुष्टिसे रोग निवारणार्थ करैं परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हों को दूध कभी न देवै स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और क्षीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाईं उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवै जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल क्षीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से वे बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक की जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के बिना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावै जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्को भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्धादिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीडासक्त भी वे न होवैं बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से वीर्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावें स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चोर वा अपने शरीर की छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उनके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य कर्त्ता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड कर्ते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवें फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नांचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नांचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवैं सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ पैं गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नांचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवै तब शीघ्रही उसकी देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल धूर्त धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड कर्त्ता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान करके कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इसे यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों की शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावै तो ग्रहों की शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इस्से उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तूं नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में लेआते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उस्का फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा ३० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इस्से इस पत्र का नाम शोकपत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर विश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानें रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करें इस रीति से बालकों को प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक विषय में सत्यत्व प्रतिपादन कहते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना कर्त्ता है

पारे को चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि वीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इससे बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि विषयों की कथा और विषयी लोगों का सङ्ग विषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से विषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और विवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात वर्ष वा ८ आठवर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम माता शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचवर्ष के पीछे वा ८ आठवर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जे हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और विद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषोक्षितैः। लाड़नाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हांथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो वे ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे साम्हतैः पाणिभिर्घ्नन्ति नाम सदा गुरु लोक ताड़ना कर्ते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न कर्ते हैं क्योंकि लाड़नः श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजायंगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजांयगे और दूसरे के आधीन रहैंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयिणोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के बिना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुण का जो आभूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभूषणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसकी गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्गभङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इस्से सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसकी आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इस्से मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पाप कर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो बिचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त में आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं देऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसाही प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इस्से प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इस्से क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्यों कि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

भी कभी न करना क्रोध से अपने अपनीही हानि करदेवै और को भी हानि करले इस्से क्रोध भी न करना चाहिये किसी से कटुक बचन न कहै किन्तु मधुर बचनही सदा कहै बिना बोलाये किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना कहना चाहिये इतनाही कहै जिस्से कहना वा सुनना सो नम्रता सेही करै अभिमान से कभी नहीं किसी से बाद बिवाद न करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभी न करै जहां किसी के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच आसन में बैठे न किसी को आड़ होय न किसी को दुःख होय न कोई उसको उठावै जिस्से गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नमस्कार करै उस्से बिरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को माने जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभी न करै किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी का बिश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और जो धर्म बिरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवैं उस्को अपने सामर्थ्य के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी श्लोकों को अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवैं परन्तु सत्य सत्य धर्म के विषय में और परमेश्वर के विषय में दृढ़ निश्चय करा देवैं जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के विषय में लिखा है वैसा उसी को उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवैं और वस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवैं जैसा कि धारना चाहिये भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इस्से कुछ न्यून भोजन करैं जिस्से कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभी

स्नान के लिये प्रवेश न करै क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है ॥ नाविज्ञातेजलाशये। इस्का यह अभिप्राय है कि जिस जल की परीक्षा यथावत् जो न जाने सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलें क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और वचन को विचार के सत्यही बोले जो कुछ कर्म करै उसको पहिले विचार के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के वचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत् ॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में केश अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूता म्वदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब विचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि बचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह विचारशून्य पुरुष है इस्से विचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो विचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चात्तापही होगा और सुख न होगा इसमे जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्षतक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वेही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावेंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य को शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः ॥ २ ॥

अथाध्ययनाध्यापानविधिंव्याख्यास्यामः । आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवें अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवें घरमें कभी न रक्खें परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करै पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करै गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवै गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ओंकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना ॥ भूरितिवैप्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः । यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है ॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः । जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इसमे परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है ॥ अपानयति सर्वंदुःखंसोपानः । जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खै इसमे परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः। जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इस्से परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है ॥ भर्गः २ का एक बचन है ॥ देवस्य ६ का एक बचन है. धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना ॥ वतुमहैंवरेण्यं। नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वृञ् नाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों की प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन् हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हे सर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हेसर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने के योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करें उसका धारण ज्ञान उसके ऊपर विश्वास और दृढ़ निश्चय हमलोग करें ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करें जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय सो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य हैं अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ हैं नाम सर्वशक्तिमान सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करैं कि बुद्धि सहित हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करैं यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का वेद में इस प्रकार का पाठ है ॥ ओंभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करादेवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र की रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करैं सो यह योगशास्त्र का सूत्र है ॥ प्रच्छर्द्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य । इसका यह अर्थ है कि छर्द्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने से उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकृष्टञ्चतच्छर्द्दनञ्च प्रच्छर्द्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्द्दन है ॥ विधारणंनाम विरुद्धञ्चतद्धारणञ्च विधारणम् । जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में लेआना नाभि से अपान को और समान को हृदय में लेआना हृदय में दोनों वे और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसको मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पीछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करै जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहरही वायु को रोक रक्खै जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इससे यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करे फिर उनको आचमन का उपदेश करै हाथ में जल लेके गायत्री म मन्त्र से पढ़के तीनबार आचमन करै ॥ अंगुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवंपित्र्यं तयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तल नाम हथेली का जो मध्य है उसका नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देव तीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करै इतने जल से आचमन करै कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उससे क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इससे क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती है और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपांसमीपेनियतो नैत्यकंविधिमास्थित: । सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यंसमाहित: ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके बनके शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थचिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसेही नित्य दो बार द्विज लोक प्रात:काल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्यही करै इस्से बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी की वा तांबे की वेदि रच ले ▭ ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस वेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर देवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस वेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच में अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले ⌒ । उस्से डेढ़ा प्रणीता पात्र रचले—[] एक घृत पात्र रचले 0 प्रणीता में तो जल रक्खै पीछे उसमें से जब जब कार्य होय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवे तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावै फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े होंय तो उनको कुशाग्र से निकालदेवै पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ओंभूरग्नये स्वाहा इदमग्नये इदन्नमम। इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवै॥ ओंभुवर्वायवे स्वाहा इदं वायवे इदन्नमम। इससे दूसरी आहुति देवै। ओंस्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम। इससे तीसरी आहुति देवै॥ ओंभूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यःस्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम। इससे चौथी आहुति देवै॥ ओंसर्वंवैपूर्णंस्वाहा। इससे पांचवी आहुति देवै॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्निहोत्र सब करें ओंकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो अग्नयेस्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के बनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

उसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम स्वकीया वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्यही है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्व देव और अतिथि सेवा पंच महा यज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम्। यह मनुस्मृति का बचन है॥ अथदेवतर्पणम् ओं ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ओं ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्॥१॥ ओं ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ओं ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम्। अथर्षितर्पणम्। ओं मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ओं मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ओं मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ओं मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ इत्यृषितर्पणम्। अथ पितृतर्पणम्। ओं सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ओं यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ओं पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ओं पितामहाय स्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ओं प्रपितामहाय स्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ओं मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ओं पितामह्यै स्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ओं प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि ३ ओं अस्मत्पत्न्यै स्वधानमः अस्मत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ओं सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धीन्मृतांस्तर्पयामि ३ ओं सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधा नमः सगोत्रान्मृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः। पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये होंय उनका तो अवश्य करै॥ उद्धृते दक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते-

द्विजः। सव्येप्राचीनआवीति निवीतिःकण्ठसज्जने॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हाथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करें पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करे और देवतीर्थ से कण्ठ में यज्ञोपवीत रक्खे और दोनों हाथ के अंगुष्ठा में यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्रह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिणस्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खे और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवें ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवें दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़ के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै॥ अथबलिवैश्वदेवम्। वैश्वदेवस्यसिद्धस्य गृह्येऽग्नौविधिपूर्वकम्। आभ्यःकुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणोहोममन्वहम्॥ ओं अग्नयेस्वाहा ओं सोमाय स्वाहा ओं अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा ओं विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ओं धन्वन्तरयेस्वाहा ओं कुहूस्वाहा। ओं अनुमत्यैस्वाहा ओं प्रजापतयेस्वाहा ओं सहद्यावापृथिवीभ्योस्वाहा। मृत्तिका की चतुष्कोण वेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उससे उसमें दशाहुति देवें [ ] पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथा क्रमसे उस २ दिशाओं में भागों को रक्खे अपनी २ जगह में ओं सानुगायेन्द्रायनमः इससे पूर्वदिशा में भागदेना ओं सानुगाययमायनमः। दक्षिण

दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायवरुणायनमः । इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायसोमायनमः । इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं मरुद्भ्योनमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खै ओं अद्भ्योनमः । इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खै ओं वनस्पतिभ्योनमः । इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खै ओं श्रियैनमः । इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खै ओं भद्रकाल्यैनमः । इस मन्त्र से नैऋत्यकोण में भाग रक्खै ओं ब्रह्मपतयेनमः । ओं वास्तुपतयेनमः ॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खै ओं विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः । ओं दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनमः । ओं नक्तंचारिभ्योभूतेभ्योनमः । इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोष्ठ के बीच में तीनों भाग रख देवै ओं सर्वात्मभूतयेनमः । इस मन्त्र से कोष्ठके पीछे भाग रक्खै अपसव्य करके ओं पितृभ्यःस्वधानमः इस मन्त्रसे कोष्ठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खै इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्योनमः पतितेभ्योनमः श्वपग्भ्योनमः पाप रोगिभ्योनमः वायसेभ्योनमः क्रमिभ्योनमः । इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रखके कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै ॥ इति बलिवैश्वदेवम् ।

इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करने वाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान सत्यवादी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करैं वा साथ में भोजन करावैं अथवा भोजन के पीछे जो आवै तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र मे किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इससे परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इससे क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम में लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करैं सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः कर्त्ते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट करदेता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां २ मैला होता है जिस जिस स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायुसे जिसको रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इससे क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

सब लोगों के मलसे जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करैंगे उस दुर्गन्धको निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उससे मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० क्रोश तक वायु अधिक है इससे ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों के सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उससे नीचे भी कुछ रहते हैं जब की सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त कर देते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करै कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जल को वे शुद्ध करेंगे उसका यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सी दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी करछुल में वा पात्र में रखके अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छौंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिल जाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल के पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की दृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवेगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवने से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करने वाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उससे फूर्त्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इससे उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इससे सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करैं तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि ॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः। तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है मरे भये पिचादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है उससे क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के स्मरण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी

तीसरा गुण यह है कि दायभाग बांटने में सन्देह न होगा क्योंकि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहैगा वैसेही इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इस्से दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि विद्वानों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होको निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इस्से क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावैंगे और बिचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों की तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उस्से उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खैंगे इस्से उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का बिचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उस्से मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांस्तथादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसु जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इस्से परमेश्वर होकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपनेही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपनेहीं पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ से पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग बिचार से जान लेवें और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करेंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जायगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जांयगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों को प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं इस्से अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति। राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का बचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और वैश्य इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ें शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के बिना सब शास्त्रों को पढ़ें परन्तु वेद को संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करें॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यं गुरौत्रैवेदिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्याश्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ वर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नववर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखी है॥ वृद्धियौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोडश वर्ष से २५ वर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ वर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें वर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उपनिषद् में ४४ वा ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इस्से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इस्से न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्याहीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और विषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा और कन्याओं का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

गुरु विरजानन्द दण्डी
सत्यार्थ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक ....

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्यादिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा दुःखीही रहेगी इस्से ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशततोवर्षे पुमान्नारीतु षोड़शे समत्वागतवीर्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत का बचन है इसका यह अर्थ है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का विवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का अतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का विवाह करै और २५ वर्ष से पहिले पुत्रों का विवाह करै उसको राजा दंड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार को व्यवस्था राजा ही के अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस व्यवस्था को प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य यह प्रथम तो उक्त नियम को करावै आगे और नियमों कोभी । ऋतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वाध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है ऋत नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और अध्यापक लोग सत्य २ बात को प्रतिज्ञा करैं कि सत्य २ ही को मानैंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ेंगे

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्निहोत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका बिचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करें। वेदमनूच्याचार्यांतेवासिनमनुशास्ति सत्यम्वद धर्मंचर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुम्माव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदितव्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानिल्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयां सोब्राह्मणास्तेषांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः सम्मदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्र वर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करैं हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्महीको कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन भ्रममें न रक्खैं कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको बिवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से बिरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ाने का पुरु

षार्य ही करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनकी सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उनों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करैं अथवा पाप कर्म करावैं उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करैं कि हमलोग जो सुकर्म करैं उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करैं उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके बचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवें अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवें दारिद्र्य होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से बिवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभी न करें वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश करना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ओं सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरु की आज्ञा पालन और गुरु की सेवा से रक्षा करैं सदैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरु को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करै सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ जो विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनको भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनको भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करै कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरु है उसकी निन्दा होती है बहुत से एक गुरु के पास पढ़ते हैं उनमे

से कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरु तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इससे इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य२ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय ॥ कामात्मता न-प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः ॥ मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि ॥ काम्योहि वेदाऽधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इससे श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं ॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से बाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने ब्रत हैं वे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी बैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही बचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग बिना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करनाब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम की यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

करने से मारा जाता होय तोभी मिथ्या भाषण न करै ॥ अकामस्यक्रियाकाचि दृश्यतेनेहकर्हिचित्। यद्यद्धिकुरुतेकिञ्चि-त्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥ जिस पुरुष को कामना न होय तो उसको नेत्रादिकों की कुछ चेष्टा भी न होय इस्से जो २ शरीर में कुछ भी चेष्टा होती है सो २ कामही से होती है ऐसाही निश्चय जानना इस्से क्या आया कि काम के बिना कोई भी शरीर धारण नहीं करसक्ता और खाना पीना भी नहीं कर सक्ता इसलिये श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सब दिन करनीही चाहिये दुष्ट पदार्थों की कभी नहीं और जो पुरुषार्थ को छोड़ेगा सो तो पाषाण और काष्ठ की नांई होगा इस्से आलस्य कभी न करना चाहिये और पुरुषार्थ को छोड़ना भी नहीं ॥ आचार:परमोधर्म: श्रुत्युक्त: स्मार्त्तएवच। तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विज: ॥ शास्त्र को पढ़के सत्य धर्मों का आचरण जो न करै उसका पढ़ना व्यर्थही है सोई परम धर्म है परन्तु वह आचार वेदादिक सत्य शास्त्रोक्त और मनुस्मृत्युक्तही लेना तिस हेतु से इस आचरण नाम धर्माचरण में द्विज लोग अर्थात सब मनुष्य लोग युक्त होंय ॥ आचाराद्विच्युतोविप्रो नवेदफलमश्नुते। आचारेणतुसं-युक्त: संपूर्णफलभाग्भवेत्॥ जो पुरुष वेदोक्त आचार को नहीं करता उसका जो विद्या का पढ़ना है उसका फल वह नहीं पाता और जो वेदादिकों को पढ़के यथोक्त आचार करता है उसको संपूर्ण सुख रूप फल होता है॥ योऽवमन्येततेमूले हेतु शास्त्राश्रयात्द्विज:। ससाधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिकोवेदनिन्दक:॥ कुतर्क से जो कोई मनुष्य श्रुति नाम वेद स्मृति नाम धर्मशास्त्र ये दोनों धर्म के प्रकाशक हैं और धर्म के मूल हैं इनको जो न मानै उसको सज्जन लोग सब अधिकारों से बाहर कर देवैं क्योंकि वह नास्तिक है जो वेद नाम विद्या की निन्दा करता है सोई पुरुष नास्तिक होता है॥ वेद:स्मृति:सदाचार: स्वस्यचप्रि-

यमात्मनः। एतच्चतुर्विधम्प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इससे जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चोरजारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थों में नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं करते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने को इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ें और विचारें उनको विना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित्॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इससे जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्त होके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरै न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खे

यही सुखका स्थान है ॥ ब्रह्मारम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरोः सदा। संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः ॥ जब शिष्य गुरु के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरु को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढ़ैं तथा गुरु के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरु उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरु आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरु को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूंछे अथवा सुनै ॥ नाऽपृष्टःकस्यचिद्ब्रूया न्नचान्यायेनपृच्छतः। जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोकआचरेत् ॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उससे कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इससे उनसे कहना व्यर्थही है ॥ अधर्मेणचयःप्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति। तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति ॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इससे गुरु शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत् करेगा उसको बड़ा सुख होगा ॥ आचार्यपुत्रःशुश्रूषु र्ज्ञानदोधार्मिकःशुचिः। आप्तःशक्तोऽर्थदःसाधुः स्वोध्याप्यादशधर्मतः आचार्य का पुत्र शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र आप्त नाम पूर्णकाम और शक्त नाम समर्थ अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिससे कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों की स्त्री वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवेंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो वेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इससे पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इससे कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इससे सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्यावर्त्त देश वासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनकी बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्यावान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके सङ्गी सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इससे सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्यावर्त्त वासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इस्से क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार से नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित करकेही पढ़ना और पढ़ाना भी ॥ इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये ॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम्। अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी वाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत् वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोवृत्तिर्ज्ञानं वा। यह वात्स्यायन भाष्य का बचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परंतु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि ॥ व्यवस्थित: पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः। ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यो

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः । यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उस्से भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी काभी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक् और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव की प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तूं घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इससे क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भी भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवे इससे आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है ॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च। यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश करते हैं तत्पूर्वक नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के बिना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के बिना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह वेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बहे जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई हुई है इस संसार की रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलकेही स्थान से स्थानान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा देखा इस्से देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे चलकेही आया है क्योंकि बिना गमन स्थान से स्थानान्तर में कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्रकार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्वत् नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में मिला हुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाथा उसने जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि अवश्य है इस प्रकार का अनेकबिधि पूर्ववत् अनुमान होता है सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धि से बिचार करके कहा कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इस्से क्या आया कि अन्य ऐसा कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में बिना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इस्का नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इस्से आगे तीसरा उपमान प्रमाण है ॥ प्रसिद्ध साधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम्। यह गौतम मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम जिस्से जनावै जिसकी उपमा जिस्से की जाय उसका नाम उपमान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तू देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उससे पूछा कि देवदत्त कैसा है उसने उससे कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है ॥ आप्तोपदेशः शब्दः । यह गौतममुनि का सूत्र है ॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्त्ततइत्याप्तः ऋष्यार्यम्लेच्छानां समानंलक्षणम् ॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय बैर किसी से न होय पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्य्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम्। ऋषि नाम यथार्थ मंत्रद्रष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु म्लेच्छअव्यक्तेशब्दे। इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्ष्या से रक्खा है उसका अर्थ है दुष्ट, नीच, कपटी, छली और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु आर्य्यों का नाम हिन्दू कभी न रखना चाहिये॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्। तयोरेवान्तरंगिर्योरार्य्यावर्त्तम्विदुर्बुधाः॥ आर्य्यैरावर्त्तः सआर्य्यावर्त्तः जो

देश आर्य्यों से नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखने में नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिससे अर्थ को यथावत् जानै उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसको प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार की विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और भी ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसकी जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनी तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मान मात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसको दृढ़स्थिति हृदय

में हो जानो कि हृदय और आचरण से धर्म का नाश कभी न होय चौथा तस्योपायोऽधिगन्तव्यः। हेय जो अधर्म उसके त्याग के उपाय को प्राप्त होना और धर्म के ग्रहण के उपाय को प्राप्त होना वह उपाय सत्पुरुषों का सङ्ग, श्रेष्ठबुद्धि और सद्विद्या के होने से प्राप्त होता है इतने ४ अर्थ पद होते हैं इनका सम्यक् जानने से निःश्रेयस जो मोक्ष नाम नित्यानन्द परमेश्वर की प्राप्ति और जन्म मरणादिक दुखों की अत्यन्त निवृत्ति होजाती है इससे इस ४ प्रकार की विद्या को भी सज्जनों को अवश्य जानना चाहिये ४ प्रकार के जो प्रमाण हैं उनका विषय लिखा गया और इनकी परीक्षा भी संक्षेप से इससे आगे लिखी जाती है सो जान लेना॥ प्रत्यक्षादीनाम प्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः। इत्यादिक परीक्षा में गोतममुनि प्रणीत सूत्रोंही को लिखेंगे सो आप लोग जान लेवें प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं है क्योंकि तीन कालों की असिद्धि के होने से पूर्वापर सहभाव नियम के भङ्ग होने से कि पहिले प्रमाण होता है वा प्रमेय देखना चाहिये कि पहिले जो प्रमाण सिद्ध होय और पीछे प्रमेय तो बिना प्रमेय के प्रमाण किसका होगा वा पहिले प्रमेय होय प्रमाण पीछे होय तो बिना प्रमाण के प्रमेय कैसे जाना जायगा और जो सङ्ग में दोनों का ज्ञान होय तो बिना प्रमेय से प्रमाण की उत्पत्तिही नहीं इससे किसी प्रकार से भी प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं होसक्ता तथाहिपूर्वंहि प्रमाणसिद्धौनेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्प्रत्यक्षोत्पत्तिः। यह गोतममुनि का सूत्र है जैसे कि गन्धादि विषय का जो प्रत्यक्ष ज्ञान सो गन्धादिकों का और नासिकादिक इन्द्रियों का सम्बन्ध होने से प्रत्यक्ष की उत्पत्ति होती है अन्यथा नहीं और जो कोई कहै कि पहिले प्रमाण की उत्पत्ति होती है पीछे प्रमेय की अच्छा तो गन्धादिकों का तो सम्बन्ध भी उत्पन्न नहीं भया उनके सम्बन्ध के

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इससे आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र ॥ पश्चात्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेंगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र ॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थनियतत्वात्क्रमवृत्तित्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जानकर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनों को एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्तु को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह बस्तु भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन बिचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं ॥ सूत्र। युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञान को न ग्रहण करै किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे को ग्रहण करै उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि ॥ सूत्र। उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविषयस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनम्विभागवचनम् ॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इस से पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इस से जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पीछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है उस से वस्त्रादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिले प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र। त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः। आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों की सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्काल में होने वाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो सिद्धों का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र। सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः। किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इस से आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र। त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि बीण अथवा बांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह बीण का शब्द है और जब बीणा देखो तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि बीण आगे बजाने से शब्द होगा और जब सन्मुख बीण को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब बीण और बीण के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तौलने के लिये प्रमाण की नाईं है तुलासेही घृतादिक द्रव्यों को तौल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तौली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसकी होती है वैसेही जब प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से रूपादिक बिषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जायगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्यादिक सब जान लेना तीन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश इसका नाम है कि नाम मात्र से पदार्थ की गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण इसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जलमें रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि वे निवर्तक और व्यापक हो जाते हैं इस्से गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों क लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्माही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिकाही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इस्से नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्माही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन कोही जान के कहता है इस्से मन आत्मा का लक्ष्य है आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही के लक्ष्य और लक्षण भी हैं इस्से आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ही का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इस्से सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोष प्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण २ ऐसा वाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्ष्य २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मतमें आवेगी इस्से बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के विषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवै इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्। यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से वृष्टि होती है इस्से क्या आया कि बिना बादल से वृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो बिचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उस्का ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा बिचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह जाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इस्से अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र। शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः। चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तोंही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनुमान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इस्से चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गोतममुनि का अभिप्राय है पूर्व मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योगशास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानैं तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़ै वा पढ़ावै और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़ै और न पढ़ावै इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये ॥ अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः। प्रथम तो अष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावै सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों को वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी को जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्यादिक तिङन्त रूपों को और भावः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्ही सूत्रों से साध २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाहरण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयावृत्ति नाम दूसरी बार पढ़े उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितने पद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवगा और सर्वादि गणों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवे सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसकी हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ वर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ वर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़े और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इसमें जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

व्याकरण के नाम से जो जाल रूप कौमुद्यादिक ग्रन्थ चन्द्रिका सारस्वतादिक और मुग्ध बोधादिकों के ५० वर्ष तक पढ़ने से भी जैसा बोध नहीं होता है उस्से हजारगुणा अष्टाध्याय्यादिक सत्य ग्रन्थों के पढ़ने से तीन वर्ष मेंही बोध हो जाता है इसमें विचार करना चाहिये कि सत्य ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ा लाभ होता है वा मिथ्या जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने में जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ भी लाभ नहीं होगा क्योंकि जाल रूप ग्रन्थों में इस प्रकार का व्यर्थ बिवाद लिखा है उसको पढ़ाने और पढ़ने वाले भी वैसेही हठी, दुराग्रही और विरुद्ध वादी होंगे ऐसेही देख भी पड़ते हैं क्योंकि जैसा ग्रन्थ पढ़ेगा वैसीही बुद्धि उसकी होगी इस प्रकार का बड़ा एक जाल बनाया है कि मरण तक एक शास्त्र भी पूर्ण नहीं होता उसको अन्य शास्त्र पढ़ने का अवकाश कैसे होगा कभी न होगा एक शास्त्र के पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि संकुचितही रहती है विस्तृत कभी नहीं होती सब दिन उसको शंकाही बनी रहती है सब पदार्थों का निश्चय कभी नहीं होता और जो व्याकरण का पढ़ना है सो तो बेदादिक अन्यशास्त्रों के पढ़ने केही लिये है जब वह एक व्याकरणही में बाद बिवाद करता २ मर जायगा तब हाथ में उसके कुछ भी न आवेगा इस्से सब सज्जन लोगों को ऋषि मुनियों की पठन पाठन की जो रीति है उसी में चलना चाहिये जाली लोगों की रीति में कभी नहीं क्योंकि आर्य्यावर्त्त मनुष्यों के बीच में कपिलादिक ऋषि मुनि जितने भये हैं वे बड़े बिद्वान् और बड़े धर्मात्मा पुरुष भये हैं उनके सहस्रांश में भी इस समय जो आर्य्यावर्त्त में मनुष्य हैं वे बुद्धि, बिद्या और धर्माचरण में नहीं देख पड़ते इस लिये उनका आचरण हम लोगों को करना उचित है कि उसी से आर्य्यावर्त्त के लोगों की उन्नति होगी अन्यथा कभी नहीं व्याकरण को तीन

वर्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनि कृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़े और पढ़ावे उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध हैं डेढ़ वर्ष के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि के किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़े पीछे यास्कमुनि के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़े उससे गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवेगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश वर्ष में पढ़ने से जो बोध नहीं होता सो उक्त निघंट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो वर्ष में होगा इससे इनकाही पढ़ना और पढ़ाना उचित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़े जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी जो अधि-करणमाला व्याख्या के सहित पढ़े चार मास के बीच में पढ़ लेगा और इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़े सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि कणादमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जी का किया जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की वृत्ति के सहित को पढ़े उसके पढ़ने में दो मास जांयगे उसके पीछे न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़े इसके पढ़ने में चार मास जांयगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र जो कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी का किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे सांख्यदर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़ लेगा इसके पीछे ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे बेदान्तदर्शन को पढ़े जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़े जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़े इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायगा दोवर्ष के बीच में सब पदार्थ बिद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके बिषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के बिषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के बिषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के बिषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के बिषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और बेदान्तशास्त्र के बिषय में पञ्चदशी, बेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और अल्लोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद जाल रूप लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का बिषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही

किन्तु पिसान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़जायगी और जो सत्यशास्त्रों से विरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इस्से इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इस्से कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इस्से सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जाल ग्रन्थों का कभी नहीं पूर्व पक्ष छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के विषय में बहुत सी परस्पर विरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही विरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया फिर सत्यशास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है उत्तर कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी विरोध और परस्पर खण्डन है यह बात आप लोगों की मिथ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्या वाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का विचार कभी नहीं कर्त्ता उसको तो [illegible]ी प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन [illegible] अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उस्से प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आज काल के पण्डितों की क्षुद्रबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उस्से विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इस्से वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ है और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथ्वी होती है क्योंकि पृथ्वी में चार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय कों विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथ्वी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथ्वी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

संध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका विचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का विचार करना इस बात तक लिखा उससे आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष विचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखी है जो देखना चाहै सो उसमें देख लेवै सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य और परम कारण का विचार वेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सके हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी का सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत् का रचने वाला कोई नहीं है सो बेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लेके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इस्से बिचारना चाहिये कि षटशास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थ विद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उन्ना जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल बिरोधही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पठन न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इस्से सज्जन लोगों को ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इस्से आगे हमलोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और बेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़नेही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़े उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बह्वृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़े और स्वर को भी पढ़े सो दो वर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन, श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ैं डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़ै गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्य सूत्र के साथ २ पढ़ै दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़ै शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ सो एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़े सब बिचार मात्र से आजांयगी तथा आरण्यक बृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी बिचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़ै जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तीनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक बिषयों को यथावत् पढ़ै सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और वैद्यकशास्त्र के बिषय में शार्ङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़ै उसमें शस्त्र बिद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र बिद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना अग्न्यादिक अस्त्रों के बिषयों का बिस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवै जैसे कि सूची व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पहिले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

को रचके शत्रु की सेना वा दुर्ग वा नगर में प्रवेश करें तब उसके विजय का सम्भव होता है ऐसेही शकटव्यूह, मकरव्यूह और गरुड़व्यूहादिकों को जान लेवे उसको दो वा तीन वर्ष में पढ़लेगा उसके आगे सामवेद का जो उपवेद गान्धर्व वेद उसको पढ़ै उसमें वादित्रराग, रागिणी, काल-ताल स्वरपूर्वक गान विद्या का अभ्यास करै दोवर्ष में उसको पढ़लेगा इसके आगे अथर्ववेद का जो उपवेद अर्थवेद नाम शिल्पशास्त्र उसमें नाना प्रकार कला यन्त्र और नाना प्रकार के द्रव्यों को मिलाने से नाना प्रकार व्यवहारों के यानों की और दूरवीक्षण, अणुवीक्षण, नाम दूरस्थित पदार्थों को निकट देखे और अणुवीक्षण नाम सूक्ष्म पदार्थ भी स्थूल देख पड़ें इत्यादिक पदार्थों को रचले जैसे कि अग्नि का ऊर्द्ध्वगमन स्व-भाव है और जल का नीचे जाने का स्वभाव है सो किसी पात्र में जल को करके चूल्हे के ऊपर रखदे और उसके नीचे अग्नि करै फिर उतनेही भार वाले पात्र से उस पात्र का मुख बन्ध करै जब अग्नि से जल ऊपर उड़ेगा तब इतना बल होजायगा कि ऊपर का पात्र नाचने लगेगा वा गिर पड़ेगा इसी प्रकार से पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथ्वीयान, जलयान और आकाश यानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचरवसु राजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरि-चरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे तथा जैसे कि आज काल अङ्गरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प-शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं उसको भी तीनवर्ष में पढ़लेगा पढ़के पीछे अपनी बुद्धि से बहुत सी शिल्प विद्या की उन्नति करलेगा पीछे ज्योतिश्शास्त्र को पढ़ै उसमें

गणित विद्या यथावत् जानै उस्से बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ैं मुहूर्त्त चिन्तामण्यादिक जालग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहेगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से संसार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसेही पढ़ावेगा इस्से जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सक्ते कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इस्से राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो १८, २० वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्य्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग उक्त रीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख वृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे एवं रंक दीन रहेंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे उस्से वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहेंगे वे मूर्ख होंगे इस्से कभी सुख न पावेंगे इस्से सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इस्से मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इस्से बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उस्में हो जायगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान् जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इस्से ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, ऊर्द्ध्वपुंड्र, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में विश्वास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामोंसे पाप नाश होनेका विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकोंही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पीछे वे सम्प्रदायी लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों की मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय होजाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वैसे हैं जैसे कि पशु हैं वे ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्ध परंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि बाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करें और तिलक माला धारण करें काश्यादिक तीर्थों में जाके बास करें और नाम स्मरण करें एकादश्यादिक ब्रत करें और पुष्प ले आवें चन्दन घसें धूप दीप करें नैवेद्य धरें परिक्रमा करें पाषाणादिक मूर्त्ति का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करें और कूदें नाचें

कूदें और बाजे बजावें रथ याचादिकों का मेला करें और परस्पर व्यभिचार करें मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारोंही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमाच भी न आवेगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाशही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्य्यादिक पुच और कन्याओं को लाड़न मेंही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इस्से भी विद्या का नाशही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर वे हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्खही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जांयगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इस्से हम लोगों की आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्नही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फसजाते हैं इस्से वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुच पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुच वा बन्धुपुच भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट होजायगी इस्से जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गापान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उस्से भी बिद्या का नाश होता है छठवां बिघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, चेत्रों में सदावर्त, बिवाह, त्रयोदश्शाह, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचैं निर्वाह मात्र बिद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और बिचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डोंही की होती है इस्से मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम बिघ्न यह है कि पांचवें बर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी बिद्या का नाश होता है और बिषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इस्से भी बिद्या नहीं होती यह आठवां बिघ्न बिद्या का नाशक है इत्यादिक और भी बिद्या नाश करने के बिघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग बिचार करलेवैं जब सोलह बर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवै तबतक व्यायाम करै बहुत न करै किन्तु ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करै सब अभ्यास जब कर चुकै उससे एक घण्टा पीछे भोजन करै परंतु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवै उस्से शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और रूक्ष होजाते हैं उससे बुद्धि भी वैसी रूक्ष होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इससे अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देख लेवे उन बालकों के हृदय में वीर्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त दे दे के करा देवें जैसे कि वीर्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इससे युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाहीं पशुवत होजायगा ॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवा-स्यात्साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठोदृढिष्ठोवलिष्ठः तस्येयंपृथिवीसर्वा-वित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दाः सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दाः सएकः पितृणांचिरलोक लोकानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दाः सएकः आजानजानान्देवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दाः सएकः कर्मदेवानामानन्दः येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंकर्मदेवानामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाका

महतस्य तेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रि-
यस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरान
न्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः
प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरान
न्दाः सएकोब्रह्मणश्रानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरु
षेयश्चासावादित्येसएकः॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् की श्रुति है
सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा
कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण
है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न
हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य
जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम
सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढ़िष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो
शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके
शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और
जिसकी वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम
चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते
हैं और जो कोई केवल विद्यावान्ही है और किसी प्रकार की
कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर
की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न
होवै ऐसा जो श्रोत्रिय॥ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी
का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण
पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम
विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्र-
वर्त्ती को उससे भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्ती
राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इससे चित्त की
एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा
परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृलोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोग वासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द बृहस्पति को है और बृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द विद्या वाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है किन्तु एकही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्यावान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख को कोई गणना अथवा तौलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द विद्या के विना किसी को कभी नहीं होसक्ता इस्से सब मनुष्यों को विद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इस्से आगे चौथे प्रकरण में विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ३ ॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिम्वच्यामः ॥

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनकी परीक्षा यथावत् करैं जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्षा, इत्यादिक दोष न होवैं पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहैं उसको ब्राह्मण का अधिकार देवैं और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या कुछ न्यून होय शूर, वीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उससे अधिक हो उसको क्षत्रिय करैं और जिसको थोड़ी भी विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवैं परन्तु अत्यन्त भीरु होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्पन्न भया उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै ब्राह्मण वैश्य और शूद्र के गुण होने से ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी होजांय तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उक्त गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का करना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धरमात्माओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने में ब्राह्मणों को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवें॥ पशूनांपालनं दान मिज्याध्ययनमेवच। वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यकृषिमेवच॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और कृषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभुःकर्मसमादिशत्। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनुसूयया॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करना इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों को यथावत् सेवा करै॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासी द्बाहूराजन्यःकृतः। ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात्। यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देश में व्यापक नहीं होसका उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहु, ऊरू और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवै मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के बिना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में हौंय वह क्षत्रिय होवै तथा ऊरु नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के वेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवैं वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवैं सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करना चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने मे बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानैं तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था का

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों को जन्ममात्रही से मानें तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजांयगे क्योंकि जन्म मात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इस्से सब विद्यादिक गुण नष्ट हो जांयगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस कुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे उत्तम कर्महो करैंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इस्से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का करेंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करेंगे सदा नीचही कर्म करेंगे इस्से ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उस्से ब्राह्मण कुल दूषित हो जायगा इस्से उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग लेलेंगे चोर और डांकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को पीड़ा देंगे इस्से उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य्य नष्ट होजायगा इस्से विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त विद्यादिक गुण से युक्त होवै उसी को वैश्य होना उचित है जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जांयगे अर्थात् शूद्र होजांयगे और शूद्रादिकों को विद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जांयगे इस्से उत्तमों को तो भय होगा और नीचों को उत्साहही होगा इस्से ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ व्रियन्तेयेतेवर्णाः। कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भया और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जावाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी विवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्रका शूद्रा से विवाह होना चाहिये क्योंकि विद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का विवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से विवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का विवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष सोई शूद्र है उस्से मूर्ख स्त्री का विवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों के

अर्थात् बर और कन्या की प्रसन्नता से बिवाह का होना उचित है कन्या बर की परीक्षा करै और बर कन्या की दोनों की परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु बिवाह कर देवें अथवा आपही दोनों परस्पर बिवाह करलेवें पशुवत् बिवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से बिवाह करना चाहिये बाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम से पूर्ण बिद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि बेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करै। महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होंय गाय, छेरी, अवि नाम भेंड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवें तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करै वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम् । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं हैं और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवें स्त्री २ होवें २ निश्छन्द नाम जिस कुल में बेदादिक बिद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नांई देह के ऊपर लोम होवें ४ शार्शस नाम जिस कुल में बवासिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयाविनाम जिस कुल में आंव का बिकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्वित्रि नाम जिस कुल में श्वेत कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में गलित कुष्ठ होय १० इन दश कुलों की कन्याओं को विवाह के लिये ग्रहण न करें क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवेगा इस्से उनका ग्रहण करना उचित नहीं॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गीन्नरोगिणीम्। नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम्॥ नर्क्ष वृक्ष नदीनाम्नीन्नान्त्यपर्वतनामिकाम्। नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम्॥ कपिला नाम बिलाई की नांई जिस कन्या के नेत्र होवें उसके साथ विवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेत्र होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग बर से अधिक होवें अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा बर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर विवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर कृषित होवें तब विवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उस्से अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और वंशच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य्य नहीं इस्से स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटाही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष की परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से विवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवें उस्से भी विवाह न करै वा चाटां नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ विवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नांई

होय उस स्त्री के साथ विवाह न करै और जिसका नक्षत्र के ऊपर नाम होय जैसा कि अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के ऊपर जैसा कि आम्रा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों के न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गींसौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम्। तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अंङ्ग न होवें अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवें सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारण गामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नांई चलै तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवें ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करै ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः। गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म विवाह उसको कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना यथावत होमादि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म विवाह है मास वा दोमास पर्यन्त होम होता रहै और जामाताही ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव विवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष विवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे विधि पूर्वक विवाह होना उसका नाम प्राजापत्य विवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर कों भी थोड़ा २ धन देना होमादिक विधि से विवाह करना उसका नाम आसुर विवाह अर्थात् दैत्यों का विवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से विवाह का होना उसको गान्धर्व विवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बंध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके सब विधि कर लेवें इसी का नाम गान्धर्व विवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या का ले लेना है उसको राक्षस विवाह कहते हैं फिर होमादिक विधि कर के विवाह करलेवैं अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परपदार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह विवाह है अष्टम विवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

भांग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से पागल भई होय उस्से समागम करै विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब बिवाहों से नीच विवाह है इन आठ बिवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उस्से नीच आसुर, उस्से नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है उसको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैःस्त्रीविवाहै रनिन्द्या भवतिप्रजा । निन्दितैर्निन्दितानॄणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसी परीक्षा और जो काल लिखा है उस्से विरुद्ध बिवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट बिवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उस्से जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के विना बिवाह का करना उस्से बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजांयगे उनके धनादिकों का नाश भी हो जायगा इस्से निन्दित बिवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम बिवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो बिवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ बिवाह हैं उन बिवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनकी प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने बिवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से बिवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी,

कुन्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, कात्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये थे तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्येपितुर्वशेतिष्ठेत्पाणिग्राहस्ययौवने । पुत्राणांभर्त्तरिप्रेते नभजेत्स्त्रीस्वतन्त्रताम् ॥ बाल्यावस्था न्यून से न्यून षोड़श वर्ष पर्यन्त होती है तब तक पिता के वश में कन्या रहै और षोड़श वर्ष से लेके २४ वर्ष पर्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै जब पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै क्योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इस्से आप कुमार्ग में चलेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इस्से स्त्री को स्वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि पिता के घरमें कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का धर्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जांयगे यह बात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के रजस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जांयगे और नरक में जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो सदा होहीगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द कररक्खैं सो यह बात प्रमाण शून्य है बुद्धिमान् इस बात को कभी न मानैं इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमतीसती । ऊर्द्ध्वन्तुकालादेतस्मा द्विन्देत सदृशंपतिम् ॥ पिता के घरमें कन्या जब रजस्वला होय तब से लेके तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै तीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण पति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक रोग न होवैं तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले नहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्द्रहवें वा १४

चौदहवें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला होजाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करेंगे तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित है और जब सोलहवें वर्ष रजस्वला होय तो १६ वा २० बीसवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज निकलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है इस्से रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है जो जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या यह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा उनको क्लेशही होता है इसलिये वह बात मिथ्याही है जन्मपत्र मिलाने का बुद्धिमान् लोग सत्य कभी न जानें इसमें प्रमाण भी है॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांतस्मै कन्यान्दद्याद्यथाविधि॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा वर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट सम्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों तुल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है॥ काममामरणात्तिष्ठेद्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि। नचैवैनाम्प्रयच्छेत्तु गुणहीनायकर्हिचित्॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवै अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करै तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करै यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या तत‌ऊर्द्ध्वं रजस्वला १। माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच । त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौरवर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उस्से विवाह कैसे हो सकेगा वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड़ पदार्थ है उस्से विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है यह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जांयगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इस्से उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको बिवाह का फल न होता होगा इस्से उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्य्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इस्से इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इस्से इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इस्से इसका नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार से श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं ॥ ब्रह्मोवाच । एकयामाभवद्गौरो द्वियामाचैवरोहिणी । त्रियामातुभवेत्कन्या ततऊर्द्ध्वं रजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्राताततथानुजः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानैं वही श्रेष्ठ होय तो जैन यसूमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं उनी को मानना चाहिये व हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इससे हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों के मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्तही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इससे विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इससे क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरुवाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, वसिष्ठउवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठिरउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्यनारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायी लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरवउवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो दृष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इन्हों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवे उससे विना परिश्रम से धन आवे और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्त्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना वृथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना हथाही है और जैसे मेरे श्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानैं इससे क्या आया कि मरण तक भी कन्या विवाह के बिना घरमें बैठी रहै तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का विवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर विवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का विवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इससे दोनों का परस्पर विचार करके वर और कन्या का विवाह करैं क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हीं को सुख और दुष्ट विवाह से उन्हीं को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के विचार और प्रसन्नताही से विवाह होना चाहिये विवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितही है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इससे बहुत राज्य नष्ट होगये और वश्य लोगों का भी विवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों को मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इससे धन का नाश विवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से विवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ विवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत विवाह करना उचित नहीं क्योंकि विवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इससे एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इस्से विवाहिता उसके साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तानहो की इच्छा करै अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं ॥ संतुष्टोभार्ययाभर्त्ता भर्त्रा भार्यातथैवच । यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम् ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहेंगे तो यह दोष आवेगा ॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत् । अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंनप्रवर्त्तते ॥ १ ॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम् । तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते ॥ २ ॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष को अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनं नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच ॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥ १ ॥ यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः । यत्रैतास्तुनपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः ॥ २ ॥ शोचन्तिजामयोयत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम् । नशोचन्तितुय

चैता बहु तेतद्भिरुर्वदा ॥ ३ ॥ जामयोयानिगेहानि शयन्त्यप्रति-पूजिताः । तानिकृत्याहतानीव विनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मा देताःसदापूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं स-त्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झाल्लरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवेद्यादिक षोडशोप-चारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों की ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जानै इस से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य विवाहिता स्त्री को तो कैद की नांई

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी बिवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ बिवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा बिचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनको तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके शाप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई बिषदान से कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इससे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५ पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा। पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ बिवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक की पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अनृताहृतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः। सुखस्यनित्यंदातेह परलो

केचयोषित: ॥ २ ॥ वेद मन्त्रों से जिस पुरुष से विवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इस्से विवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै। सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया। सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उन्हको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नोकर इत्यादिकों पर सब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवै उसके पास पाक करने समय बैठ कै शिक्षा करै जैसो पाक की रीति वैद्यकशास्त्र में लिखी है उस रीति से पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना होय उस को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति से अर्थात् जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै उस में जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति को समझा देवैं और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरुष के आधीन रहै परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं घर इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्मही से धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नही अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढ़ी होवै उसको सदा पढ़ावैं और

बिचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा बिद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ेंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब विद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से व्यभिचार भी न करेंगी बिना व्यभिचार से वे स्त्रीं धन भी न देंगी फिर हम लोगों का व्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन की व्यभिचार और स्त्रीही लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः । पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ४ ॥ बिवाह की जितनी विधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का बिवाह बेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और बिवाह के पहिले गुरौ वास नाम स्त्री लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करैं और गृह कार्य जानने के लिये अवश्य बिद्या पढ़ै अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य बेदों को पढ़ैं अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करैं अन्य यज्ञों को भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो विद्या न पढ़ी वा आप न जानती होगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य को कैसे करेगी बिद्या अन्य के पास होय तो उस बिद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुण ग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम् । वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः ॥ ५ ॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं स्त्री हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और विविध अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवें उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयान्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनानृतंब्रूयादेषधर्मःसनातनः ॥ १ ॥ भद्रम्भद्रमितिब्रूयाद्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह ॥ २ ॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगे वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्री गामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनी बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इस्से ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियबचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चलै उसको उसकी माता कहै कि तू अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हांथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उस्से बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखही होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही बचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस बचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियबचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है स्त्री से और माता पिता की उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवें और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवें उनसे वे पुरुष कहैं कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसीही है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इससे इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै ॥ प्रियंचनानृतंब्रूयात्। और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से धूर्त रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे शुश्रूषु लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

चांद ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों को मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित बैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोंई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नांई कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलगीं रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नांई परमेश्वर ने बनाया है इसी बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बनै फिर जब उस शाक ने बादी की तब रात भर नींद भी न आई और ८

दश बार शौच भी गया उस्से राजा बड़ा शोभित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारो ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइल के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलँगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव बर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी, कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानें कि जो कल शाम को कही थी उसको मानें वा आज के कहे को मानें वाहवा महाराज किस प्रकार के बिवेकी हैं कि बिरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहेंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूंठी वा सच्ची बात कहेंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करैं हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहो तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करै और मूर्खही बना रहै फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी की

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसकी निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं को और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों को सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को श्रेष्ठही पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष की सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि॥ गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वेद्या॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणंचतद्विरोधत्वात् । गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्थात्

यथावत् सत्यभाषण करना स्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों को सदा स्तुति ही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्यबात कहने और सत्याचरण के करने में निन्दा करें तो भी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नताही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों को भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग विरोध भी अत्यन्त करें यहांतक कि मरण की भी अवस्था आजाय तोभी सत्यवचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्टही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नही इसमें यह मनु भगवान का प्रमाण है । नलोकवृत्तंवर्त्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन । इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्त्तलोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका कर्त्ते हैं वैसे आचरण कभी न करै इत्ति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्यही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या वही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषणही करै दूसरा मनु भगवान का श्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि । भद्र है कल्याण का नाम सोतीन बार श्लोक में पाठ किया है इसी हेतु कि कल्याण कारक वचनसदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ट होय और अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आजकाल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से वाद विवाद कर्त्ते२ लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इस से जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्व्वक विवाद छोड़ कर पूछने आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातां धर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवें तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़े। संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंयतोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः। इत्यादिक सब मनुस्मृति के श्लोक लिखेंगे सोजान लेना। संतोष इसका नाम है कि सम्यक प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खैं आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिनपुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवै कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ ही से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्येत कामतः अतिप्रसक्तिञ्चैतेषां मनसासन्निवर्तयेत् ॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवै किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवै और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्यानिचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान् ॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्रही बुद्धि धन और हित को बढ़ाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। किञ्चयथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार कर्ता है तैसे २ उसका विज्ञानबढ़ता जाताहै फिर विज्ञान ही में उसको प्रीति होती है और में नहीं ॥ ४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाशक्तिनहापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन१ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होत्रादिक२ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हें कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान् पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं। योगाभ्यास करै सब शास्त्रों को विचारै ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करै इसमें मनु भगवान का प्रमाण है। एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोजनाः अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया होमे करते हैं बाह्य चेष्टा से नही क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा का परमेश्वर से योग करते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नही ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम करते हैं कितने प्राण में वाणी का होम करते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नही होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्तिही हो जाती है फिर कभी उनको दुःख का संग नहीं होता है इससे उन को बाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ जो

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान ही से ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को करते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है सब क्रिया उन की ज्ञानमूलक ही है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य अडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नही वे अग्नि होचादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करैं क्योंकि उनके करने बिना हृदय शुद्ध नही होगा उन ज्ञानियों की सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवें जिस्से कि कर्मियों की भी बुद्धि बढ़े ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेनवा नकस्यचिद्वसेद्गेहेशक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवै तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहै जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य सत्कार करै ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करै। पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकाञ्शठान् हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाषंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्रांकितादिक बैरागी और गोकुलिये गोसाईं आदिकों का बचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करैं वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करैं वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का वचनसेभी गृहस्थ लोग सत्कार न करैं शठनाम मूर्खों का भी सत्कार न करैं शठ वे होते हैं कि उन्हें बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करैं हैतुका नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी वचन से सत्कार न करैं

बकवृत्ति अर्थात् जैसे वैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवैं और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रसाद में विष भी देदेते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग बचन से भी सत्कार न करैं ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं वैरागी और साधू इत्यादिक उनको साधू न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और कितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और छेत्र करते हैं वे अनुचित करते हैं क्योंकि बड़े धूर्त गांजा और भांग पीनेवाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदाबर्तों से अन्न लेते और छेत्रों मे भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्मही करते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और छेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर संतका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म करते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदाव्रत्त छेत्र करता है उसमे सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहैं तो पाठशाला रचलेवैं उसी में सब दान करैं अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवैं उन को अन्नादिक देवैं और यज्ञ करैं तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेदविद्याव्रतस्नानात् श्रोत्रियानगृहमेधिनः । पूजयेद्धव्यकव्येनविपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिनों ने ब्रह्म चर्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य औ कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करें उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करें। ११ ॥ शक्तितोपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्योनुपरोधतः॥ १२ ॥ जो सन्यासी समस्त विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन की भी गृहस्थ लोग सेवा करें और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवै उनका भी गृहस्थ लोग पालन करें ॥ १२ ॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोपि स्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयने चैवनशयीततयासह ॥ १३ ॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेक चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करै और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवै ॥ १३ ॥ रजसाभिलुप्तांनारींनरस्यह्युपगच्छतःप्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रहीयते ॥ १४ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम करता है उसको बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उस्से पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुध्यादिक नष्ट हो जाते हैं॥ १४॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभिलुप्ताम् प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रवर्द्धते ॥ १५ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं ॥ १५ ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्तेबुध्येतधर्मार्थौचानुचिन्तयेत् कामक्लेशांश्चतन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेवच ॥ १६ ॥ एक पहर रात जब रहै तब सब मनुष्य उठें उठके प्रथम धर्म का विचार करें कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करें कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हों उनका औषध पथ्य और निदान का इस्से यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर को प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करैं फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करैं अथवा खैर के चूर्ण वा सूंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मलै और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घरमें आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़ै तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभमें तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करैं ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोनेसे रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उस्से सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इस्से ग्रीष्म ऋतुमें सोने से रोग नहीं होता है अन्यऋतु में सोनेसे होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सबकार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होच करै जब २ अग्निहोच करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा भ्रमण करै निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दोप्र-हर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसेही नित्य क्रिया करै सो मध्यराचि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने २ शय्या में पृथक् २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जायगे क्योंकि उस्से बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इस्से उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के वचन का प्रमाण है। भोजनंहिगृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिन-स्मृतम् ॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिय सायं और प्रातः काल जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिःअहरहःसंध्यामुपासी-तअहरहरग्निहोचंजुहुयात् । इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातः काल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोच करै दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कहीं नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायं काल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इस्से मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सक्ती । संध्यायन्तिपरंतत्त्वंनामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या । इस समय परमेश्वर का ध्यान कर्ते हैं इस्से इसका नाम संध्या है अ-थवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दोई हैं । तस्मादहोराचस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत ॥ यह

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करें जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी वहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्यउदय होकर ऊपर२ विहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि की नांई अन्धकार हो जाता है विना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नही देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसही जीव के ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों संध्याकाल में करैं इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलंभद्रमश्नुते। इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या निकलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं। नतिष्ठतितुयःपूर्वान् नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्। ससाधुभिर्वहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः॥ १॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्। पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ २॥ जो प्रातः और सायम् काल को संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवैं अर्थात् यज्ञोपवीत को तोड़ के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवाही करै जो कि शूद्र का कर्म है॥ १॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या के काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से लेके जब तक तारा न निकलैं तब तक सायं सन्ध्या के काल का नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका कहा है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्यान संध्या क्यों न होय तो उनसे पूछना चाहिये कि मध्य रात्रि में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो क्षण में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या हो जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इस्से उसका कहना मिथ्याही है ॥ २ ॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यनृतंधनम्। हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते ॥ ३ ॥ जो नर अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका धन भी अनृत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसारत अर्थात पर पीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार में सुख को कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ३ ॥ नसीदन्नापिधर्मेण मनोऽधर्मेनिवेशयेत्। अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम् ॥ ४ ॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से भी बहुत दुःख पावै तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्योंकि अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश हो जाता है ऐसा देखने में भी आता है इस्से मनुष्य अधर्म करने की इच्छा कभी न करै ॥ ४ ॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलतिगौरिव। शनैरावर्त्तमानस्तु कर्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ ५ ॥ जो पुरुष अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो शीघ्र न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उसको सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में देती है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ जब अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात सुख

के कारणों को छेदन कर देगा इस्से वे दुःख सागर में गिरेंगे॥ ५ ॥ अधर्मेणैधतेतावत्ततोभद्राणिपश्यति । ततःसपत्नान्जयति समूलस्तुविनश्यति ॥ ६ ॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है ॥६॥ इस्से किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु । सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचेचैवारमेत्सदा । शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः ॥ ७ ॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करैं तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत् धर्म से शिक्षा करैं और वाणी बाहु उदर इनका संयम करैं अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खैं ॥ ७ ॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः । नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः ॥ ८ ॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करै अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्ष्या कभी न करै और कर्मही परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी बुद्धि सदा रक्खै ॥८॥ येनास्यपितरोयाताः येनयाताःपितामहाः । तेनयायात्सतांमार्ग-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ६ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पितामह गये हों उसी मार्ग से आप भी जावे उस मार्ग पर जाने से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभी नहीं पाता पूर्वपक्ष यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय तो भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं उत्तर नहीं क्यों कि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है कि यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात् धर्मात्मा होवें तो उन की रीति से चलना और यदि अधर्मी होवें तो उनकी रीति से कभी न चलना चाहिये ॥ ६ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः॥ १० ॥ मातापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विवादंनसमाचरेत्॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थात मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतुर, नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबधी अर्थात श्वसुरादिक, वान्धव अर्थात कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थात स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इनसे विवाद कभी न करै और औरों से भी विवाद न करै विवाद का करना दुःख मूलही है इससे सज्जनों को किसी से विरुद्ध बाद करना न चाहिये ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रवर्जयेत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्रह लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग देते भी होंय तो भी किसी से दान न लेवै किंतु अध्यायन नाम पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परीश्रम से आजीविका को करै और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उसका ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशामदी होजायगा इससे दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज-

ति॥ १३॥ जो पुरुष तपस्वी और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसीदान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी॥ १३॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम्। दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच॥ १४॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा वकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवे और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवे जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक मे उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा॥ १४॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन्। तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ॥ १५॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ के उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के बिना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इसे परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और वकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है॥ १५॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः। वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः॥ १६॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः। शठोमिथ्याविनीतश्चवकव्रतचरोद्विजः॥ १७॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात् धर्म तो कुछ न करै, अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़ै खाने में भी लोभ करै और बड़ा कपटी छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करै अर्थात् जैसे कि संप्रदायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण करने से बैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है तथा रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और सब पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादिक नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती है इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों को गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इस्से दुःख और बन्धन तो होहोगा और मुक्ति कभी न होगी किंतु धर्माचरण विद्या और ज्ञान इनके विना मुक्ति कभी नहीं होसक्ती हिंस्रः नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने में नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थात् अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खै सो मेल धर्म से नहीं किन्तु अधर्मही से धनादिक हरण करने के लिये प्रीति करै उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक का लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टि नाम नीचे देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान् है नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उसके बदले में दस कठिन बचन भी उसको कहै तो भी उसकी शान्ति न होय उस्को नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थात अपने स्वार्थ साधन में ही तत्पर अर्थात् किसी को पीड़ा तथा हानि होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थात मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उपदेश न मानैं उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय तथा नम्रता करै सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे लक्षण वाले को वकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे बक नाम बकुला जल

के समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को देखता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस को उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं वे दूसरे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिस पर उनको कभी दया नहीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक संप्रदाय वाले हैं इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और सब वैसेही होते हैं इससे गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करें १७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते। वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इससे सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥ धर्मंशनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः। परलोकसहायार्थं सर्वभूतान्यपीडयन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती है वैसेही मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्मही के सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः। नपुत्रदारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते। एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता है तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है तो एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एकही करता है इसमें संग किसी का नहीं इस्से सब मनुष्यों को यह उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पालन धर्मही से जितना धनादिक मिले उतनेही से व्यवहार और पालन करें अधर्म से कभी नहीं क्योंकि ॥ एकःपापानिकुरुते-फलंभुङ्क्तेमहाजनः । भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्तादोषेणलिप्यते ॥ यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पितादिक सुख के भोग करने वाले तो हो जायंगे परंतु दुःख जो पाप का फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया वही पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं ॥ २१ ॥ मृतंशरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ । विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ २२ ॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है तब काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक के चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवी में डाल के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बी लोग चले आते हैं कुछ सहायता नहीं करते ॥ २२ ॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसंचिनुयाच्छनैः । धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम् ॥ २३ ॥ तिस्से नित्यही सहाय के लिये धीरे २ धर्मही का संचय करें क्योंकि धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणादिक दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् परमेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से होती है अन्यथा नहीं ॥ २३ ॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्बिषम् । परलोकन्नयत्याशुभास्वन्तंखस्वशरीरिणम् ॥ २४ ॥ जिस पुरुष को धर्मही प्रधान है अधर्म में लेशमात्र भी जिसकी प्रवृत्ति नहीं

तथा तप जो धर्म का अनुष्ठान है और पाप का त्याग इससे जिस का पाप नष्ट होगया है उसको वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर देता है वह किस प्रकार का शरीरवाला होता है भास्वन्त अर्थात तेजोमय वा ज्ञान युक्त, और आकाशवत् अदृष्ट, अच्छेद्य काटने वा दाह करने में न आवै ऐसा उसका सिद्ध शरीर होता है जैसा कि योगियों का ॥ २४ ॥ दृढ़कारीमृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन्। अहिंस्रोदमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गंतथाव्रतः॥ २५ ॥ म० दृढ़कारी अर्थात् जो कुछ धर्म कार्य अथवा धर्म युक्त व्यवहार को करै सो दृढ़ही निश्चय से करै और मृदु अर्थात अभिमानादिक दोष से रहित होय दान्त अर्थात जितेन्द्रिय होय और क्रूराचार अर्थात् जितने दुष्ट हैं उनका साथ कभी न करै किन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंही का संग करै दम अर्थात जिसका मन वशीभूत होय दान अर्थात वेद विद्या का नित्य दान करना और अहिंस्र अर्थात किसी से वैर बुद्धि नहीं ऐसाही लक्षणवाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होता है अन्य नहीं॥ २५ ॥ वाच्यर्थानियताःसर्वे वाङ्मूलावाग्विनिःसृताः। तांस्तुयःस्तेनयेद्वाचं ससर्वस्तेयकृन्नरः॥ २६ ॥ जिस पुरुष को प्रतिज्ञा मिथ्या होती है अथवा जो मिथ्या भाषण कर्त्ता है उसने सब चोरी करली क्योंकि वाणीही में सब अर्थ निश्चित रहते हैं केवल बचनहीं व्यवहारों का मूल है उस वाणी से जो मिथ्या बोलता है वह सब चोरी आदिक पापों को अवश्य कर्त्ता है इससे मिथ्या भाषण करना उचित नहीं॥ २६ ॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सिताःप्रजाः। आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम्॥ २७॥ जो सत्पुरुषों के श्रेष्ठ आचार के करने से आयु, श्रेष्ठ, प्रजा और अक्षयधन प्राप्त होते हैं और पुरुष में जितने दुष्ट लक्षण हैं वे सब सत्पुरुषों के आचरण

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इससे श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः। दुःखभागीचसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८ ॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीही रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादिक शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इससे दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत्। यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन हों उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखंसर्वमात्मवशंसुखम्। एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपही हैं और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है सो जान लेवैं ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंननियमान्केवलान्बुधः। यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन करैं वे नियम ये हैं। शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानियमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलस्य से दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठान अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै ये अर्थ व्यवहारों की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की रीति

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर की शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त की शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है क्षुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंद्वों को सहै और कृच्छ, चांद्रायणादिक व्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ॐकार के अर्थ का विचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर की प्राप्ति के फल की इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उसके साथ गौण नियमों का भी करनाही उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् विवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करैं यह जितनी विद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करैं विवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदें उनका परस्पर यथायोग्य विवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करैं और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवैं और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से विवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर विवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी जाने जायगे बलादिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस्से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस्से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक वृद्धा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस्से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस्से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और बर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आज

काल कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इस्से दरिद्र होजाते हैं धन के नाश होने से दरिद्र लोग विवाह करने में बड़ा दुःख पाते हैं बहुत कन्या वृद्ध होजाती हैं और विवाह के बिना वृद्ध होके मर भी जाती हैं इस्से इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना उचित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के साथ एक पुरुष विवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय तो एक के मरने से वे सब स्त्री विधवा होजाती हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये और जो विधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में विधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इस्से विधवाओं का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इस्से बहुत अनर्थ होते हैं इस्से इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था होय तब विवाह होना चाहिये जिस्से कि विधवा भी बहुत न होंगी फिर जब कोई विधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय उस्से विधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से जब जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब के श्रेष्ठ मनुष्य विधवा स्त्री के पास जाके उससे पूछें कि तेरी क्या इच्छा है जो वह विधवा कहै कि मेरी इच्छा न सन्तान और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चान्द्रायणादिक व्रत तथा परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन न करै और जो विधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

होगा तब सब पुरुषों के साम्हने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रहण करले उस्से एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इसमें ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विना-कुहाभिपित्वङ्करतःकुहोषतुः कोवांशयुत्राविधवेवदेवरंमर्य्यंनयो-षाकृणुतेसधस्थआ। इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरुष ये दोनों के प्रति प्रश्न की नांई कहा है आप दोनों दोषा अर्थात रात्रि कुह नाम कौन स्थान में बास करते भये और किस स्थान में अश्वि नाम दिवस में बास किया था किस स्थान में इन दोनों ने अभिपित्वं अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की थी इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुत्रा नाम शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त भया और इस्से यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष का वियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और सब देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे विधवा देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश में बास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर को सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके रमण और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वेदमन्त्र से पूंछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिखा है कि॥ देवरःकस्मात्द्वितीयोवरउच्यते। देवर अर्थात विधवा को जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को देवर कहते हैं इस निरुक्त से बर का बड़ा भाई अथवा छोटा भाई वा और कोई भी बिधवा का जो दूसरा बर होय उसी का नाम देवर आया इस मन्त्र से विधवा का नियोग अवश्य करना चाहिये यह अर्थ आया और मनुस्मृति में भी लिखा है॥ देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधिगन्तव्या-सन्तानस्यपरिक्षये॥ १॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर वा

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उस्से विधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करै परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि । एकमुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्ते स्त्रीषुतद्विदः । अनिर्वृत्तंनियोगार्थम्पश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीड़ासक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है उस्से नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि । गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेयातांपरस्परम् ॥ ४ ॥ विधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो विधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नाईं मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवें तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुंबियों के साम्हने दोनों कह देवें कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियुक्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः । तावुभौपतितौस्यातांस्नुषागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों विधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करें तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करें ॥ ५ ॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ विधवा का नियोग कभी न करें अपने कुटुम्बही में करें जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करेंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल को भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करें क्योंकि इसके विना विधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे ॥ ५ ॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के विना अर्थात दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करें तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का विधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥ ७ ॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ विवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों विधान करें ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाविधि विधवा से देवर विवाह करके

परस्पर ऋतु २ में एक २ बार समागम करैं परंतु वह स्त्री शुक्लवस्त्र धारण करै परंतु जिसका श्रेष्ठ आचार होय उसी का तो और दुष्टाचार वाले का नहीं ८ साचेदक्षतयोनिः स्याद्गतप्रत्यागतापि वा पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति॥ ९। जो स्त्री अक्षतयोनि अर्थात विवाह तथा जाने आने मात्र व्यवहार तो हुआ हो परंतु पुरुष से समागम न भया होय तो पौनर्भव पुरुष अर्थात विधवा के नियोग से जो उत्पन्न भया होय उसके साथ उस विधवा का विवाह ही होना उचित है ॥ ९ ॥ यह विधवानियोग का प्रकरण पूरा हो गया जो विधवा नहीं है और किसी प्रकार का आपत्काल है उनके लिये ऐसा विधान है कि जिसका पति परदेश चला जाय और समय के ऊपर न आवै उस स्त्री के लिये इस प्रकार का विधान शास्त्र में है और पुरुष के लिये भी है। प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः। विद्यार्थं षट् यशोर्थं वा कामार्थं त्रींस्तु वत्सरान्॥ १० ॥ जो पुरुष स्त्री को छोड़ के परदेश को जाय और जो धर्म ही के लिये गया हो तो आठ वर्ष पर्यन्त स्त्री पति की मार्ग प्रतीक्षा करै, और जो उस समय वह न आवै तो स्त्री पूर्वोक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति करै, और जो पति बीच में आ जाय तो नियोग छूट जाय जिस्से विवाह किया गया था उसी के पास स्त्री रहै और किसी उत्तम विद्या पढ़ने वा कीर्ति के लिये गया होय तो छः वर्ष तक परीक्षा करै तथा काम वा धन के लिये गया होय कि मैं धन लाके खूब विषयभोग करूंगा उसकी तो तीन वर्ष तक स्त्री प्रतीक्षा करै फिर उक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति कर लेवै ॥ १० ॥ संवत्सरं प्रतीक्षेत द्विषन्तीं योषितं पतिः। ऊर्ध्वं संवत्सरात्त्वेनां दायं हृत्वा न संवसेत्॥ ११ ॥ जो दुष्टता करके स्त्री प्रतिकूल हो जाय अर्थात अपने पिता वा भाई के पास रुष्ट होके चली जाय तो पति एक वर्ष पर्यन्त राह देखै फिर दाय अर्थात जो कुछ स्त्री को गहना आदिक दिया था उसको लेके उसका सङ्ग न करै अर्थात दूसरा विवाह कर लेवै॥ ११ ॥ मद्यपासाधुवृत्ता च प्रतिकूला च या भवेत्। व्याधिता वाधिवेत्तव्या हिंस्रार्थघ्नी च सर्वदा ॥ १२ ॥ जो स्त्री मद्य पीती होय तथा विपरीत होके चलै कि

आज्ञाकोनमानैव्याधिनामरोगयुक्तहोजाय वाविषादिकदेकेकोई मनुष्यकोमारडालै औरघरकेपदार्थोंकोसदानाशकर्त्तीहोय तो उसस्त्रीकोछोड़केदूसराविबाहकरलेवै ॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेद्याऽब्देदशमेतुमृतप्रजा। एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रियवादिनी॥१३॥ विबाहकेपीछे८आठवर्षतकगर्भनरहै, औरवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे परीक्षाभीकरले फिरअष्टमेवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्याका यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरै औरजिसकेसंतानहोकेमर जांय औएकभीनजीयेतो१०मेवर्षदूसराविबाहकरलेवै औरउसको अन्नवस्त्रादिकदेवै औरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवैं पुत्रएकभीनहो यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविबाहकरले औरउसस्त्रीकापालनकरै जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोलै तोउसकोशीघ्रहीछोड़केदू-सराविबाहकरलेवै १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउसको छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरले औरएकयहभीव्यवहार है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थातरोग सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगयाहोय तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्बलकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवै परन्तुधर्मसे व्यभिचारसेनहीं इसीप्रकारसे१२पुत्रमनुस्मृतिमेंलिखेहैं जिसकोदे खनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवैनियोगमेंऔरक्षेत्रजादिकपुत्रोंकेहो-नेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगदऔरविचित्रवीर्य दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपुत्रउ-त्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीनपुत्र सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्टिर,भीम,अर्ज्जुन,नकुलऔरसह-देवयेपांचऔरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसिद्धहै, इस्सेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकीरीति और युक्तिसेठीकरहै इसमेंसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं पूर्वपक्ष औरस्मृतिकेश्लोकक्योंनहीलिखे उत्तरपक्षअन्यस्मृतियोंका वेदोंसे विरोध औरबेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकीकिई

भीकोईस्मृतिनहीं सिवायमनुस्मृतिके ॥ यद्वै किञ्चनमनुरवदत्त-
द्भेषजंभेषजतायाः । यहछांदोग्यउपनिषद्कीश्रुतिहै इसकायह
अभिप्रायहै किजोकुछमनुजीनेउपदेशकियाहै सोयथावतवेदोक्त
है औरसत्यहीहै जैसेकिरोगकेनाशकरनेकाऔषधवैसाहीहै यह
एकमनुस्मृतिहीकावेदमेंप्रमाणमिलताहैऔरकिसीस्मृतिकानहीं
औरसबलोगोंकोभीयहबातसम्मतहै ॥ किवेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्रा-
धान्यंहिमनोस्मृतम् । मन्वर्थविपरीतायासास्मृतिर्नप्रशस्यते ॥
इसश्लोकके सबपंडितलोगकहतेहैं किमनुस्मृतिके अनुकूलजोस्मृति
उसकोमाननाचाहिये औरउससेविरुद्धकिसीस्मृतिकानहीं सोएक
बातमें तोपंडितोंकीऔरमेरीसम्मतहोगई परन्तुएकबातमें विरो-
धहोताहै किमनुकेअनुकूलस्मृतियोंकोवेमानतेहैं औरमैंनहीं
मानता क्योंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलतोतबकोईस्मृतिहोगीजबमनु-
स्मृतिकेअर्थहीकोकहै फिरमनुजीनेतोवहअर्थकहदियाहै उसका
कहनादूसरीबारव्यर्थहै, क्योंकिपीसेभयेपिसानकाजोपीसना सो
व्यर्थहीहोताहै औरमनुस्मृतिमें जोउपदेशकरनाथा सोसबकर
दियाहै कुछबाकीनहींरक्खा इससेभीअन्यस्मृतिकाहोनाव्यर्थहीहै
इसबातकोपंडितलोगविचारकरलेवैं तोबहुतअच्छीबातहै और
महाभारतमेंभीजहां२प्रमाणलिखा तहां२मनुस्मृतिहीकालिखा
और किसीस्मृतिका नहीं इससे जानाजाताहै किमनुष्योंने ऋ-
षियोंकेनामप्रमाणकेवास्ते लिख २ के जालअपनेप्रयोजनकेवास्ते
बनालियाहै औरजोयहबातकहतेहैं कि कलौपाराशरीस्मृतिः ।
सोतोअत्यन्तअयुक्तहै क्योंकिद्वापरकेअन्तमें व्यासजीने मनुस्मृति
काहीप्रमाणलिखा सोक्योंलिखा शङ्कराचार्यजीनेभीमनुस्मृतिका
हीप्रमाणलिखाहै औरजोसत्यबातहैउसकासबदिनप्रमाणहोता
है इसमें कुछशङ्कानहीं इससे जोपुरुषकहतेहैंकिकलौमें पाराशरी
स्मृतिकाप्रमाणहैसोमिथ्याबातहै औरपाराशरीस्मृतिकेआरंभमें
यहबातलिखीहैकिऋषिलोगोंनेव्यासजीकेपासजाकेपूछाआपहम

सेवर्णाश्रमयथावत्कहैं तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्वर्णाश्रमधर्मोंकोनहींजानता इसमेंमेरेपिताजोपाराशरउनसेचलके पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्कहेंगे फिरउनकेपासजाकेसबलोगोंने प्रश्नकिया औरपाराशरजीउनसेकहनेलगे उसमेंहीपाराशरजीने कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्यास जीवेदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहींजानतेथे किन्तुअवश्यहीजानतेथे औरपाराशरअपनेमुखसेकैसेकहेंगे कि कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐसे२ अयुक्तश्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभीनकरै जैसे कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौःपूज्यानचदुग्धवतीखरी॥१॥ अश्वालम्भङ्गवालम्भंसंन्यासंपलपैतृकम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत्॥ नष्टेमृतेप्रव्रजितेक्लीबेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ३॥ इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रेष्ठ कैसेहोगाकभीनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्श्रेष्ठकर्मकरनेवाला पुरुषहै सोश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तुकभीनहोगा औरगायतोपशु है, सोपशुकीक्यापूजाकरनाउचितहै कभीनहीं किन्तुउसकीतो यहीपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभीदुग्धादिकप्रयोजनकेवास्तेअन्यथानहीं औरगधीकीभीपूजावैसीही होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्ते करताहीहै॥ १॥ औरदूसराश्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेध गवालम्भनामगोमेध औरसंन्यासग्रहण औरमासकापिण्डदान औरविधवासेदेवरके नियोगसेपुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनकात्याग कभीनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इसके कहनेसेअजामेधादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेधका जोकरनाउससेबड़ासंसारकाउपकारहै सोपहिलेकहदिया और संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदिक

उस्से तोसंसारकीबड़ीहानिहोतो इस्से संन्यासकाहोनाअवश्यहै, औरमांसकेपिण्डदेनेमेंतोकुछपापनही क्योंकि यदन्ना:पुरुषालो-केतदन्ना:पितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै। मधुपर्के-तथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्मणि। अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्म-नुः। २ ॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थातपितृ-देवपूजाभीउसीसेकरै अर्थातश्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्क बिवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांस कोजोखाताहोय तोउसकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका बिधान है इस्से मांसकेपिण्ड देनेमेंभीकुछपापनहीं देवरवाज्ये एसे नियोग काविधिलिखदिया सोवहीजानलेना कलिमेंपाचोंकोनकरनासो यहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्री दूसरापतिकरले फिरजोपूर्वबिवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ा बखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्यावेआधी २ स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाक-हनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालसेछूटहीआपत्आवै गीतावहस्त्रीक्याकरैगीइस्सेयतीनोंश्लोकमिथ्याहीहैंवैसेहीपाराश-रीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतश्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसामनुस्मृति हीकाहै इस्से पाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहै इस्से मनुस्मृति कोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया जबजिसदिनस्त्री रजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उन मेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवां दिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थात सोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहै उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवां और१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीके शरीरकोधातु स्वस्वभावसेतुल्यवर्तमानरहतीहैं और५वां,७वां

और९वां येतीनदिनमध्यमहैं क्योंकिउसदिनस्त्रीकेधातुओंकाअधिकबलहोताहै सोपहिले ४ चार दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय:पुत्रहीहोगा अथवा कन्या होगी तो श्रेष्ठही होगी औरजो तीन दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय: कन्या होगी औरनपुंसकभीहोजायतोआश्चर्यनहीं इस्से ४चारदिनअथवा७सातदिन वीर्य्यदानकेउत्तमऔरमध्यमहैं, अन्यदिनमेंसमागमकरेगा तो क्षीणबलसन्तानहोगा इस्से ११ग्यारहवांवा१३तेरहवांअमावस्या औरपौर्णमासीइनमें वीर्यदानकरेगातोवीर्यनष्टहोजायगा और जोसन्तानहोगासोभीनष्टहोगा रोगकेहोनेसे क्योंकिउनदिनोंमें स्त्रीकीधातुविषमहोजातीहैं एक २ मासमेंस्त्रीस्वभावसेरजस्वला होतीहै, सोउसप्रकारकेसोलहदिनकेपीछेस्त्रीकासमागमकभीन करै क्योंकिमिथ्यावीर्यनष्टहोगा औरगर्भकभीनरहेगा इस्से मिथ्यावीर्यकानाशकभीनकरनाचाहिये जिसदिनसेगर्भहोवैउसदिन सेलेके एकवर्षतकस्त्रीकात्यागकरनाअवश्यचाहिये क्योंकिगर्भका नाश औरपुरुषकाबलभीनष्टहोजाताहै इस्से एकवर्षतकत्यागअवश्यकरनाचाहिये जोपुरुषपरस्त्री अथवावेश्या गमनसे वीर्यनाश कर्तेहैं वेबड़ेमूर्खहैं क्योंकिउनकावीर्यमिथ्याहीजायगा औरबड़े रोगहोंगेजोकभीगर्भरहेगातोभीउसकोकुछफलनहीं क्योंकिजिसकीस्त्रीहै उसीकासन्तानहोगा औरवीर्यदेनेवालेकानहीं और वेश्यासेजोपुत्रहोगा सोभडुवाहीहोगा औरजोकन्याहोगी तो वहवेश्याहीहोगी इस्सेवीर्यदेनेवालेंकोकुछलाभनहीं सिवायहानि केऔररोगभीउनकोबड़े २ होतेहैं जिस्सेकीबड़ादु:खपातेहैंक्योंकि जबपरस्त्री गमनकोइच्छाकर्ताहै अथवाजिसवक्तसमागमकर्ताहै, तबउसके हृदयमेंभय,शंका औरलज्जापूर्णहोतीहै किइसकर्मको कोईनजानैं जोकोईजानेगातोमेरीदुर्दशाहोजायगी एकतोयहअग्नि,दूसरामैथुनकाअग्निऔरतीसराचिन्ताग्नि किरातदिनउसी चिन्तासेजलताजायगा येतीनोंअग्निसेउसकीधातुसबदग्धहोजा-

तीहैं इस्से महारोगीहोकेमरजाताहै औरयहबड़ापापभीहै इस्से
मनुष्यवास्त्रीअल्पायुहोजातेहैं औरजोवेष्यागमनकर्ताहै कुत्ताकी
नांईवहपुरुषहै क्योंकिजैसेकुत्तासबकाजूंठ औरछांटकियेअन्नको
खालेताहै उसकोघृणानहींहोती वैसेहीघृणाकेनहोनेसेसज्जनलोग
उसपुरुषकोकुत्तेकेनांईजानैं औरजोव्यभिचारिणीस्त्री औरवेष्या
उनकोभीकुत्तीकीनांईजानैं क्योंकिइनकोभीघृणानहींहोतीहै और
देखना चाहिये किमालीऔरखेतीकरनेवालेलोग अपनेबागमें
औरअपनेहीखेतमेंदृक्षवाअन्नबोतेहैं अन्यकेबागवाक्षेत्रमेंनहीं ये
मूर्खभीहैं तौभीपराएबागवाखेतमेंकभीकुछनहींबोतेऔरजोलौंडे
बाजीकरतेहैं वेतोसूवरवाकौवेकीनांईहैं क्योंकिजैसेसूवर वा कौवे
विष्टासेबड़ीप्रीतिरखतेहैं औरअरुचिकभीनहींकरतेवैसेवेभीपुरुष
विष्टाजिसमार्गसेनिकलतीहै उसमार्गमेंबड़ीप्रीतिरखतेहैं, इस्से
इसप्रकारकेजोमनुष्यहैंवेमूर्खसेबढ़करहैं किवीर्यजोसबवीजोंसेउ-
त्तमबीजहै उसकोव्यर्थनष्टकरतेहैं औरकेवलपापहीकमातेहैं जो
युक्तिसेवीर्यकेरखनेमेंसुखहोताहै उतनासुखलाखवक्तस्त्रीकेसमा-
गमसेभीनहींहोताऔरजब४८वा४४वा४०वा३६वर्षतकब्रह्मचर्या-
श्रमसेवीर्यकोरचाकरैं फिरजबपूर्णबलशरीरमेंहोजायऔरस्त्रीभी
ब्रह्मचर्य्याश्रमकरकेपूर्णयुवतीहोजाय तबजोउनदोनोंकोएकबार
विषयभोगमेंसुखहोताहै सोबाल्यावस्थामेंविवाहकरनेसेलाखवक्त
समागममेंभीसुखनहींहोता औरसंतानभीरोगयुक्तनष्टभ्रष्टहोते
हैं जोब्रह्मचर्याश्रमकरनेवालेकेसन्तानहोंगे तोबड़े सामर्थ्यवान्
धनवान्शूरवीरविद्यावान्औरसुशीलहोहोंगे इस्से बारंबारलि--
खनेकायहीप्रयोजनहै किब्रह्मचर्याश्रमतथाविद्याकेविनामनुष्यश-
रीरधारनाहीनष्टहै सदाधर्मयुक्तपुरुषार्थसेविद्या,धनतथाशरीर
औरनानाप्रकारकेशिल्प इनोंकीदृद्धिहीकरनीउचितहै औरस्त्री
लोगोंकेछ दूषणहैं उनकोस्त्रीलोगछोड़दें औरसबपुरुषछोड़ादेवैं।
पानन्दुर्जनसंसर्गःपत्याचविरहोटनम्। स्वप्नोन्यगेहवासश्चनारी-

संदूषणानिषट् ॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किपानं अर्थातमद्यऔरभंगादिकनशाकाकरना दुर्जनसंसर्गअर्थातदुष्टपुरुषोंकासंगहोना पत्याविरहअर्थातपति औरस्त्रीका वियोगनाम स्त्री अन्यदेश में और पुरुषअन्यदेश में रहै अटन अर्थातपतिको छोड़केजहांतहांस्त्रीभ्रमणकरै जैसेकिनानाप्रकारकेमंदिरोंमेंतथा तीर्थोंमेंस्नानकेवास्ते औरबहुतपाखण्डियोंकेदर्शनकेवास्तेस्त्रीका भ्रमणकरना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थातअत्यन्तनिद्राअन्यकेघरमें स्त्रीकासोनाऔरअन्यकेघरमेंवासकरै पतिकेबिनाऔरअन्यपुरुषों केसंगकाहोना येछःअत्यन्तदूषणस्त्रियोंकेभ्रष्टहोनेकेवास्तेहैं किइन छःकर्मोंहीसेस्त्रीअवश्यभ्रष्टहोजायगी इसमेंकुछसंदेहनहीं और पुरुषोंकेवास्ते भीऐसेबहुतदूषणहैं ॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानविविक्तासनोभवत् । बलवानिन्द्रियाग्रामो विद्वांसमपिकर्षति ॥ १ ॥ माताऔरस्वसा अर्थातभगिनी दुहितानामकन्या इनकेसाथभी एकान्तमें निवासकभीनकरै औरअत्यन्तसंभाषणभीनकरै और नेत्रसेउनकास्वरूपऔरउनकीचेष्टानदेखै जोकुछउनसेकहनावा सुननाहोय सोनीचेदृष्टिकरकेकहैवासुनै इससेक्याआयाकिजितनो व्यभिचारणीस्त्रीवावेश्या औरजितनेवेश्यागामीवापरस्त्रीगामीपुरुषहैं उनमेंप्रीतिवासंभाषणअथवाउनकासंगकभीनकरै इसप्रकार केदूषणोंसेहीपुरुषभ्रष्टहोजाताहै क्योंकियहजोइन्द्रियग्रामअर्थात मनऔरइन्द्रियांयेबड़े प्रचलहैं जोकोईविद्वानअथवाजितेन्द्रियवा योगीवेभीइसप्रकारकेसंगोंसेभ्रष्टहोजातेहैं तोसाधारणजोगृहस्थ वामूर्ख वहतोअवश्यभ्रष्टहीहोजायगा इसवास्ते स्त्री वा पुरुषसदा इनदुष्टसङ्गोंसेबचेरहैं औरजोस्त्रियोंकोअत्यन्तबन्धनमेंरखतेहैं यह भीबड़ाभ्रष्टकामहै क्योंकिस्त्रियोंकोबड़ादुःखहोताहै श्रेष्ठपुरुषों कातोदर्शनभीनहींहोता औरनीचपुरुषोंसेभ्रष्टहोजातीहैं देखना चाहिये किपरमेश्वरनेतो सबजीवोंकोस्वतन्त्ररचेहैं औरउनको मनुष्यलोग बिनाअपराधसेपरतन्त्र अर्थातबन्धनमेंरखदेतेहैं। वे

बड़ापापकर्तेहैं सोइसबातकोसज्जनलोगकभीनकरैं यहबातमुसल्मानोंकेराज्यसेप्रवृत्तभईहै आगेनथी कौन्ती,गान्धारीऔरद्रौपद्यादिक,स्त्रियांराजसभामें जहांकिराजालोगोंकी सभाहोती थी औरवातीसंभाषणकरतीथीं अपनेपतिकोपंखा औरजलादिकोंसे सेवाभीकरतीथीं औरगार्गीमैत्रेयीइत्यादिक ऋषिलोगोंकीस्त्रियांभीसभामेंशास्त्रार्थकरतीथीं यहबातमहाभारत औरबृहदारण्यक उपनिषदमेंलिखीहै इसकोअवश्यकरनाचाहिये, मुसल्मानलोगोंकाजबराज्यभयाथा तबजिसकिसीकी कन्या वा स्त्री कोपकड़लेते, औरभ्रष्टकरदेतेथे उसीदिनसेश्रेष्ठआर्य्यावर्तदेशवासीलोगस्त्रियोंकोघरमेंरखनेलगे औरस्त्रीलोगभीमुखकेऊपरवस्त्ररखनेलगीं सोइसबातकोछोड़देनाचाहियेक्योंकिइसव्यवहारमेंसिवायदुःखकेसुखकुछनहींजैसेदाक्षिणात्यलोगोंकीस्त्रियांवस्त्रधारणकरतीहैं वैसाहीपहिलेथा क्योंकिकभीवस्त्र अशुद्धनहीरहता सबदिनजैसेपुरुषोंकेवस्त्रशुद्धरहतेहैं वैसेस्त्रीलोगोंकेभीशुद्धरहतेहैं इससे इसप्रकारकावस्त्रधारणकरनाउचितहै, स्त्रीलोगोंकोपतिकीसेवा औरतीर्थ के स्थानमें सास,श्वसुर इनतीनोंकीसेवाजोहै सोई उत्तम कर्म है और अपने घरका कार्य और धनादिकोंकी रक्षा करना और सबकुटुंबमेंपरस्परप्रीतिकाहोना सबदिनविद्या औरनानाप्रकारकेशिल्पोंकीउन्नतिस्त्रीलोगकरैंऔरपुरुषलोगभीघरमेंकलहनकरैं परस्परप्रसन्नहोकेरहना यहीगृहस्थलोगोंकाभाग्यऔरसुखकीउन्नतिहै यहगृहस्थलोगोंकोशिक्षासंक्षेपसेलिखदिया औरजोविस्तारसेदेखनाचाहै तोवेदादिकसत्यशास्त्रऔरमनुस्मृतिमेंदेखलेवै इसकेआगेवानप्रस्थ औरसन्यासियोंकेविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते चतुर्थः समुल्लासः संपूर्णः॥ ४॥

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवक्ष्यामः। ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृही भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहबृहदारण्यकउपनिषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्यावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहोय औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमें जितनेंश्लोक लिखेंगेवेसबमनुस्मृतिहीकेजानलेउसकेआगेम०ऐसाचिन्हलिखदेंगे। एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः। वनेवसेत्तुनियतोयथावद्विजितेन्द्रियः॥ १ ॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंरहकेस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्य,येतीनों वानप्रस्थहोवें सोवनमेंजाकेवासकरै यथावत्निश्चयकरकेऔरजितेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥ गृहस्थस्तुयदापश्येत्वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत् २ म०जबगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढीलाहोजाय पलितनाम केशश्वेतहोजांयऔरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसबविद्याओंकोपढ़केविवाहकरलेवै फिरजबपुत्रकाभीपुत्रहोय तबवहगृहस्थवनकोचलाजाय॥ २ ॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम् पुत्रेषभार्यांनिक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा॥ ३ ॥ म०ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उनसभोंकोछोड़देऔरअश्वरवस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमात्रलेजाय उसकोभीछोड़दे वनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरखदे अथवास्त्रीजोकहैकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगमेलेकेवनकोदोनों जाय जोस्त्रीकहैकिमैं पुत्रोंकेपासरहूंगी तोउसकोछोड़के एकाकी जाय॥ ३ ॥ अग्निहोत्रंसमादाय गृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्रामादरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः॥ ४ ॥ म० अग्निहोत्रकोसब सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेके ग्रामसेनिकलकेजितेन्द्रियहोकेवनमेंवासकरै॥ ४ ॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैः शाकमूलफलेनवा। एतानेवमहायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम्॥ ५ ॥ म०मुन्यन्न नाममुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंविनाबोए

होतेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धि करनेवालेहं उनसेशाकजो कि पत्रऔरपुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल इनसेपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ वसीतचर्म-चीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा। जटाश्चबिभृयान्नित्यं श्मश्रुलोमन-खानिच ॥ ६ ॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातःकालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधारणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोडशेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते। आद्वाविंशात्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्षमेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछऔरनखकभीनरक्खैं इसमेंयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा॥ ७ ॥ यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्यात्बलिंभिक्षांचशक्तितः। अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागतान्॥ ८ ॥ भ०जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनुकूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें कोईअतिथिआवै उसकाभीसत्कारकरै॥ ८॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तःस्याद्दान्तोमैत्रःसमाहितः। दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्पकः॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसबसेमित्रतारक्खै समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खै अपथ्यकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन लेवै औरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्षपातादिकभीयथावत्करै॥ ९॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित्। नग्रामजातान्यार्तोऽपिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे क्षेत्रमेंजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखरिहानमेंछूटाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूलवाफलउनकोग्रहणकभीनकरै॥१० ॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्व-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ म० अ-
ग्निपक्वाशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावै कालपक्वभुग्अर्थातजोआप
सेऋत्वोंमेंफलपकजांय उनकोखावै अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूटर
के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूसलकीनांई
औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहीहाथसे फलादिकलेके मुखऔर
दांतोसेखालेवै ११॥ सद्यःप्रक्षालकोवास्यात्मासस्संचयिकोपिवा।
षरामासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२ ॥ म० एकतोयह
दीक्षाहैकिजितनेसेअपनानिर्वाहहोयउतनाहीलेआवै दूसरेदिन
केवास्ते नरक्खै दूसरीयहदिक्षाहैकिमासभरकेवास्ते फलादिकों
कासंचयकरलेवै अथवाछ:मासपर्यन्तकासंचयकरलेवै यहतीसरी
दीक्षाहै चौथीदीक्षायहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक ब-
हुतभानप्रस्थकेवास्ते व्रतलिखेहैं १२ ॥ ग्रीष्मेपंचतयास्तुवर्षास्वभ्रा-
वकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमसोवर्द्धयंस्तयः॥ १३ ॥ म०
ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यदशघंटाकेऊपरआवैतबचारोदि-
शाओंमेंअग्निकरदे आपबीचमेंबैठे जबतकतीननबजैतबतकऔर
बर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतकाल
मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्योंकि
विनातपअन्त:करण शुद्धनहीहोता और इन्द्रियोंकाजय भीनहीं
होता इससेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैतानान्-
समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥
२४॥ म० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसबबशीभूतहोजांय तबअग्नि
आहवनीइगार्हपत्यदाक्षिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रकार
का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री और
अग्निहोत्र को सामग्री उनकी बाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकिजि
तनीबाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोजाय
तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रिया
अर्थातयोगाभ्यासऔरबिचारइन्हीकोकरै॥ १४ ॥ अप्रयन्नःसुखा-

र्थेषुब्रह्मचारीधराशयः । शरणेष्वममश्चैवदृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥
भ० शरीरवाइन्द्रियोंकेसुखकीकुछइच्छानकरै किन्तुउनकात्याग
हीकरै औरब्रह्मचारीरहै अर्थातअपनीस्त्रीसंगमेभीहोयतोभीउससे
संगकभीनकरै किन्तु स्त्रीतोबनमेंसेवाकेवास्ते होहै औरभूमिमेंश-
यनकरै शरणअर्थातजहां२रहै अथवाबैठेउसमेंममताकियहमेरा
हीहै ऐसाअभिमान कभीनकरै किन्तुवहांसेकोईउठादे तो उठ
केचलाजाय दूसरीजगहजाकेबैठे क्रोधादिककुछभीनकरै, किन्तु
प्रसन्नहीरहै॥ १५ ॥ तापसेष्वेवविप्रेषुयात्रिकंभैक्षमाहरेत् । गृह-
मेधिषुचान्येषुद्विजेषुवनवासिषु ॥ १६ ॥ बनमेंअन्यजितनेवानप्रस्थ
लोगहोवैं उनसेअपनेनिर्वाहमात्र भिक्षाकरलेअधिकनहीं अथ-
वाब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्ययेतीनोंगृहाश्रमीबनमेंरहतेहोवैं उनसे
अपनेनिर्वाहमात्रभिक्षाकरले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ-
ग्रामान्वनेवसन् । प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा ॥ १७ ॥ भ०
जबदृढजितेन्द्रियहोजाय तोभीबनमेरहे परंतुकभी२ग्राममेंचलाआवै
आवैभिक्षाकरनेकेवास्ते अपनेदोहाथ वाएकहाथमें जोगृहस्थों
कोघरमेंअन्नभयाहोय उसकोप्रीतिसेजितनाकोईदेवैउतनालेलवै
परन्तुआठग्रासमात्रले फिरउसकोलेके बनमेंचलाजाय जहांकि
जलहोय वहांबैठकेआठग्रासखालेअधिकनहीं ॥ १७ ॥ एताश्चा-
न्याश्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन् । विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्ध-
येश्रुती ॥ १८ ॥ भ० ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैवगृहस्थैरेवसेविताः । वि-
द्यातपोविवृद्ध्यर्थंशरीरस्यचशुद्धये ॥ १९ ॥ भ० इनदीक्षाओंकोऔर
अन्यदीक्षाओंकोभीबनमेंरहनाभया वहवानप्रस्थसेवनकरै नाना
प्रकारकीजाउपनिषदोंकोश्रुति उनकोआत्मज्ञानअर्थातब्रह्मविद्या
केवास्तेनित्यबिचारै ॥ १८ ॥ ऋषियोंनेअर्थातयथावत्वेदकेमन्त्रो
केअर्थजाननेवाले औरब्राह्मणोंनेअर्थातब्रह्मविद्याके जाननेवालों
ने औरगृहस्थोंनेअर्थातपूर्णविद्यावाले धर्मात्माओंने जिनश्रुति-
योंका सेवनकियाहोय उनकोनित्ययोगाभ्यास औरज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात योग सिद्धिइनकीवृद्धिके औरशरीरकी शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रियां पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९ सतत्त्वोंके मिलनेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकेशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसांमहर्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम्। वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेमहीयते ॥२०॥ भ० इनमहर्षियोंकीक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रियाको करकेशरीरछूटजाय तोभीवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे छूटके ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकीप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकीप्राप्तिउसे होतीहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषोभागं त्यक्त्वासंगान्परिव्रजेत् ॥२१॥ भ० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रमकोयथावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त वनोंमेंविहारकरकेजब आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७०सत्तरवर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थभाग मेंसबसंगोंका अर्थातस्त्रीयज्ञोपवीत शिखादिकाकोछोड़के परिव्राट् अर्थातसबदेशान्तरमेंभ्रमणकरैकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपातकभी नकरै वहस्त्रीअपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवावनमेंतपश्चर्याकरै ॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछोड़नेसे क्याहोताहै अर्थातइसकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छायज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादिकोंसे द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकीपरीक्षाभीहोतीहै उत्तर किजबसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक वाह्यक्रियां जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रियाकरनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र वाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया और कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकोनहीं फिरयज्ञोपवीतादिकका रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै। प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रव्रजेत्॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकीश्रुति है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें सर्ववेद सवेदसविहलाभे जोरयज्ञोपवीतादिक वाह्यचिन्हप्राप्तहुयेथे उन

सभोंको छत्वानामत्यक्त्वा अर्थात छोड़के ब्राह्मण विद्यात्त। नवाननया वैराग्य इत्यादिक गुणवाला परिव्रजेत् परितः सर्वतः व्रजेत् सब संसार के बन्धनों से मुक्त होके सन्यासी होजाय। लोकैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च पुत्रैषणायाश्चोत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरति। यह बृहदारण्यक उपनिषद की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि लोकैषणा अर्थात लोक को जन निन्दा करै वा स्तुति करै और अप्रतिष्ठा करै तोभी जिसके चित्त में कुछ हर्ष और शोक होय और जितने लोक के विषय भोग हैं, स्त्री धन हर्म्य और चन्दनादिक इनसे उठके अर्थात इनको तुच्छ जानके जो सब हर्ष शोक के देनेवाले हैं वैसे यथावत समझके सत्य धर्म और मुक्ति अर्थात सब दुःखों की निवृत्ति और परमेश्वर की प्राप्ति इन में स्थिर होके आनन्द में रहै और किसी का पक्षपात अथवा किसी से भय कभी न करै वित्तैषणा अर्थात धन की इच्छा और धन की प्राप्ति में प्रयत्न और लोभ कि सुझ को धन अधिक होय और जितने धनाढ्य हैं उनसे धन प्राप्ति के वास्ते बहुत प्रीति करै द्रव्य को बड़ा पदार्थ जानके संचय करना और दरिद्रों से धन के नहीं होने से प्रीति का न करना और धनाढ्यों की स्तुति न करना इन सब बातों का जो छोड़ना उसका नाम वित्तैषणा का त्याग है पुत्रैषणा अर्थात अपने पुत्रों में मोह का करना वा जे सेवक लोग हैं उनसे मोह अर्थात प्रीति करना और उनके सुख में हर्ष का होना और उनके दुःख में शोक का होना उसका पुत्रैषणा नाम है एषणा नाम इच्छा का तीन पदार्थों में होना इन तीनों एषणाओं से जो बद्ध नहीं है वही सन्यासी होता है और पक्षपात रहित भी सन्यासी यथावत् होता है क्योंकि जितने ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ हैं उनको बहुत व्यवहारों के होने से बुद्धिमान होय तोभी भय, शंका और लज्जा कुछ किसी व्यवहार में रहती ही है और जो सन्यासी होता है उसको किसी संसार सबन्धी व्यवहार का करना आवश्यक नहीं वा किसी मनुष्य से शंका, लज्जा, भय और पक्षपात कभी नहीं होता। आश्रमादाश्रमं गत्वा हुतहोमो जितेन्द्रियः। भिक्षाबलिपरिश्रान्तः प्रव्रजन्प्रेत्य व-

द्व्रते ॥ २२ ॥ भ० आश्रमसेआश्रमकोजाकेअर्थातक्रमसेब्रह्मचर्याश्रमादिकतीनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंकोकरके जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदेऔरबलीअर्थातबलीवैश्वदेवकरके परिश्रान्तअत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका सन्यास यथावतबढ़ताजायखंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्ययाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेत्। अनयाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोब्रजत्यधः॥ २३ ॥ भ० तीनऋणअर्थातऋषिपितृऔरदेवऋण इनकोकरके मोक्षके वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरै औरइनतीनोंकोनकरकेजोसन्यास कोइच्छाकर्ताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्तहोता २३ ॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रानुत्पाद्यधर्मतः। इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत् ॥ २४॥ भ० विधिवत्अर्थातउक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थसहित औरअङ्गउपवेद औरछःशास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावत्पढ़ावै, क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋषिऋण है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकेऊपरयह परमेश्वरकीआज्ञा है किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़नाऔरपढ़ाना इसकेविनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्षनष्टहो जाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोशिक्षा धर्मकीविद्यापढने औरपढाने कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनरहै सब श्रेष्ठगुणवालेहोवैंऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै औरजा अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापिताओंनेबालककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तुमूर्खरखना अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभोजानलेना यह दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावत्अग्निहोत्रादिकोंकाअनुष्ठानकरै जिस्सेकिसबसंसारकाउपकारहोय इस्से उसकाभीबड़ा उपकारहै अर्थातपुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंकोउतारके मोक्षअर्थातसन्यासकरनेमेंचित्तदेवैं अन्यथानहीं ॥ २४ ॥ अनधी-

त्यद्विजोवेदानधीत्योत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः॥ २५॥ भ० द्विजअर्थातब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्यवेदोंकोनपढ़के यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरैं अग्निहोत्रादिकयज्ञभीनकरैं फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकीइच्छाकरै सन्यासतोउसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा॥ २५॥ एकबाततोसन्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंसर्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥ २६॥ भ० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावत्निरूपणकरके उसमेंसर्ववेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणामेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्मणअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यासलेलेवै॥ २६॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोमयालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥ २७॥ भ० जोसबभूतोंकोअभयदान अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजोमयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरकभीजन्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्तहोकेरहताहै॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः। समुपोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥ २८॥ भ० आगारअर्थात ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परंतुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तर्मुखमन होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि अर्थात मनन शील सत्य२ बिचार वाला होय और सब कामों कोजीतले कोईकामउसकेमनको अधर्ममेंनलगासके स्थिरचित्त होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिके अपेक्षानहो यतबब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं २८॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेततदहरेवप्रव्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा १ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कोश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उसी दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे औरजब पूर्णविद्याऔरपूर्णवैराग्यऔरपूर्णज्ञान, औरबिषयभोगकीइच्छा कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलेवैतोभीकुछदोषनहीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्वर काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजानाजाताहै औरप्रजाकीहानिमें नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोबिवाहनकरेगा इस्से संसारकीवृद्धि नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतबतक गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पबिद्याओंकोउन्नति करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसेविद्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउचितनहीं क्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोबिद्याकीउन्नतिनहोगी और गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारयेसब नष्टहोजांयगे औरबानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा और सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहोगी पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारको उन्नतिका नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै अन्यथानहीं इसमेंदेखनाचाहिए किब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदिनअवकाशहीनहीरहताऔरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसेचित्त फसाहीरहताहै औरबानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै औरकुछ बिचारभीकर्ताहै जोसन्यासीहोगा वह बिचारकेबिना अन्यव्यवहारहीनरहेगा इस्से पृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकायथार्थबिचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणकरेगा इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुननेसेबड़ालाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २ घरहै वहां २ प्रायः रहगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचितहै परमेश्वरन्यायकारीहै औरबिद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जिसको

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें कितूं विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उससे वैद्यकहैकितूं कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी इच्छानहोय उसकोकोईबलसे कहैकितूं अवश्यभोजनकर तोवह विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगाकिन्तु कभीनकरेगा ऐसेहीजिसको विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंसेकुछप्र- योजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने जैसा राजा वैसीही प्रजा को समझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे किआजकालआर्य्यावर्त्तदेशमेंबहुतसेसंप्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल धूर्त्ततासेपरायाधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों कीबुद्धिनष्टकरदेतेहैंऔरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइससेइनकातोब- न्दहीहोनाउचितहै क्योंकिइनकेहोनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार होताहै ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता । समताचैवसर्वस्मि- न्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥ २९ ॥ भ० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके जड़मेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीसे प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण है ॥ २९ ॥ नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम् । कालमेवप्र- तीक्षेतनिदेशंभृतकोयथा ॥ ३० ॥ भ० जोसन्यासीहोयसोमरने औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरै किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरै जब मरणसमयआवैतबशरीरछोड़दे शरीरसेमोहकुछनकरै जैसाकि छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता है जहांकहैवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरै ॥ ३०॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ ३१॥ म॰ इसका अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकर्णमें लिखनेका यहप्रयोजनहै किबहुतलोगकहतेहैं किसन्यासोकिसीकोउपदेशन करै इनसेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाक्यं सत्यअर्थातप्रमाण औरविचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सबविद्यासे जोपूर्ण विद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने पाखण्डो मूर्खलोग हैंबे उपदेश करैं तभीतो संसार का सत्यानाश होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिए कि वेउपदेशहोनकरनेपावैं औरजितने बिद्वानसन्यासो लोगहैं वे सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंकेउपदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्त देशकीअवस्थाभईहै॥ ३१॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुशलंवदेत्। सप्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२॥ म॰ जोकोईक्रोधकरै उससे सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरै उसकोभीकल्याणका उपदेशनकरै किञ्चसप्तद्वारमुखनासिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआंखके औरकानकेइनसातद्वारोंमेंजोवाणीविखररहीहै उससेमिथ्याकभी नकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोलै॥ ३२॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्रीदण्डीकुसुम्भवान्। विचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ ३३॥ म॰ केशसिरकेसबबालनखऔरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछइनकोकभोनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै और एकही दंड रक्खै इससे तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है जैसाकिचक्राङ्कितोंका कुसुंवा रंगसेरंगेवस्त्रपहिरैं औरगेरूवामृत्तिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतवस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेसबभूतोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंविचरै॥ ३३॥ एककालंचरेद्भैक्षंनप्रसज्जेतविस्तरे। भैक्षे प्रसक्तोहियतिविषयेष्वपिसज्जति॥ ३४॥ एकवेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकिजो भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा॥ ३४॥ विधूमे-

सन्नमुसलेव्यङ्गारेभुक्तवज्जने । वृत्ते शरावसंपाते भिक्षांनित्यंयतिश्चरेत्॥ ३५ ॥ भ० जबगांवमेंधूमनदेखपड़ै मूसलवाचक्कीकाशब्दनसुनपड़ै किसीकेघरमेंअंगारनदेखपड़ै सबगृहस्थलोगभोजन करचुकें औरभोजनकरके पचीऔरसकोरेबाहरकोफेंकदेवैं उस समयसन्यासीगृहस्थलोगोंकेघरमें भिक्षाकेवास्ते नित्यजांय और जोऐसाकहतेहैंकिहमपहिलेहीभिक्षाकरेंगे यहउनकापाखंडही जानना क्योंकिगृहस्थलोगोंकोपीडाहोतीहै औरजोविरक्तहोके बैरागीआदिकअपनेहाथमेंलेकेकरतेहैं वेबड़ेपाखण्डीहैं ॥ ३५ ॥ अलाभेनविषादीस्याल्लाभेचैवनहर्षयेत् । प्राणयात्रिकमात्रःस्यान्मात्रासंगाद्विनिर्गतः ॥ ३६ ॥ भ० जबभिक्षाकालाभनहोयतबविषादनकरै औरलाभमेंहर्षनकरै प्राणरक्षणमात्र प्रयोजनरक्खै भिक्षामेंप्रसक्तनहोय औरविषयोंकेसंगोंसेपृथकरहै ॥ ३६ ॥ अभिपूजितलाभांस्तुजुगुप्सेतैवसर्वशः । अभिपूजितलाभैश्चयतिर्मुक्तोपिबध्यते ॥ ३७ ॥ भ० अत्यन्तश्रेष्ठपदार्थ स्तुत्यादिकउनकी निंदा हीकरै क्योंकिस्तुत्यादिक बन्धनही करनेवाले हैं मुक्तभीहोयतो भी इससे बद्धहीहोजाताहै ॥ ३७ ॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्थानासनेनच । ह्रियमाणानिविषयैरिन्द्रियाणिनिवर्तयेत् ॥ ३८ ॥ इन्द्रियाणिनिरोधेनरागद्वेषक्षयेणच । अहिंसयाचभूतानाम् मृतत्वायकल्पते ॥ ३९ ॥ भ० इन्द्रियोंकानिरोधरागद्वेषऔरअहिंसा इनचारोंकाजोत्यागकर्ताहै सोईमोक्षकाअधिकारीहोताहै अन्य कोईनहीं ॥ ३९ ॥ दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्राश्रमेरतः । समसर्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्मकारणम् ॥ ४० ॥ भ० जिसकिसीआश्रममेंदोष युक्तपुरुषभीहोय परन्तुधर्महीकोकरै औरसबभूतोंमेंसमबुद्धि अर्थातरागद्वेषरहितहोय सोईपुरुषश्रेष्ठहै जितनेवाह्यचिन्हहैं यज्ञोपवीतदंड दोनोंकोधारणकरैऔरधर्मनकरैतो धारणमात्रही सेकुछनहीहोसक्ता औरतिलक,छापा,मालायेतो सबपाखण्डोंही केचिन्हहैं इनकोतोकभीनधारनाचाहिये ॥ ४० ॥ फलंकतकवृक्ष-

स्ययद्यप्यंबुप्रसादकम् । ननामग्रहणादेवतस्यवारिप्रसीदति ४१। म० यद्यपिकतकनामनिर्मलीवृक्षकाफल जलकोशुद्धकरनेवालाहै सोजबउसकोपीसकेजलमेंडालै तबतोजलशुद्धहोजाताहै औरजो पीसकेनडालै कतकवृक्षस्यफलायनमः ऐसा माला लेकेजप किया करै वाउसकानाम जलकेपासलियाकरै, उस्से जलकभीनशुद्ध होगावैसेहीनाममात्रसेकुछनहींहोताजबतककधर्मनहींकरता ४१ प्राणायामाब्राह्मणस्य त्रयोपिविधिवत्कृताः । व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता-विज्ञेयंपरमंतपः ॥ ४२ ॥ म० ओमभूः,ओम्भुवः,ओम्स्वः,ओम् महः,ओम्जनः,ओमतपः,ओम्सत्यं इसमन्त्रकाहृदयसेउच्चारण करै पूर्वोक्तरीतिसे तीनबारभीप्राणोंका निग्रहकरै तोभीउससन्यासीकापरमतपजानना ॥ ४२ ॥ दह्यन्तेध्यायमानानांधातूनांहियथामलाः । तथेन्द्रियाणांदह्यन्ते दोषाःप्राणस्यनिग्रहात् ४३ ॥ म० जैसेसुवर्णादिकधातुओंको अग्निमेंतपानेसेमैलनष्टहोजाताहै वैसेहीप्राणकेनिग्रहसेइन्द्रियोंकेमलभस्महोजातेहैं। ४४ ॥ प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्चकिल्बिषम् । प्रत्याहारेणसंसर्गान्ध्यानेनानीश्वरान्गुणान् ॥ ४५ ॥ म० पाणयामोंसेसबइन्द्रियऔरशरीरकेदोषोंकोभस्मकरदे औरधारणयोगशास्त्रकोरीतिसकरै उस्से विरागऔरद्वेषजोहृदयमेंपापउसकोछोड़ादे प्रत्याहारसेइन्द्रियोंकाविषयोंसेनिरोधकरकेसबदोषोंकोजीतले औरध्यानसेअल्पज्ञादिकअनीश्वरके जितनेगुणउनकोछोड़ादे अर्थातसर्वज्ञादिकगुण सम्पादनकरै ॥ ४५ ॥ उच्चावचेषुभूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः । ध्यान योगेनसंपश्येद्गतिमस्यांतरात्मनः ॥ ४६ ॥ म० स्थूलऔरसूक्ष्मउनमेंजोपरमेश्वरव्याप्तहै औरअपनशरीरमेंजोअपनाआत्मा और परपरमात्माउनकोजोगतिनामज्ञान उसकोसमाधिससम्यक्देखले जोदुष्टलोगोंकोदेखनेमेंकभीनहीआती ॥ ४६ ॥ सम्यक्दर्शनसम्पन्नःकर्मभिर्ननिबध्यते । दर्शनेनविहीनस्तु संसारंप्रतिपद्यते ॥ ४७ ॥ म० जबसन्यासीसम्यकज्ञानसेसम्पन्नहोताहै तबकर्मोंसेबद्ध

नहींहोता औरजोज्ञानसेहीनसन्यासीहैसोमोक्षकोतोनहींप्राप्त होता किन्तु संसारहीमेंगिरपड़ताहै ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैवकर्मभिः। तपसश्चरणैश्चोग्रैःसाधयन्तीहतत्पदम् ४८॥ भ० वेरइन्द्रियोंसेविषयोंकाअसंगवैदिककर्मकाकरना अत्यन्तउग्र तपइन्होसेमोक्षपदकोसिद्धलोगप्राप्तहोतेहैंअन्यथानहीं ॥४८॥ अस्थिस्थूणंस्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम् । चर्मावनद्धंदुर्गन्धिपूर्णंमूत्रपुरीषयोः ॥ ४९ ॥ भ० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम्। रजस्वलमनित्यंचभूतावासमिमंत्यजेत् ॥ ५०॥ भ० हाड़जिसकाखंभाहै नाड़ियोंसेबांधाभयामांस, औररुधिरका ऊपरलेपन चामसेढपाहुवादुर्गन्धमूतऔरविष्टासेपूर्ण ॥ ४९ ॥ जराऔरशोकसेयुक्तरोगकाघरक्षुधातृषादिकपीड़ाओंसे नित्यआतुरऔरनित्यहीरजस्वलअर्थातजैसीरजस्वलास्त्रीनित्यजिसकीस्थितिनहीं और सबभूतोंकानिवास ऐसाजोयहदेह इसकोसन्यासी योगाभ्याससे छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलंयथावृक्षो वृक्षंवाशकुनिर्यथा । तथात्यजन्निमंदेहं कृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते ॥ ५१ ॥ भ० जैसेवृक्षजबनदीकेतट सेजलमेंगिरकेचलाजाय वैसेहीसमाधियोगसेइसकोछोड़ै तबबड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख से छूटके मुक्त हो जाय ॥ ५१ ॥ प्रियेषुस्वेषुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम्। विसृज्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्येतिपरंपदम् ॥ ५२ ॥ भ० जितनेअपनीसेवाकरने वालेउनमेंध्यानयोगसेसबपुण्यकोछोड़दे औरदुःखदेनेवालेपुरुषों मेंसबपापोंकोछोड़दे इससे पापपुण्यरहितजबशुद्धहोताहै तबसनातनपरमोत्कृष्टब्रह्मउसकोप्राप्तहोताहैफिरकभीदुःखसागरमेंनहीं आता ॥ ५२ ॥ यदाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिस्पृहः । तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥ ५३ ॥ भ० जबसबप्रकारसेसन्यासी काअन्तःकरण औरआत्मशुद्धहोजाताहै, उसकायहलक्षणहै कि किसीपदार्थमेंमोहनहींहोता तबवहपुरुषजीताभयाऔरमृत्युहोकेनिरन्तरब्रह्म सुखउसकोप्राप्तहोताहै अन्यथानहीं॥ ५३ ॥ अ-

नेनविधिनासर्वांस्त्यक्त्वासंगान्शनैःशनैः । सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्मण्येवावतिष्ठते ॥ ५४ ॥ भ० इसविधिसेजितनेदेहादिक अनित्यपदार्थहैं इनकोधीरे २ छोड़ औरहर्ष, शोक, सुख, दुःख, शीत, उष्ण रागद्वेष, जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेजीताभया अथवाशरीर छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिरता क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भाग्य औरअत्यन्तपरीश्रमसेपरमेश्वरकीप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै किपरमानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरैकभीनगिरेगा ॥ ५४ ॥ ध्यानिकं सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम् । नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते ॥ ५५ । भ० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानावस्थित होके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रकरण मेंसबध्याननाममात्रसेकहदिया परन्तु इसकायथावतविधानपातञ्जलदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवें अन्यथासिद्धकभीनहोगा क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उसको सन्यासग्रहणका कुछफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीव्यर्थ है ॥ ५५ ॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदाधिदैविकमेवच । अध्यात्मिकञ्चसततंवेदान्ताभिहितंचयत् ॥ ५६ ॥ भ० अधियज्ञब्रह्मजोओंकारउसकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावै औरअधिदैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिकदेवताओंचादिकों केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगसेसाक्षात्करै औरअध्यात्मिक जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंकानिग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्यथानहीं ॥ ५६ ॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम् । वेदसन्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत ॥ ५७ ॥ भ० मुख्य सन्यासीनियतात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मकपिलोग सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थातगौण सन्यासीउनकाकर्मयोगमुझसेआपसुनलेवें ॥ ५७ ॥ ब्रह्मचारीगृ-

हस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा। एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः
॥ ५८ ॥ म० ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थऔरसन्यासी वेचारोंगृह-
स्थाश्रमसेउत्पन्नहोतेहैं, पृथक२क्योंकिगृहाश्रमनहोय तोमनुष्य
कीउत्पत्तिहीनहोय फिरब्रह्मचर्यादिक आश्रमकभीनहोंगे इससे
उत्पत्तितथासबआश्रमोंकाअन्नवस्त्रस्थान औरधनादिकदानोंसेगृ-
हस्थलोगहीपालनकर्तेहैं इनदोबातोंमेंगृहस्थहीमुख्यहैं विद्याग्र-
हणमेंब्रह्मचारीतपमेंवानप्रस्थविचारयोगऔरज्ञानमेंसन्यासीश्रे
ष्ठहै ॥ ५८ ॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविता। यथोक्तका-
रिणंविप्रंनयन्तिपरमाङ्गतिम् ॥ ५९ ॥ म० सबआश्रमीयथावत्
शास्त्रोक्तक्रमजोधर्माचरणउससेचलनेवालेपुरुषोंकोवेआश्रमोंकेजि-
तनेव्यवहारश्रेष्ठहैं उनसेसबआश्रमीलोगमोक्षपासकतेहैं परन्तु
बाहरदेखनेमात्रभेदरहेगा उनकाभीतरव्यवहारसन्यासवत एक
हीहोगा ॥ ५९ ॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः। दशल-
क्षणकोधर्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः ॥ ६० ॥ म० ब्रह्मचारीआदिकसब
आश्रमीलक्षणहैजिसधर्मकेउसधर्मकानित्यसेवनकरैं वे लक्षणये
हैं ॥ ६० ॥ धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचनिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या-
सत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम् ॥ ६१ ॥ म० धर्महैनामन्यायकान्या
यहैनामपक्षपातकाछोड़ना उसकापहिलालक्षणअहिंसाकिसीसे
वैरनकरनादूसरालक्षणधृतिकिअधर्मसेचक्रवर्तीराज्यभीमिलता
होय तोभीधर्मकोछोड़केचक्रवर्तीराज्यकाग्रहणनकरना तीसरा
लक्षणक्षमाकोईस्तुतिवानिन्दाअथवावैरकरैतोभीसबकोसहले प-
रन्तुधर्मकोनछोड़ै तथासुखदुःखादिकभीसबसहले परन्तुअधर्म
कभीनकरैदमनामचित्तसेअधर्मकरनेकोइच्छानकरै इसकानाम
हैदमअस्तेयअर्थातचोरीकात्याग किसीकापदार्थआज्ञाकेबिनाले
लेनाइसकानामचोरीहै इसकाजोसदात्यागउसकानामहैअस्तेय
शौचनामपवित्रतासदाशरीरवस्त्रस्थानअन्नपात्र औरजलतथाघृ-
तादिकशुद्धदेशमेंनिवासरागद्वेषादिककात्यागइसकानामशौचहै

इन्द्रियनिग्रहश्रोत्रादिकइन्द्रियवेअधर्ममेंकभीनजावैं औरइन्द्रियों
कोसदाधर्ममेंस्थिररक्खैं तथापूर्वोक्तजितेन्द्रियताकाकरनाइसका
नामइन्द्रियनिग्रहहैं शत्यसास्त्रपठन,सत्पुरुषोंकासंगयोगाभ्याससु-
बिचारएकान्तसेवनपरमेश्वरमेंविश्वास औरपरमेश्वरकोप्रार्थना
स्तुतिऔरउपासनाशीलसंतोषकाधारणइनसेसदाबुद्धिदृढ्किरनी
इसकानामधीहै विद्यानामपृथिवीसेलेके परमेश्वरपर्यन्त पदार्थों
काज्ञानहोना जोजैसापदार्थहैउसकोवैसाहोजाननाउसकानाम
विद्याहै सत्यसदाभाषणकरनापूर्वोक्तनियमसे अक्रोधनाम क्रोध
कामलोभमोहशोकभयादिकोंकात्यागउसकानामअक्रोधकात्यागहै
इतनेसंक्षेपसेधर्मके ग्यारहलक्षणलिखदिये परन्तु वेदादिक सत्य
शास्त्रोंमेंधर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षणलिखेहैं जिसकोइच्छाहोय
उनशास्त्रोंमेंदेखलेवैअबइसकेआगेअधर्मकेलक्षणलिखेजातेहैं अ-
धर्मनामअन्यायका अन्यायनामपक्षपातकानछोड़ना इसकेभीए-
कादशलक्षणहैं पहिलालक्षणअहिंसा अर्थातवैरबुद्धिकाकरना ॥
६२ ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेश-
श्चत्रिविधंकर्ममानसम्॥ ६२ ॥ म० पारुष्यमनृतंचैवपैशून्यमपिस-
र्वशः। असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम्॥ ६३ ॥ म० अदत्ता-
नामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः। परदारोपसेवाचशारीरंत्रिवि-
धंस्मृतम्॥ ६४ ॥ म० परद्रव्यहरणकरनेकोछलकपटऔरअन्याय
सेइच्छायहदूसरालक्षणअधर्मकाहै औरतीसरालक्षण परकाअ-
निष्टचिन्तनअन्यजीवोंकोदुःखदेनाअपनासुखचाहना चौथावित-
थाभिनिवेशअर्थातमिथ्यानिश्चयजोजैसापदार्थहैउसकोवैसानजा-
नना किन्तुविपरीतहीजानना जैसेकिविद्याको अविद्याऔरअ-
विद्याकोविद्याजानना सत्यअचौरश्रेष्ठसाधु इनकोअसत्यचौरअ-
श्रेष्ठअसाधुजानना औरपाषाणादिकमूर्त्तिऔरउनकेपूजनसेदेव
बुद्धिऔरमुक्तिकाहोना इत्यादिकमिथ्यानिश्चयसेजानलेना येतीन
मनसेअधर्मके लक्षणउत्पन्न होतेहैं पारुष्यनाम कठोरवचनबो-

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या
भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयमेंविरुद्धबोलना
उसकानामअसत्यभाषणहै पैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने
धनदेनेकोकहावादिया उस्से राजाकेवाअन्यकेसमीपजाकेउसकी
कार्यकोहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात
अन्यपुरुषकीप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां
तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपू-
र्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकोहानि जैसेकिभागवतादिकऔर
कौमुद्यादिकग्रन्थोंमेंपूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकाना-
मअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं बिनाआज्ञासेपरपदार्थका
ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाह-
ननकरना अपनीइन्द्रियोंकीपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशु-
ओंकामारना यहराक्षसविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंको
हिंसाहैसोविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपका
रहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमा-
रनेसे आगेपशुदूधऔर घीकी उत्पत्तिहो मारीजातीहै औरइ-
न्होंसेसंसारका पालनहोताहै इस्सेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन
मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारनाहै इसकानामअवि-
धानसेहिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्या वा अन्य
किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका
गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै यएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये
इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके
लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेसेकभीज्ञान
नहीहोसक्ता धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद
नही जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै
इस्से उसकी आज्ञाभी सबकेवास्ते एकरसहीं निश्चित होनीचा-
हिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने वुद्धिमान लोगजानतेहै वेकिसो जालवा बन्धनमें नहींगिरते किन्त धर्महीकर्ते हैं औरअधर्मको छोड़देतेहैं यही वुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्डहैं वेमूर्खों हीकेहैं चारोंआश्रमवालेपुरुषधर्महीकासेवनकरैं अधर्मकाकभी नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्रु- त्वासन्यास्येदनृणोद्विजः॥ ६५॥ म० दशलक्षणऔरएकयोगशास्त्र कीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसधर्मका अनुष्ठानयथावत्करैं समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधिवत् सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतोनविद्वानहै।के यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ६५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्मदो- षानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्यंसुखंवसेत्॥ ६६॥ म० वा- ह्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादिकजि- तनेकर्मउनकोयथावतकरै इससे सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकरणकी मलिनतारागद्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादै निश्चितहोके वेदकाअभ्या- ससदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेलेवै न- गरकेसमोपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छादन करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदेकिसोकाजन्मवामरणहोय घरमें तोभोकुछउसमेंमोहवाद्वेषनकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदातत्प- रहै॥ ६६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्यासे- नापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ६७॥ म० इसप्रकारसेसबवा- ह्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखोंसेछू- टकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इससे भिन्नपदार्थ कोइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्याससे सबपापोंकानाशकरदे औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधातुओं कास्पर्शकरैवानहींउत्तर अवश्यधातुओंकेस्पर्शकेविनाकिसीकानि- र्वाहनहींहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पर्शभाषावासंस्कृत बोलनेमेंनिश्चितहोकरेगा औरविर्यादिक७सातधातुओंकाभीस्प-

र्शनिश्चितहोगा औरसुवर्णादिकजितनीधातुहैं उनकाभीस्पर्शहो-
गापूर्वपक्ष ॥ यतीनांकांचनंदद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणाम्। चौराणा-
मभयंदद्यात्सनरोनरकंब्रजेत्॥ इसश्लोकसेयहआपकाकथनविरुद्ध
हुआ सन्यासीकोसुवर्णब्रह्मचारीकोतांबूल चौरोंकोअभयकादेने
वालापुरुषनरकमेंजाताहै ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच गृहीणांकाञ्चनं
दद्यादृस्त्रंवैब्रह्मचारिणाम्। चौराणांमासनन्दद्यात्सनरोनरकम्ब्रजे-
त्॥ इससे आपकाकहनाविरुद्धहुवा जैसाकिमेरावचनउसश्लोकसे
यहकौनशास्त्रकाश्लोकहै अच्छावहकौनशास्त्रकाहै यहतोपद्धतिका
है अच्छातोयहहमारीपद्धतिकाहै औरब्रह्माकाकहाहै ऐसाश्लोक
ब्रह्माजीकभीनरचेंगे अच्छातोयहमैंनेरचाहै जैसाकिवहकिसीने
रचलियाहैयेदोनोंश्लोकअर्थविचारनेसेमिथ्याहीहैं क्योंकिसन्यासी
कोकाञ्चननामसुवर्णकेदेनेसेइननेनरकलिखा इससेपूछनाचाहिए
किचांदीहीरादिकरत्नभूमिराज्यऔरस्थानदेनेसेभीनरककोनहीं
जायगाऔरब्रह्मचारीके विषयमेंभीजानलेना चोरकेविषयमेंजोइ
सनेंलिखासोतोठीकहीहैऔरसबमिथ्याकथनहै अच्छातोश्लोकका
ऐसापाठहै॥ यदिहस्तेधनन्दद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणाम्। अन्यत्पूर्ववत्
यहभीमिथ्याश्लोकहै क्योंकियतीकेपाद औरआगे वा बस्त्रसेबांधके
धनदेनेमेंतो पापनहोगा इससे ऐसीजोबातकहना सोमिथ्याहीहै
औरजोधनमेंदोषअथवागुणहै सोसर्वत्रतुल्यहीहै जैसाउपद्रवधन
केरखनेमेंगृहस्थोंकोहोताहै इससे सन्यासीकोधनकेरखनेमेंकुछअ-
धिकउपद्रवहोगा क्योंकिगृहस्थोंकेस्त्रीपुत्रऔरभृत्यादिकरक्षाकर-
नेवालेहैं उसकोकोईनहीं शरीरकेनिर्वाहमात्रधनरखेतो तबतो
बिरक्तकोभीकुछदोषनहीं औरजोअधिकरक्खेगा सोतोमोक्षप-
कोप्राप्तहोकसंसारमेंगिरपड़ेगा जैसेकिवैरागी,गुसांईबहुतसेम
हन्तऔरमठधारीहोगयेहैंजसेकिगृहस्थोंसेभीनीचहोजातेहैंऔ
सांईधनकोपाके अमीरहोजाताहै इससे क्याआयाकिपहिलेतो
धिकारकेबिना सन्यासग्रहणहीनहींकरनाचाहिए जबतः

ज्ञान, वैराग्य, और जितेन्द्रियता, पूर्ण न होजाय तवतक गृहाश्रम ही में रहना उचित है इस्से धातुस्पर्श धनादि ने और लेने में दोष करते हैं यह बात मिथ्या ही है उनको कोई देओ और विरक्त लेवे अथवा न लेवे अपनी २ इच्छा के आधीन व्यवहार है एक बात देखना चाहिए कि जो विद्वान सो सब पदार्थों का गुण और दोष जानता है उसको देनेवाला स्वर्ग जाय सो तो ठीक बात है परन्तु नरक को वह जाता है यह बात अत्यन्त नष्ट है वह विद्वान जो सन्यासी सत्कार और उत्तम पदार्थों की प्राप्ति में हर्ष कभी न करेगा अपत्कार और अनिष्टपदार्थों की प्राप्ति में शोक न करेगा सो देने लेने वाले दोनों धर्मात्मा और विद्यावान होंगे तव तो उभयत्र सुख ही सदा है और जो दोनों कुकर्मी हैं तो पाप ही है जैसे कि चक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये, गुसाईं और नान्हक, कविरादिकों के सम्प्रदायी लोग हैं और मूर्ख ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यासी इनको दान में पाप ही होगा पुण्य कुछ नहीं क्योंकि पुण्य तो विद्वान और धर्मात्माओं को देने में है अन्यथा नहीं चार वर्ण और चार आश्रम इनकी शिक्षा संक्षेप से लिखदिया और विस्तार से जो देखना चाहै सो वेदादिक सत्यशास्त्रों में देखलेवे इस्से आगे राजा और प्रजा के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचमसमुल्लासः संपूर्णः ॥ ५ ॥

अथ राजप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः ॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः । सम्भवश्च यथा तस्य सिद्धिश्च परमो यथा ॥ १ ॥ म०

राजधर्मों को मनुभगवान कहते हैं कि मैं कहूंगा जिस प्रकार से राजा को वर्तमान करना चाहिए जिन गुणों से राजा होता है और जिन

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरै औरसङ्गतिभीउस-
कोहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मं
प्राप्तेनसंस्कारंचत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यं
परिरक्षणम् ॥ २ ॥ म० जैसाब्राह्मणोंका संस्कारहोताहै वैसाही
सबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबल
बुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताऔरशूरवीरता जिसमनुष्यमेंइस
प्रकार केगुणहोवैं औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमें
उससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरनाचाहिए तबवह
देशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाका
मुख्ययहीधर्महैकिअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराज-
केहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्य राजानम-
सृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ म० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उ-
सदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्ते राजाको
परमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कोरक्षाकरै औरजगतमें
अधर्मनहोनेपावै ॥३॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्र-
वित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ म० इन्द्रअनिलनाम
वायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुवेर इनआठ
राजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोता
है तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकी
रक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा,वायुकागुण,बल औरदूत
द्वारासबप्रजाकोबर्तमानकाजाननाजैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्त
होकेधारणकर्ताहै औरसबमर्मोंकोजानताहै यमकागुणपक्षपातको
छोड़ना सदान्यायहीकरनाअन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजा
नेंअपनेपुत्रजोअन्यायकारी ६ नवउनकास्वहस्तसेशिरच्छेदनकर
दिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेबनमें
निकालदिया यहबातमहाभारतमेंविस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्र
काजबपक्षपातनकिया तोऔरका कैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

कि सबपदार्थोंकोतुल्यप्रकाशकरताहैऔर अन्धकार का नाशकर देताहै ऐसेहीराजासबराज्यमें प्रजाकेऊपरतुल्यप्रकाशकरै और अधर्मकरनेवालेजितनेदुष्ट अन्धकाररूप उनकानाशकरदे और जैसेअग्निमेंप्राप्तभयापदार्थदग्धहोजाताहै वैसेहीधर्मनीतिसेविरुकरनेवालेपुरुषोंकोदग्धअर्थातयथावतदण्डदेवै जैसाकिअग्निसूखेवागोलेपदार्थोंकाभस्मकरदेताहै औरमित्रवाशत्रुजब२अधर्मकरैं तब२कभोदण्डकेबिनानछोड़ै वरुणकागुणऐसेपाशअर्थातबन्धनोंसे दुष्टोंकोबांधेकिफिरछूटनेनपावैं औरकभोछूटैंतोऐसादुःखपावैं कि उसदुःखकाबिस्मरणकभोनहोय जिस्से अधर्ममें उनकाचित्तकभो नजाय चन्द्रकागुणजैसेकिचन्द्रमासबप्राणियोंकोतथास्थावरऔषधियोंको शीतलप्रकाश औरपुष्टिसे आनन्दयुक्त करदेताहै और राजाअपनीप्रजाकेऊपरकृपादृष्टिरक्खै औरप्रजाकीपुष्टिकिकिसी प्रकारसेप्रजादुखितनहोवै सदाप्रसन्नहोरहै कुवेरकागुणजैसेकि कुवेरबड़ाधनाढ्यहै धनकीवृद्धि औरधनकीरक्षा यथावतकरताहै वैसेराजाभीधनकीरक्षासदाकरै जिस्सेकिराजाकेऊपरऋणवादरिद्र कभीन होवै अपने वा प्रजाकेऊपर जबआपत्कालआवै तब उसधनसे अपनीवाप्रजाकोरक्षाकरलेवैं इनआठगुणोंसेराजाहोताहै अन्यथानहीं ॥ ४ ॥ सोग्निर्भवतिवायुश्चसोऽर्कःसोमःसधर्मराट्। सकुवेरःसवरुणःसमहेन्द्रःप्रभावतः ॥ ५ ॥ म० प्रभावअर्थात गुणोंहोसे अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, धर्मराज, कुवेर, वरुण और महेन्द्रनामइन्द्रराजाहोइनगुणोंसेजबयुक्तहोताहै तबवहीराजाये आठनामवालाहोताहै ॥ ५ ॥ कार्यंसोऽवेक्ष्यशक्तिञ्चदेशकालौचतत्त्वतः । कुरुतेधर्मसिद्ध्यर्थंविश्वरूपंपुनःपुनः ॥ ६ ॥ म० सोराजा कार्यऔरशक्तिनामसामर्थ्य देशऔरकालतत्त्वअर्थातयथावतइनकोविचारकेकरै किसकेवास्ते किधर्मसिद्धिकेवास्ते वारंवारविश्वरूपधारणकरताहै ॥ ६ ॥ यस्यप्रसादेपद्माश्रीर्विजयश्चपराक्रमे । मृत्युश्चवसितक्रोधे सर्वतेजोमयोहिसः ॥ ७ ॥ म० जिसकोकृपासे

दरिद्रजोहैसोधनाढ्यहोजाय औरअकृपासेदुष्टदरिद्रहोजाय और पराक्रममेंनिश्चयकरकेविजयहोय इससे राजासर्वतेजोमयहोताहै औरजिसकेक्रोधमेंदुष्टोंकामृत्युहीवासकरताहोयअर्थातसबप्रकार केगुणबलपराक्रमजिसमेंहोवेंवहीराजाहोसक्ताहैअन्यथानहीं ७। तस्माद्धर्मंयमिष्टेषुसव्यवस्येन्नराधिपः। अनिष्टंचाप्यनिष्टेषुतंधर्मंनविचालयेत् ॥ ८ ॥ म० जोराजाधर्मकोइष्टअर्थातधर्मात्मा और विद्वानोंकेऊपरनिश्चितकरै तथाअनिष्ट अर्थातमूर्ख औरदुष्टोंके बीचमेंदण्डकीव्यवस्थाकरैउसधर्मकोकोईमनुष्यनछोड़ै किन्तुसब लोगकरैं जिस्सेधर्मात्माऔरविद्वानोंकीबढ़तीहोय औरमूर्खऔर दुष्टोंकी घटी इसहेतु अवश्य इसव्यवस्थाकोकरै ॥ ८ ॥ तस्यार्थेसर्वभूतानांगोप्तारंधर्ममात्मजम्। ब्रह्मतेजोमयंदंडमसृजत्पूर्वमीश्वरः ॥९॥ म० उसराजाकेलियेदण्डकोपरमेश्वरनेपूर्वहीसेउत्पन्नकियावहदण्डकैसाहैकिब्रह्मतेजोमयब्रह्मपरमेश्वरऔरविद्याका नामहैउनकाजोतेजअर्थातसत्यव्य२वस्थावहीदण्डकहलाताहैफिर वहदण्डकैसाहैकिपरमेश्वरहीसेउत्पन्नभया क्योंकिपरमेश्वरन्यायकारीहै उसकीआज्ञा न्यायहीकरनेकीहै उसीकानाम दण्डहै औरजोन्यायहैकिपक्षपातकाछोड़नासोईधर्महै जोधर्महैसोईसब भूतोंकीरक्षाकरनेवालाहैअन्यकोईनहींऔरवहदण्डराजाकेआधीनरक्खागयाहै क्योंकिवहीराजासमर्थहैइसदण्डकेधारणकरने मेंअन्यकोईनहींजोकोईराजाकहैकिधर्मकीबातहमनहींसुनते तो उसकाकहनामिथ्याहैक्योंकिधर्मनकरेगातोराजाऔरधर्मकास्थापनतथापालनभीनकरेगा वहराजाहीनहीं राजातोवहहोताहै किधर्मकायथावतस्थापन और अधर्म काखण्डन करै यहीराजा का मुख्य पुरुषार्थ है ९ ॥ तस्यसर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणिच। भयाद्भोगायकल्पन्तेस्वधर्मान्नचलन्तिच ॥१०॥ म० उसदण्डके भयसेही जितनेजड़ औरचेतनभूतहैं दंडकेनियमसे वेसबभोगमें आतेहैं अपना२जोपुरुषार्थ अर्थातअधिकार उसमेंयथावतचलते

हैं अपनेस्वधर्म अर्थातजो२जिसकाव्यवहारकरनेकाअधिकारउस्से भिन्नमार्गमेंकभीनहींचलते ॥ १०॥ तंदेशकालौशक्तिञ्चविद्यांचावेच्यतत्वतः। यथार्हतःसंप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु ॥ ११ म० उस दण्डकोअन्यायकरनेवालेजोमनुष्यहैं उनमेंयथावतस्थापनकरैं अर्थात्यथावतदण्डदेवै परन्तुदेशकालसामर्थ्य औरविद्याइनसेयथावत्तत्त्वका विचारकरकेदण्डदे क्योंकिअदण्ड्यपुरुष अर्थातधर्मात्माको कभीनदण्डदियाजाय औरअधर्मात्मा पुरुषदण्डकेबिनात्यागकभीनकियाजाय ॥ ११ ॥ सराजापुरुषोदण्डःसनेताशासिताचसः। चतुर्णामाश्रमाणांचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः ॥१२॥ राजा पुरुषनेताअर्थात व्यवस्थामें सबजगत्को चलानेवाला शासिताअर्थातयथावतशिक्षकदण्डहीहै किन्तुराजाऔरप्रजास्थ मनुष्यसब तुल्यहीहैं जैसाराजामनुष्यहै वैसाहीऔरसबमनुष्यहैं इसवास्ते मनुभगवान्नेंलिखा किदण्डहीराजा,दण्डहीपुरुष,दण्डहीनेता औरदण्डहीशासिता,जिसमेंयथावतविद्यादिकगुण औरदण्डकी व्यवस्थाहोयसोईराजाहै, अन्यकोईनहीं औरब्रह्मचर्याश्रमादिक चारआश्रमऔरचारोवर्णोंकायथावतस्थापनतथाउनकारक्षनकरनेवालादण्डहीहै किन्तुप्रतिभूःअर्थातजामिनहैइसकेबिनाधर्मयावर्णाश्रमव्यवस्थानष्टहोजातीहै कभीनहींचलती उसव्यवस्थाके बिनाजितनेउत्तमव्यवहारहैंवेतोनष्टहीहोजातेहैंकिन्तुभ्रष्टव्यवहारभीहोजातेहैं जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकीव्यवस्थाहै ॥१२॥ दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वादण्डएवाभिरक्षति। दण्डःसुप्तेषुजागर्त्तिदण्डंधर्मंविदुर्बुधाः ॥ १३ ॥ म० सबप्रजाकोदण्डहीशिक्षाकरताहै औरदण्डहीसबजगत्कारक्षकहै जबप्राणीसोजातेहैंतबप्रायमृतक होजातेहैं परन्तुदण्डहीनहींसोताइस्से सबआनन्दसेसोकेउठतेहैं उठकेअपना२कामकाजऔरआनन्दकरतेहैं औरजोदण्डसोजाय तोजगत्कानाशहीहोजाय इस्से जोदण्डहैसोईधर्महैऐसाबुद्धिमान लोगोंकादृढ़निश्चयहै ॥ १३ ॥ समीक्ष्यसधृतस्सम्यक्सर्वारञ्जयतिप्र-

णाः। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयतिसर्वतः॥१४॥ म० उसदण्ड
कोसम्यक् विचारकरकेजोधारणकरताहै वहराजासबप्रजाकोप्रस-
न्नकरदेताहैऔरजोविचारकेबिनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता
सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता
है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका २
है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्म मात्रकानाश करै उसका
नामराजाहै औरजोऐसानहींहैउसकानामराजातोनहीरखना
चाहिए किन्तुउसकानामडांकूऔरअन्धकाररखनाचाहिये।१४।
दुष्येयुःसर्ववर्णाश्चभिद्येरन्सर्वसेतवः। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्ड-
स्यविभ्रमात्।१५॥ म० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं
तथाधर्मकीजितनीमर्याद।वेभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें
प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचा-
हिए॥१५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्त-
त्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥१६॥ म० जिसदेशमेंश्यामवर्ण
रक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाश करनेवालादण्डविचरताहै उस
देशमेंप्रजामोहवादुःखकोनहीप्राप्तहोती परन्त,दण्डकाधारणक-
रनेवालाराजाबिद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा
होयकि॥१६॥ तस्याहुःसंप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समी-
क्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥१७॥ म० इसदण्डका
सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछक-
रैसोविचारहोसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णबिद्या
औरपूर्णबुद्धिजिसकोहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजान-
ताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको
नहीं॥१७॥ तंराजाप्रणयन्सम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा
विषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥१८॥ म० उसदण्डअर्थातधर्म
कोराजायथावतनिश्चयसेकरेगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजा
केसिद्धहोजांयगेऔरजोकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडे,इत्या-

दिकोंकेसाथ फसारहताहै तथानम्रता, शील, नीति, विद्या, धैर्य, बुद्धि, बल, पराक्रमतथासत्पुरुषोंकासंग इनकोछोड़के विषमनाम कुटिलअर्थातअभिमानईर्ष्या, द्वेष, मात्सर्यऔर क्रोधइनसेयुक्तहोके कर्मविपरीतकरनेसेवहराजाविषमपुरुषहोजाताहै नीचबुद्धिनीच संगनीचकर्मऔरनीचस्वभाव इत्यादिकदोषोंसेपुरुषजबयुक्तहोगा तबवहपुरुषनामराजाक्षुद्रहोजायगा जबधर्मनीतिसेदण्डयथावत् नकरसकेगा तबउसीकेऊपरदण्डआकेगिरेगा सोदण्डरूपहतहो जायगा जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकेराजाओंकीदशानित्यदे-खनेमेंआतीहै ॥ १८ ॥ दण्डोहिसुमहत्तेजादुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः। धर्माद्विचलितंहन्तिनृपमेवसबान्धवम ॥ १९ ॥ ततोदुर्गंचराष्ट्रञ्च-लोकंचसचराचरम्। अन्तरोक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्चपीडयेत् ॥ २० ॥ भ० दंडजोहैसो बड़ाभारीतेजहै उसकाधारणकरनामूर्ख लोगोंकोकठिन है जबवेदण्डअर्थात धर्मसेविचलजातेहैं तबकुटु-म्बसहितराजाकावहदण्डनाशकरदेताहै ॥ १९ ॥ तदनन्तरदुर्गजो किला राष्ट्रनाम राज्यचर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहने वाले अर्थात सूर्य चन्द्रादिक लोगों में रहने वाले अथवा मुनिनाम विचार करने वाले देवनाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश और अत्यन्त पीड़ा करता है इसक्याआर्योंकि पक्षपात कोछोड़के य-थावतदण्डकरनाचाहिए तभीसुखकीउन्नतिहोगी औरजोदण्ड कोयथावतन्यायसेनकरेंगे तोउनकाही नाशहोजायगा ॥ २० ॥ सोऽसहायेनमूढेनलुब्धेनाकृतबुद्धिना। नशक्योन्यायतोनेतुंसक्ते-नविषयेषुच ॥ २१ ॥ भ० सोश्रेष्ठपुरुषोंकेसहायसेरहितमूढनाम मूर्ख, लुब्धनामबड़ालोभी, अकृतबुद्धिजिसकीबुद्धिनहीहै सोराजा मूर्खहै वहन्यायसेदंडकभीनदेसकेगा क्योंकिजोजितेन्द्रियहोताहै वहीराज्यकरनेकाअधिकारीहोताहै औरजोविषयासक्ततथामूढ़ सोकभीदण्डदेनेवाराज्यकरनेकोसमर्थनहीहोता ॥ २१ ॥ राजा कैसाहोना चाहिएकि ॥ शुचिनासत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारि-

णा । प्रणेतुंशक्यतेदण्डःसुसहायेनधीमता ॥ २२ ॥ म० शुचिजो वाहरभीतरअत्यन्तपवित्रहोय सत्यधर्मसेसदा जिसकासम्बानरहै तथाजैसोशास्त्रमेंपरमेश्वरकीआज्ञाहैवैसाहीकरै सुसहायअर्थात सत्पुरुषोंकासङ्गजोकरताहै औरबड़ाबुद्धिमानवहीराजादण्डव्यवस्थाकरनेंकोसमर्थहोताहैअन्यथानहीं ॥ २२॥ ब्राह्मणान्पर्युपासीत ... इहसेवीहिसततंरक्षोभिरपिपूज्यते २३॥ म० जितनेब्राह्मणहृद्धविद्याहृद्धतपोहृद्ध,पवित्रचित्तवाणवेदवित्तधर्मात्माधैर्यवान्होवैं उनकोहीराजा नित्यसेवाऔररक्षाकरै जोइनपुरुषोंकाराजासंगकरैगा तोउसकाराक्षसअर्थातदुष्टपुरुषभीसत्कारऔरआज्ञाकरैंगे ॥ २३ ॥ एभ्योऽधिगच्छेद्विनियंविनीतात्मापिनित्यशः । विनीतात्माहिन्टपतिर्नविनश्यतिकर्हिचित् ॥ २४ ॥ जो राजाविनीतात्माहोवै अर्थातसवश्रेष्ठगुणोंसेसम्पन्नभीहोवै तोभी उत्तमपुरुषोंसे विनयकोग्रहणकरै क्योंकिजोअभिमानादिकदोषों सेरहितऔरविद्यानम्रतादिकगुणोंसेयुक्तहोताहै उसराजाकाकभीनाशनहींहोता ॥ २४ ॥ त्रैविद्येभ्यस्त्रयींविद्यांदण्डनीतिंचशाश्वतीम् । आन्वीक्षिकींचात्मविद्यांवार्त्तारम्भांश्चलोकतः ॥ २५ ॥ म०तीनोंवेदोंकोजोपाठस्वरऔअर्थसहितपढ़ाहोवैउससेतीनवेदों कोराजायथावतपढ़ै दण्डनीतिजोकिसनातनराजधर्मशिक्षाअर्थात्देनेकीजोव्यवस्थाहै इसकोभीपढ़ै तथाआन्वीक्षिकीजोन्याय शास्त्र,आत्मविद्याऔरश्रेष्ठमनुष्योंसेकहनेपूंछने औरनिश्चयकरने केवास्ते वार्त्ताओंकाआरंभ इनकोराजायथावत्पढ़ै औरपढ़केयथावत्करै ॥ २५ ॥ इन्द्रियाणांजयेयोगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् । जितेन्द्रियोहिशक्नोति वशेस्थापयितुंप्रजाः ॥ २६ ॥ म० राजारात दिनइन्द्रियोंके जीतनेमेंनित्यहीप्रयत्नकरै क्योंकिजोजितेन्द्रियराजाहोताहै वहीप्रजाकोवशमें स्थापनकरनेमें समर्थहोताहै और जोअजितेन्द्रियअर्थातकामीसोतोआपहीनष्टभ्रष्टहोजाताहै फिर प्रजाको वशकैसेकरेगा इससे क्याआयाकि जोशरीर,मनऔर इ-

न्द्रिय इनको वशमें रखता है सोई राजा प्रजाको वशमें करता है अ-
न्यथ कभी प्रजावसमें राजाके नहीं होतो जब तक प्रजावश में न-
होगी तबतक निश्चलराज्य कभी न होगा इससे जो जितेन्द्रिय होय उ-
सको ही राजा करना चाहिए अन्यको नहीं ॥ २६ ॥ दशकामसमु-
त्थानितथाष्टौक्रोधजानिच । व्यसनानिदुरन्तानि प्रयत्नेनविवर्ज-
येत् ॥ २७ ॥ म॰ जो राजा कामी होता है उसमें दशदुष्टव्यसन अवश्य
होंगे और जो राजा क्रोधी होगा उसमें आठदुष्टव्यसन अवश्य होंगे
उनको अत्यन्तप्रयत्नसे छोड़दे अन्यथा राजा हो राज्यसहित नष्ट हो
जाता है ॥ २७॥ फिर क्या होगा कि । कामजेषुप्रसक्तोहिव्यसनेषुम-
हीपतिः । वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैवतु ॥ २८ ॥ म॰
जो राजा कामसे उत्पन्न भये जो दशदुष्टव्यसन उनमें जब फसजायगा
तब उसका अर्थ नाम द्रव्य और राज्यादिक सब पदार्थ तथा धर्म इनसे
रहित होजायगा अर्थात दरिद्र और पापी होजायगा और क्रोधसे
उत्पन्न होते हैं जो आठदुष्टव्यसन उनमें फसजानेसे वह आप राजा हो
मरजाता है इससे इन अठारह दुष्टव्यसनों को राजा छोड़दे जो अपने
कल्याणकी इच्छा होवै कौनसे १८ अठारह दुष्टव्यसन हैं ॥ २८ ॥ मृ-
गयाक्षोदिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियोमदः । तौर्यत्रिकंवृथाट्याचकाम
जोदशकोगणः ॥ २९ ॥ म॰ मृगया नाम शिकार का खेलना अक्ष
नाम फांसाओं से क्रीड़ा वा द्यूतका करना दिवास्वप्न दिवसमें सोना
परिवाद नाम वृथा वार्त्ता वा किसीकी निन्दा करना स्त्री नाम वेश्या औ-
र परस्त्रीगमन तो अत्यन्त भ्रष्ट है किन्तु अपनी जो विवाहित स्त्री उस्से
भी काम से आसक्त होके अत्यन्त फसजाना वा स्वस्त्री में अत्यन्त वीर्यका
नाश करना मद नाम भांग, गांजा, अफीम और मद्य इनका सेवन क-
रना तौर्यत्रिकं नृत्यका देखना और करना वादित्रोंका वजाना वा सु-
नना गानका सुनना वा करना वृथाट्या नाम वृथा जहां तहां भ्रमण
करना अथवा वृथा वार्त्ता वा हास्य करना यह कामसे दशव्यसनसमू-
हगण उत्पन्न होते हैं इसको प्रयत्नसे राजा छोड़दे इसको जान छोड़ै

गा तोधर्मऔरअर्थ अर्थातधनसहित राज्यनष्टहोजायगा इसमें कुछसन्देहनहीं क्रोधसेआठउत्पन्नजोदुष्टव्यसनवेयेहैं ॥ २९ ॥ पैशून्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासुयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजंचपारुष्यंक्रोधजोपिगणोऽष्टकः ॥ ३० ॥ भ० पैशून्यनाम चुगली करना साहस नामविचारकेविनाअन्यायसेपरपदार्थकाहरणकरलेना अभिमानवलयुक्तहोके द्रोहनाम सज्जनों से भीप्रीति का न करना ईर्ष्या नाम पर सुख न सहना असूयानाम गुणोंमें दोष और दोषों में गुणोंका कहना अर्थदूषणनाम अपने पदार्थों का वृथा नाश करना अथवाअभिमानसेदूसरेकेकहेअर्थमेंअनर्थकालगाना वाग्दण्डज पारुष्यनामविनाविचारेमुखसेबोलदेना अथवाकठोरवचन काकहनाइसकानामवाक्है पारुष्यविनाविचारेदण्डकादेना वा अपराधकेविना किसीकोदण्डदेना अपराधकेऊपरभी पक्षपातसे मित्रादिकोंकोदण्डकानदेना यहक्रोधसेआठदुष्टव्यसनयुक्तगणउत्पन्नहोताहै इसकोअत्यन्तप्रयत्नसेराजाछोड़दे अन्यथाअपनेशरीरसहितशीघ्रहीराज्यकानासहोजाताहै इनदोनोंगणोंकाजोमूल हैसोयहहै ॥३०॥ द्वयोरप्ये तयोर्मूलं सर्वेकवयोविदुः। तंयत्ने नजयेल्लोभंतज्जावेतावुभौगणौ ॥ ३१॥ भ० जिससेकामजऔरक्रोधजदोनों गणउत्पन्नहोतेहैं अर्थातसबपापऔरसबअनर्थोंकामूललोभहीहै ऐसासब विद्वान लोगजानतेहैं उसलोभको प्रयत्नसेराजा छोड़दे क्योंकिलोभहीसेदोनोंगणपूर्वोक्त कामजऔरक्रोधजउत्पन्नहोतेहैं इस्से राजाऔर सज्जनलोग जोसबपापोंकामूल उसीकोछेदनकरदेवें इसकेछेदनसेसबअनर्थऔरपापनष्टहोजायगे जैसेकिमूलछेदनसेवृक्षनष्टहोजातेहैं ॥ ३१॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचयथाक्रमम्। एतत्कष्टतमंविद्याच्चतुष्कंकामजेगणे ॥ ३२ ॥ भ० पाननाम मद्यादिकनशाकाकरना अक्षतथास्त्रीमृगया पूर्वोक्तसबजानलेना येचारकामजगणमें अत्यन्तदुष्टहैं ऐसाराजाजानै ॥ ३२ ॥ दण्डस्यपातनंचैववाक्पारुष्यार्थदूषणे। क्रोधजेपिगणोविद्यात्कष्टमेतत्त्रि-

कं सदा ॥ ३३ ॥ म० दण्डकानिपातन वाक्पारुष्य और अर्थदूषण ये
तीन क्रोधके गणमें अत्यन्त दुष्ट हैं १८ अठारहमेंसे ये सात अत्यन्त दुष्ट
हैं ॥ ३३ ॥ सप्तकस्यास्य वर्गस्य सर्वत्रैवानुषंगिणः । पूर्वं पूर्वं गुरुतरं-
विद्याद्व्यसनमात्मवान् ॥ ३४ ॥ म० चार कामके गणमें और तीन क्रो-
धके गणमें सब व्यसन अनुसंगी हैं कि एक होवे तो दूसरा भी हो जाय इन
सातोंमें पूर्व २ अत्यन्त दुष्ट हैं ऐसा विचारवान्को जानना चाहिये जै-
से कि अर्थदूषणसे वाक्पारुष्य दुष्ट है वाक्पारुष्यसे दण्डका निपातन दंड
के निपातनसे शिकार शिकारसे स्त्रियोंका सेवन इससे अक्षक्रीड़ा और
सबसे मद्यादिकपान दुष्ट है ऐसा निश्चित सब सज्जनोंको जानना चा-
हिए ॥ ३४ ॥ व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते । व्यसन्यधोऽधो-
व्रजति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः ॥ ३५ ॥ म० व्यसन और मृत्यु इन दोनोंमें
जो व्यसन है सो मृत्युसे भी बुरा है क्योंकि जो व्यसनी पुरुष है सो पापों
में फसके नीच २ गतिको चला जाता है और जो व्यसनरहित पुरुष है
सो मर जाय तो भी स्वर्ग अर्थात् सुखको प्राप्त होता है इससे जिसका बड़ा
दुष्टभाग्य होता है वही दुष्टव्यसनमें फसजाता है और जिसका भाग्य
अच्छा होता है वह दुष्टव्यसनोंसे दूर रहता है ॥ ३५ ॥ मौलान्शास्त्र-
विदः शूरान्लब्धलक्ष्यान्कुलोद्गतान् । सचिवान्सप्तचाष्टौवा प्रकु-
र्वीत परीक्षितान् ॥ ३६ ॥ म० फिर राजा सात वा आठ पुरुषोंको अ-
पने पास रखलेवे कैसे होवें कि बड़े उदार सब शास्त्रके जाननेवाले शूर
वीर, जिन्होंने प्रमाणोंसे पदार्थविद्या पढ़लिया है श्रीमानोंके उत्तम
कुलमें जिनका जन्म होय उनकी यथावत् परीक्षा करके राजा रखले
क्योंकि राज्यके कार्य एकसे कभी नहीं होसक्ते इससे जितने पुरुषोंसे
अपना काम होसके उतने पुरुषोंकी परीक्षा कर२ के रखले उनसे य-
थावत काम लेवे परन्तु विना परीक्षा मूर्खको कभी न रक्खे और
विना उन सभासदोंकी सम्मतिसे किसी छोटे कामको भी राजा स्वतन्त्र
होके न करै और जो स्वाधीन होके कुकर्मी राजा करै तो वे सभासद्
पुरुष राजाको दण्ड दें फिर दण्डसे भी न मानै तो उसको निकालके

दूसराराजाउसीवक्तबैठादें ॥३६॥ सैनापत्यंचराज्यंचदण्डनेतृत्व-
मेवच। सर्वलोकाधिपत्यंच वेदशास्त्रविदर्हति ॥ ३७ ॥ भ० सेना-
पतिराज्यकरनेके योग्यराजादण्डदेनेवाला सर्वलोकाधिपतिअ-
र्थात्राजाकेनीचेमुख्यसर्वोपरिजिसकानामदीवानकहतेहैंयेचार
अधिकारवेदऔरसबसत्यशास्त्रइनमेंपूर्णविद्वानहोवैं उनहीकोदेवैं
अन्यकोनहीं क्योंकिवेचारअधिकारमुख्यहैं बिनाविद्वानोंकेवेचार
अधिकारयथावतनहींहोते औरजोमूर्खकाम,क्रोधादिक,दोषयुक्त
इनकोदेनेसेवेचारअधिकारनष्टहोजांयगे इसवास्तेअत्यन्तपरीक्षा
करकेचारपुरुषविद्वानोंकोचारअधिकारदेनाचाहिए जिस्सेकित्रि-
जयराज्यवृद्धिधर्मन्याय औरसबव्यवहारोंकी यथावतव्यवस्थाहोय
अन्यथासबराज्यऔरऐश्वर्यनष्टहोजातेहैं ॥३७॥ तेषामर्थैनियुञ्जी-
तशूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्। शुचिनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने ॥
३८ ॥ भ० उनअमात्योंकेसमीपराज्यकार्यकरनेकेवास्ते राजाशूर
चतुर,कुलीनपवित्रजोहोवैं उनकोराजारखदेवै अमात्यउनसेसब
राज्यकार्योंकोसिद्धकरैं उनमेंसेजितनेशूरहोवैं उनकोजहां२शंका
वायुद्धवहां२रखदेऔरजितनेभीरुहोंयउनकोभीतरगृहकेअधिका-
रमेंरक्खै जहांकिस्त्रीलोगऔरकोशवहांडरनेवालोंकोरक्खै और
जहांशूरबीरलोगोंकाकामहोयवहांशूरबीरोंकोरक्खै ।३८॥ दूतं-
चैवप्रकुर्वीतसर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञंशुचिन्दक्षंकु-
लोद्गतम् ३९॥भ०फिरराजादूतकोरक्खैवहदूतकैसाहोयकिसबशा-
स्त्रविद्यासेपूर्णहोयमनुष्यकोहृदयकीबातगमनशरीरकीआकृतिऔ
रचेष्टाइनसेजानलेना जोकिउसकेहृदयमेंहोय पवित्रचतुर और
बड़ेकुलकाजोपुरुषहोयऐसेपुरुषकोराजादूतकाअधिकारदेवै ३९॥
अनुरक्तःशुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्। वपुष्मानभीर्वाग्मी
दूतोराज्ञःप्रशस्यते ॥ ४० ॥ भ० फिरवैसेकोदूतकरैकिराजामेंबड़ी
प्रीतिजिसकीहोय दक्षनामबड़ाचतुर एकवक्तकहीबातको कभीन
भूलै औरजैसादेशजैसाकाल वैसीबातकोजानै वपुष्मान्नामरूप

बलऔरशूरवीरता जिसमेंहोय बीतभीनामकिसीसेजिसकोभयन होय वाग्मीबड़ावक्ताधृष्टऔरप्रगल्भहोवै ऐसाजोदूतराजाकाहोय सोश्रेष्ठहोताहै॥४०॥ अमात्येदण्डआयत्तोदण्डेवैनयिकीक्रिया। नृपतौकोशराष्ट्रेचदूतेसन्धिविपर्ययौ॥४१॥ भ० दण्डदेनेकाजितनाव्यवहारवहसबशास्त्रवितधर्मात्मापुरुषोंकेआधीनरक्खै और दण्डअन्यायसेनहोनेपावै किन्तु विनयपूर्वकहीहोवै कोशऔरराज्ययहदोनोंराजाकेअधिकारमेंरहैं सन्धिनाममिलापविपर्ययनाम विरोधयेदोनोंदूतकेआधीनराजारक्खै॥४१॥ तत्स्यादायुधसम्पन्नं धनधान्येनवाहनैः। ब्राह्मणैःशिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेनच॥ ४२॥ भ० तत्नामदुर्गकिलासबप्रकारकेआयुध धनधान्यनामअन्नवाहनसवारीब्राह्मणविद्वान शिल्पीनामकारीगरलोग नानाप्रकारकेयन्त्रतथाघासआदिकचारा औरउदकनामजल इनसेपूर्ण सदारहैकमतीकिसीबातकीनहोय॥४२॥ तस्यमध्येसुपर्याप्तं कारयेद्गृहमात्मनः। गुप्तंसर्वर्तुकंशुभ्रंजलवृक्षसमन्वितम्॥४३॥ भ० उसश्रेष्ठदेशमेंसबप्रकारसेश्रेष्ठअपनाघरराजारहनेकोबनवावैसब प्रकारसेउसस्थानकीरक्षाकरैऔरसबऋतुओंमेंजिसघरमेंसुखहोवै शुभ्रतामसुफेदवहघरहोवै चारोंओरघरकेजलऔरश्रेष्ठ२ वृक्ष हरे२पेड़रहैं उसमेंआपरहैसबराज्यकोदेखैभ्रमणकरै औरसबकेऊपरसदादृष्टिरक्खै जिस्से कोईअन्यायनकरनेपावै॥४३॥ तदध्यास्योद्वहेद्भार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्। कुलेमहतिसम्भूतांहृद्यांरूपगुणान्विताम्॥४४॥ भ० उसस्थानमेंरहकेअपनेवर्णकोसब श्रेष्ठलक्षणोंसेयुक्तऔरबड़ेकुलमेंउत्पन्नभई अत्यन्तहृदयकोप्रसन्न करनेवाली उत्तमजिसकारूपऔरसबविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंसेसम्पन्नस्त्रीकेसाथराजाबिवाहकरै देखनाचाहिएकिब्रह्मचर्याश्रमसेसब विद्याकापढ़ना सबराज्यकार्मका प्रबन्धकरना औरसबव्यवहारों कोयथावतजानना पीछेराजाकाबिवाहमनुभगवाननेलिखा इस्से क्याआयाकि ४८ वा४४ वा४०चालीसवा३६सवर्षमें राजाकोवि-

बाहकरनाउचितहै इससेपहिलेकभीनहीं औरस्त्रीभी२०वर्षसऊपर
२५वर्षतककीहोनाचाहिए तबराजाकासन्तानसर्वोत्तमहोय अ-
न्यथानष्टभ्रष्टहीहोजाताहै ॥ ४४ ॥ पुरोहितंचकुर्वीतवृणुयादेवच-
र्त्विजम्। तेऽस्यगृह्याणिकर्माणिकुर्युर्वैतानिकानिच॥ ४५ ॥ म०
सबशास्त्रोंमेंविशारदनामनिपुण धर्मात्माजितेन्द्रियऔरसत्यबादी
जोकिपूर्वोक्तलक्षणवालाकहाउसकोपुरोहितकरै औरऋत्विजभी
वैसेहीकोकरै एराजाकेजितनेअग्निहोत्रादिकगृह्यकर्मऔरइष्टि-
यांउनकोनित्यकरैं॥ ४५॥ यजेतराजाक्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः। ध-
र्मार्थंचैवविप्रेभ्योदद्याद्भोगान्धनानिच ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोमसे
लेकेजितने अश्वमेधतकयज्ञहैं उनमेंसेकोईयज्ञको राजाकरै सो
पूर्णक्रियाऔरपूर्णदक्षिणासेकरै जितनेविद्वान औरधर्मात्माहोवैं
उनकोनानाप्रकारकेभोजनकरावैऔरदक्षिणाभीदेवै॥ ४६ ॥ सां-
वत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्। स्याच्चाम्नायपरोलोकेवर्ते-
तपितृवन्नृषु॥ ४७॥ म० श्रेष्ठपुरुषोंकेद्वाराबर्ष२केप्रजासेकरोंको
राजालियाकरै केवलवेदविहितऔरधर्मशास्त्रोक्तआचारमेंतत्पर
होवै जितनीप्रजामेंकन्यायुवती औरवृद्धहोवैं इनकोकन्याभगिनी
औरमाताकीनांईराजाजाने जितनेबालकयुवाऔरवृद्धउनकोपुत्र
भाई औरपिताकीनांईराजाजानै अधिकक्याकिसबप्रजाकोपुत्रकी
नांईजानै औरअपनेपिताकीनांईवर्तमानकरै॥४७॥ अध्यक्षान्वि-
विधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः। तेऽस्यसर्वाण्यवेक्षेरन्नृणांकार्या-
णिकुर्वताम्॥ ४८ ॥ म० जहां२जैसा२कामहोय वहां२नानाप्र-
कारकेमन्त्रियोंकोरखदेवै सबप्रजाकेसुखकेवास्ते सबकार्योंकोदे-
खतेरहैं औरव्यवस्थाकर्त्तारहैं जिस्से किअधर्मनहोनेपावै परन्तुवे
मूर्खनहोवैंकिन्तुसबविद्वानहीहोवैं ॥ ४८ ॥ आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत्। नृपाणामक्षयोह्येषनिधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते॥
४९ ॥ म० नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति। तस्माद्राज्ञा-
निधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः॥५०॥ म० नस्कन्दतेनव्यथतेनवि-

नश्यतिकर्हिचित् । परिष्टमग्निहोत्रेभ्योब्राह्मणस्यमुखेहुतम् ५१ ॥
भ० जोब्रह्मचर्याश्रमसेगुरुकुलमेंगुरूकेपास विद्यापढ़केपूर्णबिद्वान
होकेआवैं उनकोराजायथायोग्यसत्कारकरै औरयथायोग्यउन-
कोअधिकारभीदेवै जिस्सेकिसत्यविद्याका लोपकभीनहोय किन्तु
सबविद्यासबमनुष्योंकेवीचमें सदाप्रकाशितरहै अर्थातपुरुषवास्त्री
विद्यारहितनरहनेपावै यहीराजाओंकाअक्षयनिधिअर्थातअक्षय
पुण्यहैजोकिब्रह्मनामवेदकायथावतपढ़नाऔरयथावतबेदोक्तकर्मों
काकरना इस्से आगेकोईपुण्यनहीहैक्योंकि ॥ ४९ ॥ जितनेधनहैं
सुवर्णरजतादिकपुत्रदाराऔरशरीरउनकोचोरलेसक्ते हैं शत्रुभो
हरणकरसक्ते हैं औरउनकानाश भीहोजाताहै परन्तुजोविद्या
निधिहैउसकोनचोरनशत्रुहरसक्ते हैं औरनकभीउसकानाशहो
ताहै इस्से राजालोगोंको बिद्याकाप्रकाशरूपजोनिधि उसकोवि-
द्वानोंकेबीचमेंस्थापनकरनाचाहिए औरनित्यउसकाप्रचारकरना
चाहिए ॥ ५० ॥ जोविद्यानिधिहैउसकोकोईउठाईगिराउठानहीं
सक्ता नउसकोव्यथाअर्थातकभीपीड़ाहोतीहै अग्निहोत्रादिकजि-
तनेयज्ञहैंउनसेयहजोविद्यारूपअग्निहोत्रऔरमुखमेंब्रह्मकेजाननेवाले
अथवापढ़नेवाले केमुखरूपवेदिमेंहोम अर्थातविद्याकाजो स्थापन
करनाहै सोविरिष्टअर्थातश्रेष्ठहै इस्से राजालोगोंकोअवश्य२ चा-
हिए किशरीर,मन औरधनसेअत्यन्तप्रयत्न विद्याकेप्रचारमेंकरैं
इसीसेराजालोगोंकाऐश्वर्यपूर्ण आयु,बल,बुद्धिऔरपराक्रमसदा
अधिकहोतेहैं ॥ ५१ ॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम् ।
शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम् ॥ ५२ ॥ भ० संग्रामों
सेकभीनिवृत्तनहोना किजबतकउसशत्रुकोनजीतले तबतकउपाय
मेंहीरहै किन्तुभागनेकेसमयमेंभागभीजाना औरपराक्रमकेस-
मयमेंपराक्रमकरना इसकानामशूरवीरपनाहै जोकिपशुकीनांई
मारखानावामरजाना इसकानामशूरबीरतानहीं किन्तुबुद्धिही
सेविजयहोताहै अन्यथाकधीनहीं प्रजाओंकापालनकरना जितने

विद्वानसत्यवादीधर्मात्माब्राह्मण अर्थातब्रह्मवित्सबविद्याओंमेंपूर्ण उनकायथावतसत्कारकरना यहीराजालोगोंकाकल्याणकरनेवालापरमश्रेष्ठकर्महै अन्यकोईनहीं ॥ ५२ ॥ आहवेषुमिथोन्योऽन्यंजिघांसन्तोमहीक्षितः। युध्यमानाःपरंशक्त्यास्वर्गंयान्त्यपराङ्मुखाः॥ ५३ ॥ म० प्रजाकेपालनकरनेकेवास्ते श्रेष्ठधर्मात्माओंका यथावतपालन औरदुष्टोंकाताड़नकरनेकेलिये जितनाअपनासामर्थ्य उसेयथावतसबपुरुषमिलके परस्परजोराजालोगहननदुष्टोंकाकतेहैं उसमेंअपनेभीमरणसे जोशंकानहींकरतेहैं औरयुद्धमें पीठनहीदेखातेहैं अर्थातकभीयुद्धसेभागतेनहींपरमहर्षऔरशूरवीरतासेजोयुद्धकरतेहैं उनकाइसलोकमेंअखण्डितराज्यहोताहै औरमरजांयतोमरनेकेपीछे परमस्वर्गकोप्राप्तहोतेहैं क्योंकिउनराजालोगोंकाजितनाकर्महै सोसबधर्मकेवास्ते हीहै औरशूरवीरतासेउत्साहपूर्वकनिर्भयसमयमेंदेहकाशोछोड़ना सोईस्वर्गजानेकाकारणहै ॥ ५३ ॥ युद्धमेंधर्मसेइतनेनियमराजालोगोंकोअवश्यमाननाचाहिए। नकूटरायुधैर्हन्याद्युध्यमानोरणेरिपून्। नकर्णिभिर्नापिदिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः॥ ५४ ॥ म० नचहन्यात्स्थलारूढ़न्नक्लीवन्नकृताञ्जलिम् नमुक्तकेशन्नासीनन्नतवास्मीतिवादिनम्॥ ५५ ॥ नसुप्तन्नविसन्नाहंननग्नन्ननिरायुधम्। नायुध्यमानंपश्यन्तंनपरेणसमागतम्॥ ५६॥ म० नायुध्यव्यसनप्राप्तन्नार्तन्नातिपरीक्षतम् नभीतन्नपराष्टत्तंसतांधर्ममनुस्मरन्॥ ५७ ॥ म० कूटआयुधअर्थातकपट,छल,सेकोईकोकभीयुद्धमेंनमारै रिपुनामशत्रुओंकाकर्णिनामकुटिलशस्त्र विषसेयुक्तशस्त्रसेतथाअग्निसेतपायेहुनशस्त्रोंसेशत्रुकोकभीनमारै ॥ ५४ ॥ जोआसनमेंबैठाहोय नपुंसकहाथकोजोड़ले जिसकेशिरकेबालखुलजांय मैंआपकाहूं मुझकोमतमारोजोऐसाकहै ॥ ५५ ॥ जोसोताहोय जोयुद्धसेभागखड़ाहोय विषादकोप्राप्तभयाहोय वानग्नहोगयाहोय आयुधसेरहित किजिसकेहाथमेंशस्त्रनहोय जोयुद्धनकरताहोय वादेखनेको

आयाहोय अथवादूसरेकेसाथआयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्र केप्रहारसेदुःखितहोगयाहोय औरशस्त्रोंकेलगनेंसे शरीरमेंछेदन होगयाहोय भयभीतहोगयाहोय भूमिमेंखड़ाक्लीवनाम नपुंसक औरभयसेहाथजोड़ले इनकोयुद्धमेंराजाकभीनमारै क्योंकिसत्पुरुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवै शूरवीरतासे उसी कोमारैअन्यकोनहीं किन्तु पकड़केसुखमेंअपनेबशमें उसीवक्तकर ले जोस्त्रीऔरबालकहैं उनकोमारनेकीइच्छाभी राजालोगनकरैं क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहीकर्त्तेहैं उनकेमारनेमें बड़ापापहै इस्से कभीइनकोनमारै ॥ ५७ ॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वहयुद्ध नकरैवायुद्धसेभागजाय अथवाछल,कपट,रक्खै युद्धमेंउसकोबड़ा भारीपापहोताहै । यस्तुभीतःपरावृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः । भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते ॥ ५८ ॥ म० जोभृत्यभययुक्तहोके युद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रुलोगमारडालैं तोबड़ी कृतघ्नताउसनेकिया क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकियाथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजा केकियेकोनाशकरनेसे वहकृतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपाप उसकोवहीप्राप्तहोताहै ॥ ५८ ॥ यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम् । भर्तातत्सर्वमादत्ते परावृत्तहतस्यतु ॥ ५९ ॥ म० उसभृत्य नेंजोकुछपरलोक केवास्ते पुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेलेताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहैसुखकभीनहीयहीधर्मस्वामी औरसबसेवकोंकाभीहै किजोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्य वेपरस्पर हितकरनेहीमेंसदाप्रवृत्तरहैं छलऔरकपटमनसेभीन करै अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं ॥ ५९ ॥ रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनंधान्यंपशून्स्त्रियः । सर्वद्रव्याणिकुप्यञ्चयोयज्जयतितस्यतत् । ६० ॥ म० रथघोड़ाहाथीछाता,धनधान्यपशुगायछेरी,आदिकस्त्री और बस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीते सोईलेलेवै उनमेंसेराजाकुछनले ॥ ६० ॥ राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्ये-

षावैदिकीश्रुतिः। राज्ञावसर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम् ६१॥ भ० परन्तु सबभृत्यलोगसोलहवांहिस्साउनद्रव्योंमेंसेराजाकोदेवें औरराजाभौरसेना नेमिलकेजीताहोय द्रव्यमिलाभया उसमेंसे राजाभोसोलहवांहिस्साभृत्योंकोदेवै इसमेंराजाअधिकवान्यूनता कभीनकरै क्योंकिइसकेबिनायुद्धमेंउत्साहकभीकोईनकरेगा ६१। अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धंरक्षेदवेक्षया। रक्षितंवर्द्धयेद्वृध्यावृद्धं दानेननिःक्षिपेत्॥६२॥ भ० चारभेदहैंपुरुषार्थकेअलब्धजोराज्यादिकउनकोदण्डसेग्रहणकरै जोप्राप्तभयाउसकोखूबबुद्धिऔर प्रीतिसेरक्षाकरै औररक्षितपदार्थोंकाव्याजादिकउपायोंसेवढ़ावै औरजोबढ़ाभयाधन उसकोविद्यादान यज्ञधर्मात्माओंकापालनऔरअनाथोंकेपालनमेंलगावै इनमेंसेभोवेदादिकसत्यशास्त्रोंकेपढ़नेऔरपढ़ानेंहोमें बहुधाधनखर्चकरै अन्यमेंनहीं॥६२॥ वकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्चपराक्रमेत्। वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्चविनिष्पतेत्॥६३॥ भ० राजासबअर्थोंकेसंग्रहकरनेमेंअत्यन्तबुद्धिसेविचारकरै जैसाकिमत्स्यादिकग्रहणकरनेकेवास्ते वकुलाध्यानावस्थितहोकेविचारकरताहै वैसेराजाध्यानावस्थितहोकेसबअर्थोंकाविचारकरै युद्धसमयमेंसिंहकी नाईंपराक्रमकरै जिस्से विजय होवै औरपराजयकभीनहोय आपत्कालमेंअथवादुष्टोंकेनिग्रहकरनेकेवास्ते ऐसागुप्तरहै जैसाकिचीतावाभेड़ियाऔरखरहाजैसे अपनेबिलसेनिकलकेकूदताहौड़ताचलाजाताहै वैसेहीराजाशत्रुकोसेनासे निकलकेभागजाय वाछिपजाय अथवाकिला तोड़नेमें औरशत्रुग्रहणकरनेमेंपराक्रमकरै॥६३॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनांयथा। तथाराज्ञामपिप्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात्॥६४॥ भ० जैसेशरीरदुर्बलकरनेसेबलादिकजोप्राणवेक्षीण होजातेहैं वैसेहीराज्यकेनाश अर्थातअरक्षणसे राजालोगोंकेभी प्राणक्षीणहोजातेहैं अर्थातराज्यसहितनष्टहोजातेहैं॥६४॥ यथाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः। तथाल्पाऽल्पोग्रही-

तव्योराष्ट्राद्राज्ञाब्दिकःकरः । ६५॥ भ० जैसेजोंकवछवाऔरभौंरा थोड़ा२रुधिरदूध औरसुगन्धकोभिनसेग्रहणकरतेहैं उनकानाश कभीनहीकरतेवैसेहीराजाप्रजासथोड़ा२करग्रहणकरैसाल२में॥ ६५ ॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचसमुपार्जनम् । कन्यानांसम्प्रदानांच कुमाराणांचरक्षणम् ॥ ६६ ॥ भ० जबसबआमात्योंकेसाथवाप्रजा-स्थपुरुषोंकेसाथकोईव्यवहारकेनिश्चयकेवास्ते राजाविचारकरै उ-नमें जिसबातमें परस्परविरोधहोय उसमेंसेविरुद्धांशको छोड़ाके सिद्धान्तमें सबकोजबएकताहोय उसबातकाआरंभकरै अन्यकान-हीं कन्याओंकासोलहवेंवर्षसेपहिले विवाहकभीनहोनेपावै तथा चौबीसवर्षकेआगेकन्याविवाहकेबिनाकभीनरहनेपावै जिसकोकी विवाहकीइच्छाहोय तथाकुमारपुरुषोंका२५पर्षकेपहिले विवाह किसीकानहोनेपावै और४०,४४वा४८,वर्षकेआगेबिवाहकेबिना पुरुषभीनरहैंतबतककन्याऔरपुरुषोंकोविद्यादानराजाकरै और उनसेकरावै तथाउनकीरक्षाभीराजाकरावै जिस्से किकोईभ्रष्टन होवै औरविद्याहीनभीकोईकन्या वापुरुषनरहै यहीराजालोगों कापरमधर्म औरपरमपुरुषार्थहै जिस्सेसबव्यवहारउत्तमहोतेहैं अन्यथानहीं औरजिसपुरुषवाकन्याको विवाहकीइच्छाहोनहोवै उसकेऊपरराजावाअन्यकाकुछबलनहीं॥ ६६ ॥ दूतसंप्रेषणंचैव-कार्यशेषंतथैवच । अन्तःपुरप्रचारञ्चप्रणिधीनांचचेष्ठितम् ६७ । दूतकोभेजना औरउस्से सबयथावतव्यवहारोंकाजानना कार्यशेष नामदूतनाकार्यसिद्धिहोगया औरदूतनाकार्यसिद्धवाकोहै उसको विचारसेयथावतपूर्णकरै जिसनगरमें वाजिसस्थानमेंरहै उनम-नुष्योंकायथावतअभिप्रायजानले प्रणिधीनामदूतोअथवादासी इ-नकोभीचेष्टाकोयथावतजानै जिस्से किकोईबिघ्ननहोनेपावै ६७ ॥ कृत्स्नंचाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः । अनुरागापरागौचप्रचारं-मण्डलस्यच॥ ६८॥ भ० येआठविधजोकर्मराजाअमात्यसेनाकोश औरराज्ययेपांचवर्गहैं जिसमेंउसकर्मकोतत्त्वसेजानै औरउसको

रक्षाभीकरै अपनेमेंसबकोप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजा
ओंकाव्यवहार औरउनकेमनकीइच्छाइसकोयथावत्राजाजान-
तारहै जिस्से आपत्कालअकस्मात्कभीनआवै ॥ ६८ ॥ मध्यमस्यप्र-
चारञ्च विजिगीषोश्चचेष्टितम् । उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रय-
त्नतः ॥ ६९ ॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजि-
गीषुनामशत्रुकेतरफसेजोजीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रु
के पक्षमेंनहोवैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथा-
वत्राजाजानलेवै अन्यथासुखकभीनहोगा इस्सेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक
राज्यकेमूलजितनेहैंउनकोकहै औरतत्परहोकेजानैजानकेयथा-
वत्व्यवस्थाकरै ॥ ६९ ॥ इनकोसामअर्थातमिलाप,दानअर्थातधन
कादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खै औरदण्डयेचार
राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तु उनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उस्से
नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इस्से तीनउपायसेजबकार्य
सिद्धिनहोवैतबदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिस्से बहुतधर्मात्मा
होवैं औरदुष्टनहोवैं ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाक-
रतारहैएकतोउक्तप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोप-
ढ़केबिवाहकाहोना औरपांचवेंवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न
भेजैं तोउनकेमातापितादिकोंकेऊपरराजाअवश्यदण्डकरै यथा-
वत्पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै
विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदेदे-
वै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका
अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,क्षत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख
होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरखदे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्वअ-
धिकारकेयोग्यहोवैं तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थातद्विज
बनादेवै तबजिसब्राह्मणक्षत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा
जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजागिन२के
देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकोपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउनका वंशतोछिन्नहीहोगया दूसराराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये जांयऔरदियेभीजांयदूसरीबातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअत्यन्तप्रचारकरै औरजोकोईजालपुस्तकरचैवापढैपढावै उसकोराजाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याजालपुस्तकनरचै तीसरीबातयहहैकिजबकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञानवान,सत्यवादीदयालुऔरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना औरविरक्तहोनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेआज्ञादेवै औरकहदे किआपसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाआकार स्वभावऔरगुणपत्रमेंलिखेऔरग्राम२नगर२मेंबिदितकरदेजिस्से किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै औरउसके वेषवानामसे कोई फिरनेनपावै चौथीबातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त,अधर्मीऔरमिथ्यावादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकोबुद्धिभ्रष्टहोजातीहैजैसोउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगा अच्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनेपावैजोविरक्तहोयतो उसकोपकड़केदण्डदे पांचवीबातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाअधिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना तन्त्रवापुराणकोएकबातभीनलेनी पूर्वमीमांसाअर्थातजैमिनिजो व्यासजीकेशिष्यकेकियेसूत्रोंकेअनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा नित्यरक्खै संध्योपासन,अग्निहोत्रसेलेकेअश्वमेधतककर्मकाण्डहै उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै किविषयभोगऐश्वर्यकेवास्ते कर्मकाकरना औरनिष्कामयहहैकि कर्मोंसेमुक्तिहीकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकोचाहनानहींउसमेंवेदकेजोमन्त्रहैं वेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहींऔरमन्त्रोंके कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसादिकों औरनिरुक्तादिकोंमेंकियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रऔर

उसके ऊपर व्यासमुनिजीका किया भाष्य तथा दश उपनिषद् इन्होंको रक्खे इनमें जैसी उपासना की व्यवस्था है उसी पूर्वक आप और अपनी प्रजाको चलावै पाषाणादिक मूर्त्ति पूजनादिक उपासनाहो नहीं इस्से इसको छोड़ना छोड़ाना हीउचित है तीसरा ज्ञानकाण्ड है उसमें पृथ्वीसेलेके परमेश्वरपर्यन्त पदार्थोंका यथावत् तत्त्वज्ञान काहोना इसका विधान वेद दश उपनिषद् और व्यासजीका किया शारीरकसूत्र उनकी रीतिसे ज्ञानदण्डकी व्यवस्था करै उसमें आपराजा चले और प्रजाको भी चलावै और जितने पूर्वोक्त शैव वैष्णव शाक्तादिक पाखण्ड लिखे हैं उनको कभी न प्रचलित करै क्योंकि ये सब पाखण्ड है तीनों काण्ड में नहीं है उनसे विरुद्ध ही हैं इन पाखण्डोंके चलने में राजा और राज्य नष्ट होजाते हैं सो अत्यन्त प्रयत्नों से इन पाखण्डों का अंकुर मात्र भी न रहने पावै जैसे कि आजकाल आर्यावर्त्त देशमें मण्डली की मण्डली फिरती हैं लाखों पुरुषों में विरक्तता धारण किया है यह मिथ्या जाल ही है इन लाखों में कोई एक पुरुष विरक्तता के योग्य है और सब पाखण्ड में रहे हैं इनको राजा यथावत् परीक्षा करै सत्यवादी, जितेन्द्रिय, सर्वविद्याओं में निपुण और शान्त्यादिक गुण जिसमें होय उसको तो विरक्त ही रहने दे इस्से जितने विपरीत होंय उनको यथायोग्य हलग्रहणादिक कर्मों में राजा लगादेवे इस व्यवस्था को अवश्य करै अन्यथा कभी सुख न होगा॥ सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च। द्वैधीभावं संश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा॥ ६५॥ सन्धिनाम मिलाप विग्रह नाम विरोध यान नाम याचा किशत्रु के ऊपर चढ़ना आसन नाम युद्ध का न करना और अपने राज्य का प्रबन्ध करके घर में बैठ रहना द्वैधीभाव नाम दो प्रकार का बल अर्थात सेना रचलेना इन छः गुणों का विचार किया है सो मनुस्मृति में विचार लेना और भी बहुत प्रकार के राजकर्मों का उसी में विचार किया है सो देख लेवें॥ प्रमाणानि च कुर्वीत तेषां धर्म्यान्यथोदितान्। रत्नैश्च पूजयेदेनं प्रधानपुरुषैः सह॥ ६६॥ म० जिस राजा को जीत लेउस्से नियम करादे कि

जबहमतुमकोबोलावैं वाजैसीआज्ञाकरैंउसकोयथावतकरनाऔ-रमेरेअमात्यकेतुल्यहोके यथोक्तमेरोआज्ञाकरो यथावततुमधर्मसेसबकामकरोअन्यायमतकरोपराजयकेशोकनिवारणकेनिमित्तराजाऔरराजाकेसबपुरुषमिलके उनकोरत्नादिकदेके उसराजाकोप्रसन्नकरैं जिस्से किउसकोपराजयसेदुःखभयाहोय उसकासत्कारसेनिवारणहोजाय फिरउनकोयथावतआजीविकाकरदे जिस्से उनके भोजनादिकोंका निर्वाहोसके उतनी जीविका करदे औरजोराजाधर्मसेराज्यकरै विद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम, औरजितेन्द्रियहोय उस्से नयुद्धकरै नउस्से राज्यलेनेकोइच्छाकरै किन्तु उसकोबन्धुऔरमित्रवत्जानै॥ ६६ ॥ प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदक्षंदातारमेवच। कृतज्ञंधृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिंबुधाः॥ ६७ ॥ म० पण्डित, कुलीन, शूर,वीर, चतुर, दाता,कृतज्ञ और धैर्यवान पुरुषसेवैरकभीनकरै जोकभीवैरकरैगा तोउसको दुःखहीहोगा ऐसेपुरुषकापराजयकभीनहींहोसक्ता॥ ६७॥ एवंसर्वमिदंराजासहसंमन्त्र्यमन्त्रिभिः। व्यायाम्याप्लुत्यमध्याह्नेभोक्तुमन्तःपुरंविशेत्॥ ६८॥ म० इसप्रकारसेसर्वराजसम्बन्धीजोकर्मउसकाविचारमन्त्रियोंकेसाथकरकेव्यायामनामदण्डमुद्गरकरके सिंहकीनांई अथवानटकीनांईअभ्यासकरकेमध्याह्नसमयकेपहिलेभोजनकरै भोजनकरकेन्यायघरमेंजाके सबन्यायोंकोयथावतकरैजितनीराजसम्बन्धीबातेंलिखीहैंये सबमनुस्मृतिसप्तमाध्यायकीहैं यहांतोसंक्षेपसेलिखीहैं बिस्तारसे देखाचाहैतोवहांदेखलैएकयहबातअवश्य होनीचाहिए कि जोमनुष्य राजाहो उसीकी आज्ञामें चलैं यह बातठीकनहीं क्योंकिराजातोप्रतिष्ठा औरमानकेवास्ते सर्वोपरि है परन्तुविचारकरनेकोएकपुरुषसमर्थनहींहोताजितनेदेशवाअन्यदेशमेंबुद्धिमानपुरुषहोवैंउनसबकोराजाएकसभारक्खै उससभामेंआपभीरहैफिरसबपुरुषोंकेबिचारसेजोबातठीक२ठहरेउसबातकोसबकरैं इस्सेक्याआयाकिजोराजाअन्यायकारीहोजाय तोउस-

कोनिकालबाहरकरैं औरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको
बैठादेवैं क्योंकिराजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा
राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरैतबउसको
यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्य:प्राकृतोजन:। तत्ररा-
जाभवेद्दण्ड्य:सहस्रमितिधारणा ६९॥ म० जिसअपराधमेंप्रजास्थ
पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउस-
केऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे
हजारगुनादंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो
धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइससेदोनोंकेऊपर दण्ड
कीव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥ ६९॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकि-
ल्बिषम्। षोड़शैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच ॥ ७० ॥ ब्राह्मण
स्यचतु:षष्टि:पूर्णंवापिशतंभवेत्। द्विगुणवाचतु:षष्टिस्तद्दोषगुणव-
द्धिस: ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय कि-
न्तु गुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउससे आठ
गुणदण्डले वैश्यसेसोलहगुण,क्षत्रियसे३२गुण,और१०० वा१२८
गुणदण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिअच्छेहोकेनीचकर्मकरै उसको
अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्य:सुहृन्माताभार्या-
पुत्र:पुरोहित:। नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२ ॥
म० पिताआचार्यबिद्यादातासुहृत्नाममित्रमाता भार्यानामस्त्री
पुत्रऔरपुरोहितजब२अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै
क्योंकिराजाकेसामनेकोई अपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें
स्थितनरहै ॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डय-
न्। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥म० जोराजाअन्याय
करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उस-
कोबड़ीअपकीर्तिहोतीहै औरनरककोभी वहजाताहै इससे राजा
कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खै
किसीकापक्षपातकभीनकरै इससे क्याआयाकि किसीनेंमनुस्मृति

वाअन्यजनसेऐसेश्लोकप्रक्षिप्तकियाहोय किब्राह्मणवासन्यासीआदि-
कोदण्डनदेनाउसकासज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ म० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातघायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मऔरअधर्मदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मकाजोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालैंजैसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोमुरदाहोजानना तथाजहां२शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवै फिरजिससभामेंसत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढ़होहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्विषी ॥ ७५ ॥ म० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उस्से विरुद्धकहैतोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इस्से
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयसेजानताहोय वैसाहीकहै उस्से
विरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्विपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इस्से
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ म० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वजनसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहोजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

व्योमानोधर्मोहतोवधीत्॥ ७७॥ भ० जोपुरुषधर्मकानाशकरता है अर्थातधर्मकोछोडके अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार डालताहै उसअधर्मीकीरक्षाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनही औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमे- श्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इससे जैसीआज्ञाबिचारकेयथावतकियाहै वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो धर्मका औरजोपुरुषधर्मकोरक्षाकरताहै उसकीधर्मभोसदारक्षा करताहैउसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इससे सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७ वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्ययःकुरुतेह्यलम्। वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्मा- द्धर्मंनलोपयेत्॥ ७८॥ भ० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थातधर्मको छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंड़ुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका है औरभगवान्भीतीनोंलोकमेंधर्महीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्म कोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्र वा भंड़ुवाको नांईजानतेहैं इससे धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥ एक एवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः। शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धि- गच्छति॥ ७९॥ भ० देखनाचाहियेकिसबजगत्मेएकधर्महीसब मनुष्योंकामित्रहै अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकेपीछेभीसाथदे- ताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही छूटजातेहैं परन्तु धर्मकासंगसदाबनारहताहै इससेधर्मकोकोईक- भीनछोड़ै॥ ७९॥ पादोधर्मस्यकर्त्तारं पादःसाक्षिणमृच्छति। पादःसभासदःसर्वान्पादोराजानमृच्छति॥ ८०॥ भ० जिससभा मेंअन्यायहोताहैउससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी हैं उनकोअधर्मकावृतियांशमिलताहै जितनेसभासदहैं किराजा केअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्मकेचारहिस्से होजातेहैं औरचारोंकोउक्तप्रकारसेएक२हि-
स्सामिलजाताहै॥ ८०॥ राजाभवत्यनेनास्तु मुच्यन्तेचसभासदः।
एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्होयत्रनिन्द्यते॥ ८१॥ म॰ जिससभामें
धर्मऔरअधर्मकाविवेकयथावतहोताहै कियथावत्पक्षपातकोछो-
ड़केसत्य२हीन्यायहोताहै उससभाकेराजासाक्षी औरअमात्यसब
धर्मात्माहोजातेहैं औरजिसनेअधर्मकिया उसीकेऊपरसबअधर्म
होताहै किवहीअधर्मकाफलभोगताहै राजादिकआनन्दसेपुण्य
काफलभोगतेहैं दुःखकभीनहीं इससे राजाअमात्यऔरसाक्षी प-
क्षपातसेअन्यायकभीनकरैं॥ ८१॥ वाह्यैर्विभावयेल्लिंगैर्भावमन्त-
र्गतन्नृणाम्। स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषाचेष्टितेनच॥ ८२॥ म॰
जबकोईवादीप्रतिवादीकान्यायकरनेलगै तबबाहरकेचिन्होंसे भी-
तरकेभावकोजानलेवै उसकाशब्दरूप इङ्गितनामसूक्ष्महृदयऔ-
रनाड़ीकीचेष्टाआकृतितथानेत्रकीचेष्टाऔरवाह्यअंगोंकीभोचेष्टा
इनसेसत्य२निश्चयकरले किइननेअपराधकियाहै औरइननेनहीं
किया एकबातयहभी परीक्षाकीहै जो हाथकेमूलमें धमनीनाड़ी
औरहृदयउनकोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे स्पर्शकरकेयथावत्परीक्षा
करै फिरयथावत्दण्ड औरअदण्डकरै इन१८अठारहस्थानोंमें
विचारकीव्यवस्थाहै॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानंनिःक्षेपोस्वामि-
विक्रमः। संभूयचसमुत्थानंदत्तस्यानपकर्मच॥ ८३॥ वेतनस्यैव-
चादानंसंविदश्चव्यतिक्रमः। क्रयविक्रयानुशयो विवादःस्वामिपा-
लयोः॥ ८४॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके। स्तेयंच-
साहसंचैवस्त्रीसंग्रहमेवच॥ ८५॥ स्त्रीपुंधर्मोविभागश्चद्यूतमाह्व-
यएवच। पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह॥ ८६॥ एषु-
स्थानेषुभूयिष्टं विवादंचरतान्नृणाम्। धर्मंशाश्वतमाश्रित्य कुर्या-
त्कार्यविनिर्णयम्॥ ८७॥ म॰ ऋणकालेना औरदेना १ नि
क्षेपकेदोभेदहैं जोगिनकेतौलके वाकिसीकेपासपदार्थरक्खै उस
कानामनिक्षेपहै दूसरागुप्तबांधकेकिसीकेपासधरावटरक्खी—

आधेंर्धनसे व्यवहारकरना २ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकापदार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले ३ संभूयसमुत्याननाम धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरीकादेनावानदेना अथवानलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ वेचनाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंविवादकाहोना सीमामेंविवादकाहोना १० कठोरवचन औरविना विचारे दण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकोस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरलेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकोभंगकरना १५ दायभाग १६ द्यूतनामजूवा १७ औरजोप्राणिअर्थातस्त्रीपुत्रकुटुम्बगायहस्ती, अश्वादिकपशुओंकोदवाकरद्यूतकाकरना उसकानामसमाह्वयहै १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता है इनकाउक्तलक्षणदूतप्रेषण औरपूछनेसेराजायथावत्न्यायकरै इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमाध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यं सर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम् ८८॥ जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थोंकोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसकोचोरोंसेलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकड़ाजाय औरपदार्थनमिलै तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्ते राजाकाहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपनापालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेधनलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहींहै किन्तु वहीचोरऔरडांकूहै॥ ८८॥ यादृशाधनिभिःकार्याव्यवहारेषुसाक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतैः॥ ८९॥

म० राजाऔरधनिकलोगोंकोजिसप्रकारकेसाक्षीव्यवहारोंमेंक-
रनाचाहिए उनकोयथावतकहतेहैं औरसाक्षियोंकोजैसासत्य२
होकहनाचाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणःपुत्रिणोमौलाःक्षत्रविट्शूद्रयो-
नयः। अर्थ्युक्ताःसाक्ष्यमर्हन्तिनयेकेचिदनापदि ॥ ९० ॥ म० गृ-
हस्थपुत्रवालेऔरवेउदारहोवें फिरक्षत्रिय,वैश्य,ब्रह्म,शूद्रवर्णोंमें
सेकार्यवालापुरुषजिनकोकहै कियेमेरेसाक्षीहैं औरकोईआपत्
कालकेबिनानहोय ॥ ९० ॥ आप्ताःसर्वेषुवर्णेषुकार्याःकार्येषुसा-
क्षिणः। सर्वधर्मविदोऽलुब्धाविपरीतांस्तुवर्जयेत् ॥ १०० ॥ म० ब्राह्म-
णादिक सबवर्णोंमें जोआप्त बड़ाधर्मात्मा, सत्यवादी औरजिते-
न्द्रियहोवे तथासर्वधर्मको जानताहोय और काम,क्रोध,लोभ,
मोह,भयशोकादिक दोषजिसमेंनहोवें सत्यबोलनेहीका जिसका
नियमहोय ऐसेहीकोराजाऔरप्रजासाक्षीकरें इनसेविपरीतम-
नुष्योंकोकभीसाक्षीनकरें ॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनोनाप्तानसहाया-
नवैरिणः। नदृष्टदोषाःकर्तव्यानव्याध्यार्त्तानदूषिताः ॥ १०१ ॥ म०
जिननेपरस्परव्यवहारसेसबन्धरखतेहोंय अनाप्तनामजिनमेंकाम
क्रोध,लोभ,मोह,भयमूर्खत्वादिदोषहोवें सहायकारीहोवेंवाशत्रु
होवें जोवादीप्रतिवादीकेदोषवा गुणोंकोजानताहोय रोगसेआ-
र्त्तहोय वादुष्टकर्मकोकरनेवाले इसप्रकारकेमनुष्योंकोराजावाप्र-
जासाक्षीकभीनकरें ॥ १०१ ॥ नसाक्षीनृपतिःकार्योनकारुककुशी-
लवौ। नश्रोत्रियोनलिंगस्थो नसंगेभ्योविनिर्गतः ॥ १०२ ॥ म०
राजाकारुकनामशिल्पी कुशीलवनामकुदारीसेआजीविकाकरने
वाले श्रोत्रियनामवेदपढ़ानेवाला लिंगस्थब्रह्मचारीऔरवानप्रस्थ
संगेभ्योविनिर्मुक्तनामसन्यासीइनकोभीराजावाप्रजासाक्षीनकरें
क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्यायकरनेवाला
होताहै वेदपाठी,ब्रह्मचारी,वानप्रस्थऔरसन्यासीइनकोसाक्षीक
रनेसपढ़नापढ़ानातपऔरविचारमेंविघ्नहोगा इससेइनकोसाक्षी
नकरनाचाहिये। १०२ ॥ नाध्यधीनोनवक्तव्योनदस्युर्नविकर्मकृत्।

नवृद्धोनशिशुर्नैकोनान्त्योनविकलेन्द्रिय: ॥ १०३ ॥ भा० पराधीनव-
क्तव्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवें डांकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला वृद्ध
बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजा
वाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०३ ॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णो
पपीडित: । नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्कर: ॥ १०४ ॥
भा० दु:खीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल
क्षुधा औरतृषासे जोपीड़ितहोवें श्रमकरकेदु:खीहोवें कामातुर
क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०४ ॥
स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रिय:कुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजा: । शूद्राश्चसन्त:शूद्रा-
णामन्त्यानामन्त्ययोनय: ॥ १०५ ॥ भा० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रि-
यजोस्त्रियांहोवें वेस्त्रियोंकोसाक्षीहोवें द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज
शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसा-
क्षीहोवें अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंविस्तार
सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले ॥ १०५ ॥ सा-
हसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच । वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसा-
क्षिण: ॥ १०६ ॥ जितनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा
ग्रहणकठोरबचनवा बिनाबिचारेदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षी
कीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तु यथावत्बिचारकरके इनकोदण्ड
देना उचित है ॥ १०६ ॥ सत्येनपूयतेसाक्षी धर्म:सत्येनवर्द्धते ।
तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभि: ॥ १०७ ॥ भा० सत्यबोलने
सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म
भीसत्यबोलनेहीसे बढ़ताहै इससे सबमनुष्यों कोसत्यही साक्षी दे-
नीचाहिए मिथ्याकभीबोलनानहीं ॥ १०७ ॥ आत्मैवह्यात्मन:सा-
क्षीगतिरात्मातथात्मन: । मावमंस्था:स्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमु-
त्तमम् ॥ १०८ ॥ भा० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरेआत्माकासा-
क्षीतूंहीहै औरतेरीसद्गतिकाकरनेवालाभीतूंहीहै क्योंकिजोतूं
सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदु:खनहोगा औरमिथ्याबोलनेसेसदातूं

दुःखीहोरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इससे हेमित्रसबसाक्षियोंमें सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतूंमतकर औरजोतूंअपमानस्वात्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेतेरीसद्गतिनहींहोगी किन्तुअसद्गतिहीहोगी इससे सत्यहीसाक्षीबोले मिथ्याकभीनहीं ॥ १०८ ॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनः । मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा ॥ १०९ ॥ भ० ब्रह्मघ्न नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री और बालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भीपाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुझकोसबहोवेंजो तूंसत्यनबोले ॥ १०९ ॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम् । तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ ११० ॥ हेभद्रहेसाक्षिन् जोतूंमिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरापुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इससे तूंसत्यबोले ॥ ११० ॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे । नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः ॥ १११ ॥ हेकल्याणतूंजानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूंमतजान क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थितहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोयथावत्जानताहै इससे तूंपरमेश्वर औरअधर्मसे भयकरकेसत्यही बोल ॥ १११ ॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः । तेनचेदविवादस्ते मागंगामाकुरूनमः ॥ ११२ ॥ भ० जो यमनाम यथावत् न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रकाशकरनेवाला देवनामस्वप्रकाश स्वरूपसर्वान्तर्यामी तेरेहृदयमें भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुझकोनकरना होय तोतूंसत्यहीबोलऔरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो तुझकोकभीसुखनहोगा औरजोतूंसत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरुक्षेत्रमेंप्रायश्चितकरना वाराजगृहमेंदण्ड अथवापरलोक परजन्म मेंनरकादिकसबदुःखोंकोप्राप्तितुझकोकभीनहोगी इससे तुझकोअ-

वश्यसत्यहीबोलनाचाहियेमिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्यविद्वान्
हिवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशंकते। तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपु-
रुषंविदुः ॥ ११३ ॥ म० जिसपुरुषकाक्षेत्रज्ञजोहृदयस्थआत्मा वि-
द्वान्नाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोई अपनाआत्माजिसकर्म
मेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको
कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यबचनहीबोलताहै उससेअ-
धिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चि-
तजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाबिस्तारलि-
खाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना
औरउक्तप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहोसक्ताहै अन्यथानहीं ॥ ११३ ॥
उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम्। चक्षुर्नासाचकर्णौचधनं-
देहस्तथैवच। ११४ ॥ म० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय,उदर,जिह्वा,हस्त
पाद,चक्षु,नासिका,कान,धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहै इ-
न्हीं मेंदण्डका स्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्द-
ण्डंतदनन्तरम। तृतियंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥
म० प्रथम तो वाग्दण्ड करै कि ऐसा काम कोईदुष्ट न करै दू-
सराधिक्दण्ड कितुझकोधिकारहै दुष्टतैंनेंनीचकर्मकिया तीसरा
धनदण्डकिउससे धनलेलेना चौथाबधदण्डकिउसकोमारडालना
॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादाना दादेयस्यचवर्जनात्। दौर्बल्यंख्या-
प्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति ॥ ११६ ॥ राजाजोनलेनेकोवस्तुहैउस-
कोकभीनले औरलेनेकाअपनाजोकरउसमेंसेएककौड़ीभोनछोड़ै
क्योंकिइससे राजाकी दुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोक
वापरलोकमें नाशहीहोताहै इससे क्याआयाकि राजाअपने अं-
शोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअंशकोकभीग्रहणनहींक-
रता सोईराजाश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्या-
न्नराधिपः। अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ म०
जो राजा अन्याय तथा मोहसे कार्योंको करताहै उसराजाको

शीघ्रहीनाशहोजाताहै क्योंकिउसकोशत्रुलोग शीघ्रहीवशमें कर लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्रनदृश्येतागमःक्वचित्। आगमः कारणंतत्रनसंभोगइतिस्थितिः॥ ११८ ॥ प्रजामेंभोगनानाप्रकार का देखपडे उसको राजा विचारकरै किआमदनी इनकोकहां से होती है जोआमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाक-रताहोय उसकोपकड़केराजादण्डदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक कुकर्मकरताहोगा इसकेपासधनकहांसेआया भोगकाकाकारण आगमहीहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्यादा है इसकोराजाअवश्यपालनकरै॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्क-स्मैचिद्याचतेधनम्। पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥ भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेने केवास्तेवाअपनेभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइ-तनेकामकेहेतु हमआपको धनदेतेहैं सोआपइतनाही कामइस्से करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरैतोउस्से सबधनलेलि-याजाय जिसनेकिदियाथावहीलेले औरजोउसकोवहनदेतोराजा उसकोपकड़केदण्डसेदिलादे॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्य-स्यात्समन्ततः। शम्यापातास्त्रयोवापि त्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥ भ० गांवकेचारोंओर१००सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खै धनु-ष्यहोताहै साढ़ेतीनहाथकाअथवाकोईबलवानपुरुषएकदण्डाको लेके खूबबलसेफेंकेजहांवहदण्डपड़े उस्से फिरफेंके उसस्थानसेभी तीसरीबारफेंकेजहांवहदण्डाजायवहांतकमैदानरक्खै इसमेंसौ धनुष्यसेकुछअधिकमैदानरहेगा औरनगरकेचारोंओरतिगुणमै-दानरक्खै क्योंकिग्रामवानगरमें वायुशुद्धरहेगा इस्से रोगथोड़े होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्तेअवश्यइतनामैदानरख-नाचाहिए१२०॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेनृपः। स्तेना-

नांनिग्रहादस्यवशोराष्ट्रंचवर्द्धते १२१॥ भ० चोरोंकेनिग्रहमेंराजा अत्यन्तयत्नकरै क्योंकिचारोंऔरदुष्टोंके निग्रहसेराजाकीकीर्त्ति औरराज्यनित्यबढ़तेचलेजातेहैं अन्यथानहीं ॥ १२१ ॥ रक्षन्धर्मेण भूतानि राजावध्यांश्चघातयन् । यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतदक्षिणैः ॥ १२२ ॥ भ० जोराजाधर्मनामन्यायसेसबभूतोंकोरक्षाकरताहै औरदुष्टोंकोदण्डसेमारताहै वहराजासहस्रोंवासैकड़ोंरुपैयोंसे अर्थातलक्षऔरकोटिरुपैयोंसेजानों किनित्ययज्ञहीकरता है क्योंकिराजाकामुख्यधर्मयहीहै श्रेष्ठोंकापालनऔरदुष्टोंकाताड़नकरना ॥ १२२ ॥ अरक्षितारंराजानं बलिंषट्भागहारिणम् । तमाहुःसर्वलोकस्यसमग्रमलहारकम् ॥ १२३ ॥ भ० जोराजाधर्मसेयथावत्प्रजाकापालननहींकरता औरप्रजासेधान्यमें षष्ठांशइत्यादिककरोंकोलेताहै वहराजाकरक्यालेताहैकिसबसंसारकेमलोंकोखाताहै औरसबकेजैसेविष्टादिकोंकोशुद्धिकरताहैचांडाल वैसाहीवहराजाहै ॥ १२३॥ निग्रहेणचपापानांसाधूनांसंग्रहेणच । द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः ॥ १२४ ॥ भ० जोराजापापीपुरुषोंको अत्यन्तउग्रदण्डदेताहै औरश्रेष्ठोंकोरक्षा तथासन्मानकरताहैवहराजासदापवित्रहैऔरस्वर्गकाभागीहैजैसेकिद्विजातिलोगविद्या,तपऔरयज्ञोंसेपवित्ररहतेहैं ॥ १२४ ॥ यःक्षिप्तोमर्षयत्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते । यस्त्वैश्वर्यान्नक्षमतेनरकंतेनगच्छति ॥ १२५ ॥ भ० जोराजाआर्त्तनामदुःखीलोगगालीतकभीदें तोभीसहनकरताहै सोईराजास्वर्गमेंपूज्यहोताहै औरजोऐश्वर्यकेअभिमानसेकिसीकासहननहींकरता इसीसेवहराजा नरककोजाता है क्योंकिजोसमर्थहैउसीकोसहनकरनाचाहिए औरजोनिर्बलहै सोतो अपनेहीसेसहनकरेगा ॥ १२५ ॥ राजभिर्धृतदण्डास्तुकृत्वापापानिमानवाः । निर्मलाःस्वर्गमायान्तिसन्तःसुकृतिनोयथा ॥ १२६ ॥ भ० जिनकेऊपरअपराधकरनेसेराजाओंकादण्डहोता है फिरवेइसलोकमेंआनन्दपातेहैं औरमरनेकेपीछे उत्तमस्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग॥ १२६ ॥ येनयेनयथांगेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः ॥ १२७॥ भा० जिसर अंगसेजैसार कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरैं चोरलोग उसअंगको अर्थात्जिससे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरैं उसकोनेच निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावै तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगत्केमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै ॥ १२७ ॥ अनेनविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम् । यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम् ॥ १२८ ॥ भा० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअत्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इस्से चोरोंकानिग्रह अत्यन्तप्रयत्नसेराजाकरै ॥ १२८ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैवचहिंसतः । साहसस्यनरःकर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः ॥ १२९ ॥ भा० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीका उपदेश करताहै और किसीकोमरवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिक पुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़े पापीहैं क्योंकिपापीतो आपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्कोदुष्टकरदेतेहैं इस्से ॥ १२९॥ नमित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात् । समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान्॥ १३०॥ भा० जितनेपुरुषसाहसिकनाम दुष्टकर्मकरने औरकरानेवालेहोंय अर्थात्अधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्यागमनऔरजूवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमित्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़ै क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं ॥ १३० ॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन् ॥ १३१ ॥ गुरूवापुत्रअथवापितावालकवाटद्धवाब्राह्म-

ण कि सबशास्त्रोंको पढ़ाहुवा औरबहुश्रुतनाम सब शास्त्रकोसुनने वाला वहजोआततायीनामधर्मकोछोड़के अधर्ममेंप्रवृत्तभयाहोय तोइनपुरुषोंको मारहीडालनाउचितहै इसमेंकुछबिचारनकरना क्योंकिदण्डहीसे सबशिष्टहोजातेहैं बिनादण्डकोईनहीं इससे सबकेऊपरदण्डकाहोनाउचितहै किकोईअपराधीपुरुषदंडकेबिनारहनेनपावै॥ १३१॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नृन्महीपतिः। उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्दयित्वाप्रवासयेत्॥ १३२॥ म० जोपुरुषपरस्त्रीगमनमेंप्रवृत्तहोवै वाअन्यपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैं उनकेललाटमेंचिन्हकरकेदेशबाहरनिकालदे जोपहिलेचोरीकरै उसके ललाटमें कुत्तेकेपंजाकीनांई लोहेकाचिन्ह अग्निमेंतपाकेलगादे किमरणतकवहचिन्हनबिगड़े फिरजोदूसरीबार वहीपुरुषचोरी करै तोहाथवापगउसकाराजाकाटडालै औरफिरभीचोरीकरैवा करावै तोपहिलेदिननाककाटले दूसरेदिनकान तीसरेदिनजीभ चौथेदिननखनिकालले पांचवेदिनआंखछठवेंदिनशिरच्छेदनकरदे सबमनुष्योंकेसामनेजिस्से किफिरचोरीकोइच्छाभीकोइनकरै औरजोपरस्त्रीवावेश्याकेपासगमनकरैअथवापरपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैं उनकेललाटमेंपुरुषकेलिंगइन्द्रियकाचिन्हअग्निमेंतपाके लगादे जिस्से कि मरणतक लज्जाऔरअप्रतिष्ठा उनकोहोवै उनकोदेखकेऔरकोईइनकर्मोंमेंप्रवृत्तनहोयक्योंकि॥ १३२॥ तत्समुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंकरः। येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायकल्पते॥ १३३॥ म० इन्हीकर्मोंसेप्रजाके मनुष्यवर्णसंकर औरपापी होजातेहैं जिस्से किमूलसहित धर्मनष्टहोजाताहै इस्से इनकेनिग्रहमेंराजाअत्यन्तयत्नकरै॥ १३३॥ भर्त्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञातिगुणदर्पिता। तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते॥ १३४॥ म० जोस्त्रीजातिऔरगुणोंकेअभिमान अथवामूर्खतासे बिवाहितपुरुष कोछोड़के अन्यपुरुषसेव्यभिचारकरतीहै उसकोनगरग्रामवादेश कीस्त्रियोंऔरपुरुषोंकेसामनेकुत्तोंसेचिथवाडालै इसरीतिसेउस-

कामरण होजाय जिस्से कि अन्यकोई स्त्रीऐसाकामकभीनकरे १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे। अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्रदह्येतपापकृत्॥ १३५॥ भ० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरे उसकोलोहेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसे अग्निकरके व्यभिचारकृपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्ध होजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सामनेही होना चाहिए जिस्से कि सबको भय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरे॥ १३५॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदुष्टवाक्। नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक्॥ १३६॥ भ० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहनेवाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमाने येसबनहींहैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथानहीं॥ १३६॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः पंचानांविषयेस्वके। साम्राज्यकृत्सजात्येषुलोकेचैवयशस्करः॥ १३७॥ भ० जिसराजाकेराज्य में पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें संम्राट्चक्रवर्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबड़ीकीर्तिकाकरनेवालाहै॥ १३७॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान्। अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्डःशतानिषट्॥ १३८॥ भ० जोब्राह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैंउनकीइच्छाकेबिनाउनकोराजाछःसैमुद्रादण्डकरे क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रहीकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यकाकामबिनासेवाकेक्याकरेगा १३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मांतान्वाहनानिच। आयव्ययौचनियतावाकरान्कोषमेवच॥ १३९॥ भ० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टा वाकर्मवाहन, हस्ती,अश्व,रथ, औरनौकादिक आयनाम पदार्थोंकाआना व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहआकरोंका समूहऔरधनकाकोष इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोईकर्मनष्टवाअन्यथानहोय ॥ १३९ ॥ एवंसर्वानिमान्राजाव्यव-
हारान्समापयन्। व्यपोह्यकिल्विषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम् १४०॥
भ० इसप्रकारसेसबव्यवहारोंको न्यायपूर्वकजोराजाकरताहै वह
सबपापोंसेछूटके परम गतिजोमोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस
व्यवहारको कियाचाहै उसकोसम्यक् विचारकेकरै जिस्से किवह
कार्यपूर्णहोजाय अपूर्ण कभीनरहै ॥ १४० ॥ अनंशौक्लीवपतितौ-
जात्यंधबधिरौतथा। उन्मत्तजड़मूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः॥
१४१ ॥ भ० क्लीवनामनपुंसकपतितनामपापीजन्मसेअंध तथाव-
धिरउन्मत्तनामपागलजड़नाम मूर्ख,मूकऔरजोविद्याहीनवाअ-
जितेन्द्रिय,काम,क्रोधादिकोंमेंयेसबदायभागनपावैं क्योंकियेदाय
भागपावेंगे तोसबपदार्थोंकाव्यर्थनाशकरदेंगे इस्से राजाकोयह
बातअवश्यकरनीचाहिए अपनेपुत्र वाप्रजाके सन्तानोंको जितने
पदार्थराज्यऔरधनादिकउनमेंसेकुछनदिलावै औरजोकोईमूर्ख-
तावामोहसेउनकोदायभागदेवै तोउसकोराजादण्डदे औरनपु-
न्सकादिकोंसेदियेहुएपदार्थकोलेकेयथावत्रक्षाकरै क्योंकिमूर्खों
केहाथपदार्थवा अधिकारआवेगा तोशीघ्रसबकानाशकरके आप
होदरिद्रबनजांयगे फिरराजाकेराज्यमें सबदरिद्रताछायजायगी
फिरराजाकोभीकुछप्राप्तिप्रजासेनहोसकेगी इस्से राज्यऔरधना-
दिकजितनेप्रजाओंकेपदार्थहैं उनपदार्थोंकोराजाकभीनदे और
नदिलावै जोसम्यक्विद्या,बुद्धिऔरविचारसे उनपदार्थोंकोरक्षा
मेंयोग्यहोय उसकोसम्यक्परीक्षाकरके उनपदार्थोंकास्वामीउ-
सकोकरदेअन्यथानहीं ॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्याम-
नीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तंपतितोह्यदद्भवेत्॥ १४२ ॥ परन्तु
उननपुंसकादिकोंकोअपनेसामर्थ्यकेयोग्य वहदायभागलेनेवाला
भोजन,वस्त्रऔरउनकास्थानादिकसेयोगक्षेमयथावत्करै जोवह
भोजनादिकभीउनकोनदेतोपतितहोजाय औरराजाउसकोदण्ड
भीदे इस्से क्याआयाकिभोजनऔरवस्त्रादिकोंकेविनावेदुःखीनर-

हैं औरजोउनकापुत्रयोग्यहोय तोउसकेपिताकेदायभागकोराजा दिलावै इसबातकोराजाप्रयत्नसेकरै अन्यथाराज्यवृद्धिनहींहोगी राजाअपनीप्रजाकीरक्षा औरहितमें सदाप्रवृत्तरहै औरप्रजाभी राजाकीरक्षातथाहितमेंप्रवृत्तरहै जोप्रजाकोआपत्कालआवै तो राजासबप्रयत्नोंसेप्रजाकीरक्षाकरै अर्थातराजाकोआपत्कालकिसीप्रकारकाआवै तोप्रजास्थसबमनुष्यराजाकासबप्रकारसेसहाय करैं क्योंकिप्रजाराजाकेपुत्रकीनांईहोतीहै पिताकोअवश्यचाहिएकिअपनीप्रजाकीसदारक्षाकरै तथाप्रजापुत्रकीनांईजैसेकिपिता कीपुत्ररक्षाकरताहै वैसोराजाकी प्रजारक्षाकरै औरजिसबातसे प्रजाकोपीड़ाहोय उसबातकोराजाकभीनकरै तथाराजाकोजिस बातसे दुःखहोय उसबातको प्रजाकभीनकरै जैसेकिजिनपशुओं वाजिसपदार्थोंसे सबप्रजाकाउपकारहोताहै उसकाराजाकभीविनाशनकरै जैसेकिगाय,भैंस,छेरी,बैलऔरऊंटतथागधादिकइनकोकभीनमारै औरनमरवावै क्योंकिदुग्ध,घृत,अन्नादिकऔर सबव्यवहारइन्होंसे सब मनुष्योंकाचलताहै तथा राजाकाभी इनका मारना दोनों को अनुचितही है राजा भृत्य तथा युद्ध से निवृत्तकभीनहोवै क्योंकियुद्धसे निवृत्तहोगा तोउसीवक्तशत्रुलोग सबपदार्थोंकोछीनलेंगे तथामारडालेंगेवाअत्यन्तदुःखदेंगे जब युद्धकासमयआवै तबराजाजल,अन्न,मनुष्य,शस्त्र,यानसबपदार्थों कीपूर्त्तिरक्खै जिस्से कि किसीपदार्थकेबिना दुःखकिसीकोनहोवै औरयुद्धमेंयुद्धकाआचारविचाररक्खै युद्धकरतेभीजांयऔरखाते पीतेभीजांय कुछ शंका न रक्खै उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धारणकियेरहैं युद्धऔरभोजनभीकरतेजांय ऐसानकरैंकिवस्त्र,जूतेशस्त्र इत्यादिक सबछोड़के हाथगोड़धोके भोजन करैं तबतक शत्रुलोगमारडालैं देखनाचाहिएकियुधिष्ठिरजीकेराज्यसूय औरअश्वमेधयज्ञमें सबसमुद्रपार टापूभूगोलकेसबराजाआयेथे वेसब ब्राह्मण,क्षत्रियोंकेसाथ एकपंक्तिमें भोजनकरतेथे औरबिवाहभी

उनकापरस्परहोताथा जैसेकिकाबिलकन्धारकीकन्या गान्धारी,
धृतराष्ट्रसेविवाहीगईथी तथामद्रोईरानदेशकीराजाकीकन्या पां-
डुसेविवाहीगईथी अर्जुनकेसाथनाग अर्थातअमेरीकाके लोगोंकी
कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारतमें लिखेहैं
औरशूद्रहीसबब्राह्मणऔरक्षत्रियादिकोंकेघरमें पाककरानेवाले
थे जिनकानामसूदऐसाप्रसिद्धथा जोशूद्रपाककरनेवालाहोताहै
उसकीसूदऐसीसंज्ञाहोतीथी क्योंकिब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,वेतोवि-
द्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्प
विद्यासे पदार्थोंका रचन इन्हीमें सदा प्रवृत्त रहैं रसोंई आदि-
कसेवासबलोगोंकीशूद्रहीकरैं अर्थातब्राह्मण,क्षत्रिय,औरवैश्यइ-
नको भोजन एकताही होनी चाहिए जिस्से कि परस्पर प्रीति
होवै औरभोजनकेबड़े २ बखेड़े हैं वेसबनष्टहोजांय कोईपरदेश
कोजाताहै तबपाचादिकोंकाभारगधेकीनांईउठायाकरताहै तथा
मांजनाऔरचौकादेना अन्न,काष्ठ,अग्न्यादिकको अपनेहाथसेले
आना औरबनाना गमनसेबड़े पीड़ितहोकेआये फिरभीसमयके
ऊपरभोजनकानहोना इस्से बड़े दु:खहोतेहैं इस्से ब्राह्मण,क्षत्रिय,
औरवैश्यइनकेएकभोजनहोनेसेकिसीकोकिसीप्रकारकादु:खनही
होगा क्योंकिशूद्रहीसबकरदेगा औरखिलावैपिलावैगा परन्तुब्रा-
ह्मणादिकोंहीके पदार्थसबपाचादिकहोवैं शूद्रकेघरकेनहीं शुद्धहो-
केबनावै औरब्राह्मणादिकविद्यादिकश्रेष्ठपदार्थोंकी उन्नतिकरैं
जिस्से किसबसुखहोवैं इस्से इसबातको राजालोग अवश्यकरैं इ-
सकेबिनाउनकोउन्नतिनहींहोनीहै देखनाचाहिएभोजनकेपाख-
ण्डोंसेआर्यावर्त्त देशकानाशहोगया ब्राह्मणादिक चौकादेनेलगे
ऐसाचौकादिया कि राज्य,धन औरस्वतन्त्रादिक सुखोंके ऊपर
चौकाहीफेरदिया किसबआर्यावर्त्त देशको सफाचटकरदिया इ-
स्से राजालोगोंकोचाहिएकिव्यर्थपाखण्डप्रजामेंनहोनेदेवैं विवाह
काजिसकालमेंजैसापूर्वनियमलिखाहै औरपरीक्षाउसीप्रकारसे

राजाकरवावै ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजवहि।जाय तभीवि-
वाहकोआज्ञाराजादे कियहीसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्य-
नही सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीति
रक्खैं प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबवि-
द्याओंमेंपूर्ण इनकोसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकिआकरैं कि
जिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवैं वहोराजाहोय उसदेशकेसबप्र-
जा उसराजाको प्रसन्नरक्खैं ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगु-
णोंकीउन्नतिकरैं अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेबिना प्रजामें
कुछकर्मनहोवै औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्म
नकरैं किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेबिनाकुछराजकार्यनहोनेपावै क्यों-
किइसकेहोनेसे उसदेशमेंकभीदु:खके दिननआवेंगे सदाआनन्द
होरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअ-
प्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किहाटधारोडांकू औरपाखण्डी जैसेकिवै-
राग्यादिक मन्दिररचके सबमनुष्योंसेफुसलाने वादुष्टउपदेशबु-
द्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणकरलेतेहैं यहांतककिमनु-
ष्योंकोमूड़केचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिवृत्तकरदे पूर्व-
पक्षइनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवेतोप्रसन्नतासेधनदेतेऔर
लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनकोदेतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउ-
चितनहीं उत्तर इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई
पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेकोचीजहाथ
मेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता
है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजा-
है फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंवि-
द्या, बुद्धि औरबिचारहीनपुरुषहैं वेबालककीनाईंहैं उनमेंसेभी
प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक
महात्मसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोंकोंसु-
नाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

दण्डक्योंनकरनाचाहिए किन्तुअवश्यहीकरनाचाहिए जोरा-
जाइनकोदण्डनदेगा तोउसकोप्रजासबभ्रष्टहोजायगी औरराज्य
काभीनाशहोजायगा क्योंकिवेअधर्मकरतेहैंऔरकरातेहैं नामर-
खतेहैंधर्म और वेदका चलातेहैं पाखण्डको इस्से इसजालको
राजाअवश्यछेदनकरदे किकोईउसकेदेशमेंपाखण्डीनरहैऔरन
होनेपावै वेपाषाणादिकोंकोमूर्त्तियोंकोवनाओरमन्दिरकोरचके
उनमेंउनमूर्त्तियोंकोवैठाके उनकानामशिवनारायणादिकरखते
हैं कलावत्तू झूठेवा सच्चे आभूषणोंकोपहिराके फिरघड़ी, घंटा,
नगारा, रणसिंघाऔरशंखइत्यादिकोंकोवजाके मूर्खोंकोमोहित
करके सवधनादिकपदार्थोंको हरणकरलेतेहैं जैसेकिडांकूलोग
नगारादिकवजाकेप्रसिद्धधनहरलेतेहैं इनठगोंकोदण्डकेविनाक-
भीनछोड़नाचाहिए क्योंकि ॥ अज्ञोभवतिवैबालः पिताभवतिम-
न्त्रदः। अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येवचमन्त्रदम् ॥ १४३ ॥ म०
इसमेंमनुभगवान्काप्रमाणहै किजोअज्ञानीहैसोईबालकहै और
ज्ञानीअर्थात्सत्यउपदेश औरविचारकाकरनेवालासोईपिताहो-
ताहै इस्से क्याआयाकिजोअज्ञानीहै उसकोबालककहनाचाहि-
ए ॥ १४३ ॥ जितनेदुकानदारप्रसिद्धचोरउनकेऊपरभीराजाअत्य-
न्तदृष्टिरक्खै किवेप्रसिद्धचोरीकभीनकरनेपावैं ॥ तुलामानंप्रती-
मानंसर्वंचस्यात्सुलक्षितम्। षट्सुषट्सु चमासेषुपुनरेवपरीक्षये-
त् ॥ १४४ ॥ म० तुलानामतराजूकोदण्डीऔरतराजूकीपरीक्षाक-
रै पक्ष२मास२वाछटहे२मास क्योंकिदुकानदारलोगवीचकासूत
औरदोनोंपल्ले दण्डीकेवीचमें छेदकरके पाराभरदेतेहैं उस्से लेते
हैं तवअधिकलेलेतेहैं औरदेतेहैं तवन्यूनदेतेहैं जववुद्धिमान्जाय
तवऔरभाव जवमूर्खजायतवऔरभावऐसाकरकेमूड़लेतेहैं प्रती-
मानअर्थातप्रतिमानाम छटांकआदिकउसकोघटावढ़ालेतेहैं उ-
स्से भीअधिकलेतेहैंऔरन्यून देतेहैं फिरमहाजनऔरसाहूकार
वनेरहतेहैं परन्तु वेबड़ेठगहैं जैसेकिव्यासअर्थातएकादशीभाग-

व्रतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय वाले,वैरागी,शैव,वाममार्गी,आदिकपण्डितमहात्मा औरसिद्ध येतोऊपरसेबनेरहतेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेजानना वैश्यऔरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेराजाउपदेशकरदे ऐसा दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावै तभीराजा औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची सदाहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहचोजन-योहैं अर्थात्पुरानीनहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो-तेहैं तथादेवालय,देवमन्दिर,देवागार,देवायतन इत्यादिकनाम यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकोपूजाहोय उसीकेएनाम हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र-काशकहैऔरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैं इ-ससेइनकानामदेवहैसोईशास्त्रमेंलिखाहै ॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्तल्लि-ङ्गोमन्त्रः। यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहां२ देवताशब्दआवैवहां२मन्त्रहीकोलेना परन्तु कर्मकांडमेंउपासना और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीळेपुरोहित मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम-न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै इससे अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस मन्त्रमेंहोगा उससे जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवै उसको लेलेना जैसाकि अग्निमीळेपुरोहितमित्यादिक यहीबातव्यासजीकेशिष्य जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध-र्माणिप्रथमान्यासन्। इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ-नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र-ह्मादिकदेवनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयजमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहैं किब्रह्मादिकोंके
यज्ञमेंजिनकीपूजाकीजाय वाभागलेवैंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदे
हधारीनहींहै औरकोईकहैकिउन्होंसेअन्यदेवहैं तोउनसेपूछाजा-
ताहै किवेजबयज्ञकरैंगेतबउनसेआगेभीतीसरेदेवमानेंजांयगेती-
सरेजबयज्ञकरैंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेंजांयगे ऐसेहीअनव-
स्थाउनकेमतमेंआवेगी इस्सेपरमेश्वरऔरमन्त्रोंहीकोदेवमानना
चाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर
सत्यवचन,गुणवालोंकानिषेध जैमिनोजीनेकिया तोपाषाणादिक
मूर्त्तियोंकीपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्ति
योंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ
सन्देहनहीं औरजोकहेकिवेहैतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे
देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका
भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखका-
अभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअ-
भावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही
है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडालै तोहाथजलहीजाय-
गा इस्से ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणा-
दिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि
अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इस्से क्याआयाकि जोजै-
सापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना
चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और
उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव
क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं
पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफलक्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं
कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंका फल
है यहबाततोआपलोगोंकोसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहो-
ताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकिपाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

लताहै यहबातआपलोगोंकीभूठीहीगई पूर्वपक्ष जबतकवेदमन्त्रों सेप्राणप्रतिष्ठानहींकरते तबतकतोवेपाषाणादिकहीहैं औरप्राण प्रतिष्ठाककरनेसे वेदेवहोजातेहैं उत्तर यहबातभी आपलोगोंकी मिथ्याहै क्योंकिवेद वाऋषिमुनियोंकेकिये शास्त्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा कापाषाणादिक मूर्त्तियोंमें एकअक्षरभीनहीं तोमन्त्र कैसेहोंगे जिस २ मन्त्रसेप्राणप्रतिष्ठाकर्त्तेकरातेहो उस२मन्त्रकाआपलोग अर्थभीनहींजानते जैसाकि प्राणदा,अपानदा,उद्ध्यास्वाग्ने,इस्से लेकेओम् प्रतिष्ठयहांतकएकमन्त्रहै सहस्रशीर्षापुरुषः शन्नोदेवी-रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिकअर्थ मन्त्रों काहै इनपाषाणादिक मूर्त्तियोंमेंप्राण प्रतिष्ठाकरना इसकालेश माचभीसम्बन्धनहीं औरप्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वा-हा।यहतोमिथ्यासंस्कृतकिसीनेरचलियाहै औरवेदोंकेमन्त्रमेंभी आपलोगोंकेकहनेकीरीतिसेदोषआतेहैं किवेदकेमन्त्रोंसेतोप्राण प्रतिष्ठाकीजाय फिरप्राणोंका मूर्त्तिमें लेशभी नहीं देखपड़ताहै इस्सेयहबातभीनकरनीचाहिएक्योंकिजोप्राणमूर्त्तिमेंआतेतोमूर्ति चेतनहीबनजातीसोतोजैसीपूर्वजड़थीवैसीहीजड़सदारहतीहैपा-षाणादिकमूर्त्तियोंमेंप्राणकेजानेऔरआनेकाछिद्रभीनहींपरंतुमनु-ष्यजोमरजाताहैउसकेशरीरमेंसबछिद्रमार्गप्राणकेजानेऔरआने केयथावत्हैं उसमेंप्राणप्रतिष्ठाकरकेक्योंनहीजिलालेतेहैं किकोई मनुष्यकभी मरनेहीनपावेऐसाकिसीकाभीसामर्थ्य नहीं इस्से यह बातअत्यन्तमिथ्याहै पूजानामसत्कारहै देवपूजाहोमहीसे होती है अन्यप्रकारसेनहीं क्योंकिमनुआदिकऋषिलोगोंकेग्रन्थोंमेंऔर वेदमेंयहीबातलिखीहै॥स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि इसपूर्वोक्तश्लोकसेहोमहीसेदेवपूजायथावत्करनीचाहिएऐसासि-द्धभयाकिहोमजोहैसोईदेवपूजाहै औरजिनस्थानोंमेंहोमहोवै उ-न्हींकादेवालयादिकनामजानना॥ यद्वित्तंयज्ञशीलानांदेवस्वंत-द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जोयज्ञही

कोनित्यकरताहै उसकाजोधन सोदेवशब्दवाच्यहै जोकोई यज्ञके वास्ते अन्यपुरुषोंसेधनलेके भोजनछादनादिकउस्से करै औरयज्ञ कोनकरै उसकानामदेवलहै ॥ कुत्सितोदेवलोदेवलकःकुत्सितइत्यनेनकन्प्रत्ययः। जोयज्ञकेधनकीचोरीकरके भोजन,छादनादिक करै उस्से परस्त्रीगमनवावेश्यागमनभीकरै उसकोदेवलककहतेहैं यहदेवलसेभीदुष्टहै इनदोनोंकाश्रेष्ठकर्मोंमें देवपितृकर्मादिक यज्ञोंमेंनिषेधहै किइनकोनिमन्त्रणवाअधिकारकभीनदेना ऐसेहीनामस्मरणएकादशीइत्यादिककाल काश्यादिकदेश, इनकाजो महात्म्यजिसकिसीनेलिखाहै वहसबमिथ्याहीहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंमेंइनकाकुछभीलेखनहींदेखनेमेंआता औरयुक्तिसेभी यहप्रतिमापूजनादिकमिथ्याहीहै ऐसेव्यवहारोंमेंराजाऔरप्रजा कोभ्रमहोसक्ताहै इसनिमित्त लिखागयाकि राजाऔरप्रजाइन भ्रमोंमेंप्रवर्तनहोवें नकिसीकोहोनेदें जितनीयुद्धकोविद्या उसको यथावत्जानै औरप्रजाकोजनावें नानाप्रकारकोपदार्थविद्या तथा शिल्पविद्याकोभीराजा औरप्रजासदाअत्यन्तप्रकाशरक्खें युद्धविद्याकेदोभेदहैं एकशस्त्रविद्या,दूसरीअस्त्रविद्या शस्त्रविद्यायहकहातीहै कितलवारबंदूकतोपलकड़ीपाषाण औरमल्लविद्याकिकोंका यथावत्जानना औरचलानादूसरेकेशस्त्रोंकानिवारणकरना औरअपनीरक्षाकरनी तथाशत्रुकोमारना औरअस्त्रविद्यायहकहातीहै किजोपदार्थोंकेपरस्परमेलन औरगुणोंसेहोतीहै जैसाकि अग्नेयास्त्र ऐसेपदार्थोंकारचनकरैं किवायुकेस्पर्शसे उस्से अग्नि उत्पन्नहोवै फिरउसकोफेंकनेसेजोपदार्थउसकेसमीपहोय उसको वहभस्महीकरदेताहै जैसेदीपसलाकाकोघसनेसे अग्निउत्पन्नहोताहै वैसेहीसबअस्त्रविद्याजाननी इसप्रकारकोआर्यावर्तमें पूर्वप्रकृतपदार्थरचनेकीउन्नतिथी जैसेकिविशल्याएकओषधिराजालोगरचलेतेथे वैसाहीवावशस्त्रसेहोजाय परन्तुउसकोघसकेलगाया उसीवक्तवहघावपूरजाय औरउसमेंपीड़ाभीकुछनहीहोतीथी

तथाविमानअर्थातआकाशयान बज्जतप्रकारोंके और जहाजसमुद्र पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप,द्वीपान्तरमेंजातेऔरआतेथे यहमहाभारततथावाल्मीकीरामायणमेंलिखोहै आर्यावर्त्तकेराजाओं कीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकों केराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तरकेराजाआयेथे यहसभाऔरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखीहै जैनऔरमुसल्मानोंनेबज्जतसे इतिहासनष्टकरदिए इस्सेबज्जतबातयथावत् मिलती भीनहीं बड़े बलवान्तथाविद्यावान् इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें भूगोलमेंविद्यावाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबस्त्रियांभीआर्यावर्त्त मेंविद्यावानहोतींथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकी जैसीमूर्खताऔरदशाहै ऐसीकोई देशकीनहोगी फिरभीवेदादिक सत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ें औरपढ़ावें धर्माचरण औरश्रेष्ठआचारराजाऔरप्रजाकीपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरें तभीमनुष्योंको आनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४,४०, ३६,३०,२५, बर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यका निग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केयहीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमऔरनवम अध्यायोंमें राजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहै महाभारतऔरवेदादिकों मेंभीबज्जतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्टः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्यामः ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् सदाधारपृथ्वीवींद्यामुत्तेमाकस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ अग्रे नामजबकुछजगत् उत्पन्नहोनहो भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्ध मुक्तस्वभावहिरण्यगर्भ अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसलेकेस्वर्गपर्यन्त जगत् कोरचके धारणकरताभया तस्मै एकस्मै परमेश्वरायदेवायहविनामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग नित्यकरैं ॥ १ ॥ पूर्वपक्षईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोसक्ती औरईश्वरकेमाननेका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहदींचूनाऔर जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहोपृथिव्यादिकस्थूलभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कुलालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न कोईश्वर उसके माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगत्होताहै और जगत्नित्यभीहै कभीइसकानाशनहीहोता फिरजगत्रूपकार्यको देखकेकारणजोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया औरप्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहींहै इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंनहींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहीतोउपमानकैसेबनसकेगा किइसकेतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाण नहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाबनेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र शींगवालादेखा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेंअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंपरावत्कहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रकारसेनहींहोसक्ती उत्तरपक्ष ईश्वरकीसिद्धियथावत्होतीहै क्योंकि जोस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्में जितने पदार्थ हैं उनके विलक्षण २ संयोग आकृति तथा गुण और स्वभाव देखपड़ते हैं जैसे कि मनुष्य और वानर आमका और बबूरका हक्ष इत्यादिकों में विलक्षण २ गुण और आकृति देखपड़ती है इन नियमों का कर्ता कोई न होगा तो ये नियम कभी न बनेंगे क्योंकि जड़पदार्थों में तो मिलने वा जुदा होने की यथावत् समर्थता नहीं कि उनमें ज्ञानगुण ही नहीं जो ज्ञानगुणवाला होता है वही यथावत् नियम कर सक्ता है अन्य नहीं जो जीव है सो ज्ञानवाला तो है परन्तु जीव का उतना सामर्थ्य ही नहीं इस्से कोई पृथिव्यादि व भूत और जीव से भिन्न पदार्थ अवश्य है जो सब जगत् का करता और नियमों का नियन्ता ईश्वर अवश्य है। किन्तु स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति जो मानता है उसके मत में ए दोष आवेंगे यह पृथिवी स्वभाव से जो होती तो इसका करता और नियन्ता न होता इस पृथिवी से भिन्न दश वें कोश अन्तरिक्ष में दूसरी आपसे आप पृथ्वी बन जाती सो आजतक नहीं बनी इस्से जाना जाता है कि जीव और सब भूतों से सर्वशक्तिमान् सब जगत् का कर्ता और नियन्ता परमेश्वर उसी को ईश्वर कहते हैं दूसरा दोष कि जितने परमाणु पृथिव्यादिक भूतों के हैं वे सब मिलगए अथवा इनसे बिना मिले भी हैं जो कहै कि सब मिलगए तो त्रसरेण्वादिक हमको प्रत्यक्ष देखपड़ते हैं इस्से वह बात मिथ्या होगई और जो कहै कि कुछ मिले कुछ नहीं मिले भी हैं तो उनसे पूछना चाहिए कि सब क्यों नहीं मिले अथवा पृथक् २ क्यों न रहे तथा एक प्रकार के रूपवाले सब पदार्थ क्यों नहीं हुए भिन्न २ संयोग और रूप के होने से सब जगत् का कर्ता और नियन्ता अवश्य सिद्ध होता है तीसरा दोष उसके मत में यह है कि कोई कर्म कर्ता के बिना होता है वा नहीं जो वह कहै कि बनादिकों में घासादिक पदार्थ आपही से होते हैं उसका कर्ता और निमित्त कोई नहीं देखपड़ता उस्से पूछना चाहिए कि पृथिव्यादिक सब भूत निमित्त हैं और सब बीज बिना कर्ता और नियन्ता के कभी नहीं बन सक्ते क्योंकि आम के बीज में जैसा परमाणुओं का मेलन कर्ता ने किया है वैसेही

अङ्कुरपत्रपुष्पफलकाष्ठऔरस्वाददेखनेमेंआतेहैं उस्सेभिन्नजोकटलीउसकेअवयवस्वाद आमसेकोईनहींमिलतेक्योंकिसबपदार्थों मेंपरमाणुतोवेहीहैं फिररचनेवालेकेबिनाभिन्न२पदार्थकैसेहोगें इस्से जानाजाताहैकि सबजगतकारचनेवालाकोईपदार्थहै जोचूना,हर्दीऔरजलकेमिलानेसेरोरीहोतीहै उसकामेलनकरनेवालाजबमिलाताहै तबवेमिलकेरोरीहोतीहै वेंआपसेआपतोनही मिलते इस्से वहदृष्टान्त मिथ्याहोगया कुम्हारकाजोदृष्टान्त दिया सोक्योंहारस्यानीआपनेजीवकोरक्खा क्योंकिईश्वरकोतोआप मानतेहीनहीं सोजीवसर्वशक्तिमान्नहीं क्योंकिपरमाण्वादिकों कासंयोग वावियोगजीव कभीनहींकरसक्ता जोजीवकरसक्ता तो चाहतातोसूर्य,चन्द्रादिकलोकोंकोरचलेता सोरचसक्तानहीं इस्से जाना जाताहैकि सबजगत्काकर्ता औरनियन्ता कोईअवश्य है जबजगत्रचागयाहै तोनित्यकभीनहींहोसक्ता क्योंकिजबतक नहींरचाथातबतकनहींथा औरजोरचनेसेभयाहै सोकभीमिटभीजायगा विनाकर्तावाकारके कर्मवाकार्यनहींहोता तोयहनानाप्रकारकीरचना औरइतनावड़ाकार्य जगत्कभीनहींहोसक्ता इस्से तीनप्रकारजोअनुमानहै सोईश्वरमेंयथावतघटताहै किकारणकेविनाकार्य कभीनहींहोसक्ता कार्यसेकारणअवश्यजानाजाताहै औरकर्ताकेबिना कर्मनहीहोता इस्से पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्टतीनप्रकारकाअनुमान ईश्वरकोयथावत्सिद्धकरताहै ईश्वरकेसर्वशक्तिमत्वदयालुता औरन्यायकारित्वादिक गुण जगत्मेंप्रत्यक्षदेखपड़तेहैं स्वाभाविकगुणऔरगुणीका नित्यसंबंध होताहै जैसाकिरूपऔरअग्निका सोजैसेअग्निकारूपदेखपड़ता है औरअग्निनेत्रसेनहींदेखपड़ता परन्तुहमलोग ज्ञानसेअग्निकोप्रत्यक्षदेखतेहैं क्योंकिअग्निकोबुद्धिसे प्रत्यक्षहमलोग नदेखते तोअग्निकोलेआने औरअग्निसेजितनेव्यवहारहोतेहैं उनमेंप्रवृत्तकभीनहोते इस्से जैसा अग्नि हमकोप्रत्यक्षहै गुणऔर गुणीके

ज्ञानसे वैसेज्ञानसेपरमेश्वरभीप्रत्यक्षहै जोधर्मात्माऔरयोगीपु-
रुषहोतेहैं उनकोपरमाणु जीव औरपरमेश्वरभी यथावत्प्रत्यक्ष
होतेहैं जोकोईइसमेंसंदेहकरै सोकरकेदेखले उपमानप्रमाणतो
परमेश्वरमेंनहींहोसक्ता क्योंकिपरमेश्वरकेसदृशकोईपदार्थनहो
जिसकीउपमापरमेश्वरमेंहोसकैपरन्तुपरमेश्वरकी उपमापरमेश्व
रहीमेंहोसक्तीहै ऐसाजगत्में व्यवहार देखनेमेंआताहै किआप
केतुल्यआपहीहोवै वैसेहमलोगभीकहसक्ते हैं किपरमेश्वरकेतुल्य
परमेश्वरहीहै औरकोईनहीं जबतीनप्रमाणोंसेईश्वरकीसिद्धिहो
गई तोशब्द .माणभीअवश्यहोगा सोशब्दप्रमाणइसप्रकारकाले-
ना ॥ दिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषःसबाह्याभ्यन्तरोह्यजः। अप्रमाणोह्य-
मनाःशुभ्रोऽक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥ दिव्यनामसबजगत्काप्रकाश-
क अमूर्त्त निराकारऔरसदाअशरीर पुरुषनामसबजगहमें पूर्ण
सोईबाहरऔरभीतरएकरस अजकभीजिसकाजन्मनहोहोता अ-
णनामकिसीप्रकारकीचेष्टावालीलानहीं करता अमनानाम रा-
गद्वेषसंकल्पविकल्पादिकदोषरहित अक्षरजोजीवउससे परेजोप्र-
कृति उससे भीपरमेश्वरश्रेष्ठऔरपरहै ॥ २ ॥ नतत्रसूर्योभातिनच-
न्द्रतारकंनेमाविद्युतोभान्तिकुतोऽयमग्निः तमेवभान्तमनुभाति-
रुवंतस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उसपरमेश्वरमेंसूर्य
चन्द्र, तारे, बिजली, औरअग्निएककुछभीप्रकाशनहींकरसक्ते कि-
न्तु सूर्यादिकोंकोपरमेश्वरहीप्रकाशतेहैं सबजितनाजगत्हैउसके
प्रकाशसे प्रकाशितहोताहै परमेश्वरकाप्रकाशककोईनहीं ॥ ३ ॥
अपाणिपादोजवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुःशृणोत्यकर्णः। सवेत्तिवि-
श्वंनचतस्यास्तिवेत्तातमाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र० ।
परमेश्वरनिरंकारहै परन्तु उसमें शक्तियांसबहैं हाथ परमेश्वर
कोनहींहै परन्तु हाथकी शक्तिऐसीहै किसबचराचरको पकड़के
थांभरक्खाहै तथापादनहींहै परन्तु सबसेवेगवालाहै नेत्रनहीहै
परन्तु चराचरकोयथावत्सबकालमेंदेखरहाहै काननहीहै पर-

न्तु चराचरकीबातसुनताहै मन,बुद्धि,चित्तऔरअहङ्कारतोनहीं है परन्तुमननिश्चयऔरस्मरण अपनेस्वरूपकाआपहीजाननेवालाहै औरवहसबकोजानताहै परन्तुउसकोकोई नहींजानसक्ता किइतनाबड़ावाइसप्रकारका वाइतनासामर्थ्यउसमेंहै ऐसाकोई नहीजानसक्ताउसपरमेश्वरकोज्ञानीऔरशास्त्रसर्वोत्कृष्टपूर्णऔर सनातनकहतेहैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्यमगन्धवच्चयत् । अनाद्यनन्तंमहतःपरंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ ५ ॥ मन्त्र० वहपरमेश्वरअशब्दअर्थातकहने औरसुननेमात्रसेनहींजानाजाता बिनाउसके आज्ञापालन विज्ञान प्रीति औरयोगाभ्यासकेस्पर्श रूपरसऔरगन्धपरमेश्वरमेंनही इससे परमेश्वरकाज्ञानसहस्रों पुरुषोंमेंकिसीकोहोताहै सबकोनहींवह कैसाहै अनादिऔरअन्तजिसकाआदिकारण अथवाअन्तकोकोईनहीदेखसक्ता क्योंकिउसकामरण वाअन्तनहींहैं तोकैसेकोई देखसकै परमेश्वरबुद्धिसेभीसूक्ष्मऔरपरेहै जोकोईपरमेश्वरको जानताहै सोजन्ममरणादिक सबदुःखोंसेछूटके परमेश्वरकोप्राप्त होताहै फिरकभीउसकोदुःखलेशमात्रभीनहीहोता ॥ ५ ॥ समानिर्धूत्तमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् । नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्तःकरणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ म० जिसपुरुषकाधर्माचरणविद्या औरसमाधियोगसेचित्तशुद्धहोजाताहै उसकाचित्तपरमेश्वरकेज्ञानमें औरप्राप्तिकेयोग्यहोताहै जबसमाधियोगमेंचित्त औरपरमेश्वरका योगहोताहै उसवक्तऐसा आनन्द उसजीवकोहोताहै किकहनेमेंभीनहींआता क्योंकिवहजीवअपने अन्तःकरण अर्थातबुद्धिहीसेग्रहणकरताहै वहांतीसराकोईनहीं है किजिस्से कहैंकिफिरजाग्रतावस्थाकहनेमेंभीनहींआता क्योंकि वहपरमेश्वरउसकाआनन्द औरउसकोजाननेवालाजीवतीनोंअद्भुतपदार्थहैं इस्से वहसबआनन्दकहनेमेंनहींआता ॥ ६ ॥ आश्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा । आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्टः

॥ ७ ॥ मन्त्र० परमेश्वरकावक्ताऔरप्राप्तिहोनेवालादोनोंआश्चर्य
पुरुषहैं क्योंकिआश्चर्यजोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभी आश्चर्य
हीहोताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशहुआहोय औरअपने
भीसबप्रकारसेविद्यावान्शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसक्ता
है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७ ॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्तितपांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्तेपदंसंग्रहेणब्रवीम्योमेतत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास
पुनःपुनः उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते
हैं औरउसकेवास्तेहीहै जिसकोप्राप्तिकोइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्मचर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानैं उसको
प्राप्तिकेबिना अनन्तसुखऔरसबदुःखकी निवृत्तिनहींहोती यही
बातयमराजनचकेतासेकहतेहैं किहेनचकेताजो ओङ्कारकाअर्थ
हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा । सर्वाध्यक्षःसर्वभूताधिवासःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़
है अर्थात्गुप्तकिसबजगहमेंप्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजानते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही
है अध्यक्ष्यनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबसेश्रेष्ठ सबकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेबिना
जानानहीरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकेवलअर्थात्
उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें
जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म, मरण, हर्ष,
शोक, क्षुधा, तृषा, तमोरजः औरसत्त्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे
सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिमत्वदयालुन्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिक गुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥
नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चादृश्यते । परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व-

रसदाकृतकृत्यहै उसकोकर्तव्यकुछनहीं किइसकोकरनेकेविनाइ-मकोसुखनहीहोगा ऐसानहींकरनाजैसाकिचक्षुकेविनारूपनहीं देखसक्ता ऐसाभीपरमेश्वरमेंनहीं किन्तुविविधशक्ति स्वाभाविक अनन्तसामर्थ्यपरमेश्वरकासुनाजाताहै किअनन्तज्ञान,अनन्तब-लऔरअनन्तक्रियापरमेश्वरमेंस्वाभाविकहीहै इसमेंकुछसन्देह नहीं क्योंकिपरमेश्वरकेतुल्यवाअधिककोईनहीं ॥ १० ॥ एषसर्वे-षुभूतेषुगूढात्मानप्रकाशते । दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शि-भिः ॥ ११ ॥ मन्त्र यहजोपरमेश्वरसबभूतोंसेसूक्ष्मव्यापकऔरगुप्त है इस्से मूढ़जोविज्ञानऔरयोगाभ्यासही उनकोबुद्धिमेंनहींप्रका-शितहै जितनेसूक्ष्मदर्शीयथावत् विद्यावान्उनकीशुद्धि औरसूक्ष्म जोबुद्धि,विद्या,विज्ञान,योगाभ्यास सेहोताहै उस्से परमेश्वरको वेयथावत्जानतेहैं अन्यथानहीं ॥ ११ ॥ तदेजतितन्नैजतितद्दूरे-तद्वन्तिके । तदन्तरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ १२ ॥ मन्त्र सोईपरमेश्वर प्राणादिकोंको चेष्टाकरताहै औरआपअचलहीहै वहअधर्मात्माऔरमूढ़ पुरुषोंसेअत्यन्तदूरहै औरधर्मात्माविज्ञान वालेपुरुषोंसेअत्यन्तनिकट अर्थातउनकाअन्तर्यामीहीहै सोईब्रह्म सबजगत्के बाहरभीतर औरमध्यमेंपूर्णहै ॥ १२ ॥ अनेजदेकम्म-नसोजवीयोनैनद्देवाआप्नुवन्पूर्वमर्षत्। तद्धावतोन्यानत्येतितिष्ठ-त्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति ॥१३॥ मन्त्र यहब्रह्मनिष्कंपनिश्चलहै परन्तुमनसेभीवेगवालाहै इसब्रह्मकोदेव अर्थात् चक्षुरादिक इ-न्द्रियांप्राप्तनहींहोती क्योंकिइन्द्रियऔर मनकावहीआत्माहै सो आत्माकाबाह्यजोशरीर सोउसकोकभीनहींदेखसक्ता वहआत्मा तोसबकोदेखसक्ताहीहै औरमनवेगसेजहां२जाताहै वहां२व्या-पकहोनेसे परमेश्वरआगेदेखपड़ताहै सोपरमेश्वरजितनेवेगवा-लेहैं उनकोउल्लङ्घनकरलेताहै अर्थात्परमेश्वरकेकोईगुणकेतुल्य वाअधिककिसीकागुणसामर्थ्यनहीं सोपरमेश्वरस्थिरव्यापकऔर चेतनउसकेसत्तासे उसमेंठहराभया मातरिश्वा अर्थात्माताजो

आकाशउसमेंचलनेऔररहनेवाला जोप्रमाणसोचेष्टादिकसबक-र्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३ ॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्वि-जानतः। तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४ ॥ मन्त्र जिसप-रमेश्वरकेजाननेसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकि-सीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरज्ञानवालाजोपुरुषउनकोकि-सीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोता हीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्ता-त्। तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेयनाय १५ ॥ मन्त्र जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्व-रूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीको जानके अतिमृत्यु जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईइससे भिन्नमोक्षकामार्ग नहीं ॥ १५ ॥ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापवि-द्धम्। कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वती-भ्यःसमाभ्यः ॥ १६ ॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअ-द्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्तास्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त जिसकाविचारऔरज्ञान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजि-सकोकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहीसदासनातनहोवे जिन्नेवे-दरूपसर्वज्ञ विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजा ओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमे-श्वरकोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेसंहि-ताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे शब्दप्रमाणलिखदियासोजानलेना पू-

र्वपक्ष परमेश्वररागीहैवाविरक्तवाउदासीनजोरागीहोगातोदुःखी वाअसमर्थहोगा सदाजोविरक्तहोगा तोकुछभीनकरेगा औरसंसारकाधारणभीनहोगा औरजो उदासीनहोगातोअपनेस्वरूपस्थ साक्षीवत्रहेगा अर्थात्बद्धजोईश्वरहोगा तोकभी रचसकेगा नहीं मुक्तहोगातोजगत्कोहीरचेगानहीं इस्से ईश्वरकोसिद्धिनहीहोती उत्तर परमेश्वररागीनहीं क्योंकिअपनेसेउत्तमकोईपदार्थनहीहै किजिसमेंरागकरै अपनेस्वरूपमेंअपनारागकभीनहीं बनता रुर्वव्यापीकेहोनेसेअप्राप्तपदार्थईश्वरकोकोईनहीं तथासर्वशक्तिमान् केहोनेसेभीरागईश्वरमेंनहींबनसक्ता विरक्तभीईश्वर नहीं क्योंकिपहिलेजोबद्धहोताहै सोईबन्धनकेछूटनेसेविरक्तकहाताहै सोईश्वरकोबन्धनतीनोंकालमेंभीनहींभया फिरउसकोविरक्त कैसेकहसकैं उदासीनभीवहहोताहै किपहिले बन्धनमेंहोय पीछेज्ञानकेहोनेसेउदासीनहोजाय ऐसाईश्वरनहीं ईश्वरकोअचिन्त्यशक्तिहै किसबमेंरहै औरकिसीकाभी लेशमात्रसंगदोष न लगे इस्से ऐसीशंकाजीवकेबीचमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनहीं पूर्वपक्ष जितनेपदार्थहैं वेसबसन्देहयुक्तहोहैं निश्चययथावत्एककाभीनहीं होता उत्तर आपनेयह बातकही सोनिश्चितहै वानहीं जोकहो किनिश्चितहै तोसबपदार्थसन्देहयुक्तनहींभये आपकोबातनिश्चित होनेसे औरजोआपकहैं कियहमेरीबातभीनिश्चितनहीं तोआप कोबातका प्रमाणहीनहींहुआ क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यांपदार्थसिद्धिः। लक्षणऔरप्रमाणोंकेबिना किसीपदार्थकीनिश्चितसिद्धि नहींहोती आपनेसबपदार्थोंमेंसन्देहसिद्धकहासोकिसप्रमाणसेउसकीसिद्धिहोतीहै किसीप्रमाणसेसन्देहकोआपसिद्धकियाचाहोगे तोउसप्रमाणमेंभी आपकानिश्चय नहींहोगा क्योंकि आपसब पदार्थोंकोसन्देहयुक्तकहचुकेहैं इस्सेआपकासन्देहहीसन्देहनष्ट होगया फिरआपकिसीव्यवहारमेंप्रवृत्त नहीसकोगे जैसेकिगमन भोजन,छादन, देखनासुननाइत्यादिकभी सन्देहयुक्तहोनेसेप्रष्ट-

त्तिभीइनमेंनहोनीचाहिए प्रवृत्तितोआपकर्तेहीहैं इससे आपनेजो कहाकि सबव्यवहारऔरसबपदार्थ सन्देहयुक्तहीहैं यहबातआप कीमिथ्याहोगई इससेक्याआयाकिलक्षणऔरप्रमाणोंसेजोनिश्चित पदार्थहोताहै उसकोनिश्चितहीमाननाचाहिए इसमेंसन्देहकर- नाव्यर्थहीहै सोप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसेईश्वरकीयथावत्सिद्धिहोती होहै उसकोमाननाहीचाहिए प्रश्न पृथिवी,जल,अग्नि,वायु, इन चारोंकेमिलनेसे चेतनभीउसमेंहोताहै जबवेपृथक्२होजातेहैं तबसबकलाबिगड़जातीहैं फिरउसमेंकुछनहींरहता इससे जगत् कारचनेवालाकोईनहीं आपसेआपहीजगतऔरजीवहोताहै उ- त्तर आपभीइनचारोंकोमिलाकेजीवऔरजीवकेजितनेगुणउनको देखलादेवें सोकभीनहींदेखपड़ेंगे क्योंकिपहिलेहीसे सबस्थूल भूतोंमेंसबसूक्ष्मभूतमिलरहेहैं फिरउनमेंज्ञानादिकगुणक्योंनहीं देखपड़ते इससे जीवपदार्थ इनभूतोंसेभिन्नहीहै जिसकेयेगुणहैं इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम् । यहगौतममुनि कासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किइच्छाकिसीप्रकारकाचाहना जिसकेगुणोंकोजानताहै उसकीप्राप्तिकीचाहनाकरताहै जिसमें दोषोंकोजानताहै उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहींकरता प्रयत्न नानाप्रकारकीशिल्पविद्यासे पदार्थोंकारचना शरीरतथा भार काउठानाइसकानामप्रयत्नहै सुखनामअनुकूलकाचाहना और जानना दुःखप्रतिकूलकाजानना औरछोड़नेकीइच्छाकरना ज्ञा- नजैसाजोपदार्थहै उसकातत्त्वपर्यन्त यथावत्विवेककरना इसका नामज्ञानहै येगुणपृथिव्यादिकजड़ोंकेनहीं किन्तु जीवहीकेहैं लिं- गशरीरबुद्धि जिससेजीवनिश्चयकरताहै बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यन- र्थान्तरम् । यहगौतमजीकासूत्रहै बुद्धिउपलब्धिऔरज्ञानयेतीनों नाम एकहीपदार्थ केहैं मनजिससे एकपदार्थकोविचारकेदूसरेका विचारकरताहै ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिंगम् । यहगौत० जिससेएकपदार्थहीकोएककालमेंग्रहणकरताहै एककोग्रहणकरके-

दूसरेकादूसरेकालमेंग्रहणकरताहै एककालमेंदोनोंकानहीं इ-
सकानाममनचित्त जिस्से किजीवपूर्वापरकास्मरणकरताहै जोकि
पहिलेदेखाऔरसुनाथा इसकानामचित्तहै अहङ्कारजिस्से अ-
भिमानजीवकरताहै येचारमिलकेअन्त:करणकहाताहै इस्से जी-
वभीतरमनोराज्यकरताहै येचारोंएकहीहैं परन्तु व्यापारभेदसे
चारभिन्न२नाकहैं वाह्यकरणजिस्से कि बाहरजीवव्यापारकरता
श्रोत्रजिस्से शब्दसुनाताहै त्वचाजिस्से स्पर्शजानताहै नेत्रजिस्सेरूप
कोजानताहै जिह्वाजिस्से रसकोजानताहै नासिकाजिस्सेगन्धको
जानताहै येपांचज्ञानइन्द्रियांहै इनसेजीववाह्यपदार्थोंकोजान-
ताहै वाक्जिस्से शब्दबोलताहै पादजिस्से गमनकरताहै हस्तजि-
स्से ग्रहणकरताहै वायुजिस्से मलकात्यागकरताहै लिंगजिस्से मूत्र
औरविषयभोगकरताहै येपांचकर्मेन्द्रियहैं इनसेजीववाह्यकर्मक-
रताहै प्राणजिस्से ऊर्द्ध्व चेष्टाकरताहै अपानजिस्से अधोचेष्टाकर-
ताहै व्यानजिस्से सबसन्धियोंमेंचेष्टाकरताहै उदानजिस्सेजलऔ-
रअन्नकोकण्ठसेभीतरआकर्षणकरलेताहै समानजिस्से नाभिद्वा-
रसबरसोंको सबशरीरमेंप्राप्तकरदेताहै येपांचमुख्यप्राणकहाते
हैं नागजिस्से डकारलेताहै कूर्मजिस्से नेत्रकोखोलताऔरमूंदता
है कृकलजिस्से छींकताहै देवदत्तजिस्से जम्भाईलेताहै धनञ्जय
जिस्से शरीरकीपुष्टिकरताहै औरमरेपीछे शरीरकोनहींछोड़ता
जोकिमुरदेकोफुलाताहै येपांचउपप्राणहैं येदशएकहीहैं परन्तु
क्रियाभेदसेदशनामभयेहैं ये२४तत्त्वमिलकेलिंगशरीरकहाताहै
कोईउपप्राणकोनहींमानता उसकेमतमें २८ होतेहैं औरकोई
पांचसूक्ष्मभूतजोकिपरमाणुरूपहैं औरपूर्वोक्तचारभेदअन्त:कर-
णकेइननवतत्त्वोंको लिंगशरीरकहाताहै इसलिंगशरीरमेंजोअ-
धिष्ठाताकर्ता औरभोक्ताउसकोजीवकहतेहैं जोकिएककालमेंसब
बुध्यादिकोंकेकियेकर्मोंकाअनुभवकरताहै चेतनस्वरूपहैउसका
नामजीवहै उसकोअधिकव्याख्यामुक्तिके प्रकर्णमेंकिईजायगी सो

जीवभिन्नपदार्थहीहै चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण औरजीवकभी नहींउत्पन्नहोता इस्से यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई प्रश्न ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउस्से अन्यथा जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञा-ननष्टहोजायगा इस्से जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वै-साजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिवृत्तक्यों नहींकरदेता जोनिवृत्त नहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै उत्तर ईश्वरहै अत्यन्तदयालु जबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके सबकोस्वतन्त्रहीरखदियक्योंकिपरतन्त्रकरखनेसकिसीकोकभीसु-खनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंर-हताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदुःखनहींमालूमहोता उसकोजो कोईएकघड़ीभरभीपराधीनवैठायरक्खै तोबड़ाउसकोदुःखहोता है इस्सेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इस्से सब स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकोहै किजोजैसाकर्म करेगा वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकोसत्यहीहै इस्से क्याआयाकि कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै औरपापों केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवालेऔरभोगनेवाले हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानसेनिश्चय पहिलेही कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं प्रश्न जीवकानिजस्वरू-पक्या॥ उत्तर विशिष्टस्यजीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम्। यहकपिल मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेव-नताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें यथावत् देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

लाहोता है उनदोनों में प्रतिबिम्ब वा अग्निभिन्न है क्योंकि उनसे पृथक् भी वे देख पड़ते हैं और हो भी जाते हैं इससे दर्पण और लोहे से व्यतिरिक्त हैं अर्थात् जुदे हैं और जो केवल जुदे होते तो उनके गुण दर्पण और लोहे में न होते इससे उनमें अन्वय भी उनका देख पड़ता है वैसे ही लिंगशरीर जो है उसका अधिष्ठाता है सोई जीव है दर्पण के तुल्य अन्तःकरण शुद्ध है स्थूल देह बाहर का है और जिसमें गाढ निद्रा होती है सत्व रजो और तमोगुण मिलके प्रकृति कहाती है जिसका नाम अव्यक्त परमसूक्ष्मभूत और प्रधान भी है वह कारण शरीर कहलाता है सो सब प्राणियों का व्यापक के होने से एक ही है दोनों के बीच में मध्यस्थ लिंगशरीर है चेतन एक जीव और दूसरा परमेश्वर ही है तीसरा कोई नहीं सो परमेश्वर है विभु व्यापक सर्व एकरस जहां २ लिंगशरीर विशिष्ट जीव रहता है वहां २ परमेश्वर ही पूर्ण है सो लिंगशरीर में उसका सामान्य प्रकाश है और विशेषप्रकाश चेतन ही का जीव है जैसे दर्पण में सूर्य का विशेषप्रकाश होता है सो परमेश्वर का सदा संयोग रहता है वियोग कभी नहीं इससे परमेश्वर के अन्वय होने से वह चेतन नहीं है वह जीव कहलाता है और लिंगदेह से परमेश्वर भिन्न के होने से पृथक् भी है क्योंकि लिंगशरीर से युक्त जीव स्वर्ग नर्क जन्म और मरण इत्यादिकों में भ्रमण करता है परन्तु परमेश्वर निश्चल है उसके साथ भ्रमण नहीं करते हैं और उसके गुण दोषों के भोग वा संगी कभी नहीं होते हैं कारणशरीर के ज्ञान लोभ और क्रोधादिक गुण जीव में आते हैं और स्थूलशरीर के शीतोष्ण क्षुधा तृषादिक गुण भी जीव में आते हैं क्योंकि दोनों शरीर के मध्यस्थवर्ती जीव है इससे दोनों शरीरों के गुण का भी संग जीव करता है इसका स्पष्ट अन्वयव्याख्यान मुक्ति और बन्ध के विषय में किया जायगा प्रश्न ईश्वर व्यापक नहीं हो सक्ता क्योंकि जितने परमाणु आदिक पदार्थ हैं वे जहां रहते हैं उतने अवकाश को ग्रहण अवश्य करते हैं फिर उसी अवकाश में दूसरे परमाणु वा ईश्वर की स्थिति कभी नहीं हो सक्ती और उसके बीच में अन्य

पदार्थभीरहैं तोवहपरमाणुहीनहीं क्योंकिबकृतपदार्थोंकेसंयोग सेविनासंधिवापोलउसमेंनहींहोसक्ता सबवियोगकीअन्तावस्था जोहै उसकोपरमाणुकहतेहैं किफिरजिसकाविभागहोसके उत्तर ईश्वरव्यापकहैक्योंकिपरमाणुसेभीसूक्ष्महैजैसेचिसरणुकेआगेसंयोगवावियोग बुद्धिसेहमलोगजानतेऔरकरतेहैं वैसेहीपरमाणुकावियोग भीबुद्धिसेकरसक्तेहैं औरईश्वरकीबिभुताभीज्ञान सेजानसक्तेहैं क्योंकिपरमेश्वरविभुनहोतेतोपरमाणुकारचनसंयोगवियोग औरधारणभीनकरसक्ते फिरपरमाणुकाधारणभी कैसेहोता जैसेपुष्पमेंगन्ध दूधमेंघृतघृतमेंस्वाद औरगन्धऔरउन सबपदार्थोंमें आकाशनाम पोलयेसबव्यापकहैं उन२पदार्थोंमें वैसेपरमेश्वरभीपरमाणुऔरप्रकृत्यादिकतत्त्वोंमेंव्यापकहीहै प्रश्न अच्छा ईश्वरसिद्ध औरव्यापकभीहै। परन्तुउसकी उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकरनीआवश्यकनहीं क्योंकिकोईव्यवहारईश्वरके सम्बन्धकाप्रत्यक्षनहींदेखपड़ता इससे ईश्वरअपनी ईश्वरतामेंरहे औरहमजीवलोगअपनीजीवतामें रहैं उत्तर ईश्वरकीउपासना प्रार्थनाऔरस्तुति अवश्यसबजीवोंकोकरनीचाहिए जैसेकिकोई किसीकाउपकारकरै उसकाप्रत्युपकार उसकोअवश्यकरनाचाहिए जोप्रत्युपकारनहीकरता सोअवश्यकृतघ्नहोताहै क्योंकिउसनेउसकेसाथभलाईकिया औरउसनेउसकेसाथबुराईकी जैसा उसनेसुखदियाथा फिरउसनेउसकोसुखकुछनहींदिया वाउसने विरोधहीकरलिया इससे वहपुरुष कृतघ्नहोताहै जैसेमातापिता औरकोईस्वामी जिसकापालनकरतेहैं वेकेवलअपने उपकारके हेतुकरतेहैंकियहभीमेरापालनसमर्थहोकेकरैगा जबवहपुत्रवाभृत्य यथावत्पालननहींकरता संसारमेंसज्जनलोगउसकोकृतघ्नकहते हैं जोमाताऔरपिताअथवास्वामीउनकापालनकरतेहैं जिनपदार्थोंसेवेघृतजलपृथिवी औरअन्नादिकसबपरमेश्वरकेरचेहैं जो जिसकोरचताहै वहीउसकामातापिता औरमुख्यस्वामीहोताहै

उनपदार्थों से अपनावापुत्रादिकोंकापालनवेकरतेहैं जैसेकिसीने अपनेभृत्यसेकहाकितू इसकीसेवाकरवामेरे इस पदार्थकोलेकेउस कोदेश्राजववहसेवा वापदार्थकोप्राप्तहोवै तवपदार्थदातास्वामीके ऊपरवहप्रीतिकरैवाभृत्यकेकिन्तुपदार्थदातास्वामीहीसेप्रीतिकरे गाभृत्यसेनहींकिन्तुजिसकापदार्थहै।वैउसीसेप्रीतिकरनाचाहिए जैसेयुद्धमेंजयवापराजय राज्यकीप्राप्तिअथवाहानिराजाकोहोती है भृत्योंकोनहीं वैसेहीपरमेश्वरकाजगत्है जगत्मेंजितनेपदार्थ हैं उनकास्वामीपरमेश्वरहीहै इससे परमेश्वरकोअत्यन्त प्रीतिसे स्तुतिप्रार्थनाऔरउपासना अवश्यकरनीहोचाहिएअन्यकिसीको नहीं सेवातोमातापिताऔरविद्याकादेनेवाला श्रेष्ठऔरसुपात्र कोभीकरनीचाहिए औरजोईश्वरकीउपासनानकरेगा वहकृतघ्न होजायगा क्योंकिईश्वरनेहमलोगोंपरअनेकउपकारकिएहैं जि-तनेजगत्मेंपदार्थरचेहैंवेसबजीवोंकेसुखकेहेतुरचेहैं औरजीवोंको स्वतन्त्रकर्मकरनेमें रखदियेहैं इसमेंयहयजुर्वेदकाप्रमाणहै॥ कुर्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः। एवंत्वयिनान्यथेतोऽस्ति नकर्मलिप्यतेनरे॥ इसकायहअभिप्रायहै किजीवस्वतन्त्रआपही आपकर्मकरताहै सोइससंसारमेंआपही आपकर्म कर्त्ताहुआ॥ १०० सौवर्षतकजीनेकीइच्छाकरै परन्तु अधर्मकभीनकरै सदाध-र्महीकरै जोजीवकहेगाकि मरनामुझकोअवश्यहै इससे पापको नकरनाचाहिए ऐसेजोजीव विचारसेकर्मकरेगा सोपापोंमेंलिप्त कभीनहोगा॥ यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदतियद्वाचावदतितत्क-र्मणाकरोति। यत्कर्मणाकरोतितदभिसंपद्यते॥ इसश्रुतिकाअर्थ पहिलेकरदियाहै परन्तु इसका यहीअभिप्रायहै किजोजैसाकर्म करै वहवैसाहीफलपावै ऐसीईश्वरकीआज्ञाहै॥ यथर्तुलिङ्गा-न्यृतवःस्वयमेवर्तुपर्यये। स्वामिस्वान्यभिपद्यन्ते तथाकर्माणिदे-हिनः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसेवसन्ता-दिकऋतुओंकेलिंगअर्थात्शीतोष्णादिकऋतुओंमेंप्राप्तहोतेहैं वैसे

सबजीवअपने२ किएकर्मोंको प्राप्तहोतेहैं १ ॥ जोपुरुषईश्वरकी
उपासनानकरेगा वहमहाकृतघ्नहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न
जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अनिमादिकसिद्धि-
वालाहोताहै उसीकोईश्वर माननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र
ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगत्कीउत्पत्तिस्थिति
धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु सा-
धनोंसे ईश्वरबहुत होजातेहैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब
जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा
तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससे कोईजीवसिद्धहोगा जोवे
ऐसाकहैंकि जन्महीसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकहे साधनों
सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध
होवै तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहो
गी सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रका-
शस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैंऔर
ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल
सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ
करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको क-
रताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवक-
भी पापनहींकरता सोजीवपुण्य औरपापकरताहीहै इससे ईश्वर
नहींकरता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप
होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें
करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा-
उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरने-
वालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इससेउसकोअधिकपापहो-
ताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर करातातो
जीवकाठकीपुतलीकीनांईहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फिर
भीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषगुणकासोईश्वआजाता इससे ईश्वरसबज-

गत्काकरनेवालाहै।ताहै परन्तु जीवोंकेकर्मोंकोकरनेवाकराने-
वालानहीं प्रश्न जोईश्वरजीवोंको न रचतातोजीव क्योंपापकरते
औरदुःखभीक्योंभोगते जैसेकिसीनेकूंआखोदा उसमेंकोईमनुष्य
भी गिरपड़ताहै जोवह कूंआ नखोदता तोकोईन गिरता वैसे
ईश्वरजीवोंकोनरचतातोजीवक्योंपापकरते उत्तर ऐसानकहना
चाहिए क्योंकिजोकोईराजाभृत्योंकोंरखताहै औरपुत्रोंकोमनुष्य
उत्पादनकरताहै वागुरुशिष्योंकोशिक्षाकरताहै सोसबइसीवास्ते
करतेहैं किसबधर्मकीरक्षाऔरधर्माचरणकरैं पापकरनेकाअभि-
प्रायइनकानहीं औरजैसेबालकवाभृत्यकेहाथमें लकड़ीशिक्षावा
शस्त्रदेतेहै सोअपनेशरीरकीऔरस्वामीकोआज्ञा तथाधर्मकीर-
क्षाकेवास्ते देतेहैं ऐसाअभिप्राय उनकानहींहै किउनसेआपअ-
पनेहीको मारकेमरजाय वैसेहीपरमेश्वरनेजीवरचेहैं सोकेवल
धर्माचरणऔरमुक्त्यादिकसुखकेवास्ते रचेहैं औरजोजीवपाप क-
रताहैसोअपनीमूर्खताहीसेकरताहैवैसाहीदुःखभोगताहै हस्ता-
दिकजीवोंकेवास्ते इन्द्रियरचींहैं सोकेवलजीवोंकेव्यवहारसिद्धहो
वैं औरउनसे सबसुखकार्योंकोकरैं इनमेंसेकोईअपनेहाथसे अ-
पनीआंख निकाललेताहै वाअपनागलाकाटदेताहै सोकेवलअ-
पनीमूढ़तासेकरताहै मातापितादिकोंकावैसाअभिप्रायनहीं इ-
सेवहप्रश्नअच्छानहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्हैवानहींउत्तर सर्व
शक्तिमान्है प्रश्न जोसर्वशक्तिमान्होयतोअपनानाशभीईश्वरकर
सक्ताहैवानहीं उत्तर ईश्वरअविनाशीपदार्थहै अत्यन्तसूक्ष्म जि-
सकाकिसीप्रकारवाशस्त्रसेंनाशनहीहोसक्ता क्योंकिजिसपदार्थका
रूपऔरस्पर्शहोवै उसीकाअग्नि,जल,वायु, अथवाशस्त्रोंसे नाश
होसक्ताहै अन्यथानहीं नाशशब्दकायहअर्थहै किअदर्शनअथवा
कारणमेंमिलजाना सोपरमेश्वरकोईइन्द्रियसेदृश्यनहीं किफिर
अदर्शनउसकोहोय औरइसकाकोईकारणभीनहीं जिसमेंईश्वर
मिलजाय इससे ईश्वरकेनाशकीशंकाकरनीभीअनुचितहै औरई-

श्वर सर्वशक्तिमान् है परन्तु उसकी शक्ति न्याययुक्त ही है अन्याययुक्त नहीं इस्से ईश्वर सदा न्याय ही करता है कि अविनाशी पदार्थ को अविनाशी जानता है और उसके नाश की इच्छा नहीं करता और जो विनाशवाला पदार्थ है उसका नाश न होवे ऐसे भी इच्छा नहीं करता क्योंकि ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा जानता और वैसा ही करता है प्रश्न जो ईश्वर दयालु है तो न्यायकारी नहीं और जो न्यायकारी है तो दयालु नहीं क्योंकि न्याय उसका नाम है कि धर्म करना और पक्षपात का छोड़ना इस्से क्या आया कि दण्ड देने के योग्य को दण्ड देना और अदण्ड को कभी दण्ड न देना सो जो दयालु होगा सो तो कभी दण्ड न दे सकेगा क्योंकि दया नाम है करुणा और कृपा का सो सदा अन्य के सुख और उपकार में रहैगा इस्से ईश्वर को दयालु मानों तो न्यायकारी मत मानों उत्तर न्यायकारी का तो बहुत स्थानों में अर्थ कर दिया है और दयालु का भी परन्तु न्याय और दयालु इन दोनों का थोड़ासा भेद है दण्ड का जो देना और जीवों को स्वतन्त्रता का रखना और सब पदार्थ बुद्ध्यादिकों का देना सर्वज्ञ सर्व पदार्थ की जिसमें यथार्थ पदार्थविद्या है उस वेद शास्त्र का प्रकाश करना यह बड़ी ईश्वर की दया है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा ही फल पावै अर्थात् यथावत् जो दण्ड का देना है सो उस के और उस्से भिन्न सब जीवों के ऊपर ईश्वर दया करता है कि कोई न पाप करै और न दुःख पावै जैसे राजदण्ड है सो केवल सब मनुष्यों के ऊपर दया का प्रकाश ही है क्योंकि राजा का यह अभिप्राय होता है कि कोई अनर्थ में प्रवृत्त न होवे जो हम दण्ड न देंगे तो सब मनुष्य अधर्म में प्रवृत्त हो जांयगे इस्से अपराधी पुरुष के ऊपर अत्यन्त कठिन दण्ड देता है कि सब मनुष्य भयमान होने से अधर्म में प्रवृत्त न होवैं वैसा ही ईश्वर की सब जीवों के ऊपर दया है कि एक को दुःखी देख के अन्य पुरुष पाप में प्रवृत्त न होवै और फिर जीव को यहां तक अधिकार दिया है कि अणिमादिक सिद्धि त्रिकालदर्शन और आप जीव ईश्वर संयोग से अनन्त सुख को पा सक्ता है

किकभीजिसकोफिरदु:खनहोवै इस्सेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमानऔरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहै पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया और जैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसीहीकियाहै इस्से ईश्वरन्यायकारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत.वृक्षादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचन हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इस्से हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वरविद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्यानहोतो तोयथायोग्यजगत्कोरचनाकोनजानता जगत्कोरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वर मेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं जोसमर्थनहीं होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसीकेसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्यको करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरकेदर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तुसेभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़े स्थूलपदार्थभी परमेश्वर केसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरबड़ाहोताहै सो

ईश्वरकाशरीर किसपदार्थसे बनसक्ताहै किजिसमेंईश्वरनिवास करै औरजोकिसीमें निवासकरेगा तोअनन्त नरहैगा क्योंकि शरीरसेशरीरछोटाहीहोताहै जबशरीरकेसहायसे रावणवाकं-सादिकोंकोमारै तथाउपदेश भीकरै विनाशरीरसे नकरसकेतो ईश्वरसर्व शक्तिमान्होनहीं औरजोरावणादिकोंको मारा चाहै और उपदेश कराचाहै तोसर्वव्यापी औरअन्तर्यामी होनेसेएक क्षणमें सबजगत्कोमारडालै औरउपदेशभीकरदेवै तथाअपने भक्तोंको प्रसन्नभी करदेवै इससे ईश्वरको ईश्वरतायहीहै किविना सहायमेसबकुछकरसक्ताहै औरजोसहायकेबिनानकरसकेतोउ-सकासर्वशक्तित्वही नष्टहोजाय इससे ईश्वरकाकभी जन्मऔर कि सीकासहायलेताहै ऐसीशंकाकरनीव्यर्थहै प्रश्न जैसेसबजगत्की उत्पत्तिहोती है ईश्वरसेवैसेईश्वरकोभीउत्पत्तिकिसीसेहोती होगी उत्तर ईश्वरसेकौनबड़ापदार्थहै किजिससे ईश्वरउत्पन्नहोवे पहि-लेहीप्रश्नकेउत्तरसेइसकाउत्तरहोगया औरजोउत्पन्नहोताहै उ-सकोईश्वरहमलोगनहींमानते किन्तु जिसकीउत्पत्तिकभीनहोवे औरसबसंसारको जिससे उत्पत्तिहोवे उसीकोवेदादिक सत्यशास्त्र औरसज्जनलोगईश्वरमानतेहैं औरकोनहीं जोकोईईश्वरकीभी उत्पत्तिमानताहै उसकेमतमेंअनवस्थादोषआवेगा किजैसेउसने ईश्वरकी उत्पत्तिमानी फिरईश्वरकेपिताकी भीउत्पत्ति मानना चाहिए औरईश्वरकेपिताके पिताकोभीउत्पत्ति माननीचाहिए ऐसेहीआगे२माननेसे अनवस्थाआजायगी अथवाजिसकीवहउ-त्पत्तिनमानेगा उसीकोहमलोगईश्वरकहतेहैं अन्यकोनहीं प्रश्न ईश्वर साकारहै वानिराकार उत्तर ईश्वर निराकारहै क्योंकि जोनिराकारनहोता तोसर्वशक्तिमान्सर्वव्यापकसबकाधारनेवा-लाऔरसर्वान्तर्यामी औरनित्यकभीनहोता इससे ईश्वरनिराकार हीहै प्रश्न ईश्वरचेतनहैअथवाजड़उत्तर जोजड़होतातोसबजगत् की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इस्से ईश्वरचेतनहोहैयहथोड़ासाईश्वरकेविषयमेंलिखदिया इस्से आगेवेदविषयमेंलिखाजायगा॥ उसीईश्वरने सर्वज्ञसर्वविद्यायुक्त औरसत्य२ विचारसहित कृपाकरकेवेदशास्त्रसबजीवोंके ज्ञानादिकउपकारके वास्ते रचाहै प्रश्न ईश्वर निराकारहै उसकोमुख नही फिरवेदकाउच्चारण औररचनाकैसेकिया उत्तर यहशंका असमर्थोंमें होतीहै किबिनामुख मुखकाकामनकरसकै ईश्वर बिनामुखसे मुखकाकाम करसक्ता है क्योंकिवह सर्वशक्तिमान्है औरजोऐसानमानेगा उसकेमतमेंयहदोषआवैगा किहाथ,पांव आंख,शरीर औरकान बिनाजगत्कैसेरचा जैसेबिनाहाथ आदिकके सबजगत् कोरचा तो वेदके रचनेमें कुछशंका नही प्रश्न ओष्ठादिकस्थानोंकाजिह्वासे वायुकोप्रेरणाहोनेसे अक्षरउच्चारणहोसक्तेहैं अन्यथानहीं उत्तर फिरभीवहीदोषआवेगा किईश्वरसर्वशक्तिमान नहोगा क्योंकि ओष्ठादिककेस्पर्श औरप्राणबिनाईश्वरउच्चारण नहोकरसक्ता तोईश्वर पराधीनहोगया और हाथादिकों केबिना ईश्वरनेजगत्भी नरचाहोगा जैसाकि ओष्ठादिकस्थान औरप्राणबिना उच्चारणनही करसक्ता ऐसीशंका जीवमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनही प्रश्न लेखनीमसीइनसे ककारादिकअक्षरवनतेहैं विनाइनकेनही फिरईश्वरनेकहांसेकागदलेखनीमसीकुरिकावाक्औरपटिया यहसामग्रीपाई जिस्से सबअक्षर रचे उत्तर यहबड़ीशंकाआपनेकिया किईश्वरकोअनीश्वरहीबना दिया अच्छामैंआपसेपूछताहूं किनासिका,आंख,ओष्ठ,कान,नख, लोम, नाड़ी, और उनका सन्धान तथा आकारबिना सामग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए प्रश्न फिर यहलिखी लिखाईपुस्तक संसारमेंकैसेआई औरकिन्नेपाया आकाशसेगिरीवापातालसेआगई उत्तर आपकाशरीर वृक्ष, पर्वत औरइतनीवड़ी पृथिवी अन्तरिक्षमें कैसेआगए जैसेयेआगए वैसे पुस्तकभीआगई इसमेंक्या आश्चर्य कुछभीनही अग्नि,वायु और

आदित्यसृष्टिकेआदिमेंभयेथे उन्होंनेवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़े ब्रह्मा
सेविराटने विराटसेमनुने मनुसेंदशप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे
प्रजामेंफैलगए प्रश्न अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े उत्तर
इसमेंदोबातहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकोमांई सबशब्दसब
मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इससेवेदोंकानामश्रु-
तिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमेंईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउसीहृ-
दयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर
दिए॥ योब्रह्माणांविदधातिपूर्वं योवैवेदान्प्रहिणोतितस्मै तहदेव-
मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये यहवेदकाप्रमाणहै इस-
कायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगत्का र-
चनकर्ताभया इससे पहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव
नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव
अन्धेहोतेहैं कुछनही जानसक्ते जैसेपशु इससे परमेश्वरने वेदका
प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थविद्याजाननेकेहेतु प्रश्न ई-
श्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंकाकिया सोलो-
गोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगक-
हेंगे तोवेदोंमेंसबलोगश्रद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरें-
गे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चतजानाजाताहै किउनअग्न्यादिक
देव विद्वानोंनेहीं वेद बनालिएहैं उत्तर परमेश्वरने आकाशसे
लेके तृण,घास,पर्यन्त जगत्कोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वो-
त्कृष्टसबपदार्थोंका जिस्से निश्चयहोताहै उसविद्याको प्रकाशन
करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालुनही
और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अप-
नीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नही किया किसबजीव विद्यापढ़नें
सेज्ञानी औरसुखीहोजांयगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्द
युक्तभी होजांयगे यहदोष परमेश्वरमेंआवेगा जैसेकोई आजी-
विका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनहीं वहऐसीइच्छाकरताहै

जोकोईपण्डितहोगातोमेरीप्रतिष्ठा औरआजीविकान्यूनहोजाय-
गी ऐसाक्षुद्रबुद्धिसेवहमनुष्यचाहताहै औरजोसज्जनलोगहैं वेतो
सदाविद्यादिकगुणोंकाप्रकाशकियाकर्तेहैं सोपरमेश्वरअपनीअ-
नन्तविद्याका प्रकाशक्यानकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा क्योंकि
एकओरसबजगत्औरएकओरविद्या इनदोनोंमेसेभीविद्याअत्य-
न्तउत्तमहै सोईश्वरक्याआजीविकाधीन औरप्रतिष्ठाकेलोभसेवि-
द्याका प्रकाशनकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा इसमेंकुछसन्देह
नहीं औरजोकोईऐसाकहै कि पण्डितोंनेवेदविद्यारचलिया है उ-
नसेपूछाजाताहै किवेबिनाशास्त्रके पढ़नेसे पण्डित कैसेभए और
जो वे कहैं कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज
कालभी बुद्धि और विचारसे होजाय सो बिना विद्याके पढ़नेसे
कोईपण्डितनहींहोता क्योंकिजबसृष्टिरचीगई उससमयकोईम-
नुष्यनहीं था बिनापरमेश्वरके फिरवह अनुमानसे जानाजाताहै
वहअनुमानभीयथार्थ कभीनहीसकेगा आजतकबहुतबुद्धिमानप-
दार्थोंका विचारकर्तेहैं सोकिसीपदार्थमें गुणवादोषजानतेहैं प-
रन्तुइतनेइसमेंगुणहैं वाइतनेहीदोषहैं ऐसानिश्चयउनकोनहीं
होता जितनीअपनीबुद्धि उतनाहीजानतेहैं अधिकनहीं औरप-
रमेश्वरसबपदार्थोंको यथावत्जानताहै सोअपनाज्ञानऔरवि-
द्या क्यापरमेश्वर गुप्तरक्खैगा ऐसा ईर्ष्यावान परमेश्वर होग-
या किसबकोअपनी विद्याकाप्रकाशनकरै किन्तुदयालुके होनेसे
औरईर्ष्या,कपट,छलादिदोष रहितहोनेसे अवश्यविद्याकाप्रकाश
करैगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न वेदकोआपपरमेश्वरसे उत्पत्ति
मानतेहो जैसे जगत्की सो जैसा जगत्अनित्यहै वैसावेदभीअनि-
त्यहोगा उत्तर वेदकेपुस्तक औरपठनपाठन जबतकजगत्रहैगा
तबतकवेदकीपुस्तक औरपठनपाठनभीरहैंगे जबजगत् नष्टहोगा
उसकेसाथयेतोनभीनष्टहोगें परन्तु वेदनष्टनहींगे क्योंकिवहवि-
द्यापरमेश्वरकीहै जैसेपरमेश्वरनित्यहै वैसेविद्यादिकगुणभी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं प्रश्न वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ताहै क्योंकि॥ इतश्चुतंसनातनंविज्ञामीहि इतश्चवादेवानां देवऋषीणामृषिसुनोनांमुनिः। ऐसेऔरभ्वाशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसी संस्कृतवैसीमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत हमनेरचलियाहै फिरआपकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं किपरमेश्वरविनाबेदकोकोईनहींरचसक्ता उत्तर हमलोगसंस्कृतमात्रसे वेदकानिश्चयनहीकरते किपरमेश्वरने रचाहै क्योंकिसंस्कृततोजैसीतैसी पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसंस्कृतमें नहीदेखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोअवश्यपक्षपातकिसीस्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरैगा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दऔरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रकारसे एकअक्षरमेंभी पक्षपातदेखनेमें नहींआता फिरदेहधारी सबविद्याओंमेंयथावत्पूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचेगा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे लिखेगा परन्तुजिसविद्याको नहीजानता उसकाविषय जबकुछ आवेगा तवकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदोंमेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्यजबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धिमानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवेंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्डनऔरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलिखनेमें धर्मकाखण्डन वाअधर्मकामण्डन किसीप्रकारसेलेशमात्रभीनआवेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअपनेग्रन्थमेंलिखेगा जिस्से एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसेतैसेनिकलसकें औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्बन्धऐसेरक्खैगें किजिनसेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथावत्आजांय सोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अन्यकानहीं सोवैसेवे-

दहीहैं कि जिनमेंअसंख्यात प्रयोजन औरसबविद्या निकलतीहैं क्योंकिपरमेश्वरने सबविद्यायुक्तवेदोंकोरचेहैं इससे सबकार्यवेदोंसे सिद्धहोतेहैं औरवेदोंकेनामलिखके गोपालतापिनी,रामतापिनी, कृष्णतापिनी औरअल्लोपनिषदादिक मनुष्योंनेबहुतग्रन्थरचलिएहैं परन्तु विद्वान्यथावत्विचारकरकेदेखे तोउनग्रन्थोंमेंजैसीमनुष्योंकी क्षुद्रबुद्धिवैसीहीक्षुद्रतादेखपड़तीहै सोपरमेश्वर औरउनकेवचनोंमें दिनऔररातकाजैसाभेदहै वैसाभेददेखपड़ताहै प्रश्न वेदपौरुषेयहै अथवाअपौरुषेय अर्थातईश्वरकारचाहै वाकिसीदेहधारीका उत्तर वेददेहधारीकारचाकभीनहींहै किन्तु परमेश्वरहीनेरचाहै परन्तु वेदअपौरुषेय औरपौरुषेयभीहै क्योंकिपुरुषदेहधारीजीवकानामहै औरपूर्णकेहोनेसेपरमेश्वरकाभी अपौरुषेयतोइससे है किकोईदेहधारीजीवकारचानहीं औरपौरुषेयइसवास्ते है किपूर्णपुरुषजोपरमेश्वरउसनेरचाहै इससे पौरुषेयभीहै औरपरमेश्वरकीविद्यासनातनहैसोईवेदहै इससे भीवेदअपौरुषेयहै क्योंकिपरमेश्वरकी विद्याजोवेद उसकीउत्पत्तिवानाश कभीनहींहोती परन्तु पुस्तकपठनऔरपाठन इनतीनोंकाजगत्के प्रलयमेंप्रलयहोजाताहै वेदईश्वरमेंनित्यरहतेहैं इससे वेदकानाश कभीनहींहोता प्रश्न जैसेवेदईश्वरसेउत्पन्नहोताहै वैसाजगत्भीईश्वरसेउत्पन्नहोताहै जैसाजगत् विनश्वरहै वैसावेदभी विनश्वरहै औरजोवेदनित्यहोगा तोजगत्भीनित्यहोगा उत्तर जगत्जोहैसो प्रकृतिपरमाणु औरउनकेपरस्परमिलानेसे परमेश्वरसेउत्पन्नभयाहै सोकभीकारणजोपरमेश्वर उसमेंकार्यरूपजगत्नष्टहोजायगा परन्तु वेदजगत्जैसाकार्यहैवैसानहीं क्योंकिवेदतो परमेश्वर कीविद्याहै सोजोनाशहोजायतोपरमेश्वरविद्याहीनहोनेसे अविद्वान्हो होजाय सोपरमेश्वर अविद्वान् कभीनहींहोता सदापूर्णज्ञानऔरपूर्णविद्यावान रहताहै सोजैसाक्रम परमेश्वरकी विद्यामेंहै वैसाहीक्रमशब्दअर्थसम्बन्धमन्त्र औरसंहिताअर्थात्पूर्वा-

परमन्त्रोंका सम्बन्धजोमन्त्र जिस्से पूर्वआपीछेलिखनाचाहिए सो सबपरमेश्वरहीनेरक्खेहैं इस्से कुछसन्देहनहीं जैसाजगत्कासंयोगवावियोगहोताहै वैसावेदविद्याकासंयोगवावियोगकभीनही होता क्योंकिपरमेश्वर औरपरमेश्वरके विद्यादिकसबगुणभीनित्यहैं इस्से वेदविद्यानित्यहीहै जोऐसानमानेगाउसकेमतमें अनवस्थादोषआवेगा किकोईविद्यापुस्तकस्वयंभू औरईश्वरकारचामानेगा तोसबपुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा क्योंकिएकपुस्तकस्वतःप्रमाणरहैगा औरउसकेप्रमाणसे वाअप्रमाणसेसत्यवामिथ्यापुस्तककानिश्चयहोसक्ताहै औरजोकोईपुस्तकस्वतः प्रमाणहीनहोगा तोकोईपुस्तकका निश्चयनहीहोसकेगा क्योंकिएकमनुष्यनेअपनीबुद्धिकीकल्पनासे पुस्तकरचा दूसरेनेउसकाअपनीबुद्धिसे खण्डनकरदिया दूसरेकातीसरेने तीसरेका चौथेने ऐसेहीकिसीपुस्तकका प्रमाणनहोगा फिरअनवस्थाभ्रमकेहोनेसेसदारहैगी इस्सेवेदपुस्तकस्वतः प्रमाणहोनेसे परमेश्वरहीकारचाहै अन्यथानहीं क्योंकिऐसीसुगमसंस्कृतललितपद सत्यार्थयुक्त अनेकप्रयोजनऔरअनेकविद्यासहित स्वल्पअक्षरसुगमवेदहीकीपुस्तकहै अन्यनहीऔरजगत्केकिसीपदार्थका कुछभिन्नयमनुष्यअपनीबुद्धिसेकरसक्ताहै परन्तुईश्वरस्वरूप औरउसके न्यायकारित्वादिक अनन्तगुणवेदपुस्तकमें जैसेलिखेहैं वैसालेख कोईसंस्कृतवाभाषापुस्तकमेंनहीहै क्योंकिकिसीकोवैसी बुद्धिनही होसक्ती किपरमेश्वरकास्वरूपऔरयथावत्गुणलिखसकै सोऐसा ही जानना चाहिए किहमलोगोंपर अत्यन्त कृपासे परमेश्वरने अपनास्वरूप औरअपनेसत्यगुणवेदपुस्तकमेंप्रकाशकरदिएहैं जिस्से किहमलोगभीपरमेश्वरकास्वरूप औरगुणवेदपुस्तकसेजानके अत्यन्तआनन्दयुक्तहोतेहैं सोपक्षपातकोछोड़के यथावत्विद्यायुक्त पुरुष अत्यन्तवेदार्थका विचारकरैगा सोईअनन्तसुखको पावेगा अन्यथानहीं प्रश्न ऐसेही सबमनुष्यएक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानतेहैं जैसेकि बाविल,इञ्जील औरकुरान् वैसे आपलोगोंको भीवेदमेंआग्रहहै जिस्से किअत्यन्त स्तुतिकर्तेहैं जोवेदपरमेश्वरका रचाहोगा तोवेपुस्तक परमेश्वरकेरचे क्योंनहीं इसमेंक्याप्रमाण है किवेदही ईश्वरकारचाहै औरअन्यपुस्तकनहीं उत्तर सबम-नुष्योंकाप्रमाणनहीहोसक्ता क्योंकिसबमनुष्यपूर्णविद्यावालेआप्त औरपक्षपातरहितनहीहोते जिस्से किसबमनुष्योंके कहनेकाप्र-माणहोजाय जोआप्त औरपक्षपात रहितहोवैं उन्होंका प्रमाण करनायोग्यहै अन्यकानहीं क्योंकिजोमूर्खोंकाहमलोग प्रमाण करैं तोबड़ाभारीदोषआजायगा वेअन्यथाभाषणकर्तेहैं औरअ-न्यथाकर्मभीकर्तेहैं इस्से आप्तलोगोंकाप्रमाणकरनाचाहिए और वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणनाही नहो होसक्ती किन्तुउनमेंविद्याकीबाततोकुछनहीहै। जैसोकिकहा-नहोयवैसेवेपुस्तकहैं प्रश्न आप्तकानिश्चयकैसेहोसक्ताहै वेदवाले कहतेहैं किहमारीबातसत्यहै अन्यलोगकहतेहैं किहमलोगोंकी बातसत्यहै इसमेंक्याप्रमाणहैकियहीबातसत्यहै अन्यनहीं उत्तर इसकासमाधान तृतियसमुल्लासमेंकहदियाहै किऐसालक्षणवा-लाआप्तहोताहै औरप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसे सत्यवाअसत्यकायथा-वत्निश्चयभीहोताहै उनमेनिश्चयकरकेसत्यकोमाननाचाहिए अ-सत्यकोनहीं प्रश्न वेदकिसीदेशविशेषऔरभिन्नदेशमें रहनेवाले मनुष्योंकेहेतुहैं वासबमनुष्योंकेहेतुहैं उत्तर वेदसबमनुष्योंकेशा-स्तेहैं क्योंकिजोविद्या औरसत्यबातहोतीहै सोसबकेहेतु होतीहै औरवेदमेंकहीं नहींलिखा किइसदेशवाउनमनुष्योंकेहेतुवेदब-नायागया औरअधिकारभीइनकाहै औरइनकानहीं जैसेकि बा-विल,मूसा औरइसराईल कुलादिकोंकेवास्तेपुस्तकआई औरमु-हम्मदादिकोंकेहेतुकुरान् यहबातमनुष्योंकोहोतीहै अपनेदेशवा-लेकेऊपरप्रीति औरअन्यकेऊपरनहीं जोईश्वरकावचन सोतो सर्वज्ञऔरसबजगत्कास्वामीहै इस्से तुल्यकृपाऔरतुल्यदृष्टिहोर-

क्खैगा अन्यथा नहीं ऐसीपुस्तक वेदही कीहै अन्यनहीं क्योंकि अन्यपुस्तकोंमें ऐसीविद्यानहीं औरकहानीकोनाईउनमेंकथाहै औरपक्षपात बहुतसेहैं इससे वेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं इसमेंकिसीकोजो सन्देहहोय तोपक्षपातकोछोड़के तीनोंपुस्तकों काविद्याप्रीति औरसज्जनतासे विचारकरैं तबयहीनिश्चयहोगा किवेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं प्रश्न वेदोंकासबमनुष्योंको पढ़नेऔरपढ़ानेका अधिकारहैवानहीं उत्तर इसकाविचार तृतीयसमुल्लासमें वर्णव्यवस्थाके कथनमें कियागयाहै वहांजानलेना इसप्रकारसेवहांलिखाहै किजोमूर्खहैवहशूद्रहै उसकापढ़ना वाउसको पढ़ाना व्यर्थहै क्योंकिउसको बुद्धि न होनेसे कुछ विद्यानआवेगी अन्यव्यवस्थाचतुर्थ समुल्लासमेंदेखलेनी प्रश्न शूद्रादिकोंकोवेदसुननेकाअधिकारहैवानहीं उत्तर जिसकोकानइन्द्रियहै औरउसकेसमीपजोशब्दहोगा उसकोअवश्यसुनेगा सोवेदकाशब्दअथवाअन्यशब्दहोवै वहसबकोसुनेगापरन्तुशूद्रमूर्खहोनेसे सुनकेभीकुछनकरसकेगा इसहेतुजहांतहांनिषेधलिखाहै किशूद्रकोवेदनपढ़नाचाहिए किउसकोकुछआतानहीं प्रश्न वेदव्यासजीनेवेदरचेहैं इससे उनकानाम वेदव्यासपड़ाहै यहबातभागवत्में लिखीहै फिरआपकैसी बातकहतेहैं किवेदईश्वरनेरचेहैं उत्तर यहबातअत्यन्तमिथ्या है क्योंकिव्यासजीनेंभी वेदपढ़ेथे औरअपने पुत्रशुकदेवादिकोंको पढ़ायेथे औरउनकापितापराशर उसका पितामहशक्ति और प्रपितामह वशिष्ठब्रह्मा औरबृहस्पत्यादिकोंनेभीपढ़ेथे जोव्यासकेबनाये वेदहोते तोवेकैसेपढ़ते क्योंकि व्यासजीतो बहुतपीछेभयेहैं औरजो उनकानाम वेदव्यास पड़ाहै सो इसरीतिसेपड़ाहै कि । वेदेषुव्यासोविस्तारोनामविस्तृताबुद्धिर्यस्यासवेदव्यासः ॥ व्यासजीनेवेदोंकोपढ़के औरपढ़ायेहैं जिससे सब जगत्में वेदकापठनऔरपाठनफैलगया औरउनकीबुद्धि वेदोंमें विशालथी कियथावत्शब्दअर्थऔरसम्बन्धसे वेदोंकोजानतेथे इ-

से इनकानामवेदव्यासरक्खागया पहिलेइनकानामजन्मका कृष्णद्वैपायनथा वेदव्यासनाम विद्याकेगुणसेभयाहै इस्से भागवतमे जोबातलिखीहै सोवेदोंकीनिन्दाकेहेतुलिखीहै उसकायह अभिप्रायथा वेदोंकीनिन्दामें किजिसनेवेदरचेहैं उसीनेभागवतभीरचाऔरवेदोंकेपढ़नेसे व्यासजीकोशान्तिभीनभई किन्तुभागवतके रचनेसेउनकोशान्तिभई औरभागवत वेदोंकाफलहैं अर्थातवेदों सेभीउत्तमहै सोयहबातदुर्बुद्धिजीवोपदासउसकीकहीहै क्योंकि व्यासजीकेनामसे उसनेसब भागवतरचाहै इसहेतुकि व्यासजीके नामलिखनेसे सबलोगप्रमाणकरैं औरवेदोंकीनिन्दासे मेरेग्रन्थ को प्रवृत्तिकेहोनेसे सम्प्रदायकीवृद्धि औरधनका लाभहोय इस्से सज्जनलोग इसबातकोमिथ्याहीमानैं प्रश्न वेदईश्वरनेसंस्कृतभाषामेंक्योंरचे क्याईश्वरकी भाषासंस्कृतहीहै जोदेशभाषामेंरचते तोसबमनुष्यपरिश्रमकेविना वेदोंकोसमभलेते औरसंस्कृतजाननेकेहेतु व्याकरणादिक सामग्रीपढ़नी चाहिए इसकेविना वेदोंकाअर्थ कभीमालूमनहोगा उत्तर संस्कृतमेंइसहेतुवेदरचे गयेहैं किछोटेपुस्तकमें सबविद्याआजांय औरजोभाषामेंरचते तोबड़े २ ग्रन्थहोजाते औरएकदेशहीका उपकारहोता सबदेशों कानहीं औरजितनीदेशभाषाहैं उनमेंरचतेतबतोपुस्तकोंकापारावारहीनहीहोता इस्से ईश्वरनेसर्वज्ञभाषामेंवेदरचेहैं कि किसीदेशकी भाषानरहै औरसबभाषा जिस्सेनिकलें क्योंकिसंस्कृत किसीदेशकीभाषानहीं जैसेईश्वरकिसीदेशकानहीं किन्तुसबदेशोंकास्वामीहै वैसेहीसंस्कृतभाषाहैकिकिसीएकदेशकीनहीं प्रश्न देवलोग औरआर्यावर्त्त देशकी प्रथमभाषासंस्कृतथी इसीकोमुसल्मानलोग जिन्नभाषाकहतेहैं क्योंकिजैसीप्रवृत्ति संस्कृतकीपहिलेआर्यावर्त्त मेंथी वैसीकिसीदेशमेंनथी जिसदेशमें कुछप्रवृत्तिभईहोगी सोआर्यावर्त्तहीसे भईहोगी अबभीआर्यावर्त्तमें अन्य देशोंसेसंस्कृतकीअधिकप्रवृत्तिहै इस्से यहनिश्चयहोताहै किसंस्कृ

तभाषाआर्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी उत्तर यहदेवलोगकीभाषानहीं क्योंकि बृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रआध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै इन्द्रनेबृहस्पतिसेंसंस्कृतपढ़ी औरबृहस्पतिने अङ्गिराप्रजापतिसे, उन्नेमनुसे, मनुनेविराटसे, विराटनेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भादिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवेक्योंपढ़तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इससे देवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरजबब्रह्मादिकोंकी भाषानहीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनहीं परन्तु ऐसा जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषिमुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासीलोगोंने परम्परासेसंस्कृतपढ़ा औरपढ़ायाहै इससेआर्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्यासेकहतेहैं जैसेकिआर्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंहीका नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे तोलोकलोकान्तरमें होतेहोंगे यहांनहीं फिरउनकीभाषा यहां कैसेआसकेगी इससे यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीपदार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककीबुद्धिहीनहीं फिरयेसंस्कृतविद्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसके वारचसके हैं औररचतेहोततोअन्यदेशोंमेंभीरचलेतेतथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इससे ऐसीबात सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए प्रश्न देशभाषाभिन्न२ सबकैसें बनगई औरकिससेबनी उत्तर सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृतहै क्योंकिसंस्कृत जबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंशसे देशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्दसेदूधनवीतशब्दसेनैनू अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिकाशब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयूयंशब्दसेयू वयंशब्दसेवी गूढशब्दकागोड़ इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेब-

हुतनामहैंजैसेकिगौःनामगाय.ग्मा,जमा,क्ष्मा,क्षा,क्षमा,क्षोणी,
क्षिति,अवनी,उर्वी,पृथ्वी,मही,रिपः,अदितिः,इडानिर्ऋतिः,भूः,
भूमिः,पूषाः,गातुः,गोत्रा,ए२१नामपृथिवीकेनामहैं सोभिन्न२दे-
शोंमेंभिन्न२, २१नामोंमेंसेभिन्न२काअपभ्रंशहोनेसे भिन्न२भाषा
बनजातीहै औरएकनामबहुतअर्थोंकाहोताहै जैसेकिसिंह,वा-
नर,घोड़ा,सूर्य्य, मनुष्य,देव औरचोर इत्यादिककानाम हरिहै
इससे भीभिन्न२देशमें भिन्न२भाषाहोतीहै क्योंकिकिसीदेशमेंसिंह
नामसें उसपशुकाव्यवहारकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेवानरका
ग्रहणकिया किसीदेशमेंहरिशब्दमेघोड़ेकोलिया किसीदेशमेंह-
रिशब्दसेसूर्य्यकोलिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेचोरकोलिया इस
हेतुदेशभाषाभिन्न२होगई औरमनुष्योंकाउच्चारणभेदसेभिन्न२
भाषाहोजातीहै जैसेकि ज्ञ यहदोनोंअकारमें मिलनेसे अक्षर
यहज्ञहोताहै सोआजकालइसकालेखऐसाहोगयाहै ज्ञ इसएक
अक्षरकेअन्यथाउच्चारणसे तीनभेदहोगयेहैं गुजरातीलोगगका-
र औरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्यलोग
दऔरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं औरअन्यलोगगकार औरयकार
काउच्चारणकर्तेहैं तथातालव्यश मूर्द्धन्यष औरदन्त्यस इनतीनों
केस्थानमें बंगालीलोगतालव्यशकारकाउच्चारणकर्तेहैं मध्यऔर
पश्चिमदेशवालेतीनोंकेस्थानमें दन्त्यसकारकाउच्चारणकर्तेहैं त-
थाकिसीकोजीभकठिनहोतीहै वहप्रायःशब्दोंकोअन्यथाउच्चारण
कर्तीहै औरजिसदेशमेंविद्याकालेशभीनहोय उसदेशमेंसङ्केतव्य-
वहारकरनेकेहेतु शब्दोंकाकरलेतेहैं किइसशब्दसेइसकोजानना
औरइसशब्दसेइसकोजानना जैसेदाक्षिणात्यलोगोंने घीकानाम
तूपररखलिया औरउत्तरदेशपर्वतवासियोंने घीकानामचोखार-
खलिया औरगुजरातियोंने चावलकानामचोखाररखलिया इससे
भीदेशदेशान्तरकी भाषाभिन्न२होगईहै इसीप्रकारके अन्यकार-
णोंकोभीविचारलेना प्रश्न वेदमें अश्वमेधादिक यज्ञोंकीक्रिया जो

लिखीहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिमानपनेकीनहीदी-खती क्योंकिघोड़ेको सबजगह फिरातेहैं उसकोकोई जोबांधले उस्से फिरयुद्धकरतेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रसेभीऐसीबातसेवैर होजाताहै इत्यादिकऐसीरबुरीबात जिसमेंलिखीहैं वहवेदईश्व-रकाबनायाकभी नहीगा उत्तर येसबबातमिथ्याहैं वेदमेंएकभीन-हींलिखीहैं किन्तुलोगोंनेकहानी बनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा क्योंनहीकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत् आजाते तबतोईश्वरकी दयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालु-ता किबड़े परिश्रमसे वेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणा सेवेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहो औरजो परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उसमेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकीखानापीना उठनाबैठना कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अ-न्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहीहोता औरइतनीबड़ीजोपदा-र्थविद्यासोकैसेहोगी जीवकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरप्राणक-हने औरसुननेकासामर्थ्य भीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर दियाहै इस्से ईश्वरदयारहितकभीनहीहोते औरजीवकोजोस्व-तन्त्ररखदियाहै यहीबड़ीदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेदेवैं ईश्वरऔ-रवेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउ-त्पत्तिस्थितिऔरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ७ ॥

अथ जगदुत्पति प्रलयविषयान्व्याख्यास्याम: ब्रह्मविदाप्नोति परं
तदेषाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्
प्रतिष्ठितासोऽश्नुतेसर्वान्कामान्ब्रह्मणासहविपश्चितेतितस्माद्वाएत
स्मादात्मनआकाश:संभूत:आकाशाद्वायु:वायोरग्नि:अग्नेराप:अद्भ्य:
पृथिवी पृथिव्याओषधय: ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेत:रेतस:पुरुष: स-
वाएषपुरुषोन्नरसमय: ४ तैतिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसौम्येदम
ग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहु:स्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउप
निषदकीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमा
परोयत् किमावरीव:कुहकस्यशर्मण्यम्भ: किमासीद्गहनंगभीरं यह
ऋग्वेद की श्रुति है आत्मावाइदमग्रआ सीन्नान्यत् किंचन्मिषत्
सईक्षतलोकानुसृजाइति यहऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक
वेदादि कीश्रुतियों से यहनिश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय
सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत् लेशमात्रभी
नहीथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब
परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेख
लेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्व
रकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजातेहैं वह परमेश्वर एक
अद्वितीयथा दूसराकोईनहीथाउन्ने जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिईकिब-
हुतप्रकारकी प्रजाकोमैंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकोप्र
जाउत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया कि
जोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म प-
दार्थहैजोकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उस्से स्थूल
द्विगुणंवायुउत्पन्नभया उस्से अग्नित्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतु-
र्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेऔषधि औषधि
योंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वर
नेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफि
र वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकत्र

णुरचा दोअणुसे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुकोमिलाके यहजोदेखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया प्रश्न परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगतकोरचा उत्तर-इससेपूंछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गोतममुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजिसपदार्थको अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवै उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उससे कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्त है प्रश्नजगत्केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहोहोसक्ती उत्तर इच्छाकेजगत्मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और वहउत्तमहोवै तथा अपनेसेभिन्नहोवै परमेश्वरमें तीनोंमेंसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहीहोती तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापकके होनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इससे इच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहोहोसक्ती प्रश्न जगत्रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहोहोसक्ती उत्तर अच्छा इच्छा तोनहीबनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहीबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानो तो जगत्काहोना नहीइच्छा और प्रयोजनमानलेओ इससे भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानैंकि अपनेआनन्दकेवास्ते जगत्कोरचा उससे हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगतकेजीवभक्तिकरैं तोजबतकजगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त् कि जीवभक्तिभी नहीं करते थे तब परमेश्वर अवश्य दुःखी होगा इससे ऐसा प्रश्न व्यर्थ होता है इसमें आग्रह नहीं करना चाहिये रचना से ईश्वर के सामर्थ्य का सफल होना ही रचना का प्रयोजन है प्रश्न ईश्वर ने जगत रचा सो जगत रचने की सामग्री थी अथवा अपने में से ही जगत रचा वा आपने ही सब जगत रूप बन गया उत्तर इसका बिचार अवश्य करना चाहिये कि बिना सामग्री से कोई पदार्थ नहीं बन सक्ता क्योंकि कारण के बिना किसी कार्य की उत्पत्ति हम लोग नहीं देखते सो कारण तीन प्रकार का होता है एक उपादान दूसरा निमित्त और तीसरा साधारण सो उपादान यह कहाता है कि जिसी से कुछ लेके कोई पदार्थ बनाना सो कार्य और कारण का इसमें कुछ भेद नहीं होता दोनों एक ही रूप होते हैं जैसे मट्टी को लेके घडे को बनाते हैं कपास को लेके वस्त्र सोने को लेके गहना लोहे को लेके शस्त्र और काष्ठ को लेके किवाड आदिक सो घडादिक जितने हैं वे मृत्तिकादिकों से भिन्न वस्तु नहीं हैं किन्तु वही वस्तु है इस प्रकार का उपादान कारण जानना दूसरा निमित्त कारण जो कि उन कुलालादिक शिल्पी लोग नाना प्रकार के पदार्थों को रचने वाले निमित्त कारण में जानना क्योंकि मृत्तिकादिकों का ग्रहण करके अनेक पदार्थों को रचते हैं किन्तु अपने शरीर से पदार्थ लेके नहीं रचते इससे ऐसा निमित्त कारण होता है कि जो पदार्थ बनावे उससे भिन्न सदा रहै और उस पदार्थ को रचले तीसरा साधारण कारण होता है जैसा कि प्राण काल देश चक्र और सूत्रादिक क्योंकि ये सब कर्त्ता के आधीन और हेतु रहते हैं इससे अवश्य बिचार करना चाहिये परमेश्वर इस जगत का तीनों कारणों में से कौन कारण है अर्थात् तीनों कारन है जो उपादान कारण होवै तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण भ्रम जन्म और मरणादिक दोष ईश्वर में आ जांयगे क्योंकि उपादान से उपादेय भिन्न नहीं होता अर्थात् ईश्वर से जगत भिन्न नहीं होगा इससे उक्त दोष अवश्य ही आवेंगे इसमें जो कोई ऐसा कहै कि जैसे स्वप्नावस्था में मिथ्या पदार्थ अनेक देख पडते हैं और रज्जु में सर्प बुद्धि हो

तीहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसेवस्तु में कुछदो-
षनहीं आसक्ता स्वप्नसेजीवको कुछहानि नहींहोती और सर्पसेर-
ज्जुको उनसे पूंछना चाहिये सर्प कीभ्रान्ति रज्जुमें और स्वप्नमें
हर्षशोकादिक दुःख किसकोभये जोवह कहैकि ब्रह्मकोहीभयेफि
र वह ब्रह्म शुद्धनही रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहींरहा क्योंकि भ्र
म जो होताहै सो अज्ञानसेही होताहै बिना अज्ञानसेनहीं फि
र वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखाहै उसकी क्या
गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममेंआजायगे जोवहक
हैकि भ्रमसेबन्ध और मोक्षहै वस्तुसेनहीं फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध
मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमेंलिखाहै सोबात झूठीहोजायगी य
हबडा दोषहोगा और जो बद्धहोगा सो जगतको कैसेरचसकेगा
और जोमुक्तहोगा सोजगतरचनेकीइच्छाहीनकरेगा फिरपरमे
श्वरसे जगतकैसेबनेगा औरजोकोईकेवलनिमित्तकारणमाने तो
जगतकासाक्षातकर्तानहींहोगा किन्तुशिल्पीवतहोगा अथवाउस
को महाशिल्पीकहो और उसकेपास सामग्रीभी अवश्यमाननी
चाहिये फिरजो सामग्री मानेंगे तोजगतभी नित्यहोगा क्योंकि
जिस्से जगतबनाहै वहसामग्रीईश्वरके पाससदारहतीहै फिर
एक अद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतलेश
मात्रभीनहींथा यहवेदादिक शास्त्रोंकाप्रमाणोंसे कहनावहव्यर्थ
होगा इस्से उननिमित्त कारण माननेसेभीवह दोषआवेगा और
जोसाधारणकारणमानें तोभीजडपराश्रितरचनेमें असमर्थईश्वर
होगा जैसेकुलालादिकके बिना घटादिकार्य्य पराधीनहोतेहैं क्यों
किजैसेचक्रादिकके बिना कुलालादिक घटादिकनहीरचसक्तेहैं फि
रवहईश्वरपराधीनहोनेसे सर्वशक्तिमान नहींरहेगा क्योंकि कोई
कासहायकिसीकाममेंनले औरअपनीशक्तिसे सबकुछकरै उसको
कहतेहैंसर्वशक्तिमान् सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तो सर्व
शक्तिमान्ईश्वरकभीनरहेगा इस्से तीनोंप्रकारमें दोषआतेहैं ।

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवै
इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान्
होताहै उसमेंअनन्तसामर्थ्य सामग्रीहोतीहै सोवहसामग्रीस्वा-
भाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूस-
रापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमे-
श्वरनेबनाया प्रश्न जोगुणकीनांईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे
भिन्नकभीनहीहोती क्योंकिस्वाभाविक जोगुणहै सोगुणीसे भिन्न
कभीनहींहोता इससे क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत्
रूपबनगया उत्तर ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदा-
र्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य
स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहींलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औ-
रस्वाभाविकहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें
वहसामर्थ्य रहताहै उससे सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इससेक्याआ-
या किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेसे उपादान कारणज-
गत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई
पदार्थ नही है कि जिसे लेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभा-
विक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इससे सब जगत्का उ-
पादानकारणपरमेश्वरहीहै परन्तुआप जगत्रूपनहीबना तथा
अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचनेसे दूसरके सहायविना
इससे जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासा-
धारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थके सहा-
यसेजगत्कोईश्वरनेनहीरचा किन्तुअपनीसामर्थ्य सेजगत्कोर-
चाहै इससे साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं
औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपड़ते विरुद्धका-
र्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इससेजगत्केतीनों कारणप-
रमेश्वरहीहैं अन्यकोईनही प्रश्न परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक
है अथवानहीं उत्तर परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

किनिराकारनहोता तोएकदेशमेंरहताऔरकहीं देखभीपड़ता सोएकदेशमेंनहीहै औरकहींदेखभीनहींपड़ता इस्से निराकार हीईश्वरकोजाननाचाहिए औरजोनिराकारनहोतातोसर्वव्यापकनहोता तोसर्वात्मा औरसबजगत्का अन्तर्यामी नहोता सो सबजगत्का आत्मासर्वान्तर्यामोके होनेसेव्यापकहो ईश्वरहै अन्यथानहीं प्रश्न सबजगत्कारचनऔरधारणईश्वरकिसप्रकारसे करताहै उत्तर जैसाजगत्मेंहमलोगदेखतेहैं वैसाहीईश्वरनेजगत्रचाहै परन्तु इसमें यहप्रकारहै किआकाशतोपरमाणुसेभी सूक्ष्महै औरवायुकेपरमाणुकायहस्वभावदेखनेमेंआताहै किनीचेऊंचेऔरसमदेशमेंगमनकरनेवालेपरमाणुहैं क्योंकिजोत्वचाइन्द्रियसेप्रत्यक्षस्थूलवायुको हमलोगवैसाहीस्वभाववालादेखतेहैं कभीऊर्द्धकभीनोचेऔरकभीतिरछाचलताहै इस्सेहमलोगपरमाणुकाअनुमानकर्तेहैं इसमेंअन्यभीबहुतकारणहैं क्योंकिवायुमें अनेकतत्वमिलेहैं परन्तु हमलोगमुख्यगणनासेइसबातकोलिखतेहैं तथाअग्निकाऊर्द्ध जलकेतथानीचेऔरपृथिवीकासमताअनेकविधिगतिकोदेखकेपरमसूक्ष्मपरमाणुरूपजोतत्वउनकाभीअनुमानकर्तेहैं किवेभीइसीप्रकारकेहैं सोपरमेश्वरनेपृथिवीमें अनेक तत्वोंकामेलनकियाहै क्योंकिजोमेलनहोता तोतत्वोंकेस्वाभाविकगुणपृथिवीमेंनदेखपड़ते जैसेकिवायुनहोतातोपृथिवीमेंस्पर्शभीनहोता तथाअग्नि,जल औरआकाशनहोते तोरूपरस और पोलभीनदेखपड़ते इस्से क्याजानाजाताहै किसबमें सबतत्वमिलेहैं सोपृथिवीऔरजलकेपरमाणु अधोगामीस्वभावसेहैं अग्निऊर्द्ध गमनऔरवायुतिरछेगमनकरनेवालाहै उनसबकेपरमाणु भी वाअधिकन्यूनमिलनेसे स्थिरतावागमनपदार्थोंकेहोतेहैं जैसेकि पृथिवीऔरजलनीचेजातेहैं औरअग्नितथावायुऊपर औरअनेकविधिबलकर्तेहैं फिरमिलाभयापदार्थकहीनहींजासक्ता वाअधिकन्यूनतातत्वोंकेमिलानेसजितनीजिसकीगति परमेश्वरनेरचीहै

उतनी ही है। तो है अन्यथा नहीं और सब में बलवान् वायु है वायु के आधार से सब लोगों को हम लोग देखते हैं जैसे कि इस पृथिवी के चारों ओर वायु अधिक है तथा वायु में अन्य तत्व भी मिले हुए देख पड़ते हैं और वह वायु ४९ वा ५० कोस तक अधिक है उस के ऊपर थोड़ा है सो ज्योतिषविद्या की गणना से प्रत्यक्ष है उस वायु का आधार आकाश और आकाशादिक सब पदार्थों का आधार परमेश्वर है सो जो सर्वव्यापक न होता तो आकाशादिकों का सब जगत् में धारण कैसे करतो इस से परमेश्वर व्यापक है व्यापक के होने से सब का आधार बनता है अन्यथा नहीं और जो साकार एकदेशस्थ परमेश्वर को मानेगा उसके मत में धारण सब जगत् का न होवैगा इत्यादिक बहुत दोष आवेंगे फिर दो प्रकार का व्यवहार हम लोग देखते हैं कि एक तो लघु वेग और गुरुत्वादिक गुण और आकर्षण भी पदार्थों में है क्योंकि जो हलका पदार्थ होता है सो ऊपर ही चलता है और गुरु नीचे को चलता है जैसे कि जल के पात्र में तेल को धार डाल देते हैं सो लघु के होने से तेल जल के ऊपर हो आजाता है कभी नीचे नहीं रहता इस का यह कारण है कि जिस में छिद्र अधिक होगा उस में पोल और वायु अधिक होगा वह लघु होगा और जिस में पोल और वायु थोड़ा होगा वह गुरु होगा जो कि सब भी पर अत्यन्त जुट जायगा वही गुरु होगा और जो मिलेगा परन्तु उस के भीतर कुछ अत्यन्त सूक्ष्म छिद्र रहेंगे जैसे कि लोहा और काठ दोनों का भार तो तुल्य होता है परन्तु जल में दोनों को डारने से काठ तो ऊपर रहैगा और लोहा नीचे चला जायगा तथा बस भीगने से नीचे चला जाता है उस का यह कारण है कि उस के छिद्रों से जल ऊपर चला जाता है सो ऊपर से जल का भार और सूत का अधिक बटना और पृथिवी के आकर्षण से नीचे चला जाता है तथा कोई काष्ठ भी अत्यन्त भीगने और चसरे खादिक के अत्यन्त मिलने से वह नीचे चला जाता है और वेग भी पदार्थों में देख पड़ता है जैसे मनुष्य, घोड़ा, हरिण वायु अग्न्यादिक में है तथा अग्नि और सूर्य, पदार्थों के अवयवों को

भिन्न२करदेतेहैंऔरजलतथापृथिवीयेपदार्थोंसे मिलनेऔरमिलानेवालेहैं सोजहांजिसका अधिकबलहोगा वहांउसकाकार्य्य होगा जैसेकिवायुसूक्ष्मऔरलघुहोकेऊपरजाताहै तबचारोंओरकीपृथिवीजल,त्रसरेणुयुक्त जिसस्थानसेवायुऊपरचढ़ा उसस्थानमेंचारोंओरसेगुरुवायुगिरताहै वहीअधिकचलनेऔरआंधीका कारणहै औरवहीवृष्टिकाजलकेऊपरआकर्षणकेहोनेस कारणहै क्योंकिसूर्य्य औरअग्नि सबरसोंकाभेदकर्तेहैं फिरएजलादिकरस सबऊपरचढ़तेहैं परन्तु उनमेंअग्नि वायुऔरपृथिवीकेभीपरमाणु मिलेहैं औरजलकेपरमाणुअधिकहैं फिरजबअधिकऊपरजलादिकोंकेपरमाणुचढ़तेहैं तबगुरुहोतेहैं अर्थातअधिकभारहोताहै फिरवायुधारणउनकोनहीकरसक्ता वहांकावायुजलके संयोगसे शीतलचलताहै उससे जलादिकोंकेपरमाणुमिलकैं बादलहोजाते हैं जबवेवायुसबीचमेंपरस्परचलतेहैं वायुबन्दहोनेसेउष्णताहोती है फिरवेपरस्परभिड़तेहैं औरघिसतेहैं इससे गर्जन औरवीजली उत्पन्नहोतीहै फिरउष्णता औरविजली केहोनसे जलपृथिवीके ऊपरगिरताहै तथावायुकेवेग औरठोकरसे विजलीनीचेगिरती है औरअग्निकाऊपरवेग तथाजलकानीचेहोताहै सोजलकोपात्रमेंरखके ऊपररखने औरअग्निकोनीचेरखनेसे जबउसजलमें अग्निप्रविष्टहोताहै तबउसमेंवेग औरबलहोताहै यहीरेलआदिकपदार्थोंकाकारणहै तथाविजलीअङ्कविद्याऔरनानाप्रकारके यन्त्रोंसेतारविद्याभीहोतीहै ऐसेहीविद्यासे अनेकप्रकारकी पदार्थविद्याबनसक्तीहै ग्रन्थअधिकहोजाय इसहेतुहमअधिकनहींलिखतेहैं क्योंकि शास्त्रोंमेंलिखाहै सोबुद्धिमान्लोग विचार लेंगे जोथोड़ी२विद्यासेमनुष्यलोगअनेकप्रकारकेपदार्थरचलेते हैं फिरसर्वशक्तिमान्अनन्तविद्यावाला जोईश्वरअनेकप्रकारके पदार्थोंकोरचेइसमें क्याआश्चर्यहै इसप्रकारसेजगत्कोरचताहै ईश्वरकीअपनीनित्यशक्ति औरगुणउनसेआकाशअव्यक्तअव्याकृ-

तप्रकृति और प्रधान ए सब एकही के नाम हैं इनको रचता है आकाश से वायु आदिके परमाणु बनाता है उन साठ परमाणुसे एक अणु बनता है दो अणुसे एक द्व्यणुक बनता है सो वायु द्व्यणुक है इसे प्रत्यक्षरूप नहीं देखपड़ता वायुसे त्रिगुणस्थूल अग्नि रचा है इसे अग्निमें रूप देखपड़ता है उस्से चतुर्गुण जल और जलसे पंचगुण पृथिवी रची है तथा उस परमाणुके मेलनसे वृक्ष, घास और वनस्पत्यादिकोंके बीज रचे हैं उनमें परमाणुके संयोग इस प्रकारके रक्खे हैं कि जिनसे विलक्षण२ स्वाद पुष्प, पत्र, फल और काष्ठादिक होते हैं सो प्रसिद्ध जगत्के पदार्थों को देखनेसे हम लोग परमेश्वरको रचनाका अनुमान करते हैं और साधारण सब जगह में व्यापक होनेसे सब जगत्का धारण करते हैं तथा एकके आधार दूसरा और परस्पर आकर्षणसे भी जगत्का धारण होता है परन्तु सब आकर्षणोंका आकर्षण और धारण करनेवालोंका धारण करनेवाला परमेश्वर ही है अन्य कोई नहीं प्रश्न इसी लोकमें इस प्रकारकी सृष्टि है वा सब लोकोंमें ऐसी सृष्टि है उत्तर सब लोकोंमें सृष्टि अनेक प्रकारकी है जैसी कि इस लोकमें क्योंकि इस लोकमें हम लोग पृथिव्यादिक पदार्थ प्रयोजनके हेतु रचे हुए देखते हैं इनमें एक पदार्थ भी व्यर्थ नहीं देखते इस्से हम लोग अनुमान करते हैं कि कोई लोक परमेश्वरने व्यर्थ नहीं रचा है किन्तु सब लोकोंमें अनेक विधि मनुष्यादिक सृष्टि रची है क्योंकि परमेश्वरका व्यर्थ कार्य कभी नहीं होता प्रश्न कितने लोक परमेश्वरने रचे हैं उत्तर सूर्य, चन्द्र और जितने तारे देखपड़ते हैं तथा बहुत भी नहीं देखपड़ते ए सब लोक ही हैं सो असंख्यात हैं प्रश्न ये सब लोक स्थिर हैं वा चलते हैं उत्तर सब लोक अपनी२ परिधि और अपने२ वेगसे चलते हैं सो अनेक विधि गति है स्थिर तो एक परमेश्वर ही है और कोई नहीं प्रश्न जब परमेश्वरने पहिले सृष्टि रची तब एक२ दो२ मनुष्यादिक जातिमें रचे अथवा अनेक रचे थे उत्तर एक२ जातिमें परमेश्वरने अनेक२ रचे हैं एक२ वा दो२ नहीं क्योंकि चिंवटी आदिक जा-

ति एक द्वीप में एक२ दो२ रचते तो द्वीपान्तरमें वे कैसे जासक्तीं इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमेश्वरने सब पदार्थ शुद्ध२रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अशुद्ध कोई नहीं परन्तु विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मिलानेवाले अशुद्ध कहतेहैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदूधऔरनोंनजबमिलतेहैं तबवेदोनों नष्टगुणहोजातेहैं क्योंकिदोनोंका स्वादविगड़जाताहै परन्तु उनोंदोनोंको पदार्थविद्याकी युक्तिसे तृतीयपदार्थकोईरचले फिरभीवहउत्तमहोसक्ताहै जैसे सर्पमक्खीवेभी अपनेस्थानमेंशुद्धहैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे इनकीभीबहुत औषधियांबनतीहैं अनुकूलपदार्थोंमें मिलानेसे परन्तुवेमनुष्यवाकिसीकोकाटैं अथवाभोजनमेंखालेनेसेदोषकरनेवालेहोजातेहैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब इसजगत्का प्रलयहोताहै तोकिसप्रकारसे होताहै उत्तर जिस प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थोंसे रचनास्थूलकीहोतीहै उसीप्रकारसेप्रलयभीजगत्काहोताहै जिस्से जोउत्पन्नहोताहै वहसूक्ष्महोकेअपनेकारणमेंमिलताहै जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनीहै इनपरमाणुकाजबवियोगहोता है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजातीहै वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजानना आकाशसेपृथिवीपञ्चगुणीहै जबएकगुणीघटेगी तबजलरूपहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटेंगे तबअग्निरूपहो जांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटेंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकोजबसूक्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाश कीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय होतीहै तबएकपरमेश्वरऔरसबजगतकाकारण जोपरमेश्वरका सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्य वालाएकअद्वि-

तीयपरमेश्वरहीरहेगा औरकोईनहीं सोयहसब आकाशादिक जगत्परमेश्वरकेसामनेकैसाहै किजैसाआकाशकेसामनेएकअणु भीनहीं इस्से किसीप्रकारकादोष उत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयमें परमेश्वरमेंनहींआता इस्से सबसज्जनलोगोंको ऐसाहीमानना उचितहै प्रश्न जन्मऔरमरणादिककिसप्रकारसेहोतेहैं उत्तर लिंगशरीरऔरस्थूलशरीरका संयोगसेप्रकटकाजोहोना उसकानामजन्महै औरलिंगशरीर तथास्थूलशरीरकेवियोगहोनेसे अप्रकटकाजोहोना उसकानाममरणहै सोइसप्रकारसे होताहै कि जीवअपनेकर्मोंके संस्कारोंसेघूमताहुआ जलवाकोईऔषधिमें अथवावायुमेंमिलताहै फिरजैसाजिसके कर्मोंकासंस्कार अर्थात्सुखवादुःख जितनाजिसकोहोनाअवश्यहै परमेश्वरकी आज्ञा केअनुकूल वैसेस्थानऔरवैसेहीशरीरमें मिलकेगर्भमें प्रविष्टहोताहै फिरजिसमें वहमिला उसकेअवयवोंको आकर्षणसे शरीर बनताहै जैसीकोपरमेश्वरने युक्तिरचीहै जिसकेशरीरका वीर्य्य होगा उसवीर्य्य मेंउसकेसबअङ्गोंसेसूक्ष्मअवयवआतेहैं क्योंकिसबशरीरकेअवयवोंसे वीर्य्य कोउत्पत्तिहोतीहै फिरउसवीर्य्य केअवयवोंमेंउसशरीरके अवयवमिलतेजातेहैंउनसेशिर,नेत्र,नासिका,हस्त,पादादिक,अवयव बढ़तेचलेजातेहैं जबवहशरीर,नख औरशिखापर्य्यन्तपूर्णबनजाताहै तबवहजीवशरीरमें सबअवयवों सेचेष्टाकरताभया शरीरसहितप्रकटहोताहै फिरभीअन्नपानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों कीवृद्धिहोतीहै सोछःविकारवालाशरीरहै अस्तिनामशरीरहै १ जायतेनामजन्मकाहोना २ वर्द्धतेनामबढ़ना ३ विपरिणमतेनामस्थूलकाहोना ४ अपक्षीयतेनामक्षीणहोना ५ विनश्यतेनाम नष्टकाहोना नाममृत्युकाहोना ६ एछःविकारशरीरकेहैं फिर जबमरणहोताहै तबस्थूलऔरलिंगशरीरकावियोगहोताहै सो स्थूलशरीरसेलिंगशरीरनिकलके बाहरकाजोवायुउसमें मिल

ताहै फिरवायुकेसाथ जहांतहांघूमताहै कभीसूर्य्यकेकिरणोंके साथऊंचे औरचन्द्रकीकिरणोंकेसाथनीचेआजाताहै अथवावायुकेसाथनीचेऊपर औरमध्यमेंरहताहै फिरउसप्रकारसे शरीर धारणकरलेताहै प्रश्न स्वर्गऔरनरकलोकहैंवानहीं उत्तर सब कुछहै क्योंकिपरमेश्वरकेरचेअसंख्यातलोकहैं उनमेंसेजिनलोकोंमेंसुखअधिकहै औरदुःखथोड़ाउनकोस्वर्गकहतेहैं तथाजिनलोकोंमेंदुःखअधिकऔरसुखथोड़ाहै उनकोनरककहतेहैं औरजिन लोकोंमेंसुखऔरदुःखतुल्यहैं उनकोमर्त्यलोककहतेहैं इसप्रकारकेस्वर्ग,मर्त्यऔरनर्कलोक बहुतहैं उनमेंभी अनेकप्रकारकेस्थानऔरपदार्थहैं किजिनमेंसुखवादुःखअधिकवान्यूनहै सोइसीहेतु परमेश्वरने सबप्रकारकेस्थानऔरपदार्थरचेहैं किपापीपुण्यात्मा औरमध्यस्थजीवोंकोयथावत्फलमिले अन्यथानहोय जैसेकिराजाकेउत्तममध्यमऔरनीचस्थानहोतेहैं जिनसेउत्तम मध्यमऔरनीचोंकोयथावत् व्यवहारकोव्यवस्थाहोतीहै परमेश्वरकायथावत्अखण्डितसंपूर्णजगत्मेंराज्यहै औरयथावतन्यायसे जिसकी व्यवस्थाहै फिरपरमेश्वरके राज्यमेंस्वर्गनर्क औरमर्त्यलोकादिकोंकीव्यवस्थाकैसेनहोगी किन्तु अवश्यहीहोगी प्रश्न मरणसमय मेंयमराजकेदूतआतेहैं उसजीवकोजालमेंबांधलेतेहैं बांधकेमारतेर यमरा० केपासलेजातेहैं औरयमराजयथावतन्यायसे दण्ड देतेहैं यहबातसत्यहै वामिथ्याहै उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकि जीवअत्यन्तसूक्ष्महै जालसेबांधनेमें कभीनहींआता और गरुड़ पुराणादिकोंमेंलिखाहै किपिण्डदेनेसे जीवकाशरीरबनजाताहै औरवैतरणीनदीकेतरनेकेहेतु गोदानादिककरनाचाहिए और यमकेदूतोंकाकज्जलकेपर्वतकीनांई शरीरलिखाहै वेनगरकेमार्गऔरघरकेदरवाजेभीतर जीवकेपासकैसेआसकेंगे चिवँटीआदिकसूक्ष्मछिद्रमें एककालमें अनेकजीवमरतेहैं वहांकैसेजांयगे तथावनवानगरादिकोंमें अग्निकेलगनेऔरयुद्धसे एकपलमेंबहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकड़नेकेहेतु बहुतदूतजाते हैं उतनेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहोनाकैसेबनसकै सोयहबात अत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज,तथा धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्यकेभीहैं इसमें क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमें परमेश्वरनेरची है वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजाना औरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजो कर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाण हैं उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछश्रुतिलिखदियाहै परन्तुफिरभीलिखते हैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा॥ २ ॥ जन्माद्यस्ययतः॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगत्उत्पन्नहोताहै उत्पन्नहोकेउस परमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगत्जीताहै औरप्रलयमेंउसीपरमेश्वरमेंलीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजाननेकीइच्छाहै भृगोतूंकरयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सवितारंप्रथमेहनि, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदकी संहितामेंलिखेहैं इनकायहअभिप्रायहै किजोवजब शरीरछोड़ताहै तबसूर्य्य वावायुमें मिलता है फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहोजाताऔरआताहै सोसबबातवहां लिखीहै देखाचाहै सो देखले। अन्नेनसोम्यशुङ्गेनापोमूलमन्विच्छअद्भिः सोम्यशुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूलाःसोम्येमाःप्रजा। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्यकीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसे उत्पत्तिजगतकीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभ होताहै शुङ्गनामकार्यकापृथिवीरूपजोकार्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल,अग्नि

मेंअग्निवायुमें वायुआकाशमें औरआकाशपरमेश्वरमें सोजिस प्रकारसे प्रलयकोलिखा उसीप्रकारसे होताहै औरहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रइति यहमन्त्रपहिलेलिखाहै औरइसकाअर्थभीलिख दियाहै सोपरमेश्वरही सबजगत्काधारणकर्त्ताहै अन्यकोईनहीं इससे ऐसासिद्धभयाउत्पत्तिधारण औरप्रलयपरमेश्वरहीकेआधीनहैं यहसंक्षेपसे जगत्कीउत्पत्ति स्थिति औरप्रलयकेविषयमेंलिखा औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें देख लेवै इसकेआगे विद्या,अविद्याबन्ध औरमोक्षकेविषयमेंलिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ८ ॥

अथविद्याऽविद्याबन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः । वेत्तिअनयायथार्थान्पदार्थान्साविद्या विद्याइसकानामहै किजोजैसापदार्थहै उसकोवैसाहीजानना नवेत्तिअनयायथार्थान्पदार्थान्साअविद्या जैसापदार्थहै उसको वैसा न जानना उसका नाम अविद्या है ज्ञानविवेकऔरविज्ञान इत्यादिक विद्याके नामहैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्याकेनाम हैं । अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ १ ॥ यहपतञ्जलिमुनिका योगशास्त्रमेंसूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किअनित्य अशुचिदुःख औरअनात्मायेजोहैं वैसेनजानना किन्तुइनमेंनित्यशुचिसुखऔरआत्माकोबुद्धिहोतीहै जैसेकि,अमरानिर्जरादेवा इत्यादिकवचनोंसे नित्यनिश्चयकाजोकरना किस्वर्गादिलोकऔर ब्रह्मादिकदेवनित्यहैं ऐसाअज्ञान बहुतमनुष्योंकोहै परन्तुवेविचारकरकेदेखैं किजिनकीउत्पत्ति होतीहै वेनित्यकैसेहोंगे कभी

नहीं क्योंकिबहुतपदार्थोंकेसंयोगसेजोपदार्थहोताहै सोउनपदा-
र्थोंकेवियोगसे वहजोसंयोगसे बनाथा सोअवश्यनष्ट होजायगा
ब्रह्मादिकोंकेशरीरऔरस्वर्गादिक सबलोकसंयोगसेबनेहैं उनका
वियोगसेअवश्यनाशहोताहीहै फिरजोइनअनित्यपदार्थोंमें नि-
त्यनिश्चयहोना औरनित्यजोपरमेश्वर तथापरमेश्वरके नित्यगुण
धर्मऔरविद्याउनकोनित्यनजानना कभीउनकेजाननेमें इच्छाभी
नहोना यहअविद्याकाप्रथमभागहै औरअनित्यपदार्थोंकोअनित्य
जानना तथानित्यपदार्थोंकोनित्यजानना यहविद्याकाप्रथमभा-
गहै अशुचिअपवित्रनाम अशुद्धपदार्थोंमें शुद्धकानिश्चय होना
औरशुचिजोपवित्रअर्थात्शुद्धपदार्थमें अशुद्धकानिश्चयहोना जै-
सेकियहशरीरइससे सबमार्गोंसे मलहीनिकलताहै कान, आंख,
नाक, मुखतथानीचेकेछिद्र औरलोमोंकेछिद्रोंसेभीदुर्गन्धही नि-
कलताहै परन्तु जिनकीबुद्धिविषयासक्तिहोतीहै वहशुद्धबुद्धिहीउ-
समेंकरताहै तथास्त्रीभीपुरुषके शरीरमेंशुद्धबुद्धि करतीहै ऊपर
केचामको देखकेमोहितहोजातेहैं फिरअपनाबल, बुद्धि, पराक्रम
तेज, विद्या, औरधनउसकेहेतुनाशकरदेतेहैं जोउनकोउसमें भ्रष्ट-
त्तबुद्धिनहोती तोऐसेकाममें प्रवृत्तनहोतेसोबड़े २ राजाऔरबड़े २
धनाढ्यऔरमहात्मालोगतथामिथ्याविरक्तलोगजोहैंवेइसकाममें
नष्टहोजातेहैंकभीउनकेहृदयमेंइसबातकाविचारभीनहींहोताजैसे
अग्निमेंपतङ्गगिरकेनष्टहोजातेहैं वैसेवेभीऐश्वर्यसहितनष्टहोजा-
तेहैं औरपवित्रजोपरमेश्वरविद्या औरधर्मइनमें उनकीबुद्धिकभी
नहींआती यहअविद्याकादूसराभागहै औरजोशुद्धकोशुद्धजानना
औरअशुद्धकोयथावत्अशुद्धजानना यहविद्याकादूसराभागहै दुः-
खमेंसुखबुद्धिकाकरना औरसुखमेंदुःखबुद्धिकाहोना जैसेकिका-
म, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक औरविषयोंकीसेवा इनमें जीव
कोशान्तिकभीनहींआती जैसेकिअग्निमें घीडालनेसे अग्निबढ़-
ताजाताहै वैसेउनकोभीतृष्णा बढ़तीजातीहै परन्तु उसदुःखमें

बहुतजीवोंकोसुखबुद्धिदेखनेमेंआतीहै क्योंकिजरदुःखमें सुखबुद्धिनहोती तोवेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है औरजोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिका उपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमेंइनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आती इनकेबिनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु बिपरीतबुद्धि केहोनेसेदुःखहीमेंफसेरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्या कातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामेंआत्मबुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमेंयहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुबलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवान्हूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमेंदेखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमाणवादिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमेंइनकोबुद्धिकभीनहीआती नित्यसुखजोमोक्ष इसकी इच्छाभीकभीनहींहोती इससे जन्म, मरण, क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्माजानना यहविद्याकाचौथाभागहै इससे क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथोन्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै विद्याअविद्याकोउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु चाहताहै तबमनकोबाहरकोओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहरकेपदार्थोंमें लगाकेप्रवृत्तकरदेताहै सोजैसे कोईपुरुष निशानेमेंतीरवागोलीलगायाचाहताहै तबवहभीतरसेबाहरकी ओरध्यानकरताहै सोनेत्रकोवन्दूकके मुखसेलगाके निशानेमें लगादेताहै वैसेहीजो२ व्यवहारजीवकियाचाहताहै तबउसीप्रकारका व्यवहारजीवमेंभी होताहै फिरबाहरऔरभीतरके पदार्थों को यथावत् न जाननेसे जीवभ्रमयुक्तहोके अन्यथा जानलेता है उससे फिरदृढ़संस्कारअन्यथाहोनेसे अविद्याकहाती है सोनअपने स्वरूपकाकभीध्यानकरताहै नपरमेश्वरका तथानविद्याका किन्तु जैसेवेमिथ्यासंस्कारउसकेहैं उसीमेंगिरारहताहै क्योंकिजैसाजिसकाअभ्यासकरेगा वैसाहीउसजीवकोभासतारहेगा फिर जबतकयह अविद्याजीवमेंरहैगी तबतकउसको विद्याकभीनहीं होती परन्तु जबकभीअच्छासंग औरसद्विद्याकाअभ्यास तथाविचारऔरधर्मकाअनुष्ठान तथाअधर्मका त्यागकभीनहीं वहजीव करसक्ता औरयथार्थतत्त्वज्ञानपदार्थोंका उसकोकभीनहींहोता जबतकयहअविद्याजीवकोरहतीहै तबतकविद्याकासाधनऔरविद्याप्राप्तनहींहोती क्योंकिजबजीव सुविचार करताहै तबउसको कुछ२ विवेकउत्पन्नहोताहै किसत्यकोसत्यऔरअसत्यकोअसत्यजानना फिरअविद्याकेगुणऔरउनकेकार्यउनमेंवैराग्यहोताहै अर्थात् उनकोछोड़ताहैऔरविद्यादिकजोसत्यार्थउनमेंप्रीतिकरताहै इनमेंयहकारणहै किजबतकपदार्थोंकादोषनहींजानता तबतक उनकेत्यागकरनेकोबुद्धिजीवकोकभीनहींहोती क्योंकित्यागकाहेतु दोषोंकायथावत्देखनाहीहै तथापदार्थोंकेगुणकाजोज्ञानहोना सोईप्रीतिकाहेतुहै फिरवहजीवधर्माधर्म कायथावत्निश्चयकरके अधर्मकात्यागऔरधर्मकाग्रहणकरेगा फिरउसकामनशान्तहोगा किविद्या, धर्म, सत्सङ्ग, सत्पुरुषोंकासंग, योगाभ्यास, जितेन्द्रियता, सत्पुरुषोंकाआचार, मोक्ष औरपरमेश्वरइन्होंमें मनप्रीतियुक्तहोकेस्थिरहोजायगा इनसेविरुद्धअविद्याअधर्मकुसंग किकुपु-

रुषोंकासंगविषयोंकाअत्यन्तअभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषों का आचार जिसमें नष्टहोय औरपरमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकाकरना इनसेउसकामनहटजायगा इसकानामशमहै फिरसबइन्द्रियांस्थिरहोजांयगी इसकानामदमहै फिर अविद्यादिकजितनेदुष्टव्यवहार उनसेउनकानामपृथकहोजायगा अर्थातउनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरतिहै फिरशीत, उष्ण, सुख, दुःख, हर्ष, शोच, औरक्षुधा, तृषादिकइनकासहनअर्थातइनमें हर्ष वाशोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षाहै फिरविद्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धाअर्थात् प्रीतिजीवकीहोतीहै अविद्यादिकदोषोंमेंसदाअप्रीतिइसकानामहै श्रद्धा फिरमनबुद्धिचित्त, अहङ्कार, इन्द्रियऔरप्राण एसबउसकवशीभूतहोजांयगे उनकोजहांस्थिरकरेगा वहींसबस्थिररहैंगे औरअविद्यादिक अनर्थमेंकभीनजांयगे इसकानाम समाधानहै एछः गुणजीवमें उत्पन्नहोगें फिरजैसेक्षुधातुर पुरुषकोइच्छा अन्नहोमें रहतीहै वैसे उसकामनमुक्तिहीमेंरहैगा किमेरीमुक्तिकबहोगी इससे भिन्नव्यवहारोंमेंउसकामनलगाहीगानहीं इसकानाममुमुक्षुत्वहै येनवविवेकादिकगुणजबजीवमेंहोतेहैं तबवहब्रह्मविद्याका अधिकारी होताहै फिरवहसबसत्यशास्त्रोंका जोसत्य२पदार्थ विद्यारूप विषयउसकोयथावत्जानेगा फिरशास्त्रजिनपदार्थोंकेप्रतिपादनकरतेहैं उनपदार्थोंकेसाथशास्त्रोंकाप्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको वहजीवयथावत्जानलेगा इसकानामसम्बन्धहै फिरवहयथावत् विद्याओंकाश्रवणकरेगा श्रवणकरकेज्ञाननेत्रसेउनकायथावत्विचारकरेगा इसकानाममननहै औरफिरउनपदार्थोंको यथावत् प्रत्यक्षजाननेकेहेतु योगाभ्यास अर्थातपातञ्जलदर्शन की रीति से करेगा इसकानामनिदिध्यासनहै फिरपृथिवीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त सबपदार्थोंकाज्ञाननेत्रसप्रत्यक्षज्ञानकरेगा उसीसमयइसकाजोप्रयोजन किसबदुःखोंकोनिवृत्ति औरपरमानन्द परमेश्वर

कीजोप्राप्ति इसकानाम,योजनहै सोजबयहविद्याहोगी तबअवि-
द्यादिकसबदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारनष्ट
होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी
नांई परस्परविरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्या-
वान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अवि-
द्यावान्गा उसकोनिश्चितबुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनल-
गेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वासबपीछेरचीगईहैं उ
त्तर चारबेदोंकोछोड़केरचीगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसबशास्त्ररचेगए
हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे
तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक स-
नातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तककासत्य वा असत्यनि-
श्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा
क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोतो तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य
जीवलोगजानसकें फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरच-
लेगा ऐसेदूसरेका करकेतोसरा ऐसेहीअनवस्थाआजायगी प्रश्न
जैसेअन्यपुस्तककाप्रमाणवेदसेहोताहै वैसे वेदकाप्रमाण किसपु-
स्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसे भीअनवस्थादोषआजायगा क्यों-
किवेदकेप्रमाणकेहेतु कोइअन्यपुस्तकरक्खीजाय तोफिरउसपुस्त-
ककेप्रमाणकेहेतु कोईतोसरीभी मानीजायगी ऐसेहीर आगेर
अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहि-
ए जिससे किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्यरहै सोवेदकेसनातनहो-
नेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीविचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमें बड़ेर
बिरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मीऔरकर्महींपदार्थहैं इ-
नसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन
में परमाणुसेजगत्को उत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासां-
ख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें
परमेश्वरसे सबजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परविरोधहै

सबशास्त्रोंमें इसकाक्याउत्तरहै उत्तर वेदान्तमें प्रथमसृष्टिका व्याख्यानहै किउससे पहिलेजगतथाहोनहीं औरजबअत्यन्तसबका प्रलयहोगा तबपरमेश्वरहीमें लयहोगा अन्यमें नहीं सोयहआदिसृष्टिहै क्योंकिपहिलेनहींथी औरफिरउत्पन्नभई इससे इससृष्टिकेआदिहोनेसे सादिकहातीहै औरमीमांसादिकशास्त्रोंमें अनादिसृष्टिकाव्याख्यानहै क्योंकिप्रकृतिपरमाणुऔरधर्मधर्मी इनकानाशप्रलयमेंभीनहींहोता इसकानाममहाप्रलयहै इसमें प्रकृतिपरमाण्वादिकोंकेमिलनेसे जितनास्थूलजगत्होताहै वह सबपरमाण्वादिकोंके वियोगमेंसबनष्टहोजाताहै परन्तुप्रकृतिऔरपरमाण्वादिकबनेरहतेहैं फिरभीजबईश्वरउनकोमिलाकेजगतकोरचताहै तबयहस्थूलसबहोजाताहै फिरउनसेस्थूलजगतुत्पन्नहोताहै फिरजबनष्टहोताहै तबप्रकृतिऔरपरमाणुरूपहोताहै फिरउनसेस्थूल जगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहोअनेकबारउत्पत्ति औरअनेकबार जगत्काप्रलयहोताहै परन्तुप्रकृतिऔरपरमाणु इसस्थूलकाजोकारणसोनष्टनहीं इससे महाप्रलयमेंआदि इसजगत्की नहींदेखपड़ती क्योंकिइसकाकारण प्रकृतिऔरपरमाणुसदाबनेरहतेहैं इससे जगत्अनादिकहाताहै कभीकारणरूप होजाताहै कभीकारणसे स्थूलजगतउत्पन्नहोताहै ऐसेहोप्रवाहरूपउत्पत्ति औरप्रलयकेहोनेसे अनादिजगतकहाताहै सोयहजगत्कबउत्पन्नभया ऐसाकोईनहींकहसक्ता इससे यहआयाकिपांचशास्त्रोंमेंमहाप्रलयकोव्याख्याहै इसमेंभोअनेकभेदहैं किजबसरेणुतकजबप्रलयहोताहै तबधर्मऔरधर्मी कुछ२प्रसिद्ध रहताहै इसप्रलयकीव्याख्यामीमांसामेंहै औरजबअणुपर्यन्तकानाशहोताहै तबपरमाणुमात्रजगत्रहताहै सोभीमहाप्रलयभेदहै यहव्याख्यावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शनमेंहै औरजबपरमाणुकीभीसूक्ष्मावस्था होतीहै तबअत्यन्तसूक्ष्मजोप्रकृतिसोरहजातीहै औरपरमाणुकाभीलयहोजाताहै क्योंकिशब्दादिकतन्मात्राओंकोभी सां-

ख्यशास्त्रमेंउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकीनहीं इससे यहअनुमान् सेजानाजाताहै किप्रकृतिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै सोयहव्याख्यानपातंजलदर्शन औरसांख्यदर्शनमेंकियाहै औरवेदान्तमें प्रकृत्यादिकोंकीउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकालयभी परमेश्वरमें होताहै इससे उत्पत्तिकेविषयमें भिन्न२पदार्थोंकेव्याख्यानहोनेसे कुछविरोधपरस्परइनमेंनहीहै प्रश्न पूर्वमीमांसा औरसांख्यमें ईश्वरकोनहीमानाहै औरअन्यशास्त्रोंमेंमानाहै इससे विरोधआताहै उत्तर इसमेंभीकुछविरोधनहीं क्योंकिमीमांसामेंधर्म औरधर्मीदोपदार्थमानेहैं इससे होईश्वरधर्म्मी औरईश्वरके सर्वज्ञादिकधर्म्मअवश्य मानलियाहै इसमेंकुछ सन्देहनहीं औरवेदकोजैमिनीजीनित्यमानतेहैं सोवेदशब्दज्ञानरूपकेहोनेसेगुणहै सोगुणीकेविनागुणकिसमेंरहेगा इससे ईश्वरको उसनेअवश्यमानाहै औरसांख्यमेंईश्वरासिद्धेः ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्ततात्सिद्धिः ॥ २ ॥ सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥ मुक्तात्मनःप्रशंसोपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ एपांचसांख्यशास्त्रमें कपिलजीकेकिएसूत्रहैं यहीअनीश्वरवादकाकारणहै इनकोयथावत्नजानके चार्वाक औरबौद्धादिक बहुतअनीश्वरवादी होगएहैं इनकेअभिप्रायनहीजाननेसे इनकायहअभिप्रायहै किईश्वर की सिद्धिनहीहोती किन्तु एकपुरुष औरप्रकृतिदोनोंनित्यहैं अन्यनहीं ॥ १ ॥ क्योंकिप्रत्यक्षप्रमाणनहोनेसे ईश्वरसिद्धनहींहोता प्रत्यक्षप्रमाणसेजोसिद्धहोतातोईश्वरमानाजाता अन्यथानहीं २ ॥ लिंगऔरलिंगीअर्थातचिन्ह औरचिन्हवालेकानित्यसम्बन्ध होताहै सोलिंगकदेखनेसेलिंगीकाअनुमानहोताहै फिरईश्वरकालिंगनामचिन्हकोईजगत्में देखनहीपड़ता इससे ईश्वरमेंअनुमानभीनहींबनता ३ ॥ ईश्वरजोमोहितहोगा तोअसमर्थकेहोनेसजगत्कोकभीनहीरचसकेगा औरजोमुक्तहोगा तोउदासीनकेहोनेसे जगत्करचनेमें ईश्वरको इच्छाभी नहोहोगी इससे ईश्वरमें

शब्दप्रमाणभीनहींबनता॥ ४॥ फिरवेदमें सईश्वरइत्यादिकश्रु-
तिईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीं हैं उनकीक्यागतिहोगी वेसबश्रुति
विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्मसेसिद्धजोजीवहोताहै किअणिमा-
दिकऐश्वर्यवाला उसकीप्रशंसाऔरउपासनाकीवाचकहै इससे ई-
श्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोतो ऐसेअर्थकोविपरीतजानके
मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तु कपिलजीकायहअभिप्रायहै
किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभी पुरुषकेहैं
उसपुरुषचेतनसे भिन्नकोईईश्वरनहीहै पुरुषकानामही ईश्वरहै
इससेयहआयाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई
नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवा-
दीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं
उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै, औरविद्यातथाअविद्याकीप-
रीक्षा उनकेपढ़नेऔरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़ने
वाले तथानहींपढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और
ज्ञानादिकव्यवहारअच्छाहीदेखनेमेंआता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़-
ना सोविद्याकोप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुवि-
द्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मका ग्रहणक-
रै अन्यथापढ़नाऔरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अध्यन्तमःप्रविशन्तियेवि-
द्यामुपासते ततोभूयइवतेतमोयउविद्यायारताः॥ १॥ विद्या-
चाविद्यांचयस्तद्वेदोभयसह अविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्यया ऽमृतम-
श्नुते॥ २॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्ययाः इतिशुश्रुम-
धीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३॥ ययजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इ-
नकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धका-
रअर्थातजन्म, मरण, हर्ष, औरशोकादिकदुःखसागरमेंप्रविष्टर-
हतेहैं इससे पृथक नहींहोसके औरविद्याअर्थात नानाप्रकारके
कर्मोंसे विषयभोगोंकीचाहनाकरना तथायोगाभ्यास, तप और
संयमसे अणिमादिकसिद्धियोंमें फसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

मानादिकदोषोंसेयुक्तहोना इसमें जोरतरहतेहैं वेउनकर्म्मोंलोगों सेभी अत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउससेबड़ तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु विद्याऔरअविद्याकोएकसाथगिन लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालेदोनोंहैं इससे दोनोंकानाम अविद्याहै जोकर्मधर्म्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्मन औरजीवहोके शुद्धहोजातेहैंफिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकोजोप्राप्त इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर मेंकभीनहींगिरता॥२॥ इससेविद्याजोनिर्भ्रमज्ञानइसकाफलभिन्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउसकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोविद्याऔरअविद्याका फलभिन्न२है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ वक्ता उननेहमारेसाम्हने यथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इनमेंभ्रमनहीहै ॥ ३ ॥ सोसवमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषार्थसेविद्याकीइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअविद्याकोछोड़ैं क्योंकिइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाविद्याकेविनाइस लोकवापरलोकमें कुछसुखनहीहोता औरअनेकजन्मधारणकर्ता है उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती इसकोप्राप्तिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकोनाममात्रयहांगणनाथोड़ीसीकरतेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्याश्रमजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोके यथावत्विद्या ग्रहणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्जानैं फिरविवाहकरैं परन्तुविद्याभ्यासकोनछोड़ैं औरनित्यगुणग्रहणकीइच्छारक्खैं अत्यन्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलैं मिलकेउनको सेवापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभीजितनीबुद्धि उतनानित्य२विचार करैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको छोड़ैं एकान्तसेवनसेअपनीं इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

नुष्ठानमेंनिश्चितरक्खैं अधर्ममेंकभीनहीं । यथाखनन्खनित्रेण-
नरोवार्य्यधिगच्छति तथागुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति ॥ यह
मनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजोपुरुष अभिमानादिक
दोषरहित औरनम्रतादिकगुणयुक्तहोके सेवासेदूसरेकाचित्तप्र-
सन्नकरदेताहै सोईश्रेष्ठगुणोंकोप्राप्तहोताहै अन्यनहीं इसमेंयह
दृष्टान्तहै किजैसेंभूमिकोखोदता२कुदालीसेनीचेचलाजाय फिर
वहजलकोप्राप्तहोताहै वैसेहीशुश्रूषुअर्थातकपटादिकदोषरहि-
त औरदूसरेपुरुषकोपरिचाजानताहोय किइसमेंगुणहैं वा नहीं
फिरयथावत्गुणोंकाबुद्धिसेनिश्चयकरले किइसमेंएसत्यगुणहैं पी-
छेजिसप्रकारसेवेगुणमिलैं उनसेवादिकप्रकारोंसे गुणोंकोअवश्य
ग्रहणकरैं ग्रहणकरकेगुणोंकोप्रकाशकरदे औरजोकोईउनगुणों
कोग्रहणकियाचाहै उसकोप्रीतिसेनिष्कपटहोके यथावत्गुणोंको
देदे क्योंकिगुणोंकोगुप्तकरना कोईमनुष्यकोउचितनहीं औरजो
गुणोंकोगुप्तरखताहै वहबड़ामूर्खपुरुषहै औरधर्मतथापरमेश्वर
काअत्यन्तविरोधीहै वहकभीसुखनपावैगा इत्यादिकविद्याकीप्रा-
प्तिकेहेतुहैं औरयहीअविद्या नाशकेहेतुहैं अन्यभीअनेक प्रकारके
हेतुहैं उनकोविचारलेना औरइसकेआगेबंन्ध औरमुक्तिकाव्या-
ख्यानकियाजाताहै । पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्-
पश्यतिनान्तरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृत-
त्वमिच्छन् । यहकठवल्लीकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किप-
राञ्चिखानिअर्थातबहिर्मुख इन्द्रियजिसकीहोतीहैं वहजीवबा-
हरकेपदार्थोंहीकोदेखतारहताहै औरभीतरकेपदार्थोंकोवाअपने
स्वरूपको कभीनहींबिचारता अथवापरमसूक्ष्मजोपरमेश्वर उ-
सकेबिचारमें कभीजीवकाचित्तनहींजाता इससे जीवकोपदार्थों
कायथार्थज्ञानतोनहींहोता किन्तु अत्यन्तदृढ़ भ्रमहोताहै उससे
आपसेआपहीवद्धहोताहै फिरऐसामोह उसकोहोताहै किजि-
सकाछूटनाबहुतकठिनहै उससे फिरमिथ्याज्ञानहोताहै किसोपुरु

धन,राज्यादिकोंहीमेंसुखमानलेताहै फिरउनकेसुधरनेमेंअत्यन्तहर्षितहोताहै औरबिगड़नेसे शोकयुक्तहोताहै इसजालमेंगिरके अनेकजन्ममरणजीवकेहोतेहैं औरअत्यन्त दुःखपाताहै प्रश्न जन्मएक होताहै अथवाअनेक उत्तर अनेक जन्महोतेहैं प्रश्न जो अनेकजन्महोतेहैं तोपूर्वजन्मोंकाहमकोस्मरणक्योंनहीहोता उत्तर पूर्वजन्मोंकास्मरणनहीहोसक्ता क्योंकिपूर्वजन्मज्ञानकेजोनिमित्तहैं वेसबनष्टहोजातेहैं इस्से पूर्वजन्मका स्मरणनही होसक्ता प्रश्न कौनवेनिमित्तहैं औरनिमित्तकिसकोकहतेहैं उत्तर निमित्तइसकानामहै किजोदूसरेकेसंयोगसे उत्पन्नहोताहै जैसेकिजल शीतलहै औरअग्निउष्णहै जबअग्निकासंयोगजलमेंहोताहै तब जलउष्णहोजाताहै परन्तुजबअग्निसे जलपृथककियाजाताहै तब फिरभीवहशीतल होजाताहै इसकानाम नैमित्तिकगुणहै जोकि जबतकउसकानिमित्तरहताहै तबतकवहरहताहै औरजबनिमित्तनहीरहता तबउसकानिमित्तसे उत्पन्नभयाजोकिगुणसोभीनष्ट होजाताहै जैसेसूर्य्य औरनेत्रसे रूपकाग्रहणहोताहै जबसूर्यऔर नेत्रनहीरहतेतबरूपकाभीग्रहणनहींहोता क्योंकिनिमित्तकेबिना नैमित्तिकगुणनहीहोताइस्सेक्याआयाकिपूर्वजन्मजिसदेशजिसकालमें औरजोशरीर तथाउसशरीरकेसम्बन्धीसबपदार्थनष्टअर्थात उनकावियोगहोनेसे वहांकाजोउनकोज्ञानथासोभीनष्टहोजाताहैंऔर इसीजन्ममेंजो२बाल्यावस्थामें व्यवहारकियाथाउस्से सुखवा दुःखपायाथा उसकाभीयथावतस्मरण वृद्धावस्थामेंनहींरहताऔर जिससमयकिसीसेकिसीकीबातहोतीहै तबउसबातमेंअनेकअक्षर, पद,वाक्य,सम्बन्धकहैंऔरसुनेजातेहैं परन्तु उसके उत्तर कालमें स्मरणकहनावासुनना यथावत्नहींबनता औरकोईबात कण्ठस्थ करलेताहै फिरकालान्तरमें उसकोभीभूलजाताहै एकबातमेंजब जीवकाचित्तहोता तबदूसरेमेंनहींजाता दूसरेमेंजबजाताहै तब पहिलेकोभूलजाताहै जबऐसीबातहैतोजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंका

जोकरतेहैंउनकोशंकाव्यर्थहोहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मका ज्ञानक्योंनहीहोता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसोनहीहोता इस्से पूर्वजन्मनहींहैं उत्तर इसकाउत्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासलेकेवृद्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहिवासुने व्यवहारोंमें अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहीहोता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्परबातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुतर बातोंके सुननेवाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहींरहता फिरजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहोहै औरदेखनाचाहिए किजागृतावस्थामेंवेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकरतेहैं यहमेराघर,द्वार,पिता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावतस्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयविस्मरणहोजाताहैफिरजबसुषुप्तिहोतीहैतबदोनोंकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित२ देशऔरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै फिरपूर्वजन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूट जातेहैं फिरउनकेस्मरणकीशंकाजोकरतेहैं सोविचारवाननहींहैं प्रश्न यहजन्मजोहोताहैसोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहींक्योंकियहदूसराजीवहैसोनया२उत्पन्नहोजाताहैऔरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिलेशरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहीदेखपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआताहै फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृत्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढ़े औरकोईअंगरेजीकोजोजिसकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तेहैं साक्षातदेखने औरसुननेसे अन्यकानहीं फिरकालान्तरमें कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोपूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कार सेस्मृतिहोतीहै है कियहप्रकार वायकारहै औरइसका यहअर्थ है क्योंकिमैंनेंपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा विनासंस्कारके स्मृतिकभीनहींहोती औरविनास्मृतिसेयहऐसाहोहै वानहीं ऐसोप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहीहोती सोएकहीजन्महोता तोजन्म समयसेलेके बालकोंकेअनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर दुग्धपीनेकोयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रादिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फिरउससे रोदनादिककोप्रवृति औरप्रीतिवाला उनस्नेहासऔरप्रसन्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहारविनापूर्वजन्मकेसंस्कारसेकभीनहीहै।सन्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचाहिए प्रश्न एसबव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता है औरजलनीचेकोवैसेहीवेसबजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे होतेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोंगेतोपूर्वकहे अनुभव संस्कारऔर स्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़देओ औरजोछोड़ोगेतोकोईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीवातोंकेछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीबातोंकाउपदेशक्योंकरते औरकरातेहोऔरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकोनिवृत्तिकभींनहीहोगो जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकोनिवृत्तिनहींहैतो वैसेप्रवृत्तिको स्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहीहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभाव सेमानोगेतोप्रवृत्ति कभींनहीहोगी औरजोदोनोंको मानोगेतो क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मतादोष आजायगा क्योंकिअग्निकीनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहीहोती तथा जलकीस्थूलकेहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहीहैतो वैसेहीस्वभावसबजानों प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहीहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहा-
रोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्व-
रपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ई-
श्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहींरक्खी और ईश्वरअन्यायकारी
भीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔर
किसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमें जन्म तथाएककोबुद्धि बहुत
अच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदेताहै तथाएकरूपवान्औरएककुरूप
तथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔरदूसरामूर्खहो-
ताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअप-
राधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपात
केआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्या-
गमश्च । एदोदोष आजांयगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है
उसकी हानि होजायगी फिर जन्मके नहीं होने से जो शरीर,
इन्द्रियां, प्राण, और मन के नहीं होने से पाप पुण्यों का फल
कभीनहींभोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो बिनाकिए सुख
औरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें
आजांयगे किबिनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख
यहबिषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृ-
णानामदयानहींआतोइससेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा
औरजोपूर्वतथा उत्तर जन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहींआवेगा
क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे
ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्रहेगाइससेपूर्वऔरपरजन्म
अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंकी संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे
सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरतेर चलेआतेहैं और
जबतकमुक्तिनहीहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न
सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्यहीदेखपड़ताहै क्योंकिजोरा-
जाको सुखवादुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखैं तोसुख

वा दुःखसबको तुल्य ही देखपड़ता है उत्तर ऐसा कहना योग्य नहीं क्योंकि इच्छाके अनुकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना सुख कहाता है और इच्छाके प्रतिकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना दुःख कहाता है सो हर्ष और प्रसन्नता सुखके पर्याय हैं और शोक तथा अप्रसन्नता दुःखके पर्याय हैं जब राजादिकधनाढ्योंके गर्भबासमें जीव आता है उसी दिनसे अनुकूल पदार्थोंका सेवन होता है फिर जन्म जब होता है तब अनेक औषधादिक व्यवहारोंकी प्राप्ति होती है और बिना इच्छाके भी अनेक पदार्थ अनुकूल प्राप्त होते हैं वह जब दूध पीनेकी इच्छा करता है तब बिना इच्छासे भी मिश्री और सुगन्धादिकसे युक्त दूध यथेष्ट मिलता है और जब वह कुछ अप्रसन्न वा रोने लगता है तब अनेक सेवक परिचारक लोग मधुर बचन और खिलौनेसे शीघ्र ही प्रसन्न कर देते हैं और फिर जब वह बड़ा होता है तब जिसके ऊपर दृष्टि करता है वह हाथ जोड़के अनुकूल बचन तथा अनुकूल व्यवहार करता है सदा प्रसन्न उसको सब लोग रखते हैं और वह रहता है फिर जब कभी दुःखी भी होता है तब अनुकूल बचन और औषधादिकोंसे उसको प्रसन्न कर देते हैं और जो विद्यावानोंके गर्भवासमें आता है उसको भी अधिक सुख होता है परन्तु कोई कर्म उनमें से नष्टबुद्धिके होनेसे दुःखी होजाता है सो पूर्वजन्मके पापोंसे और इस जन्मके दुष्टव्यवहारों से पीड़ित होता है और जो मूर्ख वा दरिद्रके गर्भवासमें जीव आता है उसी समयसे उसको दुःख होने लगते हैं जब वह स्त्री घास वा लकड़ीको काटने लगती है तब गर्भमें प्रहारके होनेसे जीव पीड़ित होता है और कभी क्षुधातुर रहती है कभी बहुत कुत्सित अन्नको खालेती है उससे भी उस जीवको अत्यन्त पीड़ा होती है फिर जब जन्म होता है तब कोई प्रकारका औषध वा सुनियम तथा कोई परिचारक उस समय नहीं रहता किन्तु मार्ग वन वा खेतमें प्रायः पाषाणकी नांई गर्भ में बालक गिरपड़ता है फिर वह स्त्री उसको पोंछ पांछके बस्त्रमें बांधके पीठमें बांधलेती है फिर कभी उस स्त्रीको घास वा लकड़ी बेचनेकी शीघ्रता

होतीहै सउसमयबालक दूधपीनेकेहेतुरोताहै सोदूधतो उसको नहींमिलता परन्तु वहस्त्रीउसबालककोथपेड़ामारतीहै फिरअधिक२ जबरोताहै तबअधिक२ मारतीहै फिररोतारहताहै परन्तु दूधनहींपिलाती फिरवह जबकुछबड़ाहोताहै तबउसकोयथावत्खानेकोभी समयकेऊपरनहींरहता फिरवहमजूरीकरताहै तोभीउसकोयथावत्इच्छाकेअनुकूलनहींमिलता औरसदाउसकोसुखकीतथाउत्तमपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोतीहै परन्तु प्राप्तिकनहींहोनेसेसदादुःखीरहताहै जोऐसाकहताहैकिसुखवादुःखसबकोतुल्यहैसोपुरुषबिचारवाननहींहै क्योंकिसुखवादुःखप्रत्यक्षहीअधिकवान्यूनदेखपड़तेहैं प्रश्न जबपहिले२हीसृष्टिभईथी तब उससे पूर्वजन्मतोकिसोकानहींथा फिरसउसमय अधिक वा न्यून राजा अथवादरिद्रादिकक्योंभएथे इससे जानाजाताहै किजैसेपहिलेजन्ममेंभयेथे इससे आजकालपहिलाहीजन्महै सोअधिकन्यूनबनजाओ परन्तु एक२ जन्महीबिचारमेंआताहै बहुतजन्मनहीं उत्तर आदिसृष्टिमेंसबमनुष्य उत्पन्नभएथे नकोईराजानकोईप्रजा नमूर्खनपण्डितइत्यादिकभेदनहींथे इससे आदिसृष्टिमें दोषनहीं आया प्रश्न जैसेआदिसृष्टिमेंदुग्धपानादिकव्यवहार सुखऔरदुःखआदिक प्रवृत्तिवानिवृत्तिभईथी वैसेआजकालभीहोतीहै फिर वहजोआपनेकहाकि अनुभवादिकोंसेबिनाप्रवृत्तिवानिवृत्ति नहीं होती सोबात बिरुद्धहोगई उत्तर बिरुद्धनहींहोती क्योंकिआदिसृष्टिमेंगर्भवाससेउत्पत्तिनहींभईथी औरकिसोकोबाल्यावस्थाभी नथी किन्तु सबस्त्रीऔरपुरुषोंकीयुवावस्थाहोईश्वरनेरचीथी फिर वेउससमयअच्छा वा बुराकुछनहींजानतेथे जहांजिसकानेत्रवा अथवाबुद्ध्यादिक जिसबाह्यपदार्थमेंयुक्तभए उसकोटक२ देखतेथे परन्तु यहअच्छीवाबुरी ऐसानहीं जानतेथे परन्तु प्राण, शरीरअथवा इन्द्रियइनमें चेष्टागुणथा ऐसानहींजानतेथेकि ऐसीचेष्टा करनीवानकरनी फिरचेष्टाहोनेलगी बाह्यपदार्थों केसाथ स्व-

शादिकव्यवहारहोनेलगे उनमेंसेकिसीनेकुछपत्तावाफूलवाघास स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादांतोंसे चबानेलगे उसमें सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी ऐसाकरनेलगा फिरकर्ते२व्यवहारबढ़ताचला तथासंस्कारभीहो तेचले होते२मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस समयकिसीकोपापवापुण्यनहींलगताथा वैसेहीआजकालभीपांच वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहींलगता फिरव्यवहारकर्ते२अच्छा बुराभीकुछ२जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनेभीउत्तमपुरुषोंकेद्वाराबेदविद्या काप्रकाशकिया वेवेदद्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेवि- चारा औरकिसीनेनविचारा परन्तु बहुतमनुष्य कुछ२अच्छाबुरा जाननेलगे फिरआगे२मैथुनिसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको भीउपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपु- ण्योंसेव्यवहारभिन्न२होतेआए हैं सोहमलोगप्रत्यक्षदेखते हैं इ- ससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजो२संस्कारों सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे प्रश्न परमेश्वरमें विषमतादोषतोआता है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको पश्वादिकशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वा- दिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनहींकिया भिन्न२कर्मकरनेसेभी यहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकेदे- ने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं इससे ईश्वरपक्षपातीनहींहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहींहै इ- ससे जैसीउसकीइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा हीकरताहै परन्तु हमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमेंनहींआता उत्तर अपने२स्थानमें सबशरीरअच्छे हैंकोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रानहींरचा परन्तुउनकेपरस्परमिलनेसेकहींगुणहोजाताहै कहींदोषहोताहै सोजिससमयआदिसृष्टिभईथी उससमयमनुष्यों औरपश्वादिकोंमें कुछविशेष नहींथा विशेषतो पीछेसेभयाहै सो जितनेशरीररचेहैं वेसबजीवोंकेकर्म भोगकरनेकेहेतुरचेहैं सोईश्वरनरचतातो वेशरीर कैसेहोते इससे प्रथमही ईश्वरने सबव्यवस्थाकररक्खीहै किजैसाजोकर्मकरै सोवैसाहीजन्मसुखवादुःख कोप्राप्तहोवैऔरएक२बारबिनासंस्कारोंसेभीमनुष्यकाशरीरमिलेगाक्योंकिसबशरीरोंसेमनुष्यकाशरीरउत्तमहैऔरमनुष्यहीके शरीरमेंपापऔरपुण्यलगताहै अन्यशरीरमेंनहींऔरजोयहमनुष्यकाशरीरहैसबजीवोंकेलिएहै क्योंकिसबकोप्राप्तहोताहैवैसेही सबकीटपतंगादिकोंकेशरीरभीहैंजबमनुष्यशरीरमेंजीवअधिकपापकरताहै औरपुण्यथोड़ातबनरकादिकलोकऔरपश्वादिकोंकेशरीरोंकोप्राप्तहोताहै जबउसकापापऔरपुण्यतुल्यहोतेहैं तबमनुष्यका शरीरप्राप्तहोताहै औरजबपुण्य अधिककरताहै औरपाप थोड़ा तबदेवलोकऔरदेवादिकोंकाशरीर उसजीवकोमिलताहै उसमेंजितनाअधिकपुण्यउसकाफलजोसुख उसकोभोगकेजबपाप पुण्यतुल्यरहजातेहैं तबफिरमनुष्यका शरीरधारणकरताहै इन कर्मोंमेंतीनभेदहैं एकमनसे दूसरावाणीसे औरतीसराशरीरसेकर्मकरताहै इनतीनोंमेंसेएक२केतीनभेदहैं सत्वरजऔरतमोगुणकेभेदसे सोजबमनसेसत्त्वगुणकिशान्त्यादिकगुणोंसे युक्तहोके उत्तमकर्मकरताहै तबदेवमनुष्यऔरपश्वादिकोंमें वहजीवरहता है परन्तु मनमेंप्रसन्नताहीउसकोरहतीहै औररजोगुणसेयुक्तहोकेमनसेजबपुण्यवापापकरताहै तबदेवमनुष्यपश्वादिकोंमेंमध्यमहीवहहोताहै उत्तमनहीं किन्तुउत्तमतो सत्वगुणवालाहोताहै क्योंकिरजोगुणकेकार्यलोभद्वेषादिकहोतेहैं तमोगुणप्रधानजिस पुरुषकोहोताहै उसकोमोह,आलस्य,प्रमाद,क्रोधऔरविषादादिकदोषहोतेहैं वहप्रायःपापवापुण्यअधमहीकरेगा इससे देवम-

नुष्यऔरपश्वादिकोंमें नीचशरीरमेंप्राप्तहोगा औरजोवचनसेपा-
पकरेगा तोमृगादिकयोनिकोप्राप्तहोजायगा फिरसदावहशब्दों
सेचांचितहोरहेगा क्योंकिजोजिस्से पापकरताहै वहउसीसेभोग
करताहै जबशरीरसेजीवपापकरतेहैं वेवृक्षादिकस्थावरशरीरको
प्राप्तहोतेहैं इसमेंमनुभगवानके श्लोक लिखतेहैं सोजानलेना॥
मानसंमनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम्। वाचावाचाकृतंकर्म काये-
नैवचकायिकम्॥१॥ भ० यहजीवमनवाणीऔरशरीरसेशुभना-
म पुण्यअशुभनामपापकरताहै सोजिस्से करताहै उसीसभोगभी
करताहै॥१॥ शरीरजैःकर्मदोषैर्याति स्थावरतांनरः। वाचि-
कैःपक्षिमृगतांमानसैरन्त्यजातिताम्॥२॥ भ० जबशरीरसेपा-
पकरताहै तबवृक्षादिकस्थावरशरीरकोप्राप्तहोताहै वचनसे किए
पापोंसेपक्षीऔरमृगादिक योनिकोप्राप्तहोताहै औरमनसे किए
पापोंसेनीचचाण्डालादिकयोनिकोप्राप्तहोताहै॥२॥ योयदैषां
गुणोदेहे साकल्येनातिरिच्यते। सतदातद्गुणप्रायं तंकरोतिशरी-
रिणम्॥३॥ भ० जोगुणजिसकेशरीरमेंप्रधानहोताहै उस्से यु-
क्तहोके जीवउसगुणकेयोग्यकर्मकोकरताहै औरगुणभीउसकोक-
राताहै॥३॥ सत्त्वंज्ञानंतमोऽज्ञानं रागद्वेषौरजःस्मृतम्। एत-
द्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितंवपुः॥४॥ भ० सत्वगुण का कार्य
ज्ञानहै तमोगुणका कार्यअज्ञान औररजोगुणकाकार्य रागऔर
द्वेषहै एतीनगुणऔरइनकेतोनकार्यसबभूतोंमेंव्याप्तहैं क्योंकिइ-
सीकानाम प्रकृतिऔरकारण शरीरहै॥४॥ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तं
किंचिदात्मनिलक्षयेत्। प्रशान्तमिवशुद्धाभं सत्त्वंतदुपधारयेत्॥
५॥ भ० जिसपुरुषकाचित्तजबप्रसन्नतायुक्तरहै तथाप्रशान्तकोनां-
ईऔरशुद्धकीनांई तबउसकोसत्वगुण औरसत्वप्रधानपुरुषकोजा-
नना॥५॥ यत्तुदुःखसमायुक्तम प्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोप्रति-
घंविद्यात्सततंहारिदेहिनाम्॥६॥ भ० जिसका चित्तदुःख युक्त
रहै हृदयमेंप्रसन्नताभीनहोवैसदाचित्तचंचलहोय विषयोंकेओर

दौड़नेलगे और वशीभूत नहीं वह रजोगुणप्रधान पुरुष है, तामें ६ ॥
यत्तुस्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्यमविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत् ॥ ७ ॥ भ० जो चित्त मोह संयुक्त रहे हृदयमें कुछ विचार भी सत्यासत्यका न होय विषयकी सेवा में फसा रहै ऊहापोह जिसमें नहोय और जैसा अन्धकारमें पदार्थ वैसा कुछ ज्ञान न में भी न आवै उसजीवको तमोगुण प्रधान और तमोगुण जानना ॥ ७ ॥
त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां यः फलोदयः। अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ भ० इन तीनगुणोंका उत्तम मध्यम और नीच जो फलोदय उसके आगे कहते हैं यथावत् ॥ ८ ॥ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम् ॥ ९ ॥ भ० वेदाभ्यास, तपनाम योगाभ्यास, ज्ञान, सत्यासत्यविचार, जितेन्द्रियता, धर्मका अनुष्ठान, आत्माका विचार तथा परमेश्वरका भ जिसमें गुण होवें उत्तम सात्त्विकपुरुष और सत्व गुणका लक्षण है ॥ ९ ॥ आरम्भरुचिताधैर्य्यमसत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवा चाजस्रं राजसं गुणलक्षणम् ॥१०॥ भ० कार्यों के आरम्भमें अत्यन्त रुचि अधैर्य असत्कार्यों का स्वीकार और निरन्तर विषयसेवामें फसा रहै यह रजोगुण अधिक पुरुषवालेका लक्षण है १० ॥
लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्य्यं नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता। याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम् ॥ ११ ॥ भ० अत्यन्त लोभ अत्यन्त निद्रा धैर्य का लेश नहीं क्रूरता नाम दया रहित नास्तिक्य नाम विद्या धर्म और ईश्वरको नहीं मानना भिन्नवृत्तिता नाम छिन्न भिन्न जिसकी बुद्धि नित्य दान दक्षिणा और भिक्षा ग्रहण में प्रीति और प्रमाद नाम नाना प्रकारका उपद्रव करना यह तमोगुण और तमोगुण पुरुषवालेका लक्षण है और इसके आगे तीनों गुणोंके लक्षण कहे जाते हैं ॥ ११ ॥
यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति। तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम् ॥ १२ ॥ भ० जिसकर्मको करके करता भया और करनेकी इच्छामें लज्जा और भय होता है वह पुरुष और कर्म तमोगु-

णीहैं क्योंकिपापहीमेंरहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणालोके ख्या-
तिमिच्छतिपुष्कलाम्। नचशोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तुराजसम् ॥
१३ ॥ भ० लोकमेंकीर्तिकेहेतुइच्छासेभाटआदिकपुरुषोंकोपदार्थ
देना औरऐसाकाममैंकरूंजिस्से किमेरीइसलोकमेंप्रशंसाहोय
सोमिथ्याप्रशंसाकाचाहना अन्यायसेऔरउसमेंधनतथापदार्थके
नाशहोनेमेंकुछसोचविचारनकरनायहरजोगुणीपुरुषहै यहघोर
दुःखमेंसदापड़ारहताहै॥१३॥ यत्सर्वेणेच्छतिज्ञातुं यन्नलज्जति-
चाचरन्। येनतुष्यतिचात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥१४॥ भ० जो
पुरुषसबप्रकारोंसेऔरउत्तमपुरुषोंसेजाननेकोचाहताहै तथाधर्म
केआचरणमेंकोईहानिवानिन्दाहोय तोभीजिसकोंलज्जावाभयन
होय औरजिसकर्ममेंअपनाआत्माप्रसन्नहोय अर्थातधर्माचरणसे
उसकोकभीनछोड़े यहसात्विकपुरुषकालक्षणहै ॥ १४ ॥ तमसो-
लक्षणंकामो रजसस्त्वर्थउच्यते। सत्त्वस्यलक्षणंधर्मः श्रैष्ठ्यमेषां-
यथोत्तरम्॥१५॥ भ० जोकाममेंफसारहताहै वहतमोगुणीपुरु-
षहै तथाधनादिकअर्थहीको परमपदार्थमानताहै वहरजोगुणीहै
औरजोधार्मिकअर्थात्धर्महीमें जिसकोनिष्ठाहै वहसत्वगुणीपु-
रुषहै तमोगुणीसेरजोगुणीरजोगुणीसेसत्वगुणवालापुरुषश्रेष्ठहै॥
१५ ॥ इनमेंसेसत्वगुणवालाधार्मिकहोकेपुण्यहीकरेगा रजोगुण-
वालापापपुण्यदोनोंकरेगा तथातमोगुणवाला पापहीकरेगा इ-
नको जैसे२ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता
है ॥ देवत्वंसात्विकायान्ति मनुष्यत्वंचराजसाः। तिर्यक्त्वंताम-
सानित्य मित्येषात्रिविधागतिः ॥ १६ ॥ भ० जोसात्विकपुरुषहो
तेहैं वेदेवभावकोप्राप्तहोतेहैं अर्थातविद्वानधार्मिकऔरबुद्धिमा-
नहोतेहैं तथाउत्तमपदार्थ और उत्तम लोकोंकोभी प्राप्तहोते हैं
तथाजोरजोगुणीहोतेहैं वेमध्यमलोकमनुष्यत्व तथाबुद्ध्यादिकप-
दार्थोंको प्राप्तहोकेमध्यमरहतेहैं उत्तमनहीं औरजोतमोगुणी
होतेहैं वेनीचतापश्वादिकशरीर तथाबुद्ध्यादिकमेंभीनीचभाव र-

हताहै इनतीनोंकेतीन गुणोंसे उत्तममध्यमऔरनीचतासे एक२ गुणकातीन२भेदहोतेहैं औरवैसेही उनकोफलमिलतेहैं सोआगे२लिखाजाताहै ॥ १६ ॥ स्थावराःकृमिकीटाश्च मत्स्याःसर्पाश्चकच्छपाः । पशवश्चमृगाश्चैवजघन्यातामसीगतिः ॥१७॥ म० स्थावर, वृक्षादिक, कृमि,कीट,मत्स्य, तथाकच्छपादिक, जलजन्तु, गायआदिकपशु तथामृगादिकवनकेपशु जिसकोअत्यन्ततमोगुण होताहै वहऐसेशरीरोंकोप्राप्तहोताहै ॥ १७॥ हस्तिनश्चतुरंगाश्च शूद्राम्लेच्छाश्चगर्हिताः । सिंहाव्याघ्रावराहाश्च मध्यमातामसीगतिः ॥ १८ ॥ म० हाथीघोड़े शूद्रजोमूर्ख म्लेच्छनामकसाईआदिक गर्हितनामजोनिन्दितकर्मकरनेवाले सिंहउनसकुछजोनीच होतेहैं वेव्याघ्रवराहनामसूवर जोपुरुषमध्यतमोगुणवालाहोता है वह ऐसे जन्मोंकोपाताहै ॥ १८ ॥ चारणाश्चसुपर्णाश्च पुरुषाश्चैवदांभिकाः । रक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीषूत्तमागतिः ॥ १९ ॥ म० चारणनामदूतदूतो औरगानेवाले जोकिवेश्याओंकेपासगण रहतेहैं सुपर्णजोहंसादिकअच्छेउत्तमपक्षी दांभिकपुरुषअर्थातसम्प्रदायवाले मिथ्याउपदेशकरनेवाले तथाअहंकारअभिमानादिकगुणयुक्त राक्षसनाम छल,कपट करनेवाले पिशाचनाम सदा मलिनरहैं ऐसे जन्मोंकोप्राप्तहोतेहैं जिनमेंकिथोड़ातमोगुण रहताहै ॥ १९ ॥ झल्लामल्लानटाश्चैव पुरुषाशस्त्रवृत्तयः । द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्याराजसीगतिः ॥ २० ॥ म० झल्लानामतड़ाग कूप आदिकखोदनेवाले मल्लानाममलाह औरकुश्ती करनेवाले शस्त्रवृत्तिपुरुष जोकिशस्त्रोंकोंबनाने औरसुधारने वाले जुआरीलोग औरभांग,गांजा,अफीम तथामद्यपीनेमें जोफसेरहतेहैं जिनको अत्यन्तरजोगुणहै वेइसप्रकारकेहोतेहैं ॥ २० ॥ राजानःक्षत्रियाश्चैवराज्ञांचैवपुरोहिता । वादयुद्धप्रधानाश्चमध्यमाराजसीगतिः ॥ २१ ॥ म० जिनपुरुषोंमेंमध्यरजोगुणहोताहै वेराजाहोतेहैं तथा क्षत्रियहोतेहैं अर्थातशूद्रवीरादिकगुणवालेहोतेहैं राजाओंकेपु-

रोहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील आदिकयुद्धमें प्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैंयहरजोगुणियोंकीमध्य- मगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये।तथैवाप्सरसः- सर्वाराजसीषूत्तमागतिः २२॥ म० गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामबड़े ध- नाढ्यतथाविबुधनामउक्तदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔरअप्सराअ- र्थात्‌रूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ा रजोगुणहोता है उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं ॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवै- मानिकागणाः। नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३॥ म० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेविना कृच्छ्रचांद्रायणादिक व्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमें प्रवीण विप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरक- रनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितविद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलो- कतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और शूरवीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवें उनमेंऐसेगुण होतेहैं ॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवित्सराः। पितर- श्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः ॥ २४ म० यज्ञकरनेमेंजि- नकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंवेदज्योतिष शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्य लोक पितर जोपिताकोनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंर- हनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरवि- द्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरविष्णु आदिक देवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेथे जोमध्य सत्वगुणमें ऐसे कर्मकरतेहैं उनकोऐसीगतिहोतीहै ॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्य- क्तमेवच। उत्तमांसात्विकमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः ॥ २५ ॥

भा० ब्रह्माब्रह्मज्ञानपर्य्यन्तविद्याकाजाननेवाला अथवाब्रह्मलोकका अधिष्ठाताऔरउसलोककोप्राप्तहोनेवाले प्रजापतिऔरविश्वसृज जोकिधर्मऔरविद्यासेसबकेपालनकरनेवाले वासिद्धजोकिपरमाणुकेसंयोगवावियोगकरनेवाले औरउसविद्यावाले अथवाप्रजापतिलोकके अधिष्ठाता वाउनकोप्राप्तहोनेवाले धर्ममहान्बुद्धि अव्यक्तनामप्रकृति यहसत्वगुणकोउत्तमगतिहै यहांसेआगेकर्मऔरउपासनाकाकोईफलभोगनहींहै सिवायपरमेश्वरके॥२५॥ इन्द्रियाणांप्रसंगेन धर्मस्यासेवनेनच। पापान्संयान्तिसंसारानविद्वांसोनराधमाः॥२६॥ भा०इन्द्रियोंकाप्रसंगअर्थातअत्यन्तविषयसेवामेंफसनेऔरधर्मकेत्यागसे जोजीवअधमऔरविद्याहीनहैं अत्यन्तदुःखोंकोपातेहैं दुष्ट२शरीरोंकोप्राप्तहोतेभये इनप्रकारोंसेदुष्टवाश्रेष्ठकर्मोंकेकरनेसेसुखवादुःखजीवोंकोहोतेहैं यहीईश्वरकीआज्ञाहै किजोजैसाकर्मकरैवहवैसाभोगैइससे ईश्वरमें कुछपक्षपातदोषनहींआताक्योंकिजैसाजोकर्मकरताहैउसकोवैसाहीफलमिलताहै औरईश्वरन्यायकारीहैसोसदान्यायहीकरताहै अन्यायकभीनहीं इससे जैसाचाहै ऐसाकरनानहींआता ईश्वरमें क्योंकिवहसत्यसंकल्पहै औरनिर्भ्रमउसकाज्ञानहै इससे जैसीव्यवस्थान्यायसेकरनीउचितथी वैसेहीकियाहै अन्यथानहीं एदोषसबजीवोंमें हैं किपहिलेकुछऔरव्यवस्थाकरैं पीछेऔरक्योंकिजीवोंमें भ्रमादिकदोषहोतेहैं औरकोईव्यवहारमें निर्भ्रमभीहोतेहैं सर्वत्रनहीं और सर्वत्रनिर्भ्रमतबजीवहोताहै किजबपरब्रह्मकासाक्षात्विज्ञानहोताहै औरउसीकानियोग अन्यथानहीं सर्वत्रनिर्भ्रमतो सनातनएकईश्वरहीहै इससे क्याआयाकि एकजीव अनेकजन्म धारण करताहै यहसिद्धभया प्रश्न ईश्वरएकजीवकोअनेकजन्मकीव्यवस्था क्योंकरताहै क्योंकिईश्वर सर्वशक्तिमान्है नित्यनए२ जीवोंका उत्पन्नक्यानहींकरसक्ता उत्तर ईश्वरअवश्यसर्वशक्तिमान्है परंतु अन्यायकभी नहींकरता जोजीवदूसराशरीर धारणनहींकरेगा

तोएकजन्ममें किएपापवापुण्यइनकाभोगनहींहोसकेगाफिरउस-
कान्यायभीनहीहोगा किपापकरनेवालेकोदुःखऔरपुण्यकरनेवा-
लेकोसुखहोनाचाहिए सोबिनाशरीरसेभोगहीनहींहोसक्ता इस्से
अनेकजन्मअवश्यमाननाचाहिएप्रश्नपापवापुण्यकाभोगबिनाशरी-
रसेभीहोसक्ताहैपश्चात्तापकरनेमेंसोजीवमनसेजितनेपापकिएहोंगे
उनकाभोगमनसेशोककरकेभोगकरलेगाउत्तर ऐसानकहनाचा-
हिएक्योंकिपश्चात्तापजोहोताहै सोभविष्यत्पापोंकानिवर्तकहोता
हैकिएभएपापोंकानहीं जैसेकोईपुरुष नित्यकूपकोदौड़२के डांक
जाय फिरकभीकूपकेपारकेकिनारेपरनहींपहुंचे किन्तुकूपमेंगिर
जायउसमेंउसकाहाथवागोड़टूटजाय फिरउसकोकोई बाहरनि-
काललेफिरवहबहुतशोचकरै किमैंऐसाकामनकरतातोमेरायह
बुरेहाल्क्योंहोतो सोमैंबड़ामूर्खहूं इस्सेक्याआताहैकिआगेको
वहऐसाकर्मनकरेगा परन्तुजोकरचुकाउसकीनिवृत्तिकभीनहीं
होगी सोपश्चात्तापजोहोताहै सोकृतपापकानिवर्तकनहींहोता
औरजैसेकोईमनुष्य आंखसेअन्धाऔरकानसेबहिराहोय उसके
पाससर्पवाव्याघ्रआजाय अथवाकोईगालीदे वाउसकीनिन्दाकरै
तोभीउसकोकुछदुःखनहींहोता ऐसेहीबिनाशरीरधारणसेजीव
सुखवादुःखनहीभोगसक्ता क्योंकिजबमूर्त्तिमानपदार्थहोताहै तब
वहशीतउष्णादिक व्यवहारोंकोभोगकरसक्ताहै अन्यथानहीं इ-
स्सेक्याआयाकिपश्चात्तापसे कृतपापोंकीनिवृत्तिनहीहोसक्ती प्रश्न
जीवजिनकर्मोंसेसुखहोवै वैसाकर्मक्योंनहींकरता उत्तर बिना
विद्यादिकगुणोंसेकुछनहींयथावत् ज्ञानसक्ता विद्यादिकगुणबिना
परीश्रमसेनहीहोते एकव्यवहारऐसाहै किजिसमेंप्रथमसुखहो-
य औरपीछेदुःखसोविषयोंमेंफसकेजीवदुःखितहोताहैक्योंकिअ-
त्यन्तविषयसेवासेबलबुद्धि औरधनादिकनष्टहोतेहैं औरज्वरादि-
कअनेकरोगोंसेयुक्तहोकेफिरदुःखहीपाताहै दूसराऐसाव्यवहार
है किप्रथमतोदुःखहोय औरपीछेसुखसोव्यवहारयहहै किजिते-

न्द्रियता, ब्रह्मचर्याश्रम, विद्याकीप्राप्ति, सत्पुरुषोंकासंग, औरधर्म काअनुष्ठान, इत्यादिकजानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम दुःखहोताहैऔरजबएप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउसकोसुखहोता है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै किजिसमें सदादुःखहीरहै सो मोहहै जोधन,पुत्रऔरस्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्यादिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह व्यवहारहै किजिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति है विद्यादिकगुणोंकेनहोहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं फिरकैसे करसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहहमकोदृढ़निश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहींकरता इतनाहमलोगबुद्धिसेयथावत्जानतेहैं ईश्वरजैसाचाहै वैसानहींकरता जोकरताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया किअनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंसे युक्तहोकेविषयमें फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहींहोनेसे बन्धनभी इसकानष्टनहींहोता जबयथावत्परमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहोतीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप कहचुकेहैं किविनाशरीरमेसुखवादुःखभोगनहींहोसक्ता सोमुक्तिमेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहैंकिनहीरहतातोमुक्तिकाभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमनमें पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेताहै यहबातमेरी सत्यहोयगी उत्तर जीवहीमुक्तिमेंरहताहै औरशरीरनहीं क्योंकिपहिलेजो लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै औरसबपदार्थोंसेउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निसेलोहातप्तहोताहै उसमेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चेतनपरमेश्वरसर्वत्रव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारहताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकावियोगकभीनहींहोता जैसेआकाश

में सबस्थूलपदार्थोंकावियोगकभीनहीं मनुष्यऔरवायुआदिक
जहां२चलतेफिरतेहैं वहां२आकाशकासंयोगपूर्णहीहै वैसेआ-
काशादिकपदार्थभी परमेश्वरमेंव्याप्यहैं औरपरमेश्वरसबमेंव्या-
पकहै परमाणुऔरप्रकृति जोकिसूक्ष्मपदार्थोंकीअवधिहै इनसे
सूक्ष्मआगेसंसारकेपदार्थकोईनहींहैं परन्तुपरमेश्वरउनसेभीअ-
त्यन्तसूक्ष्म औरअनन्तहै जैसेआकाशकिसीपदार्थके साथचलता
फिरता नहीं वैसे परमेश्वरभी पूर्णकेहोनेसे जीवोंकेसाथचलता
फिरतानहीं किन्तु जीवसबअपने२कर्मानुसारचलतेफिरतेहैं प-
रमेश्वरकी सत्तासेधारितचेतनहै ॥ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्या-
ज्ञानानामुत्तरोत्तरापायेतदनन्तरापायादपवर्गः । यहगौतममु-
निकासूत्रहै मिथ्याज्ञानजोकिमोहसे अनेकप्रकारकाहोताहै य-
थावत्विद्याकेहोनेसेजबनष्टहोजाताहै तब । अविद्यास्मितराग-
द्वेषाभिनिवेशाःपञ्चक्लेशाः ॥ यहपतञ्जलिमुनिकासूत्रहै इसका
यहअभिप्रायहै किअविद्यातोपहिलेप्रतिपादनकरदियाहै सोई
सबदोषोंकामूलहै द्रष्टाजोजीवदर्शनजोबुद्धिइनदोनोंकी एकस्वरू-
पताहोनीकिमैंबुद्धिहूं ऐसाअभिमान काहोना सोअस्मिता दोष
कहाताहै । सुखानुशयी रागः ॥ ३ ॥ प० जिससुखकापहिलेअनु-
भवसाक्षात्कियाहोय उसमें अत्यन्तसतृष्णानामलोभ कियहमु-
झकोअवश्यमिलनाचाहिए यहदूसरादोषहै क्योंकिअनित्यपदा-
र्थोंमेंअत्यन्तप्रीतिकेहोनेसे नित्यपदार्थमें जीवकोइच्छाकभी नहीं
होती दुःखानुशयीद्वेषः ॥ ४ ॥ प० जिसदुःखकापहिलेअनुभव
कियाहोय उसकोस्मृतिकेहोनेसे उसकेहननकोइच्छा औरउससे
क्रोधवहद्वेषकहाताहै यहतीसरादोषहै । स्वरसवाहीविदुषो-
ऽपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ५ ॥ प० सबप्राणियोंकोयहआशानित्य
बनीरहतीहै किमैंसदारहूं औरमेरेयेपदार्थसदाबनेरहैं नाश
कभीनहोवै सोकृमिसलेकेसबप्राणियोंको औरविद्वानोंकोभी यह
आशानित्यबनीरहतीहै यहचौथाअभिनिवेशदोषकहताहै और

अविद्यातोप्रथमदोषहै एपांचदोषऔरइनसेउत्पन्नभए असंख्यात दोषजीवोंमेंरहतेहैं इस्सेजीवोंकोमुक्तिभीनहीहोसक्ती परन्तु विवेकादिगुणोंसेजबमिथ्याज्ञाननष्टहोजाताहै तबअविद्यादिकदोष भीनष्टहोजातेहैं। प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भइति ॥ ६ ॥ गोतम० वचनबुद्धिऔरशरीरइन्होंसेजोवआरम्भकरताहै सोप्रवृत्तिकहातीहै परन्तु जिसकेअविद्यादिकदोषनष्टहोजातेहैं वहउनमेंप्रवृत्तनहीं होता किन्तुविद्यादिकगुणोंमेंप्रवृत्तहोताहै इस्सेउसकोमिथ्याप्रवृत्तिकिपरमेश्वरसेभिन्नपदार्थकोजोइच्छासोनष्टहोजातीहै फिर वहयोगाभ्यासविचार औरपुरुषार्थसेयुक्तअत्यन्तहोताहै उस्से अनेकपरमाणुपर्यन्तसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञानन्नेत्रसेयथावत्साक्षात्कारहोताहै फिरअत्यन्तजबविचारऔरयोगाभ्यासकरताहै तबपरमानन्दसर्वव्यापकसर्वाधार जोपरमेश्वरउसकोअपनेहीमें व्याप्त देखताहै फिरउसकोस्थूलशरीर धारणकरनेका आवश्यकनहीं किन्तुएकपरमाणुकोभी शरीरबनाकेरहसक्ताहै तबइसका जन्म मरणादिककारण जोअविद्यादिकदोषउनसेकिएगएथ जोकर्मके भोगसबनष्टहोजातेहैं औरआगेजोकर्मकिएजातेहैं एसबज्ञानहोकेवास्ते करता है सोअधर्मकभीनहीं करता किन्तुधर्महीकरताहै उस्से ज्ञानफलहीवहचाहताहै अन्यनहीं फिरउसके जन्म मरणकाजोमूल अविद्यासोज्ञान सेनष्टहोजातीहै फिरवह जन्म धारणनहींकरता औरउसकीबुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण, औरइन्द्रियएसबदिव्यशुद्धपदार्थजीवकेसामर्थ्यरूपरहजातेहैं औरदिव्यज्ञानादिकगुण नित्यउसमेंरहतेहैं औरआपदिव्यशुद्धनिर्विकाररहजाताहै। बाधनालक्षणंदुःखम् ॥ ७ ॥ गोतम० जितनीबाधना अर्थातइच्छाभिघात वहसबदुःख कहाताहै ॥ ७ ॥ तदत्यन्तविमोक्षोपवर्गः ॥ ८ ॥ गोतम० दुःखोंकीअत्यन्तजो निवृत्तिउसकोमोक्षकहतेहैं किसबदुःखोंसेछूटजाना औरसदाआनन्दपरमेश्वरकोप्राप्तहोकेरहना फिरलेशमात्रभी दुःखकासम्बन्ध

कभीनहींहोता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजीवरहता
है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगसेउसजीव
मेंसर्वज्ञत्वकालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषइनका सत्य २
बोधभीसदारहताहै इससेजिसदुःखसागरसंसारसे बड़े भाग्यसेछू-
टकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावतजानताहै किप-
रमेश्वरकेयोगसेअन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइसदुःख
मेंकभीनहींगिरता जैसेचिंवटी अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह
नानाप्रकारकेकणोंकोले२के अपनेबिलमें संचयकरती जातीहै
उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरु-
षार्थसेमिश्रीके ढेलेकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेके आनन्दितहोजा
तीहै फिरवहअपने घरऔरसंचयकोछोड़के उसीमेंनिवासकर-
तीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोड़भीनहींस-
क्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें
सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेवशहोके परन्तु जबपरमेश्वरका उ-
सकोयोगहोताहै तबसबतृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैंफि-
रपूर्णकामऔरस्थिरहोकेपरमेश्वरहीमेंरहताहै सोमुक्तिमेंपर-
मेश्वरकाआधारउसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभो-
गताहै औरनिराधारसेविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभी
नहींभोगसक्ता इससे क्याआयाकिबिनास्थूलशरीरधारणसे पापवा
पुण्यसंसारमें फलकभीनहींभोगसक्ताऔरपरमेश्वरकेआधारके
बिनामुक्तिसुखभीनहींभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहींसेपाप
वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याजा-
ननी प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजीवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहो
जाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजबसृष्टिरचीहै
किजबसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तबभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंर-
हेंगे औरजबअत्यन्त प्रलयहोगा तबकोईनरहेगा ब्रह्मका साम-
र्थ्यरूपऔरएकपरमेश्वरकेविना सोअत्यन्तप्रलयतबहोगा किजब

सबजीवमुक्त होजांयगे बीचमें नहीं सो अत्यन्तप्रलय बहुतदूर है संभवमात्र होता है कि अत्यन्तप्रलयभी होगा बीचमें अनेकबार महा प्रलयहोगा और उत्पत्तिभीहोगी इस्से सबसज्जनोंको अत्यन्तमुक्ति की इच्छाकरनीचाहिए क्योंकि अन्यथाकुछसुखनहीहोगा जबतक मुक्तिजीवकोनहींहोती तबतक जन्ममरणादिकदुःखसागरमेंडूबा होरहेगा और जो जल्दीमुक्तिकरलेगा सो अतुलआनन्दकोपावेगा प्रश्न मुक्तिएक जन्ममें होती है वा अनेकजन्ममें उत्तर इसका नियमनहीं क्योंकि जबमुक्तिहोनेकाकर्मकरताहै तभी उसकोमुक्तिहोती है अन्यथानहीं प्रथमसृष्टिमें भी कोईजीव पहिलेहीजन्ममें मुक्तहोगयाहोय इसमें कुछआश्चर्यनहीं उसकेपीछे कोईमुक्तभया होगा वा होताहै और होवैगा सोबहुत जन्महीमें होगा मुक्तभी मोक्षअत्यन्त पुरुषार्थसेहोताहै अन्यथानहीं। भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः। क्षीयन्तेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥ यहमुण्डककीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिहृदयग्रन्थिनामअविद्यादिकदोषजबजिसजीवकेनष्टहोजातेहैं तबविज्ञानकेहोनेसेसब संशयनष्टहोजातेहैंऔरजबसंशयनष्टहोजातेहैंतबकर्मभीसबकेनष्ट होजातेहैं किजीवकोफिरकर्तव्य कुछनहींरहता मुक्तिहोनेकेपीछे सोकर्मतीनप्रकारकाहोताहै एकक्रियमाणजोकिनित्यकियाजाता है दूसरासञ्चितजोकिबुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्मरहताहै तीसरा प्रारब्धजोनित्यभोगकियाजाताहै इसकेतीनभेदहैं। सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः॥ ८॥ पा॰ इसकायहअभिप्रायहै किकर्मोंकेफलतीनहोतेहैं जन्मआयु औरभोग परन्तु जबतक कर्मों कामूलअविद्यादिकरहतेहैं तबतककर्मफलभोगभी रहताहै सो भीजैसाकर्म वैसाजन्मआयु औरभोगउसके अनुसारहोतेहैं जब जीवपुरुषार्थसे विद्या, धर्मऔरपातञ्जलशास्त्रकीरीतिसे योगाभ्यासकरताहै तबउसकोयथोक्तविज्ञानहोताहै तबमूलसहितकर्मछूट जाताहै क्योंकि उसनेमुक्तिकेवास्ते सबकर्मकिएथे जबमुक्तिहोतीहै

तबउसकोफिरकर्तव्यकुछनहींरहता प्रश्न मुक्तिसमयमेंजीवपरमेश्वरमेंमिलजाताहै जैसेजलमेंजलबानहीं उत्तर जोजीवमिलजातातोउसकोमुक्तिकासुखकुछनहींहोता औरमुक्तिकेवास्तेजितनेसाधन किएजातेहैं वेसबनिष्फलहोजांयगे औरमुक्ति क्याभई किन्तुउसकानाशहीहोगया इससे यहबात मिथ्याहै किजीवब्रह्ममें मिलजाताहै वहब्रह्मअर्थातसबसेजोपरहै औरजोकिअपनेस्वरूपमेंव्याप्तहै जितनाउसकोयथावत्साक्षात्जाननेसे सबदुःखोंसेछूटजाताहै जोभाग्यप्रारब्धऔरदैवकेभरोसेरहताहै औरआलस्यसेकुछकर्मअच्छानहींकरता वहीजीवनष्टहै औरजोअत्यन्तपुरुषार्थकेऊपरनिश्चयकरकेउद्यमकरताहै सोईजीवभाग्यशालीहै क्योंकि पुरुषार्थहीसे मुक्तिहोतीहै औरयथावत विवेकहोनेसे हानिवालाभमेंशोकवाहर्षरहितहोताहै वहपुरुषार्थी सर्वत्रसुखीरहताहै क्योंकिवहविद्यासेसबपदार्थोंकोयथावत्जानताहै सोसबसज्जनोंकोयहीउचितहै किसदा पुरुषार्थहीकरना आलस्यकभीनहीं पुरुषार्थइसकानामहै किजितेन्द्रियता,धर्मयुक्त व्यवहार,विद्या, औरमुक्तिजिससे होय औरअन्यपुरुषार्थनहीं क्योंकिपुरुषकेअर्थजोकरताहै सोईपुरुषार्थकहाताहै औरजोअन्याययुक्त व्यवहारकर्तेहैं उसकानामपुरुषार्थनहीं औरपरमेश्वरअत्यन्तदयालुहै जोजीवउसकोप्राप्तिकेहेतु तन,मनऔरधनसे श्रद्धापूर्वकपुरुषार्थकरताहै उसकोशीघ्रहीप्राप्तहोताहै कृपासेविद्यादिकपदार्थोंका उसकेपुरुषार्थकेअनुसारप्रकाशहोताहै फिरसदाआनन्दितमुक्तिमेंरहतेहैं सोसबपुरुषार्थोंकाफलमुक्तिहै इससे मुक्तिकोचाहना उक्तप्रकार से अवश्य सब कों करनी चाहिए यह विद्या अविद्याबन्ध और मुक्ति के विषय में संक्षेप से लिखा और जो विस्तारसे देखा चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवैं इसके आगे आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ९ ॥

अथआचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयंव्याख्यास्यामः ॥ श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यक् निवद्धंस्वेषुकर्मसु । धर्ममूलंनिषेवेत सदाचारमतन्द्रितः॥१॥ म० श्रुतिजोवेदस्मृतिजोऋ:शास्त्रादिक सत्यशास्त्र औरमनुस्मृति उनमेंजोसदाचारउसकोसदासेवनकरैं औरजितनाअपनाआचारसोसबयुक्तिपूर्वककरै सत्पुरुषोंकेआचरणसेविरुद्धनहीं सोसत्यभाषणादिकआचारधर्मकामूलहै इसकोसदाचारप्रमाणोंसेनिश्चयकरकेसदासेवनकरै सबपदार्थशुद्धरक्खैं अशुद्ध एकभीनहीं जितनेश्रेष्ठगुणउनकेग्रहणकासदाआचाररक्खैं सत्पुरुषोंकेसंगमेंसदाप्रीति उनसेविनयादिक व्यवहारोंकोग्रहण करै जितेन्द्रियता सदारक्खैं इनसेविपरीतजोअनाचार उसको छोड़दे जिस्से ज्ञानवाधर्म तथाविद्याप्राप्तहोय उसकोसदामानैं उक्तप्रकारसेउसकोप्रसन्नरक्खैं औरअधर्मीपाखण्डी उनकोकभी नमानैं औरजितनोसत्क्रिया उनकोयथावत्करै सबप्रयत्नोंसेब्रह्मचर्याश्रमसे विद्याग्रहणकरैं बाल्यावस्थामें विवाहकभीनकरैऔर नानाप्रकारकेयन्त्रऔरपदार्थगुणोंसेरसायन विद्याद्वीपद्वीपान्तर मेंभ्रमण उनमनुष्योंकेअच्छे वुरेआचरणोंकीपरीक्षा औरअच्छे आचरणोंकाग्रहणकरैं औरबुरेकानहीं प्रश्न आर्यावर्तवासीलोग इसदेशकोछोडके अन्यदेशमेंजानेसेपापगिनतेहैं औरकहतेहैंकि पतितहोजातेहैंउत्तर यहबातमिथ्याहीहैक्योंकिमनुस्मृतिमेंजहां जिसकेऊपर राजाकाकरलिखाहै सोजोसमुद्रपार द्वीपद्वीपान्तर मेंनजातेहोतेतोक्योंलिखते। समुद्रे नास्तिलक्षणम्। इत्यादिकवचनमनुस्मृतिमेंलिखेहैं सोमहासमुद्रमें जबजहाजजाय तबकुछ

करकानियमनहीं किन्तुद्वीपद्वीपान्तरमेंजाकेव्यापारकरकेपदा-
र्थोंकोबेचकेऔरवहांसेपदार्थोंकोलेके इसदेशमेंआकेबेचे फिर
उनकोजितनालाभहोवे उसमेंसेपू॰वांहिस्साराजाले औरराजा
भीतीनप्रकारकेमार्गकोशुद्धिकरै एकस्थल,जल,औरवनउसमेंजल
केमार्गकेव्याख्यानमें जहाजोंकेऊपरचढ़के द्वीपद्वीपान्तरमेंजावैं
औरसमुद्रहीमेंजहाजोंपरबैठके युद्धकरैं यहक्योंलिखा औरमहा-
भारतमेंलिखीहै किश्रीकृष्णऔरअर्ज्जुन जहाजमेंबैठके समुद्रमें
चलेगए वहांद्दालकऋषिमिलेऋषिकोयज्ञमेंलेआए औरराजसूय
तथाअश्वमेधमेंसबद्वीपद्वीपान्तरके राजाओंकोयज्ञमेंलेआएथे सो
बिनाजहाजसेद्वीपद्वीपान्तरमेंकैसेजासके औरसगरराजासबठिका
नेभ्रमणकरताथा बिनाजहाजोंसे समुद्रपारकैसेजासका तथाअ-
र्जुन,भीम,नकुल,सहदेव,औरकर्ण सबद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमणकर्त्ते
थे बिनाजहाजोंसेकैसेकरसक्ते तथाइक्ष्वाकुसेलेकेदशरथपर्यन्तद्वीप
द्वीपान्तरमेंभ्रमण करतेथे सोजहाजोंहीमेंकर्त्तेथेऔररामभीस-
मुद्रकेपारलंकामेंगएथेसोभीतोएकद्वीपहै इत्यादिकमनुस्मृतिऔर
महाभारतादिक इतिहासोंमेंलिखाहै औरयुक्तिसेबिचारकरके
देखैंतोयहीआताहै किदेशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमें जाना
अच्छाहै क्योंकिअनेकप्रकारकेपदार्थप्राप्तहोंगे अनेकप्रकारकेम-
नुष्योंसेसमागमहोगा उनकाव्यवहार भाषागुणऔरदोष बिदित
होतेहैं औरउत्तम२पदार्थोंकोइसदेशमेंलेजानेऔरलेआनेसेब-
हुतलाभहोताहैतथानिर्भयऔरशूर,बीरपुरुषहोनेलगतेहैं यहतो
बड़ाएकअच्छा आचारहै औरजोअपनेहीदेशमेंरहतेहैं औरदेश
मेंजानेसे उनकास्पर्शकरनेमें छूतमानतेहैं वेविचाररहितपुरुषहैं
देखनाचाहिएकि मुसल्मानवाअंगरेजसे छूनेमेंदोषमानतेहैं और
मुशल्मानोंवाअंगरेजकेदेशकोस्त्रीसेसंगकरतेहैं औरअपनेपासघ-
रमेंरखलेतेहैं उस्से कुछभेदनहींरहता यहबड़े अन्धकारकीबात
है किमुसल्मानऔरअंगरेज जोभलेआदमी उनसेतोछूतगिनना

और वेश्यादिकों में नहीं छूत मानना यह केवल युक्तिशून्य बात है और जो उनसे छूत हो मानते हैं कि इनसे शरीर न लगे न वस्त्र स्पर्श होय इसी बात से तो आर्य्यावर्त्त देश का नाश भया है क्योंकि ए तो आर्यावर्तवासी उनके छूत के डर से दूर २ भागते रहते हैं और वे सुख से राज्य सब ले लेते हैं और हृदय से सदा द्वेष होने से अन्यथा बुद्धि रखते हैं इससे परस्पर सब दुःख पाते हैं यह सब अनाचार है आचार इसका नाम है कि राग, द्वेषादिक दोषों को हृदय से छोड़ देना और सज्जनता प्रीत्यादिकों को धारण कर लेना यही आचार पहिले मनुष्यों का था कि अमरिका को कन्या अर्जुन से विवाही गई थी जो कि नागकन्या करके लिखी है फिर ऐसी बात जो कहते हैं कि द्वीपद्वीपान्तर में जाने से जातिपतित और नष्टधर्म हो जाय यह बात मिथ्या है क्योंकि छूत और देशदेशान्तर में न जाना यह बात आर्य्यावर्त्त में जैनों के राज्य से चली है पहिले न थी क्योंकि जैन बड़े भीरु होते हैं और छोटे २ जीवों के ऊपर दया रखते हैं इसी से मुख के ऊपर कपड़ा बांध लेते हैं सो चलने फिरने में भी दोष गिनते हैं फिर जहाजों में बैठ के द्वीपद्वीपान्तर में जाना इसमें हिंसा क्यों नहीं गिनेंगे और ब्राह्मण तथा सम्प्रदायी लोग इन्होंने अपने मतलब के हेतु सब जाल फैला रक्खे हैं क्योंकि अपना चेला वा यजमान द्वीपद्वीपान्तर में जायगा तो जीविका की हानि हो जायगी देशदेशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर में जाने से कोई बुद्धिमान का अवश्य समागम होगा। उससे सत्य असत्य का उसको बोध भी होगा फिर उसके सामने हमारा जाल नहीं चलेगा और नित्य शनैश्चरादि ग्रह के नाम से तथा भूत प्रेतादिक नाम से तथा मन्दिरादिकों में आने जाने से शिव नारायण दुर्गादिक के नाम सुनाने से उनको डरा के लाखहां रूप एक छल, कपट से नित्य लिया करते हैं सो वह द्वीपद्वीपान्तर में चला जायगा बहुत काल में आना होगा तब तक उनको आजीविका बन्द हो जाती है क्योंकि वह उनके सामने ही न हो रहेगा फिर उसको कोई क्या लेगा फिर भी एक प्रायश्चित का डर लगा दिया है जो कोई जा के आवै उसके ऊपर बड़े बखेड़े

लगादेतेहैं क्योंकिउसकीदुर्दशादेखके कोईजानेकोइच्छा करता होय वहभीडरकेनजाय इसहेतुकिहमारीआजीविकासदाबनीरहै यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यवाराजाहो दरिद्र बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खबनजांयगे फिरउनसेआजीविकाभीकिसीकीनहोगीपरन्तुवेऐसाविचारनहींकरतेक्योंकिअपनेमतलबमेंफसेहैं औरविद्याभीनहीं इससे कुछनहींजानसक्ते परन्तुसज्जनलोग इसबातको मिथ्याहीजानैं औरकभी देशदेशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमें भ्रमनकरैंक्योंकिजबमनुष्यमिथ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहानाऔरहाथोंकोमलना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच करनाउचितहै किजितनेसेहस्त,पाद,शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन रहै इससे अधिककरनासोअनाचारहै किन्तुजिससे सबपदार्थगृह पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अधिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमेंसदारक्खैं औरविद्याकेप्रचारकाआचारसदारक्खै इसकानामआचारहै सोईमनुस्मृत्यादिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैद्यक शास्त्रकीरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यक शास्त्रकी रीतिसे देश,काल,वस्तु औरअपनेशरीरकीप्रकृति उनसेअनुकूल विचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिससे बल,बुद्धि, पराक्रमऔरशरीरमेंनैरोग्यबढ़ैवैसापदार्थभक्ष्यहै सोईउक्तवैद्यकसुश्रुत शास्त्रमेंलिखाहै । औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्राम्यकुक्कुटः । इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि सूअरगांवकाऔरमुर्गीप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममांसहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उससे रोगोत्पत्तिकासंभवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकी रीति

सेमद्यअभक्ष्य तथाजितनेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअभक्ष्यतथाबिनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं औरजीवकोपीड़ादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमेंक्याकुछ पापहोताहै प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको मारनेमेंपीड़ाहोतीहै सोसबव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्योंकिनेत्रकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपीड़ा अवश्य होतीहै औरतुम्हारेघरमेंकोईमनुष्यचोरीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउसकोपीड़ादे आगेऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ादेतेहो इसमेंभीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफिरतेऔरबैठतेहो इसव्यवहारसेभीबहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इससे तुम्हाराकहनाव्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनैं तोहमाराव्यवहारनबनै उत्तर ऐसेहीआपलोगजानैं किजहांअपनामतलबहोय वहांतोपापनहींगिनतेहो यहबातयुक्तिसेबिरुद्धहै औरकोईभीमांसनखाय तो जानवर,पक्षी,मत्स्यऔरजलजन्तुइतनेहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगैं औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै फिरसबमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सबमनुष्य नष्टहोजांय औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय बैल,भैंसी,छेड़ी,भेंड औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारैं क्योंकिइन्हीसे सबमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक पदार्थहोतेहैं वेसबउत्तमहीहोतेहै औरएकपशुमेंबहुतआजीविकामनुष्योंकीहोतीहै मारनेसेजहांसौमनुष्यतृप्तिहोतेहैं उसगाय आदिकपशुओंकेबीचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंको

रक्षा है सक्ती है इस्से इनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए प्रश्न इन
पशुओंके नहीमारनेसे इनकेबहुतहोनेसे सबपृथिवी भरजायगी
फिरभीतोमनुष्योंको हानिहोनेलगैगी उत्तर ऐसानकहनाचा-
हिए क्योंकिव्याघ्रादिक जीवउनकोमारैंगे औरकितनेरोगोंसेभी
मरेंगे इस्से अत्यन्तनहोहोनेपावैंगे औरमनुष्योंकेमारनेसेघृतादि-
कपदार्थ औरपशुओंकीउत्पत्तिभी नष्टहोजातीहै इस्से जहां२गोमे-
धादिकलिखेहैं वहां२पशुओंमें नरोंकोमारनालिखा है इस्से इस
अभिप्रायसे नरमेधलिखाहै मनुष्यनरकोमारनाकहींनहींक्यों-
किजैसीपुष्टि बैलादिकनरोंमेहैं वैसीस्त्रियोंमेंनहीहै औरएकबैल
सेहजारहांगैया गर्भवतीहोतीहैं इस्से हानि भीनहींहोती सोई
लिखाहै ॥ गौरनुबन्ध्योऽग्नीषोमीयः । यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इस-
मेंपुल्लिङ्गनिर्देशसे यहजानाजाताहै किबैल आदिक कोमारना
गैयाको नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि
बैल आदिसे भी मनुष्योंका बहुत उपकार होताहै इस्से इनकी
भीरक्षा करनीचाहिए औरजोबन्ध्यागायहोतीहैं उसकोभीगोमे-
धमें मारनालिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमाल-
भेत् । यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसमेंस्त्रीलिंगऔरस्थूलपृषती विशे-
षणसेबन्ध्यागायलीजातीहै क्योंकिबन्ध्यासेदुग्धऔरवत्सादिकोंकी
उत्पत्तिहोतीनहीं औरजोमांसनखायसोघृतदुग्धादिकोंसे निर्वा-
हकरे क्योंकिघृत दुग्धादिकोंसभी बहुतपुष्टि होतीहै सोजोमांस
खायअथवाघृतादिकोंसे निर्वाहकरे वेभीसबअग्निमेंहोमकेबिना
नखांय क्योंकिजीवकोमारनेकेसमयपीड़ाहोतीहै उससेकुछपाप
भीहोताहै फिरजबअग्निमेंवेहोमकरेंगेतबपरमाणुसेउक्तप्रकार
सबजीवोंको सुखपहुंचेगा एकजीवको पीड़ासेपापभयाथा सोभी
थोड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं प्रश्न सखरी निखरी अ-
र्थात् कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इस-
के हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

सोहै उत्तर इसका यह बिचार है भ्रष्टाचार से बनावे अन्नादिकोंका यथावत् संस्कार नजानै तथाबिधिनजाने उसका भक्षण नकरनाचाहिए क्योंकि उस्से रोगहोतेहैं औरबुद्धिभी मलिनहो जातीहै सखरा औरनिखरा यहमनुष्योंका मिथ्याकल्पनाहै क्योंकि जोअग्निमेंपकायाजाताहै वहसबपक्काहीगिनाजाताहै औरशूद्र हीपाककरनेवालाहोनाचाहिए परन्तु वहशूद्र अपने जिसद्विजके घरमेंरहै उसीकघरकेअन्न औरउसीकेघरकेपात्रोंसे पवित्रहोके बनावे उस के हाथसे बनेंहुएको सबखांय तोभीकुछ दोषनहीं॥ नित्यंशुद्धःकारुहस्तः मपेवार्थमुत्पन्नः। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनुसूयया इत्यादिकमनुस्मृतिमेंलिखाहै सेवामेंबड़ीसेवारसोईकाबनानाहै क्योंकिरसोईके बनानेमेंबड़ापरीश्रमहोताहै और कालभीबहुतजाताहै इस्से रसोईआदिकसेवाका शूद्रहीको अधिकारहै जोब्राह्मण, क्षत्रियऔरवैश्यहैं वेतोबिद्यादिकप्रचार प्रजाकाधर्मसे रक्षणव्यापार औरनानाप्रकारकेशिल्प इनकीउन्नतिही मेंपुरुषार्थकरैं क्योंकिजोबुद्धि औरविद्यायुक्तहैं उनकोसेवाकरना उचितनहीं रसोईआदिक जोसेवासो मूर्खपुरुष जोशूद्र उसीका अधिकारहै क्योंकिअग्निकेसामनेबैठना लेपनामांजना अन्नकोशुद्धिकरना नानाप्रकारकेपदार्थबनाना इसमेंबड़ापरिश्रमऔरकालजाताहै इसकामकेकरनेसविद्वानकोविद्यानष्टहोजाय इस्से यह कामशूद्रहीकाहै सोमहाभारतमेंलिखाहै किजबराजसूयऔरअश्वमेध युधिष्ठिरादिकराजालोगोंकेयज्ञभएथे उनमेंसबद्वीपद्वीपान्तरऔरदेशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथाशूद्रराजाऔरप्रजाआएथेउनकोएकहीपंक्तिहोतीथी औरशूद्रनामशूद्रहीपाक करनेवाले औरपरोसनेवालेथे एकपंक्तिमेंसबकेसाथ सबभोजन कर्तेथे तथाकुरुक्षेत्रकेयुद्धमें जूते, वस्त्र, शस्त्र, औररथकेऊपर बैठे भएभोजनकर्तेथे औरयुद्धभीकर्तेजातेथे कुछशंकाउनकोनथी तभी उनकाविजयहोताथा औरआनन्दसेराज्यकर्तेथे औरजोभोजन

मेंबड़े बखेड़े कर्तेहैं वेभूखकेमारेमरजांयगे युद्धक्याकरसकेंगे अब भोजपुरादिकोंकेक्षत्रियलोग नापितादिकोंकेहाथकाभोजनक-रतेहैं सोबातसनातनहै औरबहुतअच्छीहै तथासारस्वत और खत्रीलोगोंकाएकहीभोजनहै सोअच्छीबातहै औरगौड़तथाअग-रवालेबनियोंकाभीएकभोजनप्रायःहै सोभीअच्छीबातहै औरगु-जराती,महाराष्ट्र,तैलंग,द्राविड़तथाकरनाटक इनमेंभोजनकेब-ड़ेबखेड़ेहैं इनपांचोंमेंसेगुजरातीलोगोंकेभोजनका बड़ापाखण्ड है क्योंकिमहाराष्ट्रादिकचारोंद्रविड़ोंकातोएकभोजनहै औरगुज-रातीलोगोंकाआपसमेंबड़ाभेदहै सबसेभोजनमेंपाखण्डकान्या कुब्जकाअधिकहै क्योंकिवेजलभीपीतेहैं तोजूतेउतारकेहाथ,पैर धोकेपीतेहैं तबचौकादेके चनाचबातेहैं सोबड़ेदुःखपातेहैं और चौकाबरतनहीहाथसेरहगए औरकुछनहीं औरसर्यूपारीमेंभी बहुतभोजनमेंपाखण्डहै यहकेवलमिथ्यापाखण्डबाहरसेरचलाते हैं औरसबसेपाखण्डभोजन चक्रांकितादिकवैरागिओंकाअत्यन्त है ऐसाकोईकानहीं क्योंकिजबजगन्नाथकेदर्शनकोजातेहैं तबचा-ण्डालादिकोंकाजूठखालेतेहैं फिरअपनीपंक्तिमेंमिलजातेहैं उनका मिथ्यापाखण्डभीनहीरहा औरहलवाईकेदुकानकादूधदहीऔर मिष्ठान्नादिकखातेहैं वहसबकाउच्छिष्टजानोंऔरमलिनक्रियासे भीहोतेहैं तथाघोसीलोग मुसल्मान और अभीरादिकहोतेहैं वे अपनेघड़ेकाजूठा जलमिलातेहैं फिरउसकोसबखातेपीतेहैं और जानतेभीहैं सोसत्यबातहीकानिर्वाहहोताहै झूंठकाकभीनहीं रा-जादिकधनाढ्य वेश्यादिकोंकोघरमेंरखलेतेहैं उनमेंकुछभेदनहीं रहता उनकोकोईनहींकहता क्योंकिकहैंतबजबकिवेनिर्दोषहोय सोपरस्परदोषोंको छिपातेजातेहैं औरगुणोंकोछोड़तेजातेहैं यह सबअनाचारहै औरसत्यभाषणादिकोंका आचरणकरना उसी कानामआचार युधिष्ठिरकेसाथ बहुतऋषि,मुनि,ब्राह्मण लोगथे वेसबसूदनाम शूद्रपाककर्तेथे और द्रौपद्यादिक परोसतेथे वेसब

खातेथे सोखानेपीनेसे किसीकाधर्मभ्रष्टनहींहोताहै औरनकोई
पतितहोताहै क्योंकिखानापीनाऔरधर्मकाकुछसम्बन्धनहीं धर्म
जोअहिंसादिकलक्षणसोबुद्धिस्थहै खानापीनाव्यवहारसबबाह्यहै
परन्तु शुद्धपदार्थकाखाना पीनाचाहिए किजिस्से शरीरमें रोगा-
दिकनहोंय औरजगतकाअनुपकार भीनहोय मद्य,भांग,गांजा,
अफीम,औरजितनेनशेहैं वेसबअभक्ष्यहैं क्योंकिजितनेनशेहैं वेस-
बबुद्ध्यादिकोंकेनाशकरनेवालेहैं इस्सेइनकाग्रहणकभीनकरनाचा-
हिए क्योंकिजितनेनशेहोतेहैं वेबिनागरमीसेनहींहोते फिरग-
मींसेसबधातुऔरप्राणतप्तहोजातेहैं औरविषमउनकेसंगसे बुद्धि
तप्तऔरविषमहोजातीहै इस्से नशाकाकरनासबकोवर्जितहै पर-
न्तुऔषधकेहेतु किरोगनिवृत्तिहोताहोय तोचौगुणाजलऔरएक
गुणमद्यग्रहणलिखाहै सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रमें क्योंकिरोगनि-
वृत्तिकेहेतुअभक्ष्यभीभक्ष्यहोजाताहै औरजिनपशुओंकेबछड़ेको
दूधनहींदेते औरसबअपनेहीदुहलेतेहैं यहभीअनाचारहै क्योंकि
पशुपुष्ट कभीनहींहोते फिरपुष्टिकेबिना दुग्धादिकथोड़े होतेहैं
औरपशुभीबलहीनहोतेहैं सोएकमासभरजितनावहपीए उतना
देनाचाहिए फिरएकस्तनकादूधदुहले औरसबबछड़ापीए फिर
दोमासकेपीछे जबवहबछिया घास,पात,खानेलगे तबआधादूध
सबदिनछोड़दे औरआधादुहले तोपशुभीपुष्टहोवें औरदुग्धादि-
कभीबहुतहोवें फिरउनदुग्धादिकोंसे मनुष्यादिकोंकीपुष्टिभीहु-
आकरै इस्से खानेऔरपीनेमें धर्ममानतेहैं वाधर्मकानाशवेबुद्धि
हीनमनुष्यहैं ऐसातोहैकिसत्यधर्म व्यवहारसेपदार्थोंकोप्राप्तहोय
उनसेखानापीनाकरै तोपुण्यहै औरचोरीतथाछल,कपट,व्यवहा-
रसेखानापीनाकरै तोअवश्यपापहोताहै सोखानपीनेमें जितने
भेदहैं वेविरोधदुःखऔरमूर्खताकेकारणहैं इनबखेड़ोंसेआर्यावर्त
मेंपुरुषऔरस्त्रीलोग विद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम,हीनहोगएहैं प्रथम
देशदेशान्तरोंमेंसबवर्णोंमें विवाहआदीहोतोथीपूर्वोक्तवर्णानुक्र-

मसेफिरभोजनमें कैसेभेदहोगा यहभेदथोड़े दिनसेचलाहै कि जबसेनानाप्रकारकेमतमतान्तरचले औरमनुष्यकीबुद्धिमेंपरस्पर बिरोधहोनेसे प्रीतिनष्टहोगई वैरहोगया इस्से कोईकिसीके उपकारमें चित्तनहींदेता औरअपने देशकेमनुष्योंके उपकारकेहेतु कोईप्रवृत्तनहीहोताकिन्तुअपने२ मतलबमेंरहतेहैं सोसबकानाश होताजाताहै यहबड़ाअनाचारहै औरतथाबिचारसेशुद्धपदार्थके खानेसे किसीकापरलोक वाधर्मबिगड़तानहीं परन्तु बिद्याऔर विचारकेनहोहोनेसे इनबखेड़ेमेंमनुष्यलोगपड़केसदादुःखोरह- तेहैं औरजोपरस्परगुणग्रहणकरैंतोसुखीहोजांय औरदेखनाचा- हिए किसमयकेऊपरभोजनमहीं प्राप्तहोताहै भोजनकेपात्रोंको उठाकेलादेफिरतेहैं बैलोंकीनांईदरिद्रलोग औरधनाढ्यलोगब- हुतरसोंईदार आदिकसाथमेंरहतेहैं उस्से मिथ्याधन बहुतखर्च होजाताहै इत्यादिकसबव्यवहार बुद्धिमानलोगबिचारलें युक्त२ व्यवहारकरैं अयुक्तकभीनहीं एदशसमुल्लासशिक्षाके विषयमेंलि- खे इसकेआगेआर्यावर्त्तबासीमनुष्य जैनमुसल्मान औरअंगरेजों केआचारअनाचार सत्यासत्यमतमतान्तरकेखण्डन औरमण्डन केबिषयमें लिखेंगे इनमेंसेप्रथमसमुल्लासमें आर्यावर्त्तबासी मनु- ष्योंकेमतमतान्तरके खण्डनऔरमण्डनकेविषयमेंलिखाजायगा दूसरेसमुल्लासमेंजैनमतके खण्डनऔरमण्डनकेविषयमें लिखा जायगा तीसरेमेंमुसल्मानोंकेमतकेविषयमें खण्डनऔरमण्डन लिखेगें औरचौथेमेंअंगरेजोंकेमतमें खण्डनऔरमण्डनकेबिषय मेंलिखाजायगा सोजोदेखाचाहै खण्डनऔरमण्डनकीयुक्तिउन चारोंसमुल्लासोंमेंदेखले दससमुल्लासतकखण्डन वामण्डननहीं लिखा क्योंकिजबतकबुद्धिमनुष्योंकी सत्यासत्यबिबेकयुक्तनहींहो- ती तबतकसत्यके ग्रहण औरअसत्यके त्याग करनेंमेंसमर्थ नहीं होते इसहेतुग्रन्थकेपूर्वभागमेंसत्य२मनुष्योंकेहितकेहेतुशिक्षा लि- खी औरइसग्रन्थकेउत्तरभागमें सत्यमतकामण्डनऔरअसत्यम-

तकाखण्डनलिखेंगे संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्योंकेसमझमें नहींआता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्‌बिचारेंगा उसकोसत्य२पदार्थोंकेप्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा और अन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहै किइसकायथावतअभिप्रायविचारकेभूषणवादूषणकरैं अन्यथानहीं और मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा बिरचिते दसमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्यावर्त्तवासिमतखण्डनमण्डनेविध्यस्यामः ॥ सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्। तंदेवनिर्मितंदेश मार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १ ॥ म० सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी है उससेलेकेनैपालके पूर्वभागकीनदीसेलेके समुद्रतकइनदोनोंके बीचमेंजोदेशहै सोआर्यावर्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अर्थातदिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदेवनदीइनका नामहै सोदेश देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलकेबीचमें ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठपदार्थहोतेहैं और छःऋतुयथावत् वर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं इसदेशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसेपूर्णहो जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्यावर्त्त है आर्य नामश्रेष्ठमनुष्य औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्तहै इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्तकहतेहैं ॥ १ ॥ एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं
स्वंचरित्रंशिक्षेरन् पृथिव्यांसर्वमानवाः ॥ २ ॥ म० इसदेशमेंअ-
ग्रजन्मानाम सबश्रेष्ठगुणोंसेसम्पन्न जोपुरुषउत्पन्नहोवै उस्से सब
भूगोलकीपृथिवीकेमनुष्यशिक्षा अर्थातबिद्यातथासंसारकेसवव्य-
वहारोंका यथावतबिज्ञानकरै इस्सेक्याजानाजाताहैकिप्रथमइस
मेंमनुष्योंकोसृष्टिभईथी पोछेसबद्वीपद्वीपान्तरमेंसबमनुष्यफैलगए
क्योंकिपृथिवीमेंजितनेमनुष्यहैं वेइसदेशवालोंसेबिद्यादिकशिक्षा
ग्रहणकरैं औरसबदेशभाषाओंकामूलजोसंस्कृत सोआर्यावर्तही
मेंसदासेचलाआताहैआजकालभोकुछ२देखनेमेंआताहै परन्तु
फिरभोसबदेशोंसेसंस्कृतकाप्रचारअधिकहै जर्मनोऔरबिलायत
आदिकदेशोंमेंसंस्कृतकेपुस्तकइतनेनहींमिलतेजितनेकिआर्यावर्त
देशमेंमिलतेहैं औरजोकिसीदेशमें संस्कृतकेबहुतपुस्तकहोंगे
सोआर्यावर्त्तहीसेलिएहोंगे इसमेंकुछसन्देहनहीं सोइसदेशसे
मिश्रदेशवालोंनेपहिलेबिद्याग्रहणकीथीं उस्से यूनानदेश,उस्से
रूमफिररूमसे फिरंगस्थान आदिमेंबिद्याफैलीहैपरन्तु संस्कृत
केबिगड़नेसे गिरीशलाटोनअंगरेज औरअरबदेशवालोंकीभाषा
बनगईहैं सोइनमेंअधिकलिखनाकुछआवश्यकनहीं क्योंकिइति-
हासोंकेपढ़नेवालेसबजानतेहैं औरपताभीऐसाहीमिलताहै एक
गोल्डस्टकरसाहिबने पहिलेऐसाहीनिश्चयकियाहै किजितनीबि-
द्यावामतफैलेहैं भूगोलमेंबेसब आर्यावर्त्तहीसेलिएहैं औरका-
शीमेंबालेएटनसाहिबनेयहीनिश्चयकियाहै किसंस्कृतसबभाषाओं
कीमाताहै तथादाराशिकोहबादशाहनेभी यहनिश्चयकियाहै कि
जोबिद्याहैसोसंस्कृतहीहै क्योंकिमैंनेसबदेशोंकी भाषाओंकीपु-
स्तकदेखा तोभीमुझकोबहुतसन्देहरहगए परन्तु जबमैंनेसंस्कृत
देखातबमेरेसबसन्देहनिवृत्तहोगए औरअत्यन्तप्रसन्नतामुझको
भई औरकाशीमेंमानमन्दिरजोरचाहै उसमेंमहाराजसवाईमा-
नसिंहजीने खगोलकेकलाऔरयन्त्रऐसे रचेथे किजिसमेंखगोल

कासबहाल देखपड़ताथा परन्तु आजकालउसकी मरम्मतनहोने से बहुतकलायन्त्रबिगड़गए हैं तोभीकुछ२ देखपड़ताहै फिरआज कालमहाराज सवाईरामसिंहजीने कुछमरम्मतस्थानकी कराई है जोउसयन्त्रकोभीकरावेंगेतोकुछरोजबनारहेगाअन्यथानहीं जबसे महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्त कोबुरीदशाआई है सोनि-त्य२बुरीहीदशाहोतीजातीहै क्योंकिउसयुद्धमें अच्छे २ विद्यावान राजाऔरब्राह्मणलोगप्राय:मारेगए फिरकोईराजापूर्णविद्यावा-ला इसदेशमेंनहींभया जबराजाबिद्वान औरधर्मात्मानहींभया तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें लड़नेलगे क्योंकिजबविद्यानहींहोती तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमाराफिर प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिसने जितनापाया उसकावह राजावाजमीदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी बिद्याकापरीश्र-मछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगविद्या हीनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीबिद्याहीनहोतेचले केवल दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छे का-महोतेथेवेसबबन्धहोतेचले वेदादिकबिद्याकाप्रचारभीबहुतथो-ड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीबिचारकिया किब्रा-ह्मणबर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहै सबकापूज्यहै क्योंकिपूर्ण बिद्यासे ब्राह्मणबर्णहोताहै यहबर्णाश्रमकीसनातनरीतिहै सोई ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखीहै सोबिद्यादिकगुणोंसेतोबर्णव्य-वस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेबर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया है फिरजन्महीसेब्राह्मणादिकबर्णोंकाअभिमानकरनेलगे फिरबि-द्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्राय:राजाऔरप्र-जामें मूर्खताअधिक२ होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोग अपने चर णऔरशरीरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

मानउनमें होनेलगा उनबिद्याहीनराजाओंको औरप्रजास्थपुरुषोंकोबशीभूत ब्राह्मणोंनेकरलिए यहांतककि सोना, उठनाऔर कोसदोकोसतकजाना वहभीब्राह्मणोंकीआज्ञाकेबिनानहींकरना औरजोकोईकरेगा सोपापीहोजायगा फिरशनैश्चरादिकग्रहऔरनानाप्रकारके भूतप्रेतादिकोंकाजाल उनकेऊपर फैलानेलगे औरबेमूर्खताकेहोनेसे माननेभीलगें फिरराजा लोगोंको ऐसा निश्चयसबलोगोंनेमिलकेकराया किब्राह्मणलोगकुछभीकरैं परन्तु इनकोदण्डनदेनाचाहिए जबदण्डनहीहोनेलगा तबब्राह्मणलोग अत्यन्तप्रमादकरनेलगे औरक्षत्रियादिकभी फिरबड़े२ ऋषिमुनिऔरब्रह्मादिककेनामोंसे श्लोकऔरग्रन्थरचनेलगे उनमेंप्रायः यहीबातलिखी किब्राह्मणसबकापूज्यऔरसदाअदण्ड्यहै फिरअत्यन्तप्रमादऔरबिषयासक्तिसे बिद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम औरशूरबीरतानष्टहोगई औरपरस्पर ईर्ष्याअत्यन्तहोगई किसोको कोई देखनसकै औरकोई२केसहायकारीनरहे परस्परलड़नेलगें यह बातचीनआदिकदेशोंमेंरहनेवाले जैनोंनेसुनोऔरव्यापारादिककरनेके हेतुइसदेशमें आतेथें सोप्रत्यक्षभी देखोफिर जैनोंने बिचारकिया किइससमयआर्याबर्त्त देशमें राज्यसुगमतासेहोसक्ताहै फिरबेआएऔरराज्यभी आर्याबर्त्तमेंकरनेलगे फिरथोरे२बोधगयामेंराज्यजमाके औरदेशदेशान्तरमेंफैलानेलगे सो वेदादिकसंस्कृत पुस्तकोंकीनिन्दा करनेलगे औरअपनेपुस्तकोंके पठनपाठनकाप्रचार तथाअपनेमतकाउपदेशभीकरनेलगे सोइसदेशमेंबिद्याकेनहींहोनेसे बहुतमनुष्योंनेउनके मतकास्वीकार करलिया परन्तु कनौजकाशीपर्वतदक्षिणऔरपश्चिमदेशकेपुरुषोंनेस्वीकारनहींकियाथा परन्तु,बेबहुतथोड़े होथेवेहीबेदादिकपुस्तकोंका पठनऔरपाठनकर्ते औरकरातेथे फिरइनोंनेबर्णाश्रम व्यवस्थाऔरबेदोक्तकर्मोंकोमिथ्या२दोषलगाके अश्रद्धाऔरअप्रवृत्तिबहुतकरादिया फिरयज्ञोपवीतादिककर्मभीप्रायःनष्टहोग-

या औरजो२ वेदादिकोंकी पुस्तकपाया औरपूर्वके इतिहासोंका उनकाप्रायःनाशकरदिया जिस्सेकिइनकोपूर्वअवस्थाका स्मरणभी नरहै फिरजैनोंकाराज्यइसदेशमें अत्यन्तजमगया तबजैनभीबड़े अभिमानमेंहोगए औरकुकर्म,अन्यायभी करनेलगे क्योंकि सबराजाऔरप्रजा उनकेमतमेंहीं होगए फिरउनको डरवाशंका किसीकीनरही अपनेंमतवालोंकोअच्छे२अधिकारऔरप्रतिष्ठाकरनेलगे औरवेदादिकोंकोपढैं तथाउनमेंकहेकर्मोंकोकरैं उनकोअप्रतिष्ठाकरनेलगे अन्यायसेभीउनकेऊपरजालस्थापनकरनेलगे अपनेमतकापण्डितवासाधु उनकोबड़ीप्रतिष्ठाकरनेलगे सोआजतकभीऐसाहोकतेहैं औरबहुतस्थान२मेंबड़े२मन्दिररचलिए औरउनमेंअपनेआचार्योंकोमूर्त्ति स्थापनकरदिया तथा उनकोपूजाभी अत्यन्तकरनेलगे सोजैनोंकेराज्यहीसे मूर्त्ति पूजन चलीइसकेआगेनथी क्योंकिजितनेऋषिमुनियोंकेकिएप्राचीनग्रन्थहैंमहाभारतयुद्धकेपहिलें जोकिरचेगएहैंउनमेंमूर्त्तिपूजनका लेशमात्रभी कथननहीहै इस्से दृढ़निश्चयसे जानाजाताहै किइस आर्यावर्त्त देशमेंमूर्त्ति पूजननहींथीकिन्तु जैनोंकेराज्यहीसेचला है एकद्रविड़देशकेब्राह्मणकाशीमेंआके एकगौडपादपण्डितथे उनकेपासव्याकरणपूर्वक वेदपर्यन्त विद्यापढ़ीथी जिसकानामशङ्कराचार्यथा वेबड़ेपण्डितभएथे उननेविचारकिया कियहबड़ाअनर्थभया नास्तिकोंकामतआर्यावर्त्तदेशमेंफैलगयाहै औरवेदादिक संस्कृतविद्याकाप्रायःनाशहीहोगयाहै सोनास्तिकमतका खण्डन और वेदादिकसत्यसंस्कृतविद्याका विचारवेअपनेमनसे ऐसाबिचारकरके सुधन्वानामराजाथा उसकेपासचलेगए क्योंकिबिना राजाओंकेसहायसेयहबातनहीहोसकेगीसोसुधन्वाराजाभीसंस्कृतमेंपण्डितथा औरजैनोंकेभीसंस्कृतसबग्रन्थपढ़ाथा सुधन्वाजैन केमतमेंथा परन्तुबुद्धि औरविद्याके होनेसे अत्यन्तविश्वासनहीं था क्योंकिवहसंस्कृतभीपढ़ाथा औरउसकेपासजैनमतके पण्डित

भीबज्जतथे फिरशंकराचार्यनें राजासे कहाकि आप सभाकरावैं
औरउनसेमेराशास्त्रार्थहोय औरआपसुनैं फिरजोसत्यहोय उ-
सकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उ-
समेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमत
केबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और
वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्ड-
तोंनेऐसीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे
औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उस
शास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंका
पराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचा-
र्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा
उसकोजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरस-
भाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंविचारभया कि
आर्यावर्त्त मेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इस्से वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन
कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्य
नेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहींहै
इस्से शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तुकोईउपाधिकरै अथ-
वाशास्त्रार्थहोनकरैं तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृ-
त्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरैं सोराजा
नेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तुहमारेछःरा-
जासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे
शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबज्जतअच्छीबातहै
फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैन
मतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछःभीसुधन्वासेमिलेऔर
सबकीसम्मतिसेसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो
आर्यावर्त्त मेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामक
सन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिस्से बज्जतजैन

लोगोंकेपण्डितपरास्तहोगए फिरउनसातराजाओंनेशङ्कराचार्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया औरसबनेकहाकिआपसर्वत्रआर्यावर्त्त में भ्रमणकरैंऔरजैनोंकाखण्डनकरैं इसमेंकोईजबर्दस्तीकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगसमझालेंगे फिरशंकराचार्यजीने जहां२जैनोंकेपण्डितऔरअत्यन्त प्रचारथा वहां२भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया परन्तु जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया क्योंकिदोतीनदोषउनकेबड़ेभारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसरावेदादिकसत्यशास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसहोताहै इसकारचनेवालाकोईनहीं इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं वेजैनमतकेखण्डनमण्डनमेंविस्तारसेलिखेंगे फिरजितनीजैनोंके मन्दिरमेंमूर्त्तियींथीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवांवापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्ति जैनोंनेबिनाटूटोभी भयसेजमीनमेंगाड़दिया सोआजतकवेटूटोऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकीपृथिवीखोदनेसे निकलतीहैं परन्तु मन्दिरनहीतोड़ेगए क्योंकि शंकराचार्य औरराजालोगोंने बिचारकिया मन्दिरोंकोतोड़ना उचितनहीं इनमेंवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे क्योंकिलाखहांकरोड़हांरुपैएंकोइमारतहैं इसकोतोड़नाउचितनहीं औरकुछ२गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदेखनेमेंआर्यावर्त्त देशमेंआतेहैं इसकेपीछेसर्वत्र वेदादिकोंकेपढ़ने औरपढ़ानेकीइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई शंकराचार्यऔरसुधन्वादिकराजा तथाऔरआर्यावर्त्तबासीश्रेष्ठलोगोंने बिचारकियाकि बिद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें ३२,वा,३३,बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया उनकेमरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया यहभीआर्यावर्तदेशवालोंकेबड़ेअभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभीजीतेतोबिद्याका प्रचार यथावत्होजाता फिरआर्यावर्त्तको ऐसीदुर्दशा कभीनही

होती क्योंकि जैनोंका खण्डन तो होगया परन्तु विद्याप्रचार यथावत् नहीं भया इससे मनुष्योंको यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्यका निश्चय नहीं होनेसे मनमें सन्देह होरहा कुछ तो जैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रोंका भी यह बात एकईसवा बाइससै बरसकी है इसके पीछे २००वा३००बरसतक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा फिर उज्जयनमें बिक्रमादित्य राजा कुछ अच्छा भया उसने राजधर्म कुछ२ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्यायसे होने लगेथे उसके राज्यमें प्रजाको सुख भी भयाथा क्योंकि बिक्रमादित्य तेजस्वी बुद्धिमान और शूरवीर तथा धर्मात्मा इससे कोई और अन्याय नहीं करने पाताथा परन्तु वेदादिक विद्याका प्रचार उसके राज्यमें भी यथावत् नहीं भयाथा उसके पीछे ऐसा राजा नहीं भया किन्तु साधारण होतेगए फिर बिक्रमादित्यसे ५००वर्षके पीछे राजा भोज भए उसने संस्कृतका प्रचार किया सो नवीन ग्रन्थोंका रचना और प्रचार कियाथा वेदादिकोंका नहीं परन्तु कुछ२ संस्कृतका प्रचार भोजराजाने ऐसा कराया कि चाण्डाल और हल जोतनेवाले भी कुछ२ लिखना पढ़ना और संस्कृत बोलते भी थे देखना चाहिए कि कालिदास गड़रियाथा परन्तु श्लोकादिक रचलेताथा और राजा भोज भी नए२ श्लोक रचनेमें कुशलथा कोई एक श्लोक भी रचके लेजाताथा उनके पास उसका प्रसन्नतासे सत्कार करतेथे और जो कोई ग्रन्थ बनाताथा तो उसका बड़ाभारी सत्कार करतेथे फिर लोभसे बहुत संसारमें मनुष्य लोग नए ग्रन्थ रचने लगे उससे वेदादिक सनातन पुस्तकोंकी अप्रवृत्ति प्रायः होगई और संजीवनी नाम राजा भोजने इतिहास ग्रन्थ बनायाहै उसमें बहुत पण्डितोंकी सम्मति है और यह बात उसमें लिखी है कि तीन ब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण पण्डितोंने रचेथे उनसे राजा भोजने कहा कि औरके नामसे तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहीं था और महाभारत की बात लिखी है कि कितने हजार श्लोक २०बरसके बीचमें व्यासजीका नाम करके लोगोंने मिला

दिए हैं ऐसे ही पुस्तक बढ़ेगा तो एक ऊंट का भार हो जायगा और ऐसे ही लोग दूसरे के नाम से ग्रन्थ रचेंगे तो बहुत भ्रम लोगों को हो जायगा सो उस संजीवनी ग्रन्थ में राजा भोज ने अनेक प्रकार की बातें पुस्तकों के विषय और देश के वर्त्तमान के विषय में इतिहास लिखे हैं सो वह संजीवनी ग्रंथ बटेश्वर के पास होली पुरा एक गांव है उस में चौबे लोग रहते हैं वे जानते हैं जिस के पास वह ग्रंथ है परन्तु लिखने वा देखने को वह पण्डित किसी को नहीं देता क्योंकि उस में सत्य२ बात लिखी है उस के प्रसिद्ध होने से पण्डितों की आजीविका नष्ट हो जाती है इस भय से वह उस ग्रंथ को प्रसिद्ध नहीं करता ऐसे ही आर्य्यावर्त्त वासी मनुष्यों की बुद्धि क्षुद्र हो गई है कि अच्छा पुस्तक वा कोई इतिहास उस को छिपाते चले जाते हैं यह इन की बड़ी मूर्खता है क्योंकि अच्छी बात जो लोगों के उपकार की उस को कभी न छिपाना चाहिए फिर राजा भोज के पीछे कोई अच्छा राजा नहीं भया उस समय में जैन लोगों ने जहां तहां मूर्त्ति मन्दिरों में प्रसिद्ध किया और वे कुछ२ प्रसिद्ध भी होने लगें तब ब्राह्मणों ने विचार किया कि इन के मन्दिरों में नहीं जाना चाहिए किन्तु ऐसी युक्ति रचैं कि हम लोगों को आजीविका जिस्से होय फिर उनने ऐसा प्रपञ्च रचा कि हम को स्वप्न आया है उस में महादेव, नारायण, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश, हनुमान्, राम, कृष्ण, नृसिंह, इन्हों ने स्वप्न में कहा है कि हमारी मूर्त्ति स्थापन कर के पूजा करैं तो पुत्र, धन नैरोग्यादिक पदार्थों की प्राप्ति होगी जिस२ पदार्थ की इच्छा करेगा उस२ पदार्थ की प्राप्ति उस को होगी फिर बहुत मूर्खों ने मान लिया और मूर्त्ति स्थापन करने कोई२ लगा फिर पूजा और आजीविका भी उन की होने लगी एक की आजीविका देख के दूसरा भी ऐसा करने लगा और कोई महाधूर्त्त ने ऐसा किया कि मूर्त्ति को जमीन में गाड़ के प्रातःकाल उठ के कहा मुझ को स्वप्न भया है फिर उन से बहुत लोग पूछने लगे कि कैसा स्वप्न भया है तब उन से उस ने कहा कि देव कहता है मैं जमीन में गड़ा हूं और दुःख पाता हूं मुझ को निकाल के मन्दिर में

स्थापनकरै औरतूंहीपुजारीमेराहो तोमैंसबकाम सबमनुष्योंकासिद्धकरूंगा फिरवेविद्याहीनमनुष्य उस्से पूछतेभए किवहमूर्त्ति कहांहै जोतुम्हारासत्यस्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां उसनेमूर्तिगाड़ीथी वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सब देखकेबड़ाआश्चर्यकिया औरसबनेउस्से कहाकि तूंबड़ाभाग्यवान् है औरतेरेपरदेवताकी बड़ीकृपाहै से हमलोग धनदेतेहैं इस्से मन्दिरबनाओ इसमूर्त्ति काउसमें स्थापनकरो तुमइसके पुजारी बनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेगें तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही किया औरउसकीआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीविकाकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्त्तताकरनेलगे औरविद्याहीन पुरुषउसकीमाननताकरनेलगे फिरप्राय:मूर्त्ति पूजन आर्यावर्तमें फैला एकमहम्मूदगजनवीइसदेशमेंआया और बहुतसीमूर्त्तियां सोनेऔरचांदियोंकीलूटलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको पकड़लिए औररातको पिसानपिसावै औरदिनमें गाजहूरआदि कोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदिया ऐसेवहआर्यावर्त्त में बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्यन्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबड़ी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर बालककोभीपकड़केदु:खदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउन्ने बड़ाअन्यायकियासोजिसदेशमें ईश्वरकीउपासनाकोछोड़केकाष्ठ पाषाण,वृक्ष,घास,कुत्ते,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाही फलहोगा उत्तमकहांसे होगा फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेकी पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदियाहै किहमारा आपलोगमन्दिर रचैं तोकैलाशकोछोड़के आर्यावर्त्त देशमेंमैंवासकरूं औरसब कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलोगोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचु-

बकपत्थर रक्खे जब मन्दिर पूरा भया तब सब देशों में प्रसिद्ध कर दिया कि उस दिन मध्य रात्रि में कैलाश से महादेव मन्दिर में आवेंगे जो दर्शन करेगा उसका बड़ा भाग्य और मरने के पीछे कैलाश को वह चला जायगा फिर उस समय में राजा, बाबू, स्त्री, पुरुष और लड़के बाले उस स्थान में जुटे फिर उन चारों धूर्त्तों ने मूर्त्ति मन्दिर में कहीं गुप्त रख दिई थी और मेला में ऐसा प्रसिद्ध कर दिया कि महादेव देव है सो भूमि को पग से स्पर्श न करेंगे किन्तु आकाश ही में खड़े रहेंगे ऐसा हमको स्वप्न में कहा है सो जब उस दिन पहर रात्रि गई तब सब को मन्दिर के बाहर निकाल दिए और किवाड़ बन्द कर के वे चारों भीतर रहे फिर उस मूर्त्ति को उठा के मन्दिर में ले गए और बीच में चुम्बक पाषाण के आकर्षणों से अधर आकाश में वह मूर्त्ति खड़ी रही और उन्होंने खूब मन्दिर में दीप जोड़ दिए फिर घण्टा, झल्लरी, शंख, रणसिंघा और नगारा बजाए तब तो बड़ा मेला में उत्साह भया और उनने द्वार वाजे खोल दिए फिर मनुष्यों के ऊपर मनुष्य गिरे और मूर्त्ति को आकाश में अधर खड़ी देख के बड़े आश्चर्य युक्त भए और लाखहां रुपैयों की पूजा चढ़ी अनेक पदार्थ पूजा में आए फिर वे चारों धूर्त्त ब्राह्मण बड़े मस्त होगए और महन्त होगए फिर नित्य मेला होने लगा करोड़हां रुपैयों का माल होगया सो वह मन्दिर द्वारका के पास प्रभास क्षेत्र स्थान में था और उस मूर्त्ति का नाम सोमनाथ रक्खा था फिर महमूद गजनवी ने सुना कि उस मन्दिर में बड़ा माल है ऐसा सुन के अपने देश से सेना ले के चढ़ा सो जब पंजाब में आया तब हल्ला होगया और सोमनाथ की ओर चला तब लोगों ने जाना कि सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ेगा और लूटेगा ऐसा सुन के बहुत राजा पण्डित और पुजारी सेना ले २ के सोमनाथ की रक्षा के हेतु इकट्ठे भए सोमनाथ के पास जब वह डेढ़सै दोसै कोस दूर रहा तब पण्डितों से राजाओं ने पूछा कि मुहूर्त्त देखना चाहिए हम लोग आगे जा के उन से लड़ें फिर पण्डित लोग इकट्ठे होके मुहूर्त्त देखा परन्तु मुहूर्त्त बना नहीं फिर नित्य मुहूर्त्त ही देखते रहे परन्तु

कोईदिनचन्द्रकोईदिन औरग्रहनहींबने कोईदिनदिकशूलसन्मुखआया कोईदिनयोगिनी औरकोईदिनकालनहींबना सोपण्डितोंकीबुद्धिको कालादिकोंकेभ्रमोंनेखालिया औरराजालोगबिना पण्डितोंकीआज्ञासे कुछकर्तेनहींथे सोप्राय:पण्डित औरराजा लोगमूर्खहोथे जोमूर्खनहोतेतोपाषाणादिकमूर्त्ति क्योंपूजते औरमुहूर्त्तादिकोंकेभ्रमोंमेंनष्टक्योंहोते ऐसेविचारकर्तेहीरहे उसकोसेनादूसरीमंजलपरपहुंची तबराजालोगोंने पण्डितोंसेकहा किअबतोजल्दीमुहूर्त्त देखो तबपण्डितोंनेकहाकिआजमुहूर्त्त अच्छानहींहै जोयाचाकरोगे तोतुमारापराजयही होजायगा तब वेब्राह्मणोंसेडरकेबैठेरहे तबमहमूदगजनवीधीरे२पांचछ:कोश कऊपरआकेठहरा औरदूतोंसे सबखबरमंगवाई किवेक्याकर्तेहैं दूतोंनेकहाकिआपसमेंमुहूर्त्तबिचाराकर्तेहैं महमूदगजनवीकेपास३०हजारसेनाथी अधिकनहीं औरउनके पास दो,तीन लाख फौजथी फिरउसकेदूसरेदिनप्रात:काल राजापण्डितपुजारीमिलकेमुहूर्त्त बिचारनेलगे सोसबपण्डितों नेकहाकि आजचन्द्रमा अच्छानहीं औरभीग्रहक्रूरहैं पुजारीलोग औरपण्डित मूर्त्ति के आगेजाकेगिरपड़े औरअत्यन्तरोदनकिया हेमहाराज इसदुष्ट कोखालेओ औरअपनेसेवकोंकासहायकरो परन्तु वहलोहाक्या करसक्ताहै औरसबसेकहनेलगेकि आपलोगकुछचिन्तामतकरो महादेवउसदुष्टकोऐसेहीमारडालेंगे वावहमहादेवकेभयसे यहांहीसेभागजायगा उसकाक्यासामर्थ्य है किसाक्षात् महादेवके पासआएके औरसन्मुख दृष्टिकरसके ऐसेसब परस्पर बकरहेथे फिरकुछलड़ाईभई औरमुसल्मानभीडरे किविजयहोगावापराजय उससमयमेंऔरपुस्तकफैलाके बहुतसेमन्त्रोंकाजपऔरपाठकर्तेथे औरकहतेथे किअबदेवताऔरमन्त्रहमारापाठ सिद्धहोताहै सोवहवहांहीं अन्धाहोजायगा सोवड़ीमण्डलीकी मण्डली जप,पाठऔरपूजाकररहीथी औरमूर्त्तिकेसाम्नेऔंधेगिरकेपुकार

तेथ एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितविचारतेथे मुहूर्त्त को उससमयमेंउसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहा- रोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपने२स्थानोंसेभा- गउठी औरवहमहमूदगजनवी सेनासहितधावाकरके उसस्थान परभट्टपहुंचा उसकोदेखके सबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसोमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरब- हुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिर केबैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्श- नसेधर्मजाताहै ऐसीमिथ्याबातसुनकेभागउठे फिरमन्दिरकेचा- रोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास प- हुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनमें पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहैं उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्ति कोनतोड़िए क्योंकिइस्से हमलोगोंकी बड़ीआ- जीविकाहै ऐसासुनके महमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तुउनको तोड़नेवालेहैं तबतोवेडरे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तुइसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतोनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमेंगयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेबतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापीटा तबउनने सबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसो धूर्त्तताकर- केठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंओरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै
महादेव यहतुमनेबड़ीधूर्त्तताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर
उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति
जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडाली सब
चुम्बकके निकलनेसे मूर्त्ति जमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्तिकोम-
हमूदगजनवीने अपनेहाथसेलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्तिकेपेटमें
मारा उससे मूर्त्ति फटगई उससे बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि
हीराआदिकअच्छे २रत्नवेपातेथे तबमूर्त्ति होमेंरखदेतेथें फिर
उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुसलायाभी फिर
उननेभयसेसबबतलादिया उनसेकहाकिजोतुम सबसच्चा२बतला-
देओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना,चांदीके पात्रोंको
भीबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह क-
रोड़कामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔ
रमजूरउसकेपासथें औरभीवहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमा-
लकोलादकेअपनेदेशकीओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत
औरपुजारीतथाक्षत्रिय,वैश्य,ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदश
हजारतकपकड़केसंगलेलिएथेंउनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें
थूकदिया औरथोड़े २सूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर
सफाकरवावै पिसवावै घासछिलवावै औरघोड़ोंकीलीदउठवावै
औरमुसल्मानोंकेजूठेंबरतनमजवावै औरसबप्रकारकीनीचसेवा
उनसेलेऐसेकराता२जबमक्काकेंपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने
कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरीद-
शासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरान्में लिखाहै किकाफरोंकोलूट
ले उनकीस्त्रीछीनले भूठफरेबसेउनकासबमालले२ औरउनको
मारडाले तोभीकुछदोषनहीं किन्तु उसमुसल्मानको बिहिस्तअ-
र्थातउसकोस्वर्गबासमिलताहै वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै
फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़ै और

कुरानकेऊपरविश्वासनलेआवै उसकोबिगाड़नेऔरमारनेमेंकुछदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इस्से उनको अन्याय करनेमेंकुछभयनहींहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतोबाशब्दसे छूटजाताहै इस्से वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगे ऐसेहोबारहदफेवह आयाहै औरदोतीनबारमथुराकोभीदुर्दशाऐसीकिईथी औरजहां२वहगयाथा वहां२ऐसीही उसदेशकीदुर्दशाकिईथी औरडांकूकोनांईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाताथा उसदिनसेमुसल्मान्लोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्याबर्तप्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त्त देशअपनेहीं दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशबाल्यावस्थामेंबिवाहविद्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकीप्रवृत्ति नानाप्रकारके मिथ्यामजहबोंकाप्रचार बिषयासक्तिऔरवेदबिद्याकालोपजबतक एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त्त देशवालोंकी अधिक२दुर्दशाहीहोगी औरजोसत्यबिद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वर कीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदुःखनष्ट होजांय औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैं फिरचारब्राह्मणोंनेविचारकियाकिकोई क्षत्रियराजाइसदेशमें अच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचाहिए वेब्राह्मणचारौंअच्छेथे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके अच्छीबातबिचारी यहअच्छेपुरुषोंकाकाम है नीचकानहीं फिर उननेक्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छेबालकछांटलिए औरउन क्षत्रियोंसेकहाकि तुमलोग खानेपीनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना उननेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजपर्वतकेऊपरजाकेरहेऔरउनबालकोंकोअक्षराभ्यासऔरश्रेष्ठव्यवहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाविधि संस्कारभीउनने किया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा उननेकिया फिरव्याकरणछःदर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोश यथावत्पदार्थविद्याउनकोपढ़ाई फिरवैद्यकशास्त्रतथा गान विद्या, शिल्पविद्या, औरधनुर्विद्या अर्थात्युद्धविद्या भीउनकोअच्छीप्रकारसेपढ़ाई फिरराजधर्मजैसाकिप्रजासेवर्तमानकरनाऔरन्यायकरना दुष्टोंकोदण्डदेना श्रेष्ठोंकापालनकरना यहभीसब पढ़ाया ऐसेपचीसवा २६ बरसकी उमरउनकीभई और उनपण्डितोंकेस्त्रियोंनेऐसेहीचारकन्या रूपगुणसम्पन्नउनकोअपनेपास रखकेव्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यक, गानविद्या, तथा नानाप्रकारके शिल्पकर्मउनकोपढ़ाए औरव्यवहारकी शिक्षाभीकिया तथायुद्ध विद्याकीशिक्षा गर्भमेंबालकोंकापालन औरपतिसेवा काउपदेश भीयथावत्किया फिरउनपुरुषोंकोपरस्परचारोंकायुद्धकरना औरकरानेकायथावत्अभ्यासकराया ऐसेचालीस२वर्षके वेपुरुषभए बीस२वर्षकीवेकन्याभईं तबउनकीप्रसन्नताऔरगुणपरीक्षासेएक सेएककाविवाहकराया जबतकविवाहनहींभयाथा तबतकउनपुरुषोंकीऔरकन्याओंकी यथावत्रक्षाकिईगईथी इस्सेउनकोविद्या बल, बुद्धि, तथापराक्रमादिकगुणभी उनकेशरीरमेंयथावत्भएथे फिरउनसेब्राह्मणोंनेकहाकि तुमलोगहमारीआज्ञाकरो तबउन सबोंनेकहाकि जोआपकीआज्ञाहोगी सोईहमकरेंगे तबउननेउनसेकहाकि हमनेतुम्हारेऊपरपरीश्रमकियाहै सोकेवलजगत् केउपकारकेहेतुकियाहै सोआपलोगदेखोकि आर्य्यावर्त्त मेंगदर मचरहाहै सोमुसल्मान्लोग इसदेशमेंआकेबड़ीदुर्दशा करतेहैं औरधनादिकलूटकेलेजातेहैं सोइसदेशकीनित्यदुर्दशाहोतीजातीहै सोआपलोगयथावत्राजधर्मसेपालनकरो औरदुष्टोंको यथावत्दण्डदेओ परन्तु एकउपदेशसदाहृदयमें रखना किजबतक वीर्यकीरक्षा औरजितेन्द्रिय रहोगे तबतकतुमारा सबकार्यसिद्ध होताजायगा औरहमनेंतुम्हाराविवाहअबजोकरायाहै सोकेवल परस्पररक्षाकेहेतुकियाहै कितुमऔरतुमारीस्त्रियां संग२रहोगे तोबिगड़ोगेनहीं औरकेवलसन्तानोत्पत्तिमात्रविवाहकाप्रयोजन

जानना और मनसे भी परपुरुष वा परस्त्री का चिन्तन भी नहीं करना और विद्या तथा परमेश्वर की उपासना और सत्यधर्म में सदा स्थिर रहना जबतक कुमारा राज्य न जमै तबतक स्त्री पुरुष दोनों ब्रह्मचर्याश्रम में रहो क्योंकि जो क्रीड़ासक्त होगे तो बलादिक तुम्हारे शरीर न्यून होजायगे तो युद्धादिकों में उत्साह भी न्यून होजायगा और ह भी एक २ के साथ एक २ रहेंगे सो हम और आप लोग चले और चल यथावत् राज्य का प्रबन्ध करैं फिर वे वहां से चले वे चार इन नामों प्रख्यात थे चौहान पवार सोलंकी इत्यादिक उनने दिल्ली आदिक मे राज्य किया था कुछ २ प्रबन्ध भी भया था जब राज्य करने लगे कुछ का के पीछे सहाबुद्दीन गोरी एक मुसल्मान था सो भी उसी प्रकार इस दे में आया था कनोज आदिक में उस समय कनोज का बड़ा भारी रा था सो इसके भय के मारे अपने हीं जाके उनको मिला और युद्ध कु भी नहीं किया फिर अन्य च वह युद्ध जहां तहां किया सो उसका विज भया और आर्यावर्त वालों का पराजय भया फिर दिल्ली वालों से को बड़ा उसका युद्ध भया उस युद्ध में पृथिराज मारा गया और उसने अ ना सेनाध्यक्ष दिल्ली में रक्षा के हेतु रख दिया उसका नाम कुतुबुद्दीन वह जब वहां रहा तब कुछ दिन के पीछे उन राजाओं को निकाल के अ पराजा भया उस दिन से मुसल्मान लोग यहां राज्य करने लगे औ सबने कुछ २ जुलुम किया परन्तु उनके बीच में से अकबर बादशाह च्छा भया और न्याय भी संसार में होने लगा सो अपनी बहादुरी और बुद्धि से सब गदर मिटा दिया उस समय राजा और प्रजा सब सु थे परन्तु आर्यावर्त्त के राजा और धनाढ्य लोग विक्रमादित्य के पीछे ब विषयसुख में फसरहे थे उससे उनके शरीर में बल, बुद्धि, पराक्र और शूरबीरता प्रायः नष्ट होगई थी क्योंकि सदा स्त्रियों का संग गा बजाना, नृत्य देखना, सोना अच्छे कपड़े और आभूषण को धार करना नाना प्रकार के अतर और अञ्जन नेत्र में लगाना इससे उ शरीर बड़े कोमल होगए थे कि थोड़े से ताप वा शीत अथवा वायु

सहन नहीं हो सक्ता था फिर वे युद्ध क्या कर सकेंगे क्योंकि जो नित्य स्त्रियों का संग करेंगे और विषयभोग उनका भी शरीर प्रायः स्त्रियों कीनांई हो जाता है वे कभी युद्ध नहीं कर सक्ते क्योंकि जिनके शरीर दृढ़ रोग रहित बल, बुद्धि और पराक्रम तथा वीर्य की रक्षा और विषयभोग में नहीं फसना नाना प्रकार की विद्या का पढ़ना इत्यादिक के होने से सब कार्य सिद्ध हो सक्ते हैं अन्यथा नहीं फिर दिल्ली में औरंगजेब एक बादशाह भया था उसने मथुरा, काशी, अयोध्या और अन्य स्थानों में भी जा२ के मन्दिर और मूर्त्तियों को तोड़ डाला और जहां२ बड़े२ मन्दिर थे उस२ स्थान पर अपनी मस्जिद बना दिया जब वह काशी में मन्दिर तोड़ने को आया तब विश्वनाथ कूएमें गिर पड़े और माधव एक ब्राह्मण के घर में भाग गए ऐसा बहुत मनुष्य कहते हैं परन्तु हमको यह बात झूठ मालूम पड़ती है क्योंकि वह पाषाण वा धातु जड़ पदार्थ कैसे भाग सक्ता है कभी नहीं सो ऐसा भया कि जब औरंगजेब आया तब पुजारियों ने भय से मूर्त्ति उठा के और कूएमें डाल दिया और माधव की मूर्त्ति उठाके दूसरे के घर में छिपा दिया कि वह न तोड़ सके सो आज तक उस कूएं का बड़ा दुर्गन्ध जल उसको पीते हैं और उसी ब्राह्मण के घर में माधव की मूर्त्ति को आज तक पूजा करते हैं देखना चाहिए कि पहिले तो सोना, चांदी की मूर्त्तियां बनाते थे तथा हीरा और माणिक को आंख बनाते थे सो मुसल्मानों के भय से और दरिद्रता से पाषाण, मिट्टी, पीतल, लोहा, और काष्ठादिकों की मूर्त्तियां बनाते हैं सो अब तक भी इन सत्यानाश करनेवाले कर्म को नहीं छोड़ देते क्योंकि छोड़ें तो तब जो इनको अच्छी दशा आवे इनको तो इन कर्मों से दुर्दशा ही होनेवाली है जब तक कि इनको नहीं छोड़ते और महाभारत युद्ध के पहिले आर्यावर्त्त देश में अच्छे२ राजा होते थे उनकी विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम तथा धर्मनिष्ठा और शूरवीरादिक गुण अच्छे२ थे इससे उनका राज्य यथावत् होता था सो इक्ष्वाकु, सगर, रघु, दिलीप आदिक चक्रवर्त्ती हुए थे और किसी प्रकार का पाखण्ड

उनमेंनहींथा सदाविद्याकीउन्नति औरअच्छे२कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहींहोताथा तथा अधर्मसेकभीनहींयुद्धकर्तेथेऔरयुद्धसेनिवृत्तनहीहोतेथे उससमय सेलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसीदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेनहीं सोजैनोंने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनेसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहै क्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्तरकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छी प्रकाररक्षाकर्तेहैं औरजिसपुस्तकके सौरुपैएलगतेथे उस पुस्तकका छापाहोनेसेपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तु अङ्गरेजोंमें भीएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपरवतमहाराजअमृतरायजीका पुस्तकालयकोजलादियाउसमेंकरोड़हांरुपैएके लाखहांअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तबासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्ते हैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगे तोअधिक२ होनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाऔरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याके प्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरबेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागकरैं तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमूर्त्तिपूजन बैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्यऔरकथाकहनेवालोंकेजालों सेछूटें तबउनकाअच्छा होसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजनादिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकर्तेहो उत्तर यह मूर्त्ति पूजनसनातनसेनहीं किन्तु जैनोंकेराज्यहोनेसे आर्यावर्त्त में चलाहै जैनोंनपरशनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०कपिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खे थें उनकेबहुत२चेलेभयेथें औरउनमें उनकीअत्यन्तप्रीतिभीथी इससे उनचेलोंनेअपनेगुरूओंकी मूर्त्ति बनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्यनेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्तियांरची

औरउनकानाम महादेवआदिकरखदिए उनमूर्त्तियोंसेकुछबि-
लक्षणबनानेलगे औरपुजारीलोगजैन तथामुसल्मानोंकेमन्दिरों
कीनिन्दाकरनेलगे। नवदेद्यावनीभाषांप्राणै:कण्ठगतैरपि। ह-
स्तिनाताड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमन्दिरम्॥१॥ इत्यादिकश्लोक
बनाएहैं किमुसल्मानोंकीभाषाबोलनीऔरसुननीभीनहीचाहिए
औरमत्तहस्ती अर्थात्पागलपीछेमारनेकोदौड़े सोजैनकेमन्दिर
मेंजानेसेबचसक्ताभीहोय तोभीजैनकेमन्दिरमेंनजाय किन्तुहाथी
केसन्मुखमरजाना उस्से अच्छाऐसी२ निन्दाकेश्लोकबनाएहैं सो
पुजारीपण्डितऔरसम्प्रदायीलोगोंनेचाहाकि इनकेखण्डनकेबि-
ना हमारीआजीविकानबनेगी यहकेवलउनकामिथ्याचारहै कि
मुसल्मानकीभाषापढ़नेमें अथवाकोईदेशकीभाषापढ़नेमें कुछदो-
षनहीहोता किन्तुकुछगुणहीहोताहै। अपशब्दज्ञानपूर्वकेशब्द-
ज्ञानेधर्म:। यहव्याकरण महाभाष्यकावचनहै इसकायहअभि-
प्रायहै किअपशब्दज्ञानअवश्यकरनाचाहिए अर्थात्सबदेशदेशा-
न्तरकीभाषाकोपढ़नाचाहिए क्योंकिउनकेपढ़नेसेबहुतव्यवहारों
काउपकारहोताहै औरसंस्कृतशब्दकेज्ञानकाभीउनकोयथावत्
बोधहोताहै जितनेदेशोंकोभाषाजानैं उतनाहीपुरुषकोअधिक
ज्ञानहोताहै क्योंकिसंस्कृतकेशब्द बिगड़केदेशभाषा सबहोतीहै
इस्सेइन केज्ञानोंसेपरस्परसंस्कृतऔरभाषाकेज्ञानमें उपकारही
होताहै इसोहेतुमहाभाष्यमेंलिखाकिअपशब्दज्ञानपूर्वकशब्दज्ञा-
नमें धर्महोताहै अन्यथानहीं क्योंकिजिसपदार्थका संस्कृतशब्द
जानेगा औरउसके भाषा शब्दकोनजानेगा तोउसके यथावत्प-
दार्थकाबोध औरव्यवहारभी नहींचलसकेगा तथामहाभारतमें
लिखाहै कियुधिष्ठिरऔरबिदुरादिकअरबीआदिक देशभाषाको
जानतेथे सोईजबयुधिष्ठिरादिकलाक्षागृहकोओरचले तबबिदुर
जीनेयुधिष्ठिरजीकोअरबीभाषामेंसमझायाऔरयुधिष्ठिरजीने अ-
रबीभाषासेप्रत्युत्तरदिया यथावत्उसकोसमझलिया तथाराजसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा और प्रजास्थ आएथें उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथे औरवेइसदेशमें आतेथे फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इससे क्याआयाकि देशदेशान्तरकी भाषाकेपढ़नें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तु बड़ाउपकारहीहोताहै और जितनेपाषाणमूर्त्तिके मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्तियांहैं वैसीआर्यावर्त्तवासिओंकेमन्दिरोंमें भी जड़मूर्त्तियां हैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछ विशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमें नजाना औरअपनें मन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिंधबनालियाहै आजीविकाकेहेतु प्रश्न वेदशास्त्रमेंमूर्त्तिपूजनलिखाहै औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहोतीहै उसमेंदेवकोशक्तिभीआजातीहै फिरआपखण्डन क्योंकतेहैं उत्तर वेदशास्त्रमेंमूर्त्तिपूजनकहीं नहीलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमेंशक्तिआतीहै प्रश्न सहस्रशीर्षापुरुषःउद्बुध्यस्वाग्ने प्राणदाअपानदा ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभीहोतीहै तथाप्रतिष्ठा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मेहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ इत्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै उत्तर इनमन्त्रोंकेअर्थनहीजाननेसेआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णईश्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषकेविशेषणहैं सोपुरुषकेनिराकारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहीबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः। इत्यादि-

कनिरुक्तमेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं
उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै।सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षी-
णितथा सहस्राणिपादा:असंख्याता:यस्मिन्पूर्णपुरुषेस: सहस्रशी-
र्षासहस्राक्ष: सहस्रपात्पुरुष: ॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और
जितनेपग, असंख्यात वेसबपूर्णजो परमेश्वरउसीमें बासकरते
हैं क्योंकिसबजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुव्रीहि
समासही अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने
से बहुव्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके
उत्तरार्द्ध मेंस्पष्टहै। सभूमिंसर्वत:स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।
पुरुषएवेदंसर्वंवेदाहमेतम्पुरुषम्॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंसेय-
होअर्थनिश्चितहोताहै औरसबजगत्कीउत्पत्तिभीपुरुषसेलिखीहै
बिनापरमेश्वरके किसीमेंनहोघटसक्ती इससे जोकोईकहेकिइनम-
न्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाहोतीहै उसकीबातमिथ्याजाननी और
प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकीस्थिति औरस्थापन का
होना जोमूर्त्ति में प्राणआते तोमूर्त्ति चेतनहीहोजाती सोजैसी
पहिलेजड़थी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना,
पीना,बैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नही
करती इससे जोकोईकहेकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहबातउसकीमि-
थ्याजाननी औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछि-
द्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहेंकि
हमप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुरदेके
शरीरमेंक्योंनहीप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं किसोराजा,बाबू औरसबज-
गत्के मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो
तुमलोगोंकोबहुतधनमिलेगा औरबड़ीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंन-
हीं ऐसीबातकर्तेहो जोवेकहेंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदिया
हैं वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिला
सक्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राणऔरचेतनतारहितजड़बनाएहैं उनकोंतुमचेतन औरप्राणसहितकैसेबनासकोगे कभीनहीं औरजोकहैंकिदेवऔरसिद्धपुरुषमृतककोजिलादेतेहैं उनसेपूछाजाताहै किवेदेवऔरसिद्ध क्यों मरजातेहैं इस्से प्राणप्रतिष्ठाकोसबबातझूठोहै प्राणदाअपानदा इनकाअर्थपूर्वार्द्ध मेंकरदियाहै वहींदेखलेना औरउद्बुध्यस्वाग्ने। इसकाभीअभिप्रायवहींदेखलेना। आत्मेहागच्छतुचिरंसुखंतिष्ठतुस्वाहा। इत्यादिसंस्कृतमिथ्याहो लोगोंनेरचलिया कोई सत्यशास्त्रमें नहींहैं देखनाचाहिए कि। शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवन्तुपीतए शंयोरभिस्रवन्तु नः॥१॥ अग्निर्मूर्द्धा० उद्बुध्यस्वाग्ने० इत्यादिकमन्त्रोंमेंकहींशनैश्चर,मङ्गल औरबुधादिकग्रहोंकानाम भीनहींहै परन्तुविद्याहीनहोनेसे आजीविकाकेलोभसे ब्राह्मणोंनेजालरचरक्खाहैकिएग्रहकोकांडोहैं सोकिसोनेऐसाविचाराकि ग्रहोंकामन्त्रपृथक्निकालनाचाहिए सोमन्त्रोंकाअर्थतोनहींजानता किन्तुअटकलसेउसनेयुक्तिरचो किशनैश्चरशब्दके आदिमें तालव्य शकार है। और शन्नोदेवो इस मन्त्र के आदि में भी तालव्यशकार है इस्से यहीशनैश्चरकामन्त्रहै तथापृथिव्याअयम्। इस्से परमेश्वरकाग्रहणहोताहै इसशब्दसेमङ्गलकोलिया औरउद्बुध्यस्वक्रियासेबुधकोलिया देखनाचाहिए किशंहै सुखकानाम उद्बुध्यस्वबुधअवगमनेधातुकोक्रियाहै इस्से बुधकोलियाइत्यादिकभ्रमसेग्रहोंकोग्रहणकियाहै सोयहकथा:कतललालबुभक्कड़कोनाई है जैसेकिकिसोगांवमें एकमूर्खपुरुषरहताथा उसकानामलालबुझक्कड़था कभीकिसीराजाकाहाथी उसगांवकेपास सेचलागयाथा औरकिसोनेदेखानहींथा फिरजबप्रातःकाल लोगउठके बाहरचले तबखेतऔरमार्गमें हाथीकेपगकेचिन्हदेखके बड़े आश्चर्यभए औरलालबुझक्कड़को बुलाकेपूछा किएहक्याहै तबवहबड़ारोनेलगाफिररोकेहसा तबसबनेउस्से पूंछाकितुमरोकेक्योंहसेतब उसनेउनसेंकहा किजबमैंमरजाऊंगा तबऐसोरबातोंकाउत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैंरोया औरहंसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा
सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैंहंसा तबउन्नेपूछा कि
इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुझक्कड़बुझिया औरनबू-
झाकोइ। पगमेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ॥ हिरनाअपनेपग
में चक्कीकेपाट बांधके कूदता२ चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह
हैं तबतोवेसुनके बड़प्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुझक्कड़
बड़े पण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनविषय औ-
रवेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल करर-
क्खाहै इससे वेदकोनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोंमेंऐ-
सी२झूठबातहोती तोवेदहीसच्चनहोसक्ते इससे यहीनिश्चयकरना
किअपने२मतलबकेहेतु मिथ्या२कल्पना लोगोंनेकरदियाहै और
वेदमेंसच्चबातहीहै इनबातोंका लेशभीनहींहै प्रश्न वेदअनन्तहैं
क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१
औरअथर्ववेदकी ६ शाखाहैं सोबहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें
पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो। अनन्ता वै वे-
दाः यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं
अर्थात्अनन्तशाखाहैं उत्तर शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीय हो-
तीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फ-
ल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसीही जो२शाखाप्रसिद्धहैं उन२शा-
खाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगीं किजैसाइनमेंसत्य२अर्थप्रति-
पादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इससे जाना जाताहै किइनप्रसिद्ध
शाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं
होगा ऐसाजोकोईकहै किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप
लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तसाखाओंमें लिखाहोगा औरआप
लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी
प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा
नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकतेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी,मिथ्याभाषण,विश्वासघातक,कन्या,माता,भगिनी,इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानेउनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचाण्डालका नामब्राह्मणहोय इस्सेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरैं और इनशाखाओंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इस्से जोवेद पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकीनांई ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिएहैं। जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य:। ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमेंहैं और तैत्तिरीय शाखामें। मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य। ऐसापाठहै। जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योतिः। शब्दसेस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परविरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इस्से विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरविरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानैं किसको मिथ्या इस्से वेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इस्से ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोवेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढ़ना वादेखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहैगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढ़निश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किवेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढ़सकैंगे इस्से सबलोगोंको भ्रमहीबनारहैगा इस्से वेदशब्द कायहअर्थहै जिस्सेजानाजायपदार्थ उसकानामवेदहै और वेत्तिसोयवेदः। जोजाननेवालाहै उसकानामभीवेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेंकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तिपैस्ते वेदाः। जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामवेदहै। सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणाहै वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इस्से उनका नामवेदहै इस्से
अनन्तावैवेदाः। ऐसाब्राह्मणश्रुतिमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै प्रश्न
पाषाणादिक मूर्त्ति पूजन वेदादिकोंमेंनहींहैं फिरकैसेयहपरंप-
रा चलीआई औरइतनी बडीप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नहीं
खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकरतेहैं उत्तर आपलोगसर्वज्ञन-
हींहै वात्रिकालदर्शीजोकि परम्पराकाठीक२निश्चयकरैं देखना
चाहिए किसत्यनारायण शीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनए२स्तोत्र नवी-
न२तीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहोजातेहैं औरइसकोपरंपरा
मानलेतेहैं औरवेअबकेबनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकर-
ताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक
अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायसेडरताभीहै सोलो
ककीपरंपराआपलोगमानेगें तोबहुतदोषआजांयगे औरकभीन
होसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवे औरउसकेकुलमेंपुत्रा-
दिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोडते
हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहीनिकाल
डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमू-
र्खवापण्डितनियमसेक्योंनहीहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय
औरजहलखानेकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजहलखानेको क्योंन-
हींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभीक्योंनहीमर
जाय प्रथमअंगरेजीइसदेशमें पढाईनहींजातीथी अबक्यों पढी
जातीहै रेलपरपहिलेचढनानहीहोताथा औरतारपर खबरन-
हीआतीजातीथी फिररेलपरचढते औरतारपरखबर भेजतेभे-
जातेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपरा
कानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै
अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनको मिथ्याप्रवृत्तिबडीभई
है सोकेवलविद्या,धर्म.विचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठरा-
जाओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहीहो-

ती तबअनेकभ्रमोंमेबुद्धिनष्टहोतीहै तबबहुतमूर्ख, अधर्मी,पाख-
ण्डो तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिरबड़े भ्रम
जालमेंपड़के वे धूर्त्त जैसाउपदेशकतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और
लोगोंकोबुद्धि बिपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै।
उनकोबुद्धिसेकुछनहीसूझता गतानुगतिकालोका नलोकाःपार-
मार्थिकाः। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम्॥ इसमेंयह
दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्रकाअर्घालेकेतर्पणऔरस्नानके
हेतुगया उसघाटमेंअन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डि-
तकोशौचकीइच्छाभई तबताम्बेकाअर्घाबालूमेंगाड़दिया औरउ-
सकेऊपरगोलोवालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरच-
लागया अन्यस्नान करनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डित
सेतोकिसोनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितने पिण्डबनाकेरक्खाथा
वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनके
हृदयमें ऐसाबिचारआयाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपु-
ण्यकेवास्ते हीकियाहोगाइसहेतुहमभीऐसाहीकरैं तबतकपण्डि-
तभी शौचहोकेआया औरउसनेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसेधरेहैं
औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसे
पूछाकि आपयहकामक्योंकतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआप
कादेखकेहमलोगभीकतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्या
प्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमारा
भीहै पण्डितनेबिचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितने
कहाकिअपना२पिण्डसबबिगारडारो नहीतोतुमकोबड़ापापहो-
गा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभया
होगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्ड बिगाड़डारो तबमैं
भीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबप-
ण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअ-
र्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेपूछाभीनहीं औरपिण्डधरनेलगगए तबउननेकहाकि आप काकामदेखकें हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्तिपूजन एककादेखकेदूसरेभीकरनेलगें ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकीनांई लोगगतानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेंड़आगेंचले उसकेपीछे सबभेंड़चलनेलगतीहैं औरजैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनवाभूकनेलगें उसकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं वैसीहीविद्याहोन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े२ आग्रहकरकेनष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थविचारसत्य२कोई नहोकर्ता इससे हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकर्तेहैं पक्षपातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंमे औरवेदादिकसत्यशास्त्रोंसेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वाव्यवहारसुखकेहेतुपरमेश्वरहीकीदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मूर्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपहिलेभए औरबहुतपण्डितभीहैं फिरखण्डननहीकोईकरता औरमूर्त्तियोंकापूजननहीकर्तेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकर्तेहैं सो आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैंआपसेपूछताहूं कि पण्डितकौनहोताहैजोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्तचिन्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह, मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक,पुराणमन्त्र,महोदध्यादिक,तंत्रग्रंथ औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै किन्तुअविवेकीहोबनजाताहै क्योंकि सदसद्विवेककर्त्रीबुद्धिःपण्डा। पण्डासंजातास्येतिसपण्डितः॥ जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवालीहोय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामविवेकयुक्त बुद्धिजिसकोहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगविचारकेदेखैं कियथावत्धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाविवेकइनपण्डितोंकोहैवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआजकालकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तुपण्डितलोगप्रायःनहींडरते

किन्तु कोईपण्डितसैकड़ोंमेंएकअच्छाभीहै परन्तुउसएककीविधूर्न लोगबातहोचलनेनहींदेते औरवहरुच्छजानताभीहै तोमनहींमें सत्यबातरखताहै क्योंकिवहसत्यकहै तोसबमिलकेउसकोदुर्दशा करदेतेहैं इसभयकामारावहभीमौनकरलेताहै परन्तु उनसत्यप- ण्डितोंकोमौनवाभयकरनाउचितनहीं क्योंकिमौनऔरभयकेर- हनेसे देशकाअकल्याण धर्मकानाश औरअधर्मकीवृद्धि, औरइन धूर्त्तोंकोबनपड़ेगी इस्से कभीमौनवाभय सत्यकरनेवाकहनेमेंन- हीकरनाचाहिए क्योंकिजोअच्छेपण्डितऔरबुद्धिमान्भयवामौ- नकरेंगें तोउसदेशकानाशहोहोजायगा औरवेदविद्यादिकनहो पढ़नेसे बहुतोंकोसत्य२निश्चयभीनहोहै इस्से वेखण्डननहींकर्तेहैं लोकके भयकेमारे किहमारीआजीविका नष्टहोजायगी जोहम खण्डनकरगें तोहमारी निन्दाहोगी औरआजीविकाभी नष्टहो जायगी इस्से ऐसाकहना वा करनानचाहिए जिस्से किसंसारमें विरोधहोजाय परन्तुमैंकहताहूं किभयतोश्रेष्ठपुरुषोंकोएकपरमे- श्वर औरअधर्मकेआचरणहोसेकरनाचाहिए औरजोमैं खण्डन कर्ताहूं सोप्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदादिकसत्यशास्त्रोंहोसेकर्ताहूं सोआजतककिसीनेवेदोक्तप्रमाणवाठीक२युक्तिनहींदियाक्योंकिप्र- माणऔरयुक्तितोसत्यबातमेंहोसक्तीहै असत्यमेंकभीनहीं औरइस मेंप्रमाणवायुक्तिकोईदेभीनहींसकेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न अनेकसंन्यासी,उदासीवैरागीऔरगोसांईआदिकखण्डननहींक- र्तेहैं औरपूजा कर्तेहैं उत्तर वेभी वैसेही संसारकी निन्दा और आजीविकासेडरतेंहै इस्से वेखण्डननहींकरतें वापूजा नहींछो- ड़ते। प्रश्न उनकोक्याआजीविकाकाभयहै औरसंसारका जिस्से किवेडरतेहैं क्योंकिउनकोविबाहमरनेमें द्वादशाहकरनाहोनहीं जिसमेंधनकोचाहनाहो औरमाता,पिता,स्त्री,पुत्रादिक,कुटुम्ब, और घरकोछोडके स्वतन्त्रहैं इस्से उनकोभयनहींहै परन्तु वेभी खण्डननहींकरते औरपूजाकर्तेहैं फिरआपहीबड़े बिरक्तआगए

कि इनबातोंका खण्डनकरतेहैं। उत्तर यहबाततोसत्यहै किउनको सत्यभाषणादिकका छोड़ना और पाषाणादिकमूर्त्तिकापूजनकरना उचितनहीं परन्तु वेभोसैकड़ोंमें कोईएकधर्मात्मा और पण्डित है अन्यजैसेगृहाश्रमसेथें वैसेहीबनेरहतेहैं और कितनेकगृहस्थों सेभीनीचकर्मकरतेहैं क्योंकि उननेकेवलखानेपोने और विषयभोग केहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ नहीमालूमपड़ती क्योंकि धर्मकीरक्षा और मुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त नहोहीतेहैं किन्तु अपनेशरीर और इन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंको नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय औरइनकीयथावतपरीक्षा करै तोहजारोंमेंएकबिरक्तताकेयोग्यनिकलगा बहुतमजूरीऔर हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकि जबपूर्णविद्या, जितेन्द्रियता, छल, कपटादिकदोषरहितहैं वें सत्य२उपदेश तथासबकेऊपर कृपाकरके वैराग्य, ज्ञान, और परमेश्वरकाध्यानकरैं तथाकाम, क्रोध, लोभ, मोहादिकदोषोंकोछोड़ें औरसत्यधर्म, सत्यविद्या, सत्यउपदेशकीसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिककैसेधूर्त्ततासे धनहरणकरके धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेलें औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसमर्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर, धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण करो सोबड़े२मन्दिरउनोनेबनाएहैंऔरनानाप्रकारकीमूर्त्तियां रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलाबत्तू, सच्चे झूठेआभूषणोंसे ऐसाजालरचाहै किदेखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रायःस्त्रीलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री औरव्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिससे जोचाहै उससे समागमबिना परीश्रमसेकरले उसमेंशयनआरती औरमङ्गलातोबहुधाव्यभिचारकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रोहीरहतीहै इससे आनन्दपूर्वकनिर्भयहीकेक्रीड़ाकरतेहैं परस्परमिलकेऔरउसमेंपापभोग-

होंगिनते क्योंकिएकश्लोकबनारक्खाहै॥ अहंकृष्णस्त्वंराधाह्या-
वयोरस्तु संगमः॥ परस्त्रीऔरपरपुरुषजबपरस्परगमनकराचाहैं
तोइसकोपढ़लें तोकुछपरस्त्रीगमन वा परपुरुष गमनमें कुछपाप
नहींहोताहै जबवेपरस्परसन्मुखहोवें तबपुरुषकहेकिमैंकृष्णहूं
तूंराधाहै तबस्त्रीबोलीकिमैंराधाहूं आपकृष्णहैं ऐसाकहकेकु-
कर्मकरनेकोलगजातेहैं उनकेदोमन्त्रहैं श्रीकृष्णःशरणंमम। यह
उनोनेमिथ्यासंस्कृतबनालियाहैइसकायहअभिप्रायहै किजोकृष्ण
सोईमेराशरणअर्थात्इष्टहैफिरभागवतकीकथामेंरासमण्डलकी
लीलासुनके ऐसानिश्चयकरतेहैं किहमलोगोंकेइष्टने जैसी लीला
कियाहै वैसीहमभीकरैं कुछदोषनहीं औरइसकाऐसाभीअर्थबन
सक्ताहै किजोश्रीकृष्णहैसोमेरीशरणकोप्राप्तहै। अर्थात्मेरासेवक
श्रीकृष्णबनजाय ऐसाअनर्थभीभ्रष्टसंस्कृतसेहोसक्ताहै सोयहम-
न्त्रगोसांईलोगदरिद्र,कङ्गाल औरसाधारणपुरुषोंकोदेतेहैं और
जोबडाआदमीहै उसकेहेतु दूसरामन्त्र बनायाहै वहीसमर्पणका
मन्त्रहै॥ क्लीं कृष्णायगोपीजनवल्लभायस्वाहा॥ इसमन्त्रकोउस-
कोदेतेहैं किजोशरीर.मन,औरधनगोसांईजीकेअर्पणकरदे और
गोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरअपनीचेलियां वा जगत्
कीसबस्त्रियांराधाहै सोजिसस्त्रीसेचाहे उससेसमागमकरलें उ-
नकोपापनहींलगता औरउनकेसमर्पणीजोचेलेहोतेहैं वेअपनी
प्रसन्नतासे गोसांईजीकोप्रसादीकरालेतेहैं अर्थात्स्त्रीवापुत्रकीस्त्री
तथाकन्याउनकोगोसांईजीको खाससेवामें एकान्तमेंभेजतेहैं जब
गोसांईजी एकबारअपनीसेवामेंप्रथमरखलेतेहैं तबवहस्त्रीपवित्र
होजातीहै औरवहस्त्रीअपनेकोधन्यमानतीहैं तथाउनकेसेवकभी
अपनेकोधन्यमानतेहैं जिनकागुरुइसप्रकारका व्यभिचारीहोगा
उनकाशिष्यवर्ग व्यभिचारीक्योंनहीहोगा सोबड़े२ अनर्थहोतेहैं
अबकेसम्प्रदायमेंसोकहनेयोग्यनहीं वेपानबीड़ाखाके पात्रमेंपीक
डालदेतेहैं सोउसकोउनकेचेलेबड़ीप्रसन्नतासेखालेतेहैं औरअ-

पनेकोबड़ाधन्यमानखेतेहैं किहमकोगोसांईजोमहाराज कीप्रसा-
दीमिलगई जबकोईधनाढ्यउनकोअपनेघरमेंलेजाताहैउसकाना-
म पधरावनोकहतेहैं जबवेवहांजातेहैं तबबड़ा एकपात्रताम्बे वा
लोहेकारखलेतेहैं उसकेबोचमेंस्नानकेहेतुएकचौकोरखदेतेहैं फि
रगोसांईजी एकधोतीसहित उसपात्रकेबीचमें चौकीपैंबैठजातेहैं
फिरअनेकसुगन्धकेसरादिकपदार्थोंसे उनकेशरीरकोस्त्रीऔरपु-
रुषमलतेहैं फिरअच्छे२अष्ठ२जलसेउनकोस्नानकरातेहैं फिर
जबस्नानहोजाताहै तबसूखापीताम्बरको धारलेतेहैं औरगीलो
धोतीउसकड़ाहीकेजलमेंछोड़देतेहैं फिरगोसांईजी निकलआते
हैं तबउनकेसेवकलोगउसजलकोपीतेहैं औरअपनेकोधन्यमानते
हैं फिरगोसांईजी,बहूजी,बेटीजी,लालजी,ठाकुरजी, पुजारी,ग-
वैयाजी, इनसातशालोंसेउसगृहकाबहुतधनहरलेतेहैं इससेउनके
पासखूबधनहोगयाहै उससे रातदिनविषयसेवाऔरप्रमादमेंरह-
तेहैं उनकेचेलेजानतेहैंकिहममुक्तिकोप्राप्तहोंगे परन्तुइनकर्मों
से मुक्तितोनहींहोनो किन्तु नरकहीहोना क्योंकि इनप्रमादोंमें
जिनकाधनजाताहैउनकाभलाकभीनहोगाऔरउनगुरूओंकाभो
औरउनने एककथारचरक्खीहै किलक्ष्मणभट्टएकब्राह्मणतैलंगथा
उसनेकाशीमेंआके संन्यासलेनेचाहा तबउससेपूंछाकिआपकेमा-
तापिता वाबिबाहितस्त्रीतोघरमेंनहींहै तबउननेकहामिथ्या कि
मेरेघरमेंकोईनहींहै मुझकोसंन्यासदेदीजिए फिरउननेसंन्यास
देदिया कुछदिनकेपीछेउनकीस्त्री काशीमेंखोजती२आई औरवह
कहींमार्गमेंमिला सोउसकेपीछे२ चलीगई वहअपने गुरूकेपास
जाकेबैठे स्त्रीभीवैठी औरउसकेगुरूसेस्त्रोनेकहा किमहाराजमुझ-
कोभीआपसंन्यासदेदीजिए क्योंकिमेरेपतिकोतो आपनेसंन्यासदे
दिया अबमैंक्याकरूंगी तबतोउससंन्यासीने बहुतक्रोधकरकेउ-
सकादण्डऔरकाषायबस्त्रलेलिए औरउससे कहाकितूंझूठक्योंबो-
ला तैनेबड़ाअनर्थकिया अबतुमयज्ञोपबीतपहरलेओ औरअपनी

स्त्रीकेसाथरहे औरउनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रबड़ाश्रेष्ठहोगा सोउनकेभाषा ग्रन्थमेंऐसीबात लिखीहै सोमुझको अनुमानसेमालूमपड़ताहैकिजबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीसे फसगए .फिर जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मणनेपंक्तिमेंनहीलिया सोआजतक तैलंगब्राह्मणोंकीऔरगोकुलस्थोंकीएकपंक्तिवाएकबिबाहनहीहोताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबाह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक पुत्रभया उसकानामवल्लभरक्खा इसविषयमें वेलोगऐसाकहतेहैं किजन्मसमयमेंही उसबालककोवनमेंछोड़के चलेगए सोउसबालककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था। इससे उस बालक कोकोईजानवरनहींमारसका जबवेपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर्षकीउमरमें सोयहबातहमको झूटमालुमदेतीहै क्योंकिवे वनमें बालककोकभीनहींछोड़ेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेंगा औरपांच वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहीहोसक्ती फिरवेक्या पराजयकरेंगे यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्यारचलीईहैक्योंकिसुबोधिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमें आतेहैंउनमेंउनकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इससेवेक्यापंडितों कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे कहाकिहमारे जितनेदैवीजीवहै उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्लभजीफिरतेघूमतेमथुरामे आकेरहेऔरवहांसंप्रदायका जालफैलायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेविवाहकिया उससे सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीबजतीहै फिरऐसी२ कथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांई जीकाचेलाहोगावहीवैष्णवऔरदैवीजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहीहोतावह-

आसुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीव हैं ऐसीप्रसिद्धहोनेसे बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु चेलेहोते हैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें रहतेथेतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूंदहीमेरेलिये बाजारसेले आवहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेंगया वहांएकदहीलेके बूढ़ीस्त्री बैठीथी उससेउसनेकहाकी इसदहीकाक्यातूंमुल्यलेगी तबबुढ़ियाने जानाकियह वल्लभजीका चेलाहै उससेबोलीकिमैं इसदहीकेबदले मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढ़ियासे कहाकितुझको मैंनेमुक्तिदेदी सोउसबुढ़ियाकोमुक्तिहोहोगई औरवल्लभजीकानामरक्खाहैमहाप्रभुसोऐसी२झूठकथाबनाकेजगत्कोठगलेतेहैं एक घासकीकराठीदेदेतेहैं उसकानामरक्खाहै पवित्राऔररोरीकोदो रेखाभट्टकेतुल्य ललाटमेंबनवादेतेहैं फिरकहतेहैंकितुमगोसांईजीकेसमर्पणहोजा औरइससे तुमारासबपापछुटजायगा तुमलोग दैवीजीवऔरवैष्णवकहाओगे इसलोकमेंआनन्दसेभोगकरोऔर मरनेकेपीछेतुमलोगगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग कर्तेहैं वैसेतुम भींअनेकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेंहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा रचीहैं किविट्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलोगसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुत२ धनदे२के धनाढ्यकीस्त्रीयां एकरात्रीं गोसांईजीकेसेजामें रहआतीहैं तबउनकेचेले औरचेलियांउसस्त्रीसेकहतीहैं कितूंबड़ीसौभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेंतुझकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसांई जीशरीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरैं उनचेलें औरचेलियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं क्योंकीपहिलेही समर्पणकियागयाथाबड़े आनन्दकासंप्रदायउनकाहै किचेलेचेलोंनौकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेंसमुद्रमेंडूब

केमग्नहोजातेंहैं औरगोंसाईलोगखूबश्टङ्गारसेबनेठनेसदारहते हैंजिसेदेखकेस्त्रोलोगमोहितहोजांय सोरातदिनस्त्रोलोगघेरकेरहतीहैं औरस्त्रीयोंकेअर्थातचेलियोंकेझुण्डकेझुण्ड२ क्रोडाकरतेरहतेहैं क्योंकिगोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरउनकोचेलियांअपनेकोराधारूपसखीमानतीहैंखूबस्त्रीलोगधनदेतीहैंऔरअपनोइच्छापूर्वकक्रीड़ाकरतीहैं केवलवेबड़ेपामरहोजातेहैं इस्से पशुकीनांई अर्थात्लालमुखकेबांदरजैसेक्रोड़ाकरतेहैंवैसेवेभोपशुहैं इसमेंकुछसन्देहनहीं जितनेमन्दिरधारी,वैरागीहैं उनकाभोप्राय:ऐसाहोव्यवहारहै ऐकचक्रांकितलोग जोकिआचारीकहातेहैं उनकाऐसामतहैकि।तापःपुंड्रंतथानाम मालामन्त्रस्तथैवच। अमीहिपञ्चसंस्कारा परमैकान्तहेतवः॥ यह उनका श्लोकहै शंख,चक्र,गदाऔरपद्मलोहेचांदोवासोनेके चारचिन्हबनारखतेहैं जोकोईउनकाचेला वाचेलीहोतीहै जबवेस्नानकरकेआतेहैं तबबरोबर पंक्तिउनकीबैठजातीहै औरउनचिन्होंकोअग्निमेंतपाके उनकेहाथकेमूलमेंतप्त२लगादेतेहैं उससमयजिसअग्निमेंतपायाजाताहै उसकानामवेदीरक्खाहै जबउनकेहाथमेंतप्त२वेलगातेहैं तबबड़ादुःखउनकोहोताहै क्योंकिचमड़े,लोम और मांसकेजलनेसे उनकोबड़ी पोड़ाहोतोहै औरदुर्गन्धभीउठताहै फिरउनकेहाथमेंलगाके चमड़ा,मांस,उसमें कुछ२लगरहताहै औरएकपात्रमेंजलवादूधरखदेतेंहैं उसमेंउनचिन्होंको बुझादेतेहैं फिरकोई२उसजल वा दूधकोपीलेतेहैं देखनाचाहिएयहबात कौनधर्म औरकिसयुक्तिकोहोगी केवलमिथ्याहीजानना क्योंकिजीतेशरीरकोजलानेसे एकप्रथमसंस्कारमानतेहैं औरजितनेसंप्रदायवालेंहैं वेउर्द्ध्वपुंड्रवात्रिपुण्ड्रका संस्कारसबमानतेंहैं उनसेहीशैव,वैष्णवादिक अपनेहृदयमेंअभिमानकर्तेहैं उर्द्ध्वपुण्ड्रवालेनारायणकेपगकीआकृतितिलककोमानतेंहैं तथाशैवशाक्तादिकमहादेवकेललाटमेंजोचन्द्रहै उसकीआकृतिमानतेहैं फिरचक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकरतेहैं उसकानामश्रीरखलियाहै इसमें बिचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी औरचन्द्रमाकाचिन्हहोवे तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगउनकोक्यों होवेंफिर वेकहतेहैं किबिनातिलककेचाण्डालकेतुल्यवह मनुष्यहोताहै उनसेपूंछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहीं जोवेकहेंकिहोसक्ताहै तो गधागाकुत्ते केललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै वानहींसोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहैकिश्रौरकाऔ रहोजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें बिराजमानतोभीउदर कापालनहोना कठिनदेखपड़ताहै इससे ऐसा निश्चयहोताहै कि यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहींहै किन्तु दरिद्राऔरउष्णताजाननी चाहिए फिरवेतिलककेविषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया वृक्षकेऊपरएककौआबैठाथाउसनेबिष्टाकियासोगिरीउसकेललाट केऊपर सोतिलककीनाईंचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदूतोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेंस्वामीकीआज्ञासेहमइसको नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोले कि हमारेस्वामीकीआज्ञा है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धेहोगए इसकेललाट मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींचली औरउसकोवैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीप्रीतिसेप्रतिष्ठाकिया औरउससे कहातूंआनन्दकर बैकुण्ठमें ऐसे२प्रमाणोंसेतिलक कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके बीचमेंदेदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णबैठाहोय ऐसामानतेहैं तथामाधवार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकरते

हैं उसकोभीऐसामानतेहैं तथाचैतन्यसंप्रदायमेंजोहैं वेकटारके ऐसाचिन्हको हरिपदाकृतिमानतेहैं औरराधावल्लभीभीबिन्दुको राधावत्मानतेंहैं कबीरकेसम्प्रदायवाले टीपकोशिखावत् तिलककोमानतेंहैं औरपण्डितलोगपिप्पलकेपत्तेकीनांई कोई२ तिलककतेंहैं सोकेवलमिथ्याकल्पनालोगोंनेबनाईहै जोतिलककेबिना चाण्डालहोताहोतो वेभीचाण्डालहोजांय क्योंकिजबस्नान और मुख्यप्रक्षालनकतेंहैं तबतोउनकेभीललाटमेंतिलकनहोरहनेपाता फिरवेचाण्डाल क्योंनबनजांय औरजोफिरतिलकके करनेसे उत्तमबनजांय तोचाण्डालउत्तमबननेमेंक्यादेर परन्तु चक्रांकितोंकेग्रन्थमन्त्रार्थदिव्यसूर्य्य,रत्न,प्रभाऔरनाभानेबनाई भक्तमालादिकोंमेंयहप्रसिद्धलिखाहै किजोचक्रांकितोंकामूलआचार्यषठकोपजोसो कंजरऔरहावडाकेकुलमेंउत्पन्नभएथें सोईउनग्रंथोंमेंलिखाहैकि। विक्रीयशूर्पं विचचारयोगी । यहबचनहैइसकाइससे यहअभिप्रायहैकिसूपकोबेचकेयोगी जोषठकोपसोबिचरतेभएइससे क्याआयाकिवहसूपबनानेवालेकेकुलमेंउत्पन्नभयाथाउनहीनेचक्रांकितसंप्रदायकाप्रारम्भकियाइससे उसकाटोपचक्रांकितआजतकपूजतेंहैंउनकेपीछेदूसराउनकाआचार्यमुनिबाहनभयाउसकोऐसो कथाउनग्रंथोंमेंहै किदक्षिणमेंएकतोतादरीऔररङ्गजोटोस्थानहैं उनमेंबहुतसेउनकेसंप्रदायकेसाधुआजतकरहतेंहैं वहांएकचांडालथाउसकोऐसोइच्छाथोकिमैंभीकुछठाकुरजीकापरिचर्य्याकरूं परन्तुमन्दिरमेंझाडूबहारूदेनेकेहेतुपुजारीलोगउसकोनहींआनेदेतेथे सोजबप्रातःकालकुछरात्रिरहै तबपुजारीलोगस्नानकोदरवाजाखोलकेचलेंजांय तबवहचांडालछिपके मन्दिरमेंझाडूदेके निकलजाय कोईउसकोदेखेनहीं परन्तु पुजारियोंने बिचारकिया किझाडूकौनदेजाताहै रातमेंछिपके दोचारपुजारीबैठेरहे किउसको पकडनाचाहिए जबप्रातःकाल औरपुजारी स्नान को चलेगयेतबवह चांडालमन्दिरमे घुसकेझाडूदेनेलगा जबउननेदे

खातबपकडके ऐसामाराकि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोनेप
कडकेंमंदिरकेबाहरउसको डालदियाजबवेस्नानकरके पुजारीलो-
गआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगें सोनखुलाक्योंकि ठाकुरजी
नेउसकोमारनेसे बडाक्रोधकिया तबबडेआश्चर्यभये सबकिकिवा-
डक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक बैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि
किवाडीतबखुलेगी आपसबलोग उसचांडालको पालकोमे बैठाके
अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिराओऔरपा लकीसहितमं-
दिरकोपरि क्रमाकरो फिरउस कोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपू-
जाकरै औरइस मंदिरका अधिष्टाताऔर सबकागुरु बनैजबवह
किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐ-
साहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमु-
निबाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेबाहननामपा-
लकोउठाई इस्से उसकानाम मुनिबाहनपडा उनका चेलाएकमु-
सलमानभया उसकानाम यावनाचार्यइसकोअब चक्रांकितोंने-
तिकयामुनचार्य्य नामरक्खाहै उनके चेला रामानुजभये वहब्रा-
म्हणथेरामानुजके विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजी काअवतार-
हैशंकराचार्य शिवका निंबार्कमाधव रामानन्द औरनित्यानन्द
येचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहै
कबोरब्रम्हका यहबातसब उनकोमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदाय
केहेतुमिथ्याकथा लोगोनेरचलिईहैं तीसरासंस्कारमालाधार-
णकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी वासकमलगट्टे इत्यादिकजानलेना
इसविषयमेंसंप्रदायो लोगकहते हैंकिबिनामाला कण्ठीऔररुद्रा
क्षकेधारणसेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांस-
केतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्योंनहीहोताऔरमांसका
स्वादक्यों नहीआता इस्सेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहे-
तुलोगोनेरचलिईहैं इनमेंस्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरु-
द्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः ॥ तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण औरदेवीभागवतादिक ग्रन्थोंमेंशैवऔ-
रशाक्तोंमेंअपनेसंप्रदायोंकेबढनेकेहेतु लिखेहैं औरवैष्णवादिकोंके
खंडनकेहेतुव्यासादिकों केनाममें बहुतश्लोक रचरक्खे हैंकाष्ठमा
लाधरश्चैवमद्यश्चांडालउच्यतेऊर्द्ध्वपुंड्रधरश्चैव विनाशंव्रजतिध्रुवम्
इनकेविरुद्धइत्यादिक वैष्णवोंनेबनायाहैरुद्राक्षधारणेनैवनरकंप्रा
प्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणांशिवलिंग शतस्यच द्वादशकोटिवि
प्राणांतत्फलंश्वपचवैष्णवे ॥ विप्राद्द्विषड्गुण युतादरविंदनाभपा-
दारविंदविमुखाच्छ्वपच । वरिष्ठम्अभाग्यतस्य देशस्यतुलसीयत्र
नास्तिवै ।। अभाग्यंतच्छरीरस्यतुलसीयत्रनास्तिहि ।। दोनोंकेवि-
रोधीवाममार्गीआएप्रवृत्तेभैरवीचक्रे सर्वेवर्णा द्विजातयः। निवृत्ते-
भैरवीचक्रेसर्वेवर्णाः पृथक्पृथक्॥ मद्यमांसंचमीनंचमुद्रामैथुनमेव
च। एतेपंचमकाराश्चमोक्षदाहियुगेयुगे । पीत्वापीत्वापुनःपीत्वा
यावत्पततिभूतले ।उत्थायचपुनः पीत्वापुनर्जन्मनविद्यते ।सहस्र-
भगदर्शनान्मुक्तिर्नात्रकार्याविचारणा ।मातृयोनिंपरित्यज्यविहरेत्सर्व
योनिषुकाश्यांहिमरणान्मुक्ति र्नात्रकार्याविचारणा । काश्यांमर-
णान्मुक्तिःयहश्रुतिशैवोंनेबनालिईहैसहस्रभगदर्शनान्मुक्तियहशा
क्तोंनेश्रुतिबनालिईहै गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि। मु-
च्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ॥ अश्वमेधसहस्राणांवाजपे
यशतस्यच । कन्याकोटिसहस्राणां फलंप्राप्नोतिमानवः। यहएकाद-
श्यादिकव्रतोंकामाहात्म्यबनालियाहैऐसेहीशालिग्रामनर्मदालिं
गआदिकामहात्म्यबनालियाहैसोइसप्रकारकेमिथ्या२जालअपने
मतलबकेहेतुलोगोंनेबनालियेहैंऔरपरस्परएककोएकदेखकेजल
तेहैंतथाअत्यन्तविरोधऔर परस्परनिन्दाहोतीहैक्योंकिजोमिथ्या
२कल्पनाहै उनकोएकताकभी नहींहोतीजो सत्यबातहैसोसबके
बीचमेंएकहीहै चक्रांकितादिकोंने अपनेसंप्रदाय केमन्त्रबनालिए
हैं।ओंनमोनारायणाय ओम्श्रीमन्नारायण चरणंशरणंप्रपद्ये
ओमतेनारायणायनमः येदोनोंचक्रांकितोंके मन्त्रहैंओम्नमोभग

वतेवासुदेवाय ओम्कृष्णायनमः ओम्राधाकृष्णाभ्यांनमः ओम्गोविन्दायनमः ओम्राधावल्लभायनमः येनिंबार्कादिकोंकेमन्त्रहैं ओम्रामायनमः ओम्सीतारामाभ्यान्नमः ओम्रामायनमः येरामोपासकोंकेमन्त्रहैं ओम्नृसिंहायनमः ओम्हनुमतेनमः येखाखोआदिकोंकेमन्त्रहैं ओम्नमः शिवाययहशैवोंकामन्त्रहैऐंह्रींक्लींचामुंडायैविच्चे ओंम्ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः बगलामुख्यैफट्स्वाहाइत्यादिकवाममार्गियोंकेमन्त्रहैं सत्यनाम जपयहीकबीरसंप्रदायकामन्त्रहै दादूरामयहदादूसंप्रदायकामन्त्रहै रामरामयहरामसनेही सम्प्रदायकामन्त्रहै वाहगुरु।। एकओंकारसत्यनामकर्त्तापुरुषनिर्भयनिर्वैर अकालमूर्त्तअयोनीसहभंगगुरुप्रसादजप।। यहनानकसंप्रदायकामन्त्रहैं इत्यादिक कहांतकहमजालगिनावेंकि लाखहां प्रकारके मिथ्याकल्पना लोगोनेकरलियेहैं येमबगायत्री जोपरमेश्वरकामन्त्रइसके छोडानेकेवास्तेधूर्त्तलोगोनेसबरचीहै औरजैसे गडेरियाअपने भेंडऔरछेरियोंकोचराताहैउनमेसेजबचाहे तबदूधदुहलेताहै अपनामतलबसिद्धकरलेताहैदूहकेउनमेसे एकभेंडव छेरीकोईलेले अथवा भागजायतबउसगडरियेकोबडादुःखहोताहै सोदिनभरचराके एकस्थानमेंइकट्ठाकरदेताहैवहचाहताहैइसभुंडमेंसे एकभीपृथक्नहोजायकिन्तुअन्यभेंडवाछेरीमिलाकेबढायाचाहताहै क्योंकि उनसेहीउसकीआजीविकाचलतीहै वैसेहीआजकाल मूर्खमनुष्योंकोधूर्त्त गुरुलोगजालमेंबांधकेअत्यन्त धनादिकलूटतेहैं औरबडे२ अनर्थकरतेहैं क्योंकिचेले मूर्खहैंइससे जैसावेकहदेतेहैंवैसाहीमानलेतेहैंजोउनगुरुओंकोविद्याऔर बुद्धिहोतीतो ऐसी अपनेवास्तेनरककीसामग्रीक्योंकरतेतथा चेलेलोगोंको विद्याऔरबुद्धिहोतीतो इनधूर्त्तोंकेजालमेंफसकेक्यों नष्टहोतेदेखनाचाहिये किनानकजीकबीरजीऔरदादूजी इनकेसंप्रदायमे पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनतोनहींहै परन्तुउननेभीसंसारका धनादिकहरनेके वास्ते ग्रन्थसाहबकोउ

सेभीअधिकपूजाकर्त्ते हैं यहभीएकमूर्त्तिपूजनहीहै पुस्तकभीज-
डहोताहैक्योंकिजैसी पाषाणादिकोंकी पूजावैसी पुस्तकोंकीभीपू-
जाजाननीइसमें कुछभेदनहींयहकेवलपरपदार्थ हरनकेवास्ते ही
लोगोंनेयुक्तिरचलिईहै अपने२संप्रदायमें ऐसाआग्रहहैउनकोंकि
वेदादिकसत्यपुस्तकोंकी ऐसीपूजा वाउनमेंप्रीति कभीनहींकरतेजै
सीकीअपने भाषापुस्तकों मेंप्रीतिकरतेहैं औरसंन्यासियोंनेएकशं
करदिग्विजयरचलियाहै उसमेंबहुत २मिथ्याकथारक्खीहैउसमें
दण्डीलोगऔर गिरीपुरी आदिकगोसांईलोग अत्यन्तप्रीतिकरते
हैंअर्थात्रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विज-
यवल्लभदिग्विजयकबीर दिग्विजयऔरनानक दिग्विजयादिकअप-
नो२बडाईकेवास्ते लोगोंने मिथ्या२जाल रचलियेहैं शंकराचार्य
कोईसंप्रदायकेपुरुष नहीथेकिन्तु वेदोक्तचार आश्रमोंकेबीचसंन्या
साश्रममेंथेपरन्तु उनकेबिषयमेंलोगोंनें संप्रदायकीनांई व्यवहार
कररक्खाहै दशनामलोगोंनें पीछेसेकल्पित करलियेहैं जैसेकि
किसीकानामदेवदत्तहोय इसकेअन्तमेंदश प्रकारके शब्दरखतेहैं
किदेवदत्ताश्रमएक १ देवदत्तार्थतीर्थ २देवदत्तानन्दसरस्वतीऔ-
रइसीकाभेददूसरा किदेवत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४देवद-
त्तपुरी५ देवदत्तपर्वत६देवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवद-
त्तवन ९ देवदत्तभारती १० यदशनामरचलियेहैं फिरइनमेंशृं-
गेरीशारदाभूगोवर्द्धन औरज्योतिमठये चारप्रकारकेमठमानते-
हैंऔरदण्डियोंने दामोदरनृसिंह नारायणइत्यादि कदण्डोंकेना-
मरखलियेहैं उसमेंयज्ञोपवीतबांधतेहैं उसकानामशंखमुद्राटीक
रक्खाहैऐसे२बहुत कल्पनादण्डियोंनेभीकिईहै किन्तु जोबाल्या
वस्थामेंनामरहताथा सोईसबआश्रमोंमेंरहताथा जैसेकिजैगीष
व्यआसुरिपंचशिखाऔरबोध्यऐसे २ नाम संन्यासियोंकेमहाभा
रतमेंलिखेहैंइससे जानाजाताहै कियहपीछेसे मिथ्याकल्पनादण्डी
लोगोंनेकरलियाहैपरन्तुदण्डी लोगसनातनसंन्यासाश्रमीहैंक्यों-

किमनुस्मृत्यादिकमेंइनका व्याख्यानदेखनेमेंआताहै औरगोसांई
लोगोंने भोदुर्गानाथ इत्यादिकमहो शब्दकल्पित करलियाहैजैसे
किवैरागीआदिकोंने नारायणदासइस्से बडा भारीबिगाडभयाकि
नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनहीहोती क्योंकिसब काएकसा-
हीनामदेख पडताहैतापः पुंड्रनाममाला औरमन्त्रयेपंचसंस्का-
रचक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भीइनसे मानतेहैंपर-
न्तु इसमेंविचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो
पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहैएकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइ-
नमेंसे मनकीपवित्र ताहोनेसे वाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका
मनअधर्मकरने मेंरहताहैउनकोबाह्यपवित्र तासबव्यर्थहैसोउन-
संस्कारोंसेमनकोपवित्रताकुछनहीं होसक्ती देखनाचाहिएकिगो-
कुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटोऔरदालतकलोगबेचतेहैं औरबाहर
सेप्रसिद्धरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने
नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहीदेतेकिन्तु
इसकेबदलेपक्वान्न रोटोदालतकदेतेहैं उनके हाथगोसांईजीअ-
न्नबेचतेहैं औरबेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकीदुकानमें
बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी
किजिस्से कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब
जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवाले उनकाबड़ासत्कारक-
रतेहैं अन्यकानहींइनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपका-
रहोताहै क्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैंछलऔरहृ-
दयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैंदेखनाचा-
हिएकिबडे२मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकरतेहैंऔरनामर
खतेहैंवैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसाईंजटाजूटबने रहते
हैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधाररखतेहैं औरउनकाहृदयका
व्यवहारहमलोगदेखतेहैंविद्याकालेशनहींबातभीयथावत्कहना
वासुननानहींजानैं इस्से सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मविद्यादिकगु-

णग्रहणकरनाचाहिए औरइननष्टव्यवहारोंको छोड़ना चाहिए तभीसबमनुष्योंका परस्परउपकारहोसक्ताहै अन्यथानहीं वाममार्गीलोग एकभैरवीचक्ररचतेहैं उसमेंएकनङ्गोस्त्री करकेउसके हाथमेंछूरीवातलवारदेदेतेहैं औरबीचमेंएकआसन केऊपरबैठा देतेहैं फिरउसस्त्रीकी पूजाकर्तेहैं यहांतकगुप्तअंगकीभीफिरउस जलको सबलोगपीतेहैं औरउसस्त्रीकोमानतेहैं कियहसाक्षात्देवीहै औरब्राह्मणसेलेकेऔरचमारतक उसस्थानमेंसबबैठतेहैं फिरएकपात्रमेंमद्यकोपूजाकरके मद्यरखतेहैं उसीएकपात्रसेवहस्त्री पीतीहै फिरउसीजूठेपात्रसे सबलोगमद्यपीतेहैं औरमांसभीखातेजातेहैं रोटीऔरबरखातेजातेहैं फिरजबमद्यपीकेमस्तहोजाते हैं तबउसीस्त्रीसेभोगकरतेहैं जिसको किपहिलेदेवीमानीथी और नमस्कारकियाथा औरमनुष्यकाबलिदानभीकरतेहैं कोई२उसकाभीमांसखातेहैंमुरदेकेऊपरबैठकेजपकर्तेहैं औरस्त्रीकेसमागमकेसमयजपकर्तेहैं। योन्यांलिगंसमास्थाप्यजपेनमन्त्रमतन्द्रितः।औरयहभीउनकामन्त्रहै किएकमाताकोछोड़केकोईस्त्रीअगम्य नहीं फिरउनमेंसेएकमातङ्गीविद्यावालाहै वहऐसाकहताहै कि मातरमपिनत्यजेत्माताकोभीनहींछोड़नाचाहिए क्योंकिमातङ्गहस्तोकानामहै सोमाताकोभी नहींछोड़ता वैसेबेभीमानते हैं ऐसीदशमहाविद्याउनलोगोंनेबनारक्खीहै उनमेंसेएकचोलीमार्गहै उसकाऐसामतहै किस्त्रीऔरपुरुष सबएकस्थानमें रात्रिकोइकट्ठे होतेहैं एकबड़ाभारीमृतिकाकाघड़ावहांरखतेहैं उसमें सबस्त्रीलोगअपनेहृदयकावस्त्रअर्थात्जिसकानामचोलीहै उसकाउसघड़ेमेंडालदेतीहैं फिरउनवस्त्रोंकोघड़ेकेबीचमेंमिलादेतेहैं फिर खूबमद्यपीतेहैंऔरमांसखातेहैं जबवेबड़ेउन्मत्तहोजातेहैंफिरउसघड़ेमेंहाथडालतेहैं जिसकेहाथमेंजिसकावस्त्रआवैवहउसकी स्त्रीहोतीहैवहमाता,कन्या,भगिनीवापुत्रकीभीहोस्त्रीयऐसे २ मिथ्याव्यवहारकर्तेहैं औरमानतेहैंकिमुक्तिहोययहबड़ाआश्चर्यहै ऐ-

सेकर्मोंसेकभीनहींमुक्तिहोतो परन्तु विद्याहीनजोपुरुषहैं वेऐसे२जालोंमेंफसजातेहैं औरइनलोगोंनेअपने२ मतकेपुष्टिकेहेतुअनेकपाराशर्यादिकस्मृतिब्रह्मवैवर्त्तादिकपुराणतन्त्र उपपुराणपरस्परविरुद्ध ऋषिऔरमुनियोंके नामोंसे रचलिएहैं एककादूसरा अपमानकर्त्ताहै अपनी२पुष्टिकेहेतु क्योंकिअसत्यबातऔरभ्रमजो होताहै सोपरस्पर विरुद्धसेहीहोताहै औरजो सत्यबातहै सोसबकेहितु एकहीहैजोसज्जनहोतेंहैं वेसदाश्रेष्ठ कर्महीकरतेहैं क्योंकि वेसत्यासत्यविचारसे असत्यकोछोड़तेंहैं औरसत्यको ग्रहणकरतेहैंऔरकिसीकेजालमें विचारवान्पुरुष नहींफसतासबकेउपकारमेंहीउसकाचित्त रहताहैऐसेजोमनुष्यहैंवेधन्यहैं इस्से क्याआया किश्रेष्ठगृहस्थअथवाविरक्तजोहैं वेसदाश्रेष्ठकर्मकोकरतेहैंअश्रेष्ठनहीइसवास्ते वेविरक्तलोग अपनेमतलबमेंफसके सत्यासत्यनहींजानसक्तेहैं क्योंकिउनकोभ्रम अंधकारमेंकुछनहीं सूझता॥प्रश्न जगन्नाथादिकमेंबहुतचमत्कारदेखपड़ताहै तथानानाप्रकारकेतीर्थजागंगादिकवेपापनाशकऔर मुक्तिप्रदहैंवानहीं उत्तर नहीक्योंकिजगन्नाथकीमूर्तिचंदनवा निंबकाष्टकीबनातेहैंउसकोनाभिमेंपोलरखतेहैंउसमें सोनेकेसंपुटमें एकशालग्राम रखकेधरदेतेहैंउसको ब्रह्मतेजमानतेहैंफिरआभूषणवस्त्र पहिरादेतेहैं उसमेंकुछचमतकारनहीहै किन्तु पुजारियोंनेआजीविकाकेवास्तेबातऔरमहात्म्यकापुस्तकबनालियाहैवेएकतोयह चमत्कारकहतेहैंकिछत्तीस वर्षमेंचोलाबदलताहै सोबात हमको झूठमालूमदेतीहै क्योंकि ३६ वर्षमेंमूर्ति पुरानीहोजातीहै फिरदूसरीबनाकेरखदेतेहैंऔर कृष्णतथाबलदेवकी मूर्तिकेबीचमेंसुभद्राकी मूर्तिबनारखीहैइसमें विचारनाचाहिये किएकके वामभाग दूसरेकेदहिने भागमेंमूर्ति रखनाधर्मशास्त्रऔरयुक्तिसे विरुद्धहैऔरदूसरा चमत्कारयहकहतेहैंकिएकराजाबढ़ईऔर पण्डायेतीनोंउसीसमयमरजातेहैंयह बातउनकोमिथ्याहै क्योंकिअकस्मात्कोईउसदिन मरगयाहोगा

अथवा शत्रु लोगों ने विषदान देके कभी मार डाले होंगे सो माहात्म्य की ऐसी बात लोगों ने मिथ्या बना लिया है तीसरा चमत्कार यह कहते हैं कि आपसे आप ही रथ चलता है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि हजारहां मनुष्य मिल के रथ को खींचते हैं और कारीगर लोगों ने उस रथ में कला बना लिई है उसके उलटे घुमाने से वह रथ खडा हो जाता होगा और सूध घुमाने से कुछ चलता होगा जैसे कि घडी आदिक के यन्त्र घूमते हैं ऐसे बहुत पदार्थविद्या से होते है चौथा चमत्कार यह कहते हैं कि एक चूल्हे के ऊपर सात पात्र धर देते हैं उनमें से ऊपर के पात्रों का चावल पहिले चुर जाते है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि उन पात्रों में चावल पहिले ही डाल लेते हैं फिर उसके पेंदे को मांज देते हैं फिर ऊपर २ पात्र खद देते हैं और नीचके चूले में थोडी सी आंच लगा देते हैं फिर दरवाजा खोल देते हैं और अच्छे २ धनाढ्य तथा राजा लोगों को दूर से कर छल से निकाल के देखा देते हैं और कहते हैं कि देखिए महाराज कैसा चमत्कार है कि न चैका अब तक चावल कच्चा है क्योंकि उस पात्र में चावल अग्निपर पीछे धरे हैं उस को देखके विचाररहित पुरुष मोहित होके बडा आश्चर्य गिनते हैं और हजारहां रुपैया देते हैं यह केवल उन मनुष्यों की धूर्तता है और चमत्कार कुछ नहीं है पांचवां चमत्कार यह कहते हैं कि जो पापी होय उसको उस मूर्ति का दर्शन नहीं होता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि किसी के नेत्र में दोष होने से आंख के सामने तिमिर आ जाते हैं और वे पुजारी लोग ऐसी युक्ति रचते हैं कि वस्त्र के अन्यथा रूपकर के पर्दे बना रक्खे हैं उनके दोनों ओर पुजारी लोग खडे रहते हैं और फिरते भी रहते हैं सो किसी प्रकार से उस मूर्ति का आड कर देते हैं फिर नहीं देख पडती तो उस वक्त ऐसा वे कहते हैं कि तुम लोग पापी हो जब तुमारा पाप घट जायगा तब तुमको दर्शन होगा तब वे बुद्धिहीन पुरुष झट २ रुपैये धर देते हैं फिर उनको दर्शन करा देते हैं यह सब मनुष्यों की धूर्तता है चमत्कार कुछ नहीं है छटवां यह चमत्कार कहते हैं कि अन्धा बाकुष्टी हो जाता है जो कि

वहांकाप्रसादनहीखातायहभीउनकीबातमिथ्याहैक्योंकि इसबात
मेंकभीकोईकुष्ठीवा अंधानहीं होसक्ताहै बिनारोगसेऔर अनेक
दिनकासडासडायाअन्न तथापचावलौ और हंडियों केखपरेजिन
कोकौवेकुत्ते चमारऔर चांडालादिकस्पर्शकरतेहैंऔरधूरभीलग
जातीहै सबकाउच्छिष्टखानेमें कुष्ठरोगभीहोसक्ताहै औरपरस्पर
सबकाजूठनखातेहैं औरफिर अन्यजाकेकिसीकाजलवाअन्नन-
हीखातेयह देखनाचाहियेकि इनकाआश्चर्यव्यवहारकिसबकास-
बजूठखातेभीहैं फिरकहतेहैंकिहमकिसीकानहीखातेयहकेवलइ-
नकाअविचारहीहै सोजिनकीवहां आजीविकाहै वेऐसी२ मिथ्या
बातसदा रचतेरहतेहैं कलिकत्तामें एकमृत्तिकाकीमूर्त्ति बनार-
क्खीहैउसकानामरक्खाहै कालीवहांभीऐसी २मिथ्या २ जालर-
चरक्खीहैं किकालीमद्यपीतीहै औरमांसखातीहैसोवहजडमूर्त्ति
क्यापीयेगीऔर क्याखावेगी परन्तुउनपुजारियोंको खूबमद्यपीने
औरमांसखानेमें आताहै वेलोगस्वादकेहेतुऔर धनहरणकेहेतु
नाना प्रकारकीझूठ २ बातबनालेतेहैं वहांएकमंदिरमें पाषाण
कालिंगस्थापन कररक्खाहै उसकानामतारकेश्वर रक्खाहै इस-
विषयमेंउन्होंनेबातबनारक्खीहैकिरोगियोंकोस्वप्नावस्थामें महादे-
वऔषधबताजातेहैं उस औषधसे उनकारोगछूटजाताहै यहबात
उनकीमिथ्याहैक्योंकिउनकाजोपुजारीहै वहीवैद्यऔरडाक्तरों-
की औषधीकियाकर्त्ताहै औरऐसीऔषधि क्योंनहीं स्वप्नावस्था
मेंमहादेवकहदेताहै किजिसकेखानेसेकिसीकोकभी रोगहीनहो-
इससेयहबात झूठहै किवहपाषाण क्याकहवा सुनसक्ताहैकभीन-
हीं सेतबन्धरामेश्वरकेविषयमें ऐसालोगकहतेहैं कि जबगंगाजल
चढातेहैंतबवहलिंगबढजाताहै यहबातमिथ्याहै क्योंकिउसमंदि-
रमेंदिवसकोभीअंधकाररहताहै उसीमेंचारकोनेमें चारदीपसदा
जलतेरहतेहैंउसमंदिरमें किसीकोघुसनेदेतेनहीं उनकेहाथसेगंगा
जललेके उसमूर्त्तिकेऊपर जलचढाताहै जबवह पुजारीनीचेसे-

ऊपरहाथकरताहैतबमूर्त्तिमेलेकरहाथतक गंगाजीकीएकधाराबनजातीहै उसधारामेंचारोंदीपकेप्रकाशकेपडनेमें जलबिजलीकोनांईचमकताहैतबउनयात्रियोंकोपुजारीलोग कहतेहैंकितुमलोगोंकेऊपर महादेवकीबडीकृपाहै देखोमहादेवकालिंगबढगया सोतुमरुपैयेचढाओ ऐसेबहुत२केखूबधन हरण करतेहैंऔर कहतेहैंकिरामनेयहमूर्तिस्थापनकिईहै सोयहबातमिथ्याहीहै क्योंकिवाल्मीकीयरामायणमेंउसकानामभीनहीहै केवलतुलसीदासकेझूठलिखनेसेलोगकहतेहैं क्योंकि तुलसीदास कीमिथ्या२बातबिचारनाचाहिये नारीनामस्त्रीकारूपदेखके स्त्रीमोहितनहीहोतीतो फिरसीताकेस्वयंबरमें लिखाहै किजबस्वयंबर मेंसीताजीआईतबनरऔरनारीसबमोहितहोगये सीताजीकोदेखके यहबात पूर्वापरउसकीविरुद्धहै औरअपनेग्रंथमेंउननेलिखाहै किअठारहपद्मयूथपबानरथे सोएक२ काचार२कोसकाशरीरलिखा तथाकुंभकर्णकीमोंछचार २ कोसकीलंबीलिखीहै १६ सोलहकोसकीनाक ६४कोसकाहाथलम्बा९६ कोसकाउदरऐसाजोकुंभकर्णहोता तोलंकामें एकभीनहीसमाता औरअठारहपद्मबानरपृथिवी भरमेंनहीसमाते तथा बांदरमनुष्यकीभाषानहीबोलसक्ते फिरसुग्रीवादिकरामसेकैसेबोलसकेंगे राज्यकाकरनाऔरविवाहपशुओंमेंकभीनहीहोसक्ता ऐसी२ बहुत तुलसीकृतरामायणमें झूठबातलिखीहै सोइसके कहनेकाक्या प्रमाण फिरपाषाणकेऊपररामनामलिखदिये उससेपाषाणसमुद्रकेऊपरतरेहैं यहबातउसकी मिथ्याहै क्योंकिऐसाहोता तोहमलोगभीपाषाणकेऊपररामनामलिखके उसकातर नादेखते सोनहीदेखनेमेंआता इससेझूठबातकोमाननानचाहिये जैसीयहबातझूंठहैउसकोवैसीरामेश्वरकोलिखीभीझूठहैकिसीदक्षिणकेधनाढ्यनेमंदिरबनायाहै उसकानामहैरामेश्वर उसकोचार४००बरसभयेहोंगें औरएकदक्षिणमेंकालियाकंतकामंदिरहै इसविषयमेंलोगोंनेऐसीबातबनालिईहै किवहमू-

र्तिहुक्कापीतीहै सोझूठहै क्योंकि पाषाणकीमूर्तिहुक्काकैसेपीयेगी इसमेंलोगोंने मूर्तिकेमुखमेंछिद्रबनारक्खाहै उसछिद्रमें नालीलगाकेकोईमनुष्यछिपकेधूंआखींचताहै फिरवेपुजारीकहतेहैं देखोसाक्षात् मूर्तिहुक्कापीतीहै ऐसा बहकाकेधनहरलेतेहैं ऐसेहीजयपुरकेराज्य मेंएकजीनदेवीबजतीहै वहमद्यपीतीहै सोभीबातझूंठहै क्योंकिवहमूर्ति पोलीबनारक्खीहैउसकेमुखमेंछिद्रहै मद्यकेपात्रकोमुखसेलगाके ढरकादेतेहैं वह मद्यअन्यस्थानमें चलाजाताहै फिरउसीकोलेकेबेचतेहैं तथाद्वारिकाकेविषयमें लोगकहतेहैं कि द्वारिकासोनेकीबनीहै उसमेंएकपोपाभक्तसमुद्रमें डूबकेचलागयाथा उसकोश्रीकृष्णजीमिले उनसेबातचीतभई पोपानेकहाकिमैं तोआपके पासरहूंगा तबश्रीकृष्णनेकहाकिमर्त्यलोककाआदमीयहांनहीरहसक्ता सोतुमहमाराशंखचक्रगदापद्म केचिन्हद्वारकामें लेजाओ औरसबसेकहदेओ किइनचिन्होंकादागतप्तकरके जोलगवालेगासोबैकुंठ मेंचलाआवेगा ऐसेहीचक्रांकितलोगभी कहतेहैं सोएबबातमिथ्याहै क्योंकि जीतेशरीरकोजलानेसेकोईवैकुंठमेंनहींजासक्ताहै औरजोजासक्ता तोमरेभयेशरीरको भस्मकरदेतेहैं इस्सेवैकुंठके आगेभीजायगा फिरजीतेशरीरको जोजलानायह बातकेवलमिथ्याहै एकपंजाबमेंज्वालाजीका मंदिरहै उसमेंअग्नि निकलतारहताहै इसकोकहतेहैं कि साक्षात् भगवतीहै इनसे पूंछना चाहिये कितुमारे घरमेंजबरसोईकरतेहैं तब चूलेमेंभी ज्वालानिकलती रहतीहै प्रश्न चूलेमेंतोलकडी लगानेसे निकलतीहै औरवहांआपसे आपहीनिकलती रहतीहै उत्तर ऐसेही अनेकस्थानोंमें अग्निनिकलतीहै सोपृथिवीमें अथवापर्वतमें गंधकादिकधातुहैं उनमेंकिसीप्रकारसे अग्निउत्पन्नहोकेलगजाताहैसो पृथिवीकोफोडकेऊपरनिकलआताहै जबतकवेगन्धकादिकधातु रहतीहैंतबतकअग्निजलताहीरहताहै यहीपृथिवीकेहिलनेकाकारणहै क्योंकिजबभीतरसेबाहरपर्वतमेंअग्निनिकलताहै तभीपृथिवी

मेंकंपहोजाताहै सोवहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवास्ते मिथ्यावनालिईहै एकउत्तराखण्डमें केदारऔरबद्रीनारायणये दोस्थानप्रसिद्धहैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैंकिबद्रीनारायणकी मूर्तिपारसपत्थरकीहै औरशङ्कराचार्यनेस्थापितकिईहै सोयहबातमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगदरिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलोहाछुआनेसेसोनावनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनहीं सुनतेसुनातेचलेआतेहैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्तियोंकेतोडनेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबातलोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहादेवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहीदिया क्योंकिवेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरुषोंकोमारकयुद्धमेंआयेथे सोमहादेवपार्वती औरसबउनकेगणोने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सोनारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेंभैंसाका रूपधारणकरलियाहै तुमकोबहकानेकेवास्तेइसकीयहपरीक्षाहैकिमहादेवकिसीकीटांगकेनीचेसेनहीनिकलतेसोभी मनेतीनकोसकेछोटेटोपर्वतथेउनके ऊपरदोटांगरखदिईं एक२केऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसेनिकलगये परन्तुएकभैंसानहीनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलिया कियहीभैंसाहैउसकोपकडनेकोभीमदौडा तबवहभैंसापृथिवीमेंगुप्तहोगया उसकासिरनैपालमेनिकलाजिसका नामपशुपतिरक्खा है तथाउसकापगकाश्मीरमेनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा औरचूतडवहींनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिकलीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलियेहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनेपालमेंभैंसेकाशृंगनांककानकुछनहीदेखपडताहै तथाकाश्मीरमेखुरभीनहीदेखपडते ऐसेअन्यत्रकुछभीनहींभैंसेका चिन्हदेखपडताकिन्तु सर्वत्र पाषाणहीदेखपडताहैपरन्तु ऐसी २ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वल अविद्या और मूर्खता का गुण है क्योंकि भीम इतना लंबाचौडा होता तो उसका घर कितना लंबा चौडा होता और नगर में वामार्ग में कैसे चल सक्ता तथा द्रौपद्यादिक उनकी स्त्री कैसे बन सक्ती और महादेव को क्या डर पडा था कि भैंसा होजाय फिर इतना लंबाचौडा क्यों न जाता और क्या अपराध वा पाप महादेव ने किया था कि चेतन से जड बन जाय इस्से यह बात सब मिथ्या है एक कामाख्या स्थान रच रक्खा है उस में एक कुंड बना रक्खा है उसका नाम योनि रक्खा है और वह रजस्वला होती है यह सब बात उन पुजारियों ने आजीविका के हेतु मिथ्या बना लिई है एक बौद्धगया स्थान है उस में बौद्ध की मूर्ति बना रक्खी है उसकी पूजा और दर्शन आज तक करते हैं वह मूर्ति केवल जैनों की ही है सो ऐसा जानना चाहिये कि जितना पाषाणपूजन है और जो जडपदार्थों का पूजन सो सब जैनों का ही है एक गया स्थान बना रक्खा है उस में बडा संसार का धन लूटा जाता है गया के पण्डाओं को मुफ्त का बहुत धन मिलता है सो वेश्यागमन मद्यपान और मांसाहार में हो जाता है केवल प्रमाद में अच्छे काम में कुछ नहीं फिर यजमान लोग मानते हैं कि गया के श्राद्ध में ही पितरों का उद्धार होजाता है सो ऐसे कर्मों में उद्धार तो किसी का होता नहीं परन्तु नरक होने का संभव होता है फिर इस विषय में ऐसा कहते हैं कि रामचन्द्र ने गया में श्राद्ध किया था सो साक्षात् दशरथ जी उनके पिता उन ने हाथ निकाल के गया में पिण्ड ले लिया था उस दिन से गया का माहात्म्य चला है और वह स्थान गयासुर का था सो यह बात सब मिथ्या है क्योंकि वे लोग आज काल भी हाथ निकाल के क्यों नहीं पिण्ड ले लेते किसी समय कोई पुरुष फल्गु नदी में भूमि में गुहा बना के भीतर बैठ रहा होगा और उनों ने संकेत बना रक्खा था ऐसे ही उस ने भूमि में से हाथ निकाल के पिण्ड ले लिया होगा फिर झूठ बात प्रसिद्ध कर दिई कि साक्षात् पितृ लोग हाथ निकाल के पिण्ड ले लेते हैं उस स्थान का पण्डितों ने माहात्म्य बना लिया फिर प्रसिद्ध हो गई और सब मानने लगे सो गया ना-

मन्त्रिसस्थानमेंस्थाइकरें औरअपनेपुत्रपौत्र तथाराज्यजिसदेशमें-
अपनेरहताहोयउनका नामगयाबेटीकेनिघण्टुमें लिखाहैउस-
काअर्थ अभिप्राय तोजानानहो फिरयहपाखण्डरचलियाकाशि-
राजनेमहाभारतमेंलिखाहै किउसनेनगर बसायाथा इस्सेउसका
नामकाशीपडा औरवरुणा तथा असीनालाके बीचमेंहोनेसे वा-
राणसीनामरक्खागया इसकाऐसा झूंठ माहात्म्य बनालिया है-
किसाक्षात महादेव कीपुरीहैऔर महादेव नेमुक्तिका सदावर्त्त
बांधरक्खा हैतथाऊसरभूमिहैइस्मेपापपुण्यलगताहोनहीं रुबदेव-
तापंदरह२कलामेकाशीमेंरहतेहैं औरएक२कलासेअपने२स्थान
मेंरहतेहैं एकमणिकर्णिकाकुंडरच रक्खाहैकियहांपार्वतीकेकान
कामणिगिरपडाथा तथाकालभैरव यहांकाकोटपालहै सोसबको
दण्डदेताहैपापपुण्य कीव्यवस्थासेइसकाशीका महाप्रलयमें भीप्र-
लयनहीहोताक्योंकिकालभैरव त्रिशूलकेउपरकाशीकोरखलेताहै
औरभूचालमेंहलतीभीनहींपंच काशीकेबीचमें जोकोईकीटपतंग
तकभीमरैतोउसको महादेव मुक्तिदेतेहैं अन्नपूर्णा सबकोअन्न
देतीहैअन्तर्गृहीऔरपंचक्रोशीके करनेसेसबपापछूटजातेहैंइत्या-
दिकमिथ्या२जालरचकेकाशीरहस्य औरकाशीखण्डादिकग्रंथब-
नालियेहैं औरकहतेहैंकिबारहज्योतिलिंगहोतेहैंउनमेसेएकयह
विश्वनाथहैउनसेपूंछना चाहियेकिज्योति लिंगहोतेतोमंदिरमें
कभीअन्धकारनहोता औरवहपाषाण मुक्तिवाबन्धकभी नहोकर
सक्ताक्योंकिउसीको कारीगरोंने मंदिरकेबीच गढेमेंचिपकाकेबं-
धकररक्खाहैफिर अपनेहीबंधने सेनहीछूटसक्ता फिरअन्यकोमु-
क्तिक्याकरसकेगा सोयहकेवलपण्डितोंने बातबनालिईहै किका-
शीमेंमरनेसे मुक्तिहोतीहैक्योंकिइसबातको सुनकेसबलोगकाशी
मेंमरनेकेहेतुआवेंगे उनसेहमारी आजीविका सदाहुआकरेगी
इस्से ऐसी २ जाल रचाकरतेहैंप्रयागमें गंगायमुनाके संगममेंए-
कतोसरीझूंठसरस्वती मानलेतेहैंकि तीसरीसरस्वती भीयहांहै

और इस स्थान में मुंडाने से सिद्ध होजाता है सो ऐसा अनुमान किया जाता है कि पहिले कोई नौवा था उसने अपने कुलको आजीविका कर लिई है और संगम में स्नान करने से मुक्ति होजाती है यह केवल आजीविका के वास्ते झूठ२ बात और झूंठ२ पुस्तक लोगोंने बनालिए हैं कि प्रयागतीर्थ राज है ऐसे हो अयोध्या में हनुमान्जी को रामजी गड्डीदे गये हैं और अयोध्या में निवास से भोमुक्ति होती है यह भी उनकी बात मिथ्या ही है तथा मथुरा और वृन्दावन में बडो२ मिथ्या बात बनालिई हैं कि यमद्वितीया के स्नान से यम के बंधन में जीव छूटजाता है क्योंकि यमुना यमराज को बहिन है और वृन्दावन के विषय में मुक्तिभी रोती है कि मेरी मुक्ति कैसे होयगी मुक्ति मुक्ति के वास्ते वृन्दावन को गलियों में भाडू देती है और मंदिरों में नानाप्रकार के प्रमादों से व्यभिचारादिक कर्त्ते हैं तथा अनेक प्रकार के जालों से लोगों का धन हरण करलेते हैं एकचक्रांकितों ने मंदिर रचवाया है उनके दरवाजों का नाम वैकुंठद्वार इत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगव सब मनुष्य मिलके इकट्ठे खाते हैं सकल पुंगव उसका नाम है कि कच्चोपक्की सब प्रकार का पक्वाकच्चा अन्न रनता है फिर ब्राह्मण से लेके अंत्यज पर्यन्त उनके जितने शिष्य हैं उनकी पंक्ति लगजाती है उनके हाथके बीच में थोडा २ सब पदार्थ सबको देदेते हैं और वे खालेते हैं उनमें से कोई जल से हाथ धोडालता है और कोई वस्त्र में पोंछ लेता है और ठाकुरजी को झुलाबदेते हैं उसमें भी बडे २ अनर्थ सुनने में आते हैं और एक राचवेश्या के घर ठाकुरजी जाते हैं फिर उनको प्रायश्चित्त कराते हैं और यमुनाजी में डुबाके स्नान कराते हैं यह केवल उनका मिथ्याप्रपंच है परधन हरने के वास्ते और मूर्खों को बहकाने के वास्ते फिर उस मंदिर में बहुतलोगों को शंखचक्रादिक तपाके दाग देदेते हैं ऐसे २ मिथ्याछलप्रपंच से अपनी आजीविका कर्त्ते हैं इनमें कुछ सत्य वा चमत्कार नहीं तथा गंगादिक तीर्थों के विषय में सब पाप का छूटना वैकुंठ में जाना मुक्तिका होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात् भगवती का मानना यह बात मि-

ष्या है क्योंकि हिमवतः प्रभवति गंगा यह व्याकरण महाभाष्य का व-
चन है इसका यह अभिप्राय है कि हिमालय से गंगा उत्पन्न होती है
तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालय से उत्पन्न भई हैं और वि-
न्ध्याचल में तथा तडागों से भी बहुत नदियां उत्पन्न होती हैं केवल ज
सब में है उस जल में उत्तम मध्यम और नीचता भूमि के संयोग गुण से
है इससे अधिक कुछ नहीं सो जल होता है वह जड़ क्या पाप को छोडा स-
केगा और मुक्ति को भी दे सकेगा कुछ भी नहीं जैसा जिस जल में गुण है
शीत उष्ण मिष्ट निर्मलता वैसा ही उसमें होता है इनसे अधिक गुण
नहीं वे क्षार मिष्टादिक गुण सब भूमि के संयोग से हैं अन्यथा नहीं गंगे-
त्वद्दर्शनान्मुक्तिर्न जाने स्नानजं फलम् इत्यादिक नारदादिकों के
नामों से मिथ्या २ श्लोक लोगों ने बना लिये हैं जो दर्शन से मुक्ति हो-
ती तो सब संसार को ही मुक्ति हो जाती और मुक्ति से कोई अधिक फ-
ल नहीं है कि संसार में स्नान से कुछ अधिक होवे यह केवल मिथ्या क-
ल्पना उनकी है कि काश्यां मरणान्मुक्तिः गंगे त्वद्दर्शनान्मुक्तिः सह-
स्रभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः ॥ इत्यादिक मिथ्या श्रुति
लोगों ने बना लिई हैं किन्तु ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः यह सत्य श्रुति है कि
बिना ज्ञान से किसी को मुक्ति नहीं होती क्योंकि सत्यासत्य विवेक के बिना
असत्य के दोषों का ज्ञान नहीं होता दोषज्ञान के बिना मिथ्या व्यवहार
और मिथ्या पदार्थों से कभी नहीं जीव छूटता इससे मुक्ति के वास्ते सत्या
सत्य का विवेक परमेश्वर में प्रीति धर्म का अनुष्ठान अधर्म का त्याग स-
त्संग सद्विद्या जितेन्द्रियतादिक गुण इनमें अत्यन्त पुरुषार्थ से मुक्ति-
हो सक्ती है अन्यथा नहीं और जिसको इस बात का निश्चय करना होवै
वह इस बात को करै कि जितने तीर्थों के पुरोहित और मंदिरस्थान के
पुरोहित उनके प्राचीन पुस्तकों के देखने से सत्य २ निश्चय होता है-
क्योंकि वह यजमान देश गांव जाति दिन मास और संवत्सर इनका
यथावत् पुस्तक जो बहीखाता उसमें लिखे रखते हैं उनके देखने से ठी
क २ दिन मास और संवत्सर का निश्चय होता है कि इस तीर्थ वा इस मं-

दिरकाप्रारंभ इससंवत्सरमेंभयाहै क्योंकिजब जिसकाप्रारंभहोता
हैतबउसकेपण्डे औरपुजारी तथापुरोहित उसीसमयबनजातेहैं
देखनाचाहियेकि विंध्याचलमूर्ति केविषयमें लोगकहतेहैंकिएक
दिनमें तीनरूप धारणकरतीहै अर्थात्प्रातः कालमेंकन्या म-
ध्यान्हमेंजवान औरसंध्याकालमेंबुड्ढीबनजातीहै इनसेपूंछनाचा-
हियेकि रातमेंउसमूर्तिकी कौनअवस्थाहोतीहै सोकेवलपुजारी-
लोगोंकीधूर्त्तताहै क्योंकिजैसावस्त्राभूषणधारणकरैंवैसाही स्व-
रूपदेखपडताहैऔरकहतेहैंकिइसमंदिरमेंमक्खीनहींहोतीपरंतु
असंख्यातमक्खीहोतीहैं सोकेवलझूठ बकाकरतेहैंआजीविकाकेवा-
स्ते तथावैजनाथकेविषयमेंकहतेहैंकिकैलाससेरावणलेआयाहैय-
हसबमिथ्याकल्पना लोगोंकीहै क्योंकिआजतक नये२ मंदिरन-
ये२ मूर्त्तियोंकेनामधरतेहैं औरसंप्रदायीलोगोंनेअपने२ संप्रदाय
केपुष्टिकेवास्ते बनालियेहैं उनकानाम रखदियापुराणऔरऐसा
भीवेकहतेहैं कि अष्टादशपुराणानांकर्त्तासत्यवतीसुतः इसकायह-
अभिप्रायहैकिअठारहपुराणोंकेकर्त्ताव्यासजीहैं जोकिसत्यवतीके
पुत्रहैं यहबातमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीबडेपंडितथे और सत्यवादी
सबपदार्थविद्या यथावत्जानतेथे उनका कथनयथावत्प्रमाणयुक्त-
हीहोताहै क्योंकिउनकेबनायेशारीरकसूत्रहैं औरमहाभारतमें-
जो२ श्लोकहैं वेभीयथावत्सत्यहीहैं प्रश्नमहाभारतमेंअन्यभीश्लोक-
हैं अथवासबव्यासजीकेबनायेहैं उत्तर कईहजारश्लोकसंप्रदायीलो
गोंनेमहाभारतमें मिलादियेहैं अपने२ संप्रदायकेप्रमाणकेवास्ते
क्योंकिशांतिपर्वमें विष्णुकीबडाईलिखीहैऔरसबकोन्यूनताऔ-
रउसीमें सहस्रनामलिखेहैं इससे विरुद्धउसीपर्वमें शिवसहस्रना-
मजहांलिखेहैं वहांविष्णुकोतुच्छकरदियाहै तथाजहां विष्णुकी
बडाईहै वहांमहादेवको तुच्छकरदियाहैऔरजहांगणेशऔरका-
र्तिकस्वामीकीस्तुतिकिईहै वहांअन्यसबकोतुच्छबनादियेहैं तथा-
भीष्मपर्व औरविराटपर्वमें जहांदेवीकीकथालिखीहै वहांअन्यसब

तुच्छगिने हैं एकभीम और धृतराष्ट्र की कथा लिखी है कि धृतराष्ट्र के शरीर में ६००० हाथी का बलथा तथा भीम के शरीर में दसहजार हाथी का बलथा और एकगरुड पक्षी का बल ऐसा वर्णन किया कि जिसका तोलन नहीं होसक्ता उसगरुड का बल विष्णु के आगे तुच्छ गिना तथा उसविष्णु का बल वीरभद्र के आगे तुच्छ कर दिया है वीरभद्र का रुद्र के आगे और रुद्र का विष्णु के विष्णु का वीरभद्र के आगे ऐसे परस्पर मिथ्या कथा व्यासजी की बनाई महाभारत में नहीं बनसक्ती और भी ऐसी २ कथा लिखी हैं कि भीम को दुर्योधन ने विषदान दिया जबवह मूर्छित होगया तब उसको बांध के गंगा जी में गिरादिया सो वह पाताल को चलागया वहां सर्पों ने बहुत काटा फिर जब उसका विष उतरगया तब सर्पों को मारनेलगा उसमें सर्प भागगये वासुकी राजा से जाके फिर कहा कि एक मनुष्य का लड़का आया है सो बड़ा पराक्रमी है तब वासुकी भीम के पास गया और पूछा कि तूं कौन है कहां से आया है तब भीम ने कहा कि मैं पाण्डु का पुत्र हूं और युधिष्ठिर का भाई तब तो वासुकी बड़े प्रसन्न भये और भीम से कहा कि जितना तुम से इन कुण्डों में से जल पीया जाय उतना पीओ क्योंकि ये नव कुण्ड अमृत से भरे हैं ऐसा सुन के उठा और नव कुण्डों का सब जल पी गया सो नव हजार हाथी का बल बढ़गया इसमें विचारना चाहिये कि विष के देने से वह भीम मर क्यों न गया और जल में एक घड़ी भर नहीं जी सक्ता और पाताल का मार्ग वहां कहां होसक्ता है और जो हो सक्ता तो गंगा का जल सब पाताल में चला जाता ऐसी २ मिथ्या कथा व्यासजी की कभी नहीं हो सक्ती और जितनी सत्य कथा है वे सब महाभारत में व्यासजी की ही कही हैं और जितने पुराण हैं उनमें व्यासजी का किया एक श्लोक भी नहीं क्योंकि शिवपुराणादिक सब शैव लोगों के बनाये हैं उनमें केवल शिवको ही ईश्वर वर्णन किया है और नारायणादिक शिव के दास हैं फिर रुद्राक्ष भस्म नर्मदा का लिंग और मृत्तिका का लिंग बनाके पूजने बिना किसी की मुक्ति नहीं होती यह केवल शै-

वोंकी मिथ्या कल्पना है और इन बातों से कभी नहीं मुक्ति होती बिना धर्मानुष्ठान विद्या और ज्ञानसे फिर वह जो शिव जिसको कि ईश्वर वर्णन किया था पार्वतीके मरनेमें सर्वत्र रोता फिरा ऐसी कथा श्रेष्ठ पुरुषोंकी कभी नहीं होती किन्तु यह केवल शैवसंप्रदायवालोंकी बनाई है तथा शाक्तलोगोंने देवीभागवत तथा मार्कण्डेय पुराणादिक बनाए हैं उनमें ऐसी २ कथा झूठ लिखी है कि श्रीपूर्वमें एकभगवती परब्रह्मरूप थी उसने संसार रचनेकी इच्छा किई तब प्रथम ब्रह्माको उत्पन्न किया और कहा कि तूं मेरे से भोग कर तब ब्रह्माने कहा कि तूं मेरी माता है तुझसे मैं समागम नहीं करसक्ता तब कोपसे भगवतीने ब्रह्माको भस्म करदिया और दूसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम विष्णु है उससे भी वैसा ही कहा फिर विष्णुने भी समागम नहीं किया इससे उसको भी भस्म करदिया फिर तीसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम शिव है उससे भी कहा कि तूं मुझसे समागम कर तब महादेवने कहा कि तूं तो मेरी माता है तेरे से मैं समागम नहीं करसक्ता परन्तु तूं अपने अंगसे एक स्त्रीको पैदा कर उससे मैं समागम करूंगा फिर उसने पैदा किई और दोनोंका विवाह भी किया फिर महादेवने देखा कि ये दो भस्म क्या पडी हैं तब देवीने कहा कि तेरे भाई हैं इन दोनोंने मेरी आज्ञा नहीं मानी इससे इनको मैंने भस्म करदिया फिर महादेवने कहा कि मेरे भाई हैं इनको जिलादेओ तब भगवतीने जिलादिये और फिर कहा कि और दो कन्या उत्पन्न करो कि मेरे भाई का भी विवाह होजाय भगवतीने उत्पन्न किई विवाह होगया एकका नाम उमा दूसरीका नाम लक्ष्मी तीसरी सावित्री इनके विषयमें ब्रह्मा नारायणकी नाभिसे उत्पन्न भया कहीं लिखा कि ब्रह्मासे रुद्र और नारायण उत्पन्न भये कहीं लिखा कि उमा दक्षकी कन्या कहीं लिखा हिमालय की कन्या है लक्ष्मी समुद्र कि कन्या है कहीं लिखा कि वरुणकी कन्या कहीं लिखा कि सावित्री सूर्यकी कन्या है कहीं लिखा कि ब्रह्मासे जगत उत्पन्न भया कहीं नारायणसे कहीं महादेवसे-

कहींगणेशसे कहींस्कंदसे ऐसे झूंठ २ कथापुराणोंमेंबनारक्खीहै
प्रश्न इसमेंविरोधनहीं क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकीहैंउत्त-
र यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्
जैसोसूर्यादिकसृष्टिपुर्वकल्पमेंभईथींवैसोसबकल्पमेंहोतीहै ऐसा
जोकहोगेतोकिसीकल्पमे पगसेभीखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहों-
गेनेत्रसेबोलतेहोंगे जीभसेनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबजानलेना
लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खा
हैसप्तशती उसमेंऐसे २ झूंठकथालिखाहै किरुधिरौघमहानद्यः
सद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ न-
दियांचलीं इनसेपूंछना चाहिएकि रुधिरवायुकेस्पर्शसेजमजा-
ताहै उसकीनदीकभीनहीचलसक्ती रक्तबीजइतनेबढेकिसबजग-
त्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइतनेनगरगां-
व पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांखडेथेयस्याःप्रभावमतुलंभ-
गवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चंडिकाखिलजगत्प-
रिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा वि-
ष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव
और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहींभयेचण्डिकोपेइसधा
तुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरू-
पहीहै विष्णुःशरीरग्रहणमहमीशानएवच कारितास्तेयतोऽत-
स्त्वांकःस्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतैंनेहीश-
रीरधारणवालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोस-
क्ताहै ऐसाकहके त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरने
भीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषेधकरैउसी
कोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः
मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयःपुछनाचाहिये उसभगवती
कीप्रतिज्ञाहैकिमेराइसस्तोत्रका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगाअर्था-
त्सबदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहोताहैसो यह

प्रतिज्ञा निजानकहांगई कि इसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक
दुःखोंमेंपीडित देखनेमेंआतेहैं धनधान्यपुत्रोंकी इच्छाभी अत्यन्त
होतीहैऔरमिलताकुछनहीं यहांतककिपेटभीनहीभरताऐसी२
मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको बिश्वासहोजाताहै यहबडा
एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णुपुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों
मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्या कथा
लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१००
बरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म
में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने
सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्याबातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका
शरीरहीनहीथाऔर ऋषिकाश्रापथा कियमलोककोपरीक्षितजा
य फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगयायहउनकी
बातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामू-
लमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्मानेनारदसेनारदने व्यासजी
से व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेचल-
निकसा सो यहबडाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मे य-
द्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक
चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्ययेदोनोंज्ञानकेविशे-
षणहोनेसे वही विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह
जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेसरह-
स्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहीहैप-
रमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना
मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहीहोता-
हैजैसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजय-
विजयकी कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारबैकुंठ कोगयेथे
उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजययेदोनोंबैकुंठ
केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभयाऔरशापज-

यविजयकोदियाकितुम जाओभूमिमेगिरपडोतबतोउनकोबडाभय
भया औरउनकोप्रार्थनाकिई किमहाराजमेरे शापकाउद्वारकै-
सेहोगा तबसनकादिकोंनेकहाकि जोतुमप्रीतिसे नारायणकीभ
क्तिकरोगेतोसातवें जन्मतुमारा उद्वारहोगा औरजोबैरसेभक्तिक-
रोगे तो तीसरेजन्मतुमारा उद्वारहोगा इसमेंबिचारनाचाहिये
किसनकादिकसिद्वथे वेवायुवत् आकाशमार्गसे जहांचाहेंवहांजा-
तेथे उनकानिरोधकैसेहोसक्ताहै तथाजयबिजयनेबालकरूपथेचा-
रौ कोक्योंरोका क्योंकिवेक्यादोनोंमूर्ख थे औरवेसाक्षातब्रह्मज्ञा-
नीथे उनकोक्रोध क्योंहोता और कोईकिसीको प्रीतिसेसेवाकरै
औरदूसराउसकोदण्ड सेमारै उनमेसेकिसके ऊपरवहप्रसन्नहो-
गाजोकिसेवाकर्त्ताहैऔरजोदण्डामारताहैउसके ऊपरकभी कि-
सीकोप्रसन्नतानहींहोसक्तीफिरवेहिरण्याक्षऔर हिरण्यकश्यपदो
नोंभयेएककोवराहनेमारा औरदूसरेकोनृसिंहनेउसकापुत्रथाप्र-
ल्हादउसकेविषयमेंबहुतझूंठकथाभागवतमेंलिखीहैकिउसकोकूंए
मेगिरायाऔरपर्वतमेगिरायापरन्तुवहनमराफिरलोहेकाखंभअ-
ग्निसेतपाया औरप्रल्हादसेकहा कितूंइसकोपकड नहींतोतेरासि
रमैकाटडाहूंगाफिरप्रल्हादखंभकेसामनेचला औरचित्तमे डरा
भीकुछ किमैजलनजांऊ सोनारायणने चिवटीउसकेऊपरचलाई
उनकोदेखके प्रल्हादनिडरहोके खंबेकोपकडा तब खंभाफटगया
औरबीचमेसेनृसिंह निकलेसोउसकेपिताकोपकडके पेटचोरडा-
लाऔरनृसिंहकोबडाक्रोधआयासोब्रह्मामहादेवलक्ष्मीतथाइन्द्रा
दिकदेवोंसे नृसिंहकेकोपकोशांतिहीनहोभई फिरप्रल्हादसे सबने
कहाकि तूंहीशान्तिकर सोप्रल्हाद नृसिंहकेपासगया औरनृसिं-
हशांतहोगया सोप्रल्हादको जीभसेचाटनेलगा औरकहाकि बर-
मांग तबप्रल्हादनेकहा किमेरेपिताका मोक्षहोयतबनृसिंहबोले
किमेरेबरसे २१ पुरुषोंकामोक्ष होगयातेरेपितादिकोंकाइनसेपूं-
छनाचाहियेकिनारायणने शूकरऔरपशुकाशरीरक्योंधारणकि-

या औरकैसेधारणकरसक्ते हिरण्याक्षपृथिवीको चटाईकोनाईं ध
रकेसिराने सोगया सोकिसकेऊपर सोया औरपृथिवीको उठाई
सोकिसकेऊपर खडाहोके और पृथिवीको कोईउठा भीसकताहै
औरकोई नारायणकेभक्तहो पर्वतसेगिरा देवाकूएमेंडालदेवह म
रजायगा अथवाहाथगोडटूटजायगा रक्षाकोईनहीकरेगा खंभमें
सेनृसिंहकानिकलना यहबातबडोमिथ्याहै औरनृसिंहजोनारा-
यणकाअवतार औरसर्वज्ञहोतातो पहिली बातकोक्योंभूलजाता
जोसनकादिकोंने मानवातोनजन्ममेंसद्गतिकहोथी उननेपहिलेहो
जन्ममेंसद्गतिक्योंटदिई औरप्रथमही उनकाजन्मथा उसको २१पी
ढोनहीवनसक्तो औरजोकश्यप मरोचिब्रह्मातकबिचारैं तोभीचा-
रपोटीहोसक्तोहैं २१ तककभोनहो फिरउसनेलिखाकि हिरण्या-
क्षहिरण्यकश्यप हो रावणकुंभकर्ण शिशुपाल औरदन्तवक्रहोतेभ
ये फिरसद्गतिकिनकोभई यहबडोमिथ्याकथाहैअजामीलकोकथा
मेलिखाहै किअपनेपुत्रको मरणसमयमें बोलायाउसकाभी नाम-
नारायणथा सोनारायणने इतनाजानाभीनही किमेरेकोपुकार-
ताहै वाअपनेपुत्रको औरवहबडापापीथापरन्तुएकसमयनारायण
केनामसे उसकोवैकुंठकावासदेदिया सोबडाभारीअन्यायकिपा-
पकरै औरदण्डनहोय ऐसीकथासुनके लोगोंकीभ्रष्टबुद्धिहोजाती
है क्योंकिएकबारनारायणके नामसे सबपापछुटजाते हैं फिरकोई
पापकरनेमेंभयकभीनहोकरेंगा व्यासजोनेसबवेदवेदांग विद्याओं
कोपढलियाऔरपरमेश्वर पर्यन्तयथावत्पदार्थोंकासाक्षात्कार-
कियाथा तथाअणिमादिकसिद्धिभीभईथी फिरभी सरस्वतीनदीके
तटमे एकवृक्षकेनीचे शोकातुरहोके जैसेरोताहोवै वैसेबैठेथे उ-
ससमयमेंवहांनारदआये औरव्यासजीसेपूंछा किआपऐसीव्यव
स्थामेंक्योंवैठे हैं तबव्यासजीबोले किमैंनेंसबविद्यापढी औरसबप्र-
कारकाज्ञानभी मुझकोभया परन्तुमेरेचित्तको शांतिनहीभई तब
नारदजीबोले कितुमने भगवतकथानहीकिई औरऐसाग्रन्थभीको

ईनहीबनायाजिसमें भगवतकथाहोवै सोआपभागवतबनावैंकथा
जोकेगुणयुक्त तबआपकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहि-
येकिव्यासजी जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोअज्ञानशो-
क औरमोह क्योंहोता और जोउनकोअज्ञानादिकथेतोअज्ञानी-
काबनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहींहोसक्ता फिरइसकथामें
वेदादिकोंकोकेवलनिन्दाआतीहै क्योंकिवेदादिकोंके पढनेमेंव्या-
सजीकोज्ञान नहींभया तोहमलोगोंको कैसेहोगा फिरभीनिग-
मकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंसे केवलवेदोंकीनिन्दाही-
किईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंकी यहनिन्दानकरतातोइसम
हामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थउसकी प्रवृत्तिहो नहींहोतीफि-
रउसनेनृगराजकीकथालिखीकि यावत्यः सिकताभूमौयावन्त्योदि
वितारकाः यावत्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः॥ नृगराजाने इ-
तनीगायदिईकिजितनेभूमिमेंकणिकाहैं इसमें पूछनाचाहिये किइ-
तनीगायकहां खडीरहतीथीं क्योंकिएकगायतोनवाचारहाथके
जगहमें खडीरहतीहैं उसभूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरो-
डहांलाखहां वर्षतकगिनें तोभीपारावार नहींहोवै फिरभीउस
मिथ्यावादीको संतोषनहींभया मिथ्याकहनेसेकि जितनेआकाश
मेंतारे औरजितने वृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकियेफि-
रभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एकब्राह्मणकोपहिले
दिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलग-
किएक कहैयहमेरीगायहै दूसराकहैकिमेरी तबनृगराजनेकहा
किदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेओ दूसराएककबद-
लेमें सौहजारलाख करोड़और सबराज्य लेलेओ परन्तुलडोमत
वेदोनोंऐसेमूर्खकिलडनेहीरहे किन्तुशान्तनभयेऔरफिर राजा
कोशापदेदियाकितूदुर्गतिकोजा इसमेंविचारनाचाहिये किएक-
तोइसनेकर्मकांडकीनिन्दाकिईकीथोडीसीभीभूलपडजायतोदुर्ग-
तिकोजाय इससेकर्मकाण्डमेंकुछफलनहीं ऐसाउसकोमिथ्याबुद्धि

थोकिइसप्रकारकी मिथ्याकथाउसनेलिखी औरब्राह्मणोंकीनिन्दा
लिखीकिसदाहठीहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहींदिया
ऐसेपुरुषोंको दण्डदेनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन
करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोंआपलगा एक
गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवहगया और असंख्यातगोदानका
पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकोकिइतने उसने
गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बहुतगोदानोंके पुन्यनेकु-
छसहायनहींकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथेनवायुवेगेन
जगामगोकुलंप्रतिजबकंसनेअक्रूरजीकोश्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा
तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें वायुवेगरथके ऊपरबैठ केचलेदो-
कोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल
कोआपहुंचे इससेपूछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया
जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरसेपहुंचेपरन्तु घोड़े-
कोऔर सहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका वायुवेग उसने
क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाकोश्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा
केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछः कोसतकउसशरीर की-
स्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी
गईवानहीं जोछःकोसको स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे
समातीकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथु-
राके पारकोस २ तकशरीरगिरतासो ऐसी २ झूठकथा लिखीहैं
परन्तु कथाकरनेऔरकरानेवाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगये-
हैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर
दियाकि। भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित्जबतकसृष्टि
है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहे उसकानामहैवि-
कल्पसोनरायणने ब्रह्माजीसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगाफि-
रवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़े कोह-
रलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजन्म लीजियेफिर कैसेगाढी भांगपीलिईकिझटभू लगयेकि यह
गोपहैवाविष्णुकाअवतारहै औरभागवतबनानेबालेने ऐसानशा
कियाहै किबड़ाअंधकारइसकेहृदयमेंहैकि ऐसाबड़ापूर्वापरविरुद्ध
लिखताहै औरजानताभीनहींप्रियव्रतकोकथाउसनेलिखोकिसा-
तदिनतक सूर्योदयनहींभया तबप्रियव्रत रथपैंबैठकेसूर्यकीनांईप्र-
काशितहोकेघूमनेलगासोउसकेरथकेपहियेके लीकसेसातदिनतक
घूमनेसेसातसमुद्रसप्तद्वीपबनगये इससेपूंछनाचाहियेकिरथकेचक्र
कोइतनोबड़ी स्थूललीकभईतो उसरथ केचक्रका क्याप्रमाणरथ
अश्वऔर प्रियव्रतकेशरीरका क्याप्रमाणहोगा एकरथइसकथामें
इतनास्थूलहोगाकि पृथ्वीकेऊपर अवकाश नहींहोसक्ता औरसूर्य
आकाशमेंभ्रमणकर्त्ताहै प्रियव्रतनेपृथ्वीकेऊपर भ्रमणकियाफिर
जितनासूर्यकाप्रकाश उतनाउसकेभीनहीं होसक्ता औरसूर्य
लोककेइतनास्थूलभी कभीनहींहोसक्ता भूगोलकेविषयमें जैसा
उसनेलिखाहै वैसा उन्मत्तभी नलिखतथा सुमेरुपर्वतकेविषयमें
जैसालिखाहैवैसाबालकभीनहींलिखेगा सोऐसीअसंभवऔरमि-
थ्या कथाभागवतका करनेबालालिखताहै श्रीकृष्णविद्वानधर्मात्मा
औरजितेन्द्रियथे ऐसामहाभारतकी कथासे यथावत निश्चयहोता
हैसो श्रीकृष्णकी जैसीनिन्दा इसनेकराई ऐसीकिसीकीनहोगी
क्योंकि उसनेरासमंडलकीकथालिखी उसमेंऐसी २ बातलिखी
जिस्से यथावत् श्रीकृष्णकीनिन्दाहोय जैसेकिवृन्दावनसे महावन
छः कोसहै वृन्दावनमें वंसोबजाई उसकाशब्दनिकट २ गांवऔर
मथुरामेंकिसीनेनहींसुनाकिन्तुजैसाबांदर उड़केजायवैसाशब्दउ-
ड़केमहावनमें कैसेगयाहोगा फिरउसशब्द कोसुनके महावनकी
स्त्रियांव्याकुलहोगईं फिरउनकेपतियोंनेनिरोधभीकियातोभीकि-
सीनेनमानाफिरउलटाआ भूषणऔरवस्त्रधारणकरके वहांसेचली
सोछः कोसवृन्दावन मेंनजानेपक्षीकीनांईं उड़गई होंगी पगकाआ-
भूषणनाकमेंनाकका आभूषणपगमें कैसेधारणकरलेंगीफिरश्रीकृ-

ष्णानेगोपियोंसेकहाकितुमनेबड़ाबुराकामकियाइस्से तुमअपनेर घ
रकोचलीजाओ औरअपने२ पतिकोसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा
भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियेझूठपतिहैं सत्यपतितोआ-
पहोहैं हमउनकेपासक्योंजाय आपकोछोड़केतबतोश्रीकृष्णभीप्र-
सन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकड़केरासक्रीड़ा करनेलगेसो छः
मासकोरात्रिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथींफि-
रश्रीकृष्णनेभीबिचाराकि इनमेंथोड़ेकालमें तृप्तिनहोगीइस्सेछः
मासकाक्रीड़ाकेवास्ते कालबनायाफिर क्रीड़ाकरते२ अन्तर्ध्यान
होगए फिरगोपियांबहुतब्याकुलहोनेलगीं औररोनेलगीं तबश्री
कृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगईं फिरभीसबमि-
लके क्रीड़ाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपीकोश्रीकृष्णकंधेपरले-
केबनमेंभागगए उसस्त्रीकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंबिचारनाचाहि-
एकि श्रीकृष्णकभीऐसी बातनकरैंगेइस्से बहुतजगतकाअनुपका-
रहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोंका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी
होजांयगीतथापुरुषभीश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजां-
यगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरी-
क्षितनेप्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका
शुकनेउत्तरदिया ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम्तेजी-
यसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोई-
श्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताहीहै किन्तु जैसाचाहैवैसा
करै परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनहीं जैसे
तेजस्वीपुरुष जोचाहैसोकरले जैतोअग्निसबकोजलादेताहै औ-
रदोषनहींलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थथेउनकोभी दोषन-
हीलगताइनमेंबिचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाका-
मकभीनहीकरेंगे औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्तेतो कुंभीपाकसेकभी
ननिकलते इस्से श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे
बड़ेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यं तथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्रायहै किईश्वरकावचनकहीं २ जैसेसत्यहोताहै वैसेआचर-
णभीसत्यकहीं२होताहैसर्वथाईश्वर असत्यबोलताहैऔरअधर्मको
होकतेहैंकिन्तु कदाचित् सत्यवचनबोलताहै ईश्वरऔरसत्यआच-
रणइनसेपूंछनाचाहिये कीयहईश्वरकोबातहै वाउन्मत्तकोरेकह
तेहैंकि जिसकेकण्ठमेंरुद्राक्ष वातुलसोकीमालानहोय वाललाट
मेंतिलकउनकेमुख देखनेसेपापहोताहै उनकेकहोकि उनकीपीठ
देखनेसेतोपुण्यहोताहोगा औरवेकहेंकिउनकेहाथसे जललेनेमें
पापहोताहै तोउनसेकहोकी वहपगसेजलदेदे फिरतोकुछपाप
नहीहोगा ऐसी २ बातेंलोगोंनेमिथ्या बनालिईहैं औरभागवत
केविषयमेंहमनेथोडेसे दोषदेखाहै परन्तु भागवतसबदोषरूपही
है वैसेहीअठारहपुराण अठारहउपपुराण औरसबतन्त्रग्रन्थवेन
एहीहैं इस्सेकुछजगत् काउपकार नहीहोतासिवाय अनुपकारवे
प्रश्नब्रह्माविष्णु महादेवादिक देवउनकानिवासस्थानकहांहैउत्त
रमहाभारतकोरीतिसे औरयुक्तिसेभीयहनिश्चयहोताहैकिब्रह्मा-
दिकसबहिमालयमें रहतेथेक्योंकि इसभूमिमें उनकेचिन्हपाये
जातेहैंखाण्डवबन इन्द्रका बागथा पुष्करमेंब्रह्माने यज्ञकियाकुरु
क्षेत्रमेंदेवोंने यज्ञकियाअर्जुन और श्रीकृष्णसे इन्द्रादिकोंकायुद्ध
होनातथापाण्डवोंसेगान्धर्वोंका युद्धहोनादमयन्तीकेस्वयंवरमेंइ-
न्द्रादिकोंकाआना अर्जुनकामहादेवसे पाशुपतास्त्रकासीखनात
थादेवलोकमें जाकेविद्या कापढना भीमका कुबेर पुरीमें जान
तथादशरथऔर केकैयीका रथकेऊपरचढके देवासुरसंग्राम मे
जानासर्वत्रयुद्धदेखनेकेवास्ते विमानोंपरचढकेदेवोंका आनाइस
देशवासियोंका अनेकबार समागमका होनामहोदधि औरगंगा
काब्रह्मलोकसे आनास्वर्गारोहिणीका कैलासमेनिकलनाअलक-
नन्दाकाकुबेरपुरीसेआना वसुधाराकावसुपुरीसे गिरनानरऔर
नारायणकाबदरिकाश्रममेंतपकाकरना युधिष्ठिरकाशरीर स
हितस्वर्गमेंजाना नारदका देवलोकसे इसलोकमें आना यज्ञों

देवोंकोनिमन्त्रणदेना औरउनोंका यज्ञोंमेंआना नहुषकेइन्द्रका होना युधिष्ठिरऔरयमराजका समागमकाहोना इसवक्ततकब्रह्म लोककेलासवैकुंठ इन्द्रवरुणकुबेर वसुअग्न्यादिक आठवसुपुरियोंकाइनसबकेआजतक उत्तरखण्डमेंप्रसिद्धविद्यमानोंका होना महभारतऔर केदारखण्डादिकोंमें सबकेजो२चिन्हलिखेहैं उनकेप्रत्यक्षकाहोना हिमालयकीकन्यापार्वतीसेमहादेवकाविवाहहोनावरुणकी कन्यासे नारायणका विवाहहोना इत्यादिकहेतुओंसे हिमालयमेंहोदेवलोक निश्चित था इसमेंकुछसंदेहनहींसोप्रथम जबसृष्टिभईथी इसक्याआयाकि प्रथमसृष्टिमनुष्योंकी हिमालयमेंभईथीफिरधीरे२ बढतेचलेवैसे २ सबभूगोलमेंमनुष्यवासकरते चले औरफैलतेभीचले सोजितनेपुरुषहैं मनुष्यसृष्टिमें वसबहिमालयउत्तराखण्ड सेहीबढेहैं सोउत्तराखण्डमें ३३ करोड़मनुष्यप्रथमथे सबपर्वतोंमें मिलके फिरजबबहुतबढे तबचारोंओरमनुष्यफैलगएउनमेंसेविद्याबल बुद्धिपराक्रमादिक गुणोंसेजोयुक्तथे वेब्रह्मादिकदेव कहातेथेऔर उनकीगद्दीपर जोबैठताथा उनकानामब्रह्मापडताथा वैसेहीमहादेवविष्णु इन्द्रकुबेरऔरवरुणादिकनामपडतेथे जैसेमिथिलापुरीमें जोगद्दीपरबैठताथ।उसकानामजनकपडताथा तथाजोकोईराज्याभिषेकहोके राजपरबैठे हैंउसकानाम पदवीकेयोग्य अबतकपडताजाताहै जैसेअमात्योंकानामदीवानलाटजजकलकटरइत्यादिकनामप्रत्यक्ष पडतेहीहैं परन्तु वेहिमालयवासीदेव पदार्थविद्याकोहस्तक्रियासहितअच्छीप्रकारसेजानतेथे उनमेंसेविश्वकर्मा बडेपदार्थविद्यायुक्तथ अनेकप्रकारकेयन्त्रअग्नि जलवायु इत्यादिककेयोगसे विमानादिकरथचलतेथे धर्मात्मातथा जितेन्द्रियादिकश्रेष्ठगुणवालेहोतेथेऔर बडेशूरवीरथेनाना प्रकारके आकाशपृथिवी औरजलमेंफिर नेकेवास्तेबनालेतेथेआकाशमें जोयानरचतेथे उसकानामविमान रखतेथे सो उनमनुष्योंमेंसे बहुतदुष्टकर्मकरनेवालेथे उनको हिमालयसेनि-

कालदिएथे सोहिमालयमे दक्षिणदेशमें आकरहतेथेफिरवेडकु-
कर्मकरनेको लगगएथे उनकानाम राक्षसपडाथा और कुछउन
डाकुओंमेसेअच्छे थे उनकानामदैत्यपडगयाथा इनदैत्यऔररा-
क्षसोंसेहिमालयवासी देवोंका वैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल
होतायातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्या
दिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतेभो
थेएकशुक्राचार्यदैत्योंका गुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकावेदोनोंअ-
पने२ चेलोंकोविद्यापढ़ातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढ़ता
थाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे
औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलन-
होचलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहीहै किन्तु
सबजोपर्वतवासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्यावर्त्तादिक देशोंमें
जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैंऔरजित-
नेहबशीआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे
राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंसेस्पष्ट-
निश्चयहोताहै इसमेंकुछसंदेहनहीं एकजयपुरमेंनाभाडोमजा-
तिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा
उनकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔ-
रजहांबैरागीलोक मुखहाथधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरा-
गियोंकेजूंठअन्न औरजूंठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाण
सेआजतकवैरागीलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसेनाभासिद्ध
होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तुआजतककोईजूंठके
खानेऔरपोनेसे सिद्धनहोभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभा
भीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खा
हैउसमेंवैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकीकथाउसनेलि-
खी है उसकोस्त्रीकानाम सीताथासोउनकेपास बैरागीदसपांचआए
उनकेखानेपीनेकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहीथासोउसकी स्त्रीके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये क्योंकिउसकोकोई उधारवामांगनेसे नहीदेताथा और उसंकोस्त्री सीताकपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगईऔरकहाकिहमको अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूंएकरातभर मेरेपासरहेतो तुझकोमैंदेऊं तबसीतानेकहाकि कुछचिन्तानहीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदियऔरउनवैरागियोंको भोजनउनने करायाफिरजब पहररातिगईतबपीपासेकहाको ऐसीबातकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपीपानेधन्यवाददिया कितूंबडीसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसवक्तकुछ २ वृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासपहुंचादियातब बनियेनेकहाकि वृष्टिहोतीहैवृष्टिमेंतेरापगभीनहीभीजाफिरतूं कैसेआईतबसीतानेकहाकितुझको इसबातकाक्या प्रयोजनहै तुझकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंसचबोलसीताने कहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपेंपहुंचादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोकेवास्ते अपनाशरीरभीबचडालायहसब बातउनकीअधर्मयुक्त औरझूंठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ पुरुषोंकाकामनहीं जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरै ऐसेहीधन्नाभगतकाविनाबीजसे खेतजमगयानामदेवकोपाषाणकीमूर्त्ति नेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कीमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभगतकेपास सेनारायण कुत्ताबनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विष पीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातझूंठहैऔरएकपरिकालउनसाधुओंकोसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीचक्रांकितथा परन्तुवहपरिकाल डांकूपनेसेधनहरणकरकेसाधुओंकोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहीपायाफिरबडाव्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोनारायणएकधनाढ्यके वेषसेरथपेंबैठके परिकालकोमिले सोझटप-

रिकालने उनको घेरलिया और कहा कि तुमको मारडालूंगा नहीं तो तुमसब कुछ रखदेओ परन्तु उनके रखने में कुछ देर भई सो झट उतर के नारायण के अंगुली में सोने को अंगुठियां थीं सो अंगूठो सहित अंगुली को काटलिई तब नारायण बडे प्रसन्न भये और दर्शन दिया कि तूं बडा भक्त है देखना चाहिये कि नारायण भी कैसे अन्यायकारी हैं डांकूओं के ऊपर कृपाकर देते हैं अर्थात् डांकू और चोरों के संगी हैं फिर वे चक्रांकित लोग नित्य उपदेश सबको करते हैं कि चोरी करके भी पदार्थ ले आवे और नारायण तथा वैष्णवों की सेवा में लगावे तो भी वह बडा भक्त होता है और बैकुंठ को जाता है फिर वह परीकाल कोई बनिये के जहाज पर बैठके समुन्द्र पार बनियों के साथ चलागया वहां बनियों ने जहाज में सुपारी भरी सो एक सुपारी का आधा खण्ड परिकालने जहाज में धर दिया और वैश्यों से कह दिया कि मैं आधी सुपारी पार जाके ले लेऊंगा तब वैश्यों ने कहा कि एक क्या दश तुम ले लेना तब परीकालने कहा कि नहीं मैं तो आधी ही लेऊंगा फिर जहाज पार को आगया जब सुपारी जहाज से उतारने लगे तब परिकालने कहा कि आधी सुपारी हमको देदेओ तब वैश्य लोग सुपारी का आधा खण्ड देने लगे सो परीकाल बडा क्रोध करके सब से कहने लगा कि ये वैश्य मिथ्यावादी है क्योंकि देखो इस पत्र में आधी सुपारी मेरी लिखी है सो ये देते नहीं सो अत्यन्त भर्त्सना करने लगा और लडने को तैयार भया। फिर जालसाजी करके आधी सुपारी नांव में से बटवा लिई उन वैरागियों के सेवा में सब धन लगा दिया सो ऐसे परीकाल को चक्रांकित के संप्रदाय में बडी प्रतिष्ठा है सो चक्रांकित के मन्त्रार्थ ग्रंथ में ऐसी बात लिखी है सो जितने संप्रदाई हैं वे अपने चेलों को ऐसे २ उपदेश करके और ऐसे ग्रन्थों को सुना के पापों में लगा देते हैं फिर भगतमाला में एक कथा लिखी है कि एक साधू एक ब्राह्मण के घर में ठहरा था और ब्राह्मण उसकी सेवा करता था। उसको एक कुमारी कन्या थी उस से वह साधू मोहित होगया सो उस कन्या को लेकर। त्रि में

कुकर्मकियाऔरखटियाकेउपरदोनोंनंगेसोगएथे सोजबउसकन्या
कापिताप्रात: कालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचादरदोनों
परओढादीई औसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फि-
रवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवस्त्रकिननेडा-
लासोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवह-
कन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके
जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतड-
रा तबतक कन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसा
ष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्या-
काग्रहणकिया इससेमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमे
रेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआपकोसमर्पण करदिया त
बसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोवि
चारना चाहिये किबड़े अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुन
केसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनही फि
रभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमें साधूपा
हुनेआये फिरउनकी सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेके-
वास्तेगये सोएकबनिये कीदुकान कीभींतमें सुरंगदेकेपुत्रभीतर
घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचीनीअन्ननिका-
लकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा त
बतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतो भीतरथें औरसिरबा-
हरनिकलाया तबतकउननेउसके पग पकडलिये औरसिरपकड़
लियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने बिचारकि-
याकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्र
कासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकरा
जपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलेगये औरखोजहोने-
लगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधु-
ओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधू

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालड़का उसकोजल्दी बोलाओ तबउ-
सकेमाता और पिता जोचोर उन्नेकहाकि कहींचलागयाहोगा
आजायगा आपतबतकभोजनकोजिये तबसाधुओंनेकहाकि बहुत
बआवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकीमा-
तानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसेमारा
गया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इससे वेहो
नोंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवह मारागया तबसाधुओंनेकहाकि
उसकाशरीरकहांहै तब उन्नेकहाकि सिरहमारेघरमे हैऔरश-
रीर राजघरमेंहै वेसाधूलोग राजघरमेंजाके शरीरलेआयेशरी
रऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचने-
कूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनआनन्दसेभो
जनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबड़ेभक्तहो और स्वर्ग
मेंतुह्मारावासहोगा इसमेंबिचारनाचाहिये किसाधुओंकीआज्ञा
होनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजा-
ना यहबड़ोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहो
जातेहैं ऐसी२ कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखीहैं फिरभीलोगों-
कीऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकर्तेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्र-
दोषब्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजांयगे तन्त्र औरदेवीभागवता-
दिकोंमेंलिखाहै नवरात्र काब्रत नकरैंवेनरकमेंजांयगे तथापद्म
पुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिग्पालोंका एकादशी विष्णु-
का द्वादशीवामनका चतुर्दशीनृसिंह औरअनन्तका अमावस्या-
पितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका सो मतमतान्तरोंसे औरपुराणत-
था उपपुराणोंसे यहआयाकिकिसीतिथिमेंभोजननकरना औरज
लभीनपीना औरजोकोईखाया वा पीयावहनरककोजायगा इस
मेंवकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इससे ऐसीकथामेंविरो
धनहीआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाबिवाह होताहै उस
केगीतगायेजातेहैं परन्तु पहिले जिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवालेहैं उनका खण्डनतोनहीहोता कियहीउत्तमहै वापहिले जिस्के विवाह भये और जिनके होंगे उनको नीचतो नहो बनाते इस्से ऐसे२ मूर्खताकेदृष्टान्तमे कुछनहीहोता ऐसे२ स्लोक लोगोंनेबनालियहैंकि शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिताशीतलेत्वंजगद्धात्री शीतलायैनमोनमः एक विस्फोटरोगहै उसका नामशीतलारक्खा याद्दशीशीतलादेवी ताद्दशोवाहनःखरः शीतलाअष्टमोकोगधेकीपूजाकर्तेहैं औरहनुमान् कारूपमानके वानर कोपूजाकर्त्तेहैं भैरवकावाहनकुत्ताकोमानकेपूजाकर्त्तेहैंतथापाषाणपिप्पलादिक दृक्ष्तुलस्यादिक औषधीदूब और कुशादिक घास पित्तलादिक धातु चन्दनादिककाष्ठ,पृथिवी,जल,अग्नि,वायु,जूता, औरविष्ठातकआर्यावर्त्त देशवालेपूजाकर्त्त हैं इनकोसुखवाकल्याण कभीनहीहोसक्ता जबतकइन पाखण्डोंको आर्यावर्त्तबासीलोग न छोडेगे तबतकइनकाअच्छा कुछनहीहोसक्ता फिरएकशालिग्राम पाषाण औरतुलसीघास दोनोंका बिवाहकरतेहैं तथा तडागबाग कूपादिकोंका बिवाहकरतेहैं औरनानाप्रकारकीमूर्तियांबनाकेमंदिरमेंरखतेहैं उनकेनाम शिवऔर पार्वती नारायणऔर लक्ष्मी दुर्गा काली भैरव,बटुक ऋषिमुनि राधा औरकृष्णसीता औररामजगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धिसिद्धि इत्यादिक रखलियेहैं फिरइनकेपुजारीबहुतदरिद्र देखनेमेंआतेहैं और सबसंसारसे धनलेनेके हेतु उपदेश करतेहैं किआओ यजमान धनचढाओ देवताओंको नहीतोतुमको दर्शनका फलनहोगा आमनियालेओ ठाकुरजीकेहेतु बालभोगलेआओ तथाराजभोगके वास्ते देओऔरगहनाचढाओ तथावस्त्र औरनारायण तथा माहादेवके वास्ते मंदिरबनवाओ औरखूबआजीविका लगवाओ हमकहतेहैंकि ऐसेदरिद्रदेवता औरमहंत तथापुजारीलोग आर्यावर्त्त के नाशके वास्ते कहांसेआगये औरकौनसा इसदेशकाअभाग्य औरपापथा किऐसे२ पाखण्डइसदेशमेंचलगये फिरइनकोलज्जाभीनहीआ-

तोकि अपने पुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कि यह सीताराम हैं इत्यादि कनामलेलेके ईशं नकरातेहैं इसमेंबडाउपहासहै परन्तु समझते नही देखनाचाहियेकि कृष्णतोधर्मात्माथे उनकेऊपर झूठजाल भागवतमेंलिखाहै फिरउसीलीला कोरासमण्डल बनाकेकहते हैंउसमेंकिसीलड़केको कृष्णबनातेहैं किसीकोराधाऔर गोपियां बनालेतेहैं तथासीतारामऔर रावणादिक लडकोंकोबनाकेली-लाकरतेहैं सोकेवलबड़े लोगोंकाउपहासइसमेंहोताहै और कुछ नहींक्योंकि श्रीकृष्णऔररामादिकोंकेजोसत्यभाषणादिकव्यवहा-र तथाराजनीतिका यथावत्पालना औरजितेन्द्रियादिक सबवि-द्याओंकापढना इनसत्यव्यवहारोंका आचरणतोकुछ नहीं करते किन्तुकेवलउपहासकीबातें तथापापोंकोप्रसिद्धकर्त्ते हैं अपनेकुग-तिकेवास्ते दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवे-षो दशवेषसमोनृपः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै कि सूना नामहत्यासोदशहत्याकेतुल्य जीवोंकोपीडा औरहननचक्र-सेहोताहै सो तेलीवाकुम्हारकेव्यवहारसेजीवोंकोदशगुणपीडा वा हननहोताहै इससे दशगुणधोबो वामद्यकेनिकालनेवाले के व्यव हारसे सौगुणहत्याहोतीहै तथाइससे दशगुणहत्यावेषमेंहोतीहैअ र्थात् वेषकिसकोकहतेहैंकिकिसीकास्वरूपबनाना औरनकल कर ना अर्थात् मूर्तिपूजन रामलीलाऔररास मण्डलादिकजितने-व्यवहारहैंवेसबवेषमेंहोगिनेजातेहैंक्योंकिउनकावेषधारणहीकि-याजाताहै इससेवेषमेंहजारहत्या काअपराधहैतथा जोराजान्या-यसेपालननहींकरता औरअन्यायकर्त्ताहै वहदसहजार हत्याका स्वरूपहै इससे वेषबनानाबावनवाना तथादेखनाभी सज्जनोंकोन चाहिये औरइनसबव्यवहारोंकोछोडनाचाहियेऔर अच्छेव्यव-हारोंकोकरनाचाहिये ऐसोइसदेशमें नष्टप्रवृत्तिभई हैकिकोईऐ सा कहताहै मारणमोहनउच्चाटन वशीकरणऔर विद्वेषणादिक मैंजानताहूं इनसेपूंछनाचाहिये कितूंजीवन मरेभयकाभी करा-

सच्चाहै वानही सोकोईदैवयोगसेमर जाताहै वाकपटछलसे वि-
षादिदेके मारडालतेहैं फिरकहतेहैं किमेरा पुरश्चरण सिद्ध हो
गया यहबातसबझूंठहै कोईरोगीहोताहै उसको बतलाताहै कि
भूतचढगयाहै फिरदूसरा बतलाता है किइसकेऊपर शनैश्चरा-
दिकग्रहचढेहैं तीसराकहताहै किसीदेवताकीखोरहै चौथा कह-
ताहैकिकिसीकाआपलगाहै येसब बातमिथ्याहैं कोईकहताहैकि
मैंरसायन बनाताहूं औरदूसरा कहताहै किमैंपारे कोभस्मबना
ताहूं उसकोकोईखालेतो बुड्ढेकाजवान होजाताहै यह भीमि-
थ्याहीजानना औरबहुत सेपाखण्डीलोग बहुतपुरुषऔरस्त्रियों
सेकहतेहैं किजाओतुमकोपुत्र होजायगा सोसबतोबन्ध्याहोतीही
नहीहैं जोकिसीकोपुत्रहोजाताहै तबवहपाखण्डीकहता हैकिदे-
खमेरेवरसे पुत्रहोगया औरऐसेभी कहताहै किमेरवरसे पुत्रहो-
गया वहस्त्रीऔर उसका पतिभी बकतेरहतेहैं किबाबाजीके वरसे
मुझको पुत्रभया उनकोबातसुनके बहुतमूर्खलोग मोहित होके
बाबाजीकोपूजामें लगजातेहैं फिरवहपाखण्डी धनपाकेबडे२ अ-
नर्थकरतेहैं यहसबबातझूंठहै मुहालेऔरमुहई इनदोनोंसेधूर्त्त
लोगकहदेतेहैं कितुह्माराबिजयहोगा सोदोनोंकापराजयतोहो-
तानही जिसकाविजयहोताहै उससे खूबधनलेतेहैं किहमारेपुर-
श्चरणऔरवरसे तेराविजयभयाहै अन्यथाकभीनहोता फिरबहुत
बुद्धिहीनपुरुष इसबातमेभी धननाशकरतेहैं कोईकहताहैकि जो
कुछहोताहैसो ईश्वरकीइच्छासेहीहोताहै जैसाचाहता है वैसा
करालेताहै औरकिसीकेकुछकरनेसेहोतानहीसबकोनचावैराम
गोसांई ऐसे २ झूंठवचनबनालियेहैं इनसेपूंछना चाहियेकि जो
वहमिथ्याभाषण चोरीपरस्त्रीगमनादिक कराताहैतो वहबहुतबु
राहैवहकभीईश्वर वाश्रेष्ठनहीहो सक्ता कोईकहताहै कि जोकुछ
होताहैसोप्रारब्धसेही होताहै इनसेंपूंछनाचाहिये कितुमव्यवहा
रचेष्टाओंकरतेहो सोपुरुषार्थमेंहो सदाचित्तदेनाचाहियेअन्य-

चनहीवङ्गतऐसे २ बालकोंकोऔर स्त्रियोंकोबहकातेहैंकिवे जन्म तकनहीं सुधरसक्ते ऐसाकहतेहैंकि वहमातापिता तोझूंठेहैंतुम आजाओनारायणके शरणऔरएक२साधूहजार२कोमूडलेताहै औरबहकाके पतितकरदेतेहैंउनकामरणतक कुछसुकर्मनहीहो- ताक्योंकिसुधरतेतो तबजोकुछ विद्यापढे औरबुद्धिहोतौ फिरएक घरकोछोड़देतेहैं औरमातापिताकी सेवाभीछोडदेतेहैंफिरकुटी मठऔर मंदिरोंकोबनाके हजारहांप्रकारके जालमेंफसजातेहैं उनसेपूंछनाचाहियेकि तुमलोगोंनेघर औरमातापितादिकक्यों छोडेथेतबवेकहतेहैं किऐसासुखघरमेंनहीहै ठीकहै किघरमेंछ- प्परकेनीचेरहनापडताथा मजूरोंसेहनतसेचना औरजवकाआ- टाभीपेटभरनहीमिलताथा सोआर्यावर्त्तमेंअन्धकारपूर्णहै नित्य मोहनभोगमिलताहै औरनित्यनयेभोग ऐसासुखस्त्रीकाभी गृहा- श्रमनमेंहीहोता इससे गृहाश्रममेंकुछहै नहीदेखियेकिएकरुपैया कोईमंदिरमेंचढाताहै उसकोएकआनेका प्रसाददेतेहैं कभीनही देतेहैंपरन्तुहमलोगोंने इसकोविचारलियाहैकिसोलहपचाससौ औरहजारगुनातकभी इसमंदिरकेदुकानदारोंमें तथातीर्थमें हो ताहै अन्यच कैसोहीदुकानदारोंकरो तोभीऐसा लाभनहीहोता क्योंकिखाना नित्यनयीस्त्रियां औरनित्यनानाप्रकार केपदार्थोंकी प्राप्ति अन्यचकहीं नहीहोती सिवायमंदिर पुराणादिकोंकोकथा और चेलोंकेमूडनेंसे इससेआपहजारकहो हमलोगइस आनन्द- कोछोडनेवालेहैं नहीअच्छा हमनेभीजानलियाहैकिजबतकयज- मानविद्या औरबुद्धियुक्तनहीहोंगे तबतकतुम लोगकभीनहीछो- डोगे परन्तुकभीदैवयोगसेविद्या औरबुद्धिआर्यावर्त्तमेंहोगी फि रतुमको औरतुमारे पाखण्डोंकोवे सेवकऔरयजमान हीछोडें गे तबपीछेझकमारकेतुमलोग भीछोडदेओगे ऐसे२ मिथ्या मत चलगयेहैं किकानकोफाडके मुद्राकोपहिरनेसे योगीऔर मुक्ति होतीहै सोइनकेमतमेंमत्स्येन्द्रनाथ औरगोरक्षनाथ दोआचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमा-
नतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै औरअपने मतकादिग्विजयभीब
नालियाहै औरजलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षशतकादिक
बनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअना-
चारवाममार्गियोंकीनांईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमे
पुरश्चरणकर्त्तेहैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं त-
थारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैंइससे अपनेको
धन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलास्तिपुष्क-
रंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुङ्गास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षे-
त्रं यमुनाचर्मकारिणी इत्यादिकवचनोंमे वेऐसामानतेहैं किइ-
नस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थोंकाफलप्राप्त होताहै
फिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किहालांपिबतिदीक्षितस्यमंदिरेसुप्तो
निशायांगणिकागृहेषुदीक्षितनाम रक्खाहै मद्यबेचनेवालेकाउ-
सकेघरमे जोपुरुषनिर्भयऔर निर्लज्ज होकेमद्यपीताहै फिरवे-
श्याकेघरमेजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसका ना
मसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछो
डदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवे
ज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्म
हैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनि
र्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचा
हियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामती-
र्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानाम-
चतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमो जबवेआपसमेंबातकर्त्तेहैं किलेआ
आतीर्थऔरपीयो इसवास्तेइननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔ
रनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलवीर भैरवआदिऔ-
रगणयेपांच नामरखलियहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाका-
ली इत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहीहैंउनकानामप-

शु कण्टकशुष्क औरविमुखादिक नामरखलियेहैं सोकेवलमिथ्या
जालउनकाहै इसकोसज्जनलोग कभीनमानैं वैसेहोकानफटेना
थोंकाव्यवहारहै क्योंकिवेभीश्मशान मेंरहतेहैं मनुष्योंका कपाल
रखतेहैं वाममार्गियोंसेवेमिलतेहैं इत्यादिकबहुत नष्टव्यवहार-
आर्यावर्त्तमेचलजानेसे देशकाश्रेष्ठ व्यवहार नष्टहोगया औरसब
देशखराबहोगया परन्तुआजकालअंगरेजके राज्यसेकुछ२ सुध-
रना औरसुखभयाहै जोअबअच्छे २ ब्रह्मचर्याश्रमादिकव्यवहार-
वेदादिक विद्याऔरपाखण्ड पाषाणपूजनादिकोंका त्यागकरैं तो
इनकोबहुतसुखहोजाय क्योंकिराज्यका आजकालबहुतसुखहैध-
र्मविषयमे जोजैसाचाहै वैसाकरैऔरनानाप्रकारके पुस्तकभीय-
न्त्रालयोंकेस्थापनेसेसुगम तासेमिलतेहैंअच्छे २ मार्गशुद्धबनग-
येहैं तथाराजाऔरदरिद्रकोभी बातराजघरमेसुनीजातीहै कोई
किसीकाजबरदस्तीसेपदार्थनहींछीनसक्ता अनेकप्रकारकीपाठशा
लाविद्यापढनेकेवास्ते राजप्रबन्धसेबनतीहैं औरबनीभीहैं उन
मेबालकोंको यथावतशिक्षाहोतीहै औरपढनेसे आजीविकाभी-
राजघरसे पढनेवालेकोहोतीहै किसीकाबन्धनवादण्डराजघरमे
नहीहोता जिसमेंजिसकोखुशीहोय उसकोवहकरै अपनीप्रसन्न
तासें अत्यन्तदेशमेमनुष्योंको वृद्धिभईहै औरपृथिवीभी खेतआदि
कोंसेबहुतहोगईहै वनादिकनहीरहेहैं लडाईबखेडा गदरकुछइ
सवक्तनहीहोतेहैं औरव्यवस्था राजप्रबन्धसे सबप्रकारसे अच्छीब
नीहैंपरन्तुकितनीबात हमकोअपनीबुद्धिसेअच्छीमालूमनहीदे-
तीहैं उनकोप्रकाशकर्त्ते हैं नजानेवेबडेबुद्धिमानहैं उननइनबातों
मेगुणसमझाहोगा परन्तुमेरीबुद्धिमे गुणइनबातोंमे नहीदेखप
डतेहैं इससे इनबातोंकोमैंलिखताहूं एकतोयहबातहै किनोनऔ
रपौंनरोटीमे जोकरलियाजाताहै वहमुझको अच्छानहीमालू-
मदेता क्योंकिनोनकेबिना दरिद्रकाभीनिर्वाह नहीहोता किन्तु-
सबकोनोनका आवश्यकहोता है औरवेमजूरी मेहनतसेजैसेतैसे

निर्वाहकर्त्ते हैं उनके ऊपरभीयह्नौन कादण्डतुल्यरहताहै इससेदरिद्रोंको क्लेशपहुंचताहै इससे ऐसाहोय किमद्य अफीम गांजाभांग इनके ऊपर चौगुना करस्थापनहोय तोअच्छीबातहै क्योंकि नशादिकों काछूटनाहीअच्छाहै औरजोमद्यादिक बिलकुल छूटजांय तोमनुष्योंका बडाभाग्यहै क्योंकिनशासेकिसीकोकुछउपकारनहींहोता परन्तु रोगनिवृत्तिकेवास्ते औषधार्थतो मद्यादिकोंकीप्रवृत्तिरहनाचाहिये क्योंकिबहुतसे ऐसेरोगहैंकिजिनकेमद्यादिकही निवृत्तिकारक औषधहैं सोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे उनरोगोंकोनिवृत्तिहोसक्तीहै तोउनकोग्रहणकरैं जबतकरोगनछूटे फिर रोगकेछूटनेसेपीछे मद्यादिकोंकोकभीग्रहणनकरैं क्योंकि जितनेनशाकरनेवालेपदार्थहैं वेसबबुद्ध्यादिकोंकेनाशकहैं इससे इनके ऊपरही करलगानाचाहिये औरलवणादिकोंकेऊपरनचाहिये पौनरोटीसेभी गरीबलोगोंकोबहुतक्लेशहोताहै क्योंकिगरीबलोगकहींसे घासछेदन करकेलेआये वालकडीकाभार उनकेऊपर कौडियोंके लगनेसे उनकोअवश्यक्लेशहोताहोगा इससे पौनरोटीकाजो करस्थापनकरना सोभीहमारीसमझसे अच्छानहीं तथा चोरडाकू परस्त्रीगामी औरजूआकरनेवाले इनकेऊपरऐसादंडहोना चाहिये किजिसकोदेख वासुनके सबलोगोंको भयहोजायऔर उनकामोंकोछोडदें क्योंकिजितनेअनर्थहोतेहैं वेसबउनसेंहीहोतेहैं सोजैसामनुस्मृति राजधर्ममें दण्डलिखाहै वैसाही करनाचाहिये जबकोई चोरीकरै तबयथावत् निश्चयकरकेकिइसनेअवश्यचोरीकिईहै कुत्तेकेपंजेकोनांईलोहेकाचिन्ह राजाबनारक्खे उसकोअग्निमें तपाकेललाटके भौंकेबीचमेंलगादे कुछबेतभीउसकोमारदे औरगधेपैंचढाके नगरकेबीचमें बजारमेंजूतियांभीलगतींजाय औरफिरायाकरै फिरउसकेकुछधनदण्डले अथवा घडे दिन जहलखानेकेबीच वहांसूखेचने पावभरतक खानेकोदे औररातभर पिसवावै नपीसेतोवहांभी उसकोजूतेबैठें औरदिव-

समेंभीकठिनकाम उस्से करावे जबतकवह निर्बलनहोजाय परन्तु ऐसाबहुतदिननरक्खे जिस्से किमरनजायफिरउसको दोतीनदिनतक शिक्षाकरै किसुनभाई तैंनेमनुष्यहोके ऐसाबुराकामकिया कितेरेऊपर ऐसादण्डहुआ हमकोभीतेरा दण्डदेखकेबडाहृदयमेंदुःखभया औरआपभलेआदमी होकेव्यवहारकरना फिरऐसाकाम कभीनकरनाचाहिये अच्छे२ कामकरनाचाहिये जिस्से राजघरमें औरसभामें तथाप्रजामें तुमलोगोंको प्रतिष्ठाहोय और आपलोगोंके ऊपरऐसाकठिन जोदण्ड दियागया सोकेवलआपलोगोंकेऊपरनहीं किन्तुसबसंसारकेऊपर यहदण्डभयाहै जिस्से इसदण्डकोदेखवासुनके सबलोगभयकरैं औरफिर ऐसा काम कोईनकरै ऐसे शिक्षा जितनेबुरे कर्मकरनेवालेहैं उनको दण्डके पीछेअवश्यकरनोचाहिये क्योंकि दण्डकातोसदाउसकोस्मरणरहै औरहठोवाविरोधीनबनजाय इसवास्ते शिक्षा अवश्यकरनाचाहिये केवलशिक्षावाकेवलअत्यन्तदण्डसे दोनोसुधरनहीं सक्ते किन्तुदोनोंसे मनुष्यसुधरसक्तेहैं फिरभीवहचोरीकरै तोउसकाहाथकाटडालनाचाहिये फिरभी वहनमानैतोउसको बुरीहवालसे मारडालनाचाहिये किसीदिनउसकी आंखनिकालडालै किसीदिनकान किसीदिननाक औरसबजगह घुमानाचाहिये किजिस कोसबदेखैं फिरबहुतमनुष्योंके सामनेउसकोकुत्तेसेचिथवाडालें ऐसादण्ड एकपुरुषकोहोयतो उसके राजभरमें कोई चोरीकीइच्छाभीनकरेगा और राजाकोभी इनकेप्रबन्धमेंबडाआनन्दहोगा नहीतो बडेप्रबन्धमेंलक्षशः होतेहैं साधारणदण्डसे वेकभीसूधेहोंगे नहीं डाकुओंकोभी चोरकीनांईदण्ड देनाचाहिये और जुआकरनेवालोंको एकबारकरनेसेही बुरीहवालसे जैसाकोचोरीकालिखागधेपरचढानादिकसब करके फिरकुत्तेसेचिथवाडालनाचाहिये क्योंकि जोपरस्त्रीगमन औरजितनेबुरेकर्महैं वेजुआरीसेहोहोतेहैं इस्से उनकेसहाय करनेवालेकोभी ऐसादण्ड देनाचा-

हिये क्योंकिजितनेलड ईटंगा चोरीपरस्त्रीगमनादिकइनसेहाउ-
त्पन्नहै तेहैं इसेइनकेऊपर राजादण्डदेनेमें कुछथोडाभी आल-
स्यनकरै सदातत्पररहै महाभारतमें एकदृष्टान्तलिखाहैकि सो-
नेचांदोऔर अच्छे२ पदार्थधरेरहैं उसकोकोईनस्पर्शकरैतबजा-
ननाकिराजाहै और धनाढ्यलोगलाखहां रुपैयोंकोदुकानकाकि-
वाडकभीनहीलगावै और रातदिनकोईकिसीका पदार्थनउठावै
तबजाननाकिराजाहै धर्मात्माइसवास्ते ऐसाउग्रदण्डचाहिये कि
सबमनुष्यन्यायसेचलैं अन्यायमेंकोईनहो जबस्त्रीवापुरुषव्यभिचार
करैं अर्थात परपुरुषसे स्त्री गमनकरै परस्त्रीसेपुरुष जबउनकाठी-
क२ निश्चयहोजाय तबस्त्रीकेललाटमें अर्थातभौंकेबीचमें पुरुष के
लिंगेन्द्रियका चिन्हलोहेकाअग्निमें तपाकेलगादे तथा पुरुषकेल-
लाटमें स्त्रीकेइन्द्रियकाचिन्हलगादे फिरजिसकोसबदेखाकरैं फि-
रउनकोभी खूबफजीहतकरैं औरकुछधनदण्डभीकरैंपीछेउसीप्र-
कारमेंशिक्षाभीकरैंसबको फिरभीवेनमानैं औरऐसा कामकरैंत-
ब बहुतस्त्रियोंकेसामने उसस्त्रीकोकुत्तोंसेचिथवाडालैऔरपुरुषको
बहुतपुरुषोंकेसामने लोहेकेतख्तको अग्निमेंतपाकेसोवादे उसके
ऊपर फिरउसकेऊपरघुमावै उसीपर्यंककेऊपरउसका मरणाहो
जाय फिरकोईपुरुषव्यभिचारकभीनकरेगा ऐसादण्डदेखकेवासु-
नके औरसर्कार कागदकोबेचतीहै औरबहुतसाकागजों परधन
बढादियाहै इससे गरीबलोगोंको बहुतक्लेश पहुंचताहै सोयहबात
राजाको करनीउचितनहो क्योंकि इसकेहोनेसे बहुतगरीबलोग
दुःखपाकेबैठेरहतेहैं कचहरीमेंबिनाधनसे कुछबातहोतीनहीइ-
ससे कागजोंकेऊपर जोबहुत धनलगानाहै सोमुझकोअच्छामालू
मनहींदेता इसकोछोडनेसेही प्रजामेंआनन्दहोताहै क्योंकिथा-
नेसेलेकेआगे२ धनकाहीखर्चदेखपडताहैन्यायहोनातोपीछेफि-
नानाप्रकारके लोगसाक्षीझूठ सचबनालेते हैं यहांतककिसत्तू
खानेकोदेदेओ औरझूंठगवाही हजारबक्तदेवादेओ जोजैसामनु

मेंदण्डलिखाहै वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेभूंठीसाक्षीदे-
नेको कोई तैयारनहींहोय अवाङ्नरकमध्येति प्रेत्यस्वर्गोच्चहोय-
ते इसकायहअभिप्रायहै कि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेभूंठसा-
क्षीदिई तबउसकोभी कचहरीकेबीचमें काटलेवहीअर्वाक् नाम
भीभरहित जोनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोय क्योंकिराजा प्रत्यक्ष-
न्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जि-
तने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवैंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्य-
वस्था रखनीचाहिये क्योंकिवेभीअत्यन्तसच भूंठकेविचारमें तत्पर
होके न्यायहीकरनेलगे देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपचदि-
याउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून
कोरीतिसे एककोजीतदिई और दूसरेकापराजय जिसकापराज-
यभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसकेपासफिरअपी-
लकरी सोप्रायः जिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें
पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर
ऐसेही जबतकधननहींचुकता दोनोंका तबतकबिलायततकलडते
हीचलेजातेहैं प्रायःरहीसलोग इसबातसेहठकेमारे बिगड़जाते
हैं इस्से क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यव-
स्थाहोनीचाहिये जिस्से वे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहीकरैं ऐसा
आलस्यनकरैं किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको
इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेबिचारपति
भीआलस्यमेंआजातेहैं औरबिचारपतिकी अत्यन्तपरीक्षा करनी
चाहिये किअधर्मसेडरतेहोंय औरविद्याबुद्धिमें युक्तहोयकामक्रो-
धलोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोयऔर अन्तर्यामीजो
सबका परमेश्वर उस्से हीजिनकोभयहोय औरसेनहींसोपक्षपात
कभीनकरैं किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ता
अन्यथानहीं और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरु
कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहैइस्से ही अ

प्रायः वादविवादकेव्यवहार चलतेहैं इसस्थानमेंजोपक्षपातसेअ-
नर्थलिखा पढ़ाजायगा सोआगेभीअन्यथा प्रायःलिखापढ़ाजायगा
औरअन्यथा व्यवहारभीप्रायः होजायगाइस्सेपुलीसमें अत्यन्तश्रे-
ष्ठपुरुषोंको रखनाचाहिये अथवा पहिलेजैसे चौकीदारमहल्ले२
मेंएक२ रहताथा उस्सेबहुधा अन्यायनहींहोताथा जबसे पुलिस
काप्रबन्धभयाहै तबसेबहुधा अन्यथा व्यवहारही सुननेमेंआताहै
और गाय बैल भैंसोंछेरी और भेंडोआदिक मारेजातेहैं इस्से प्र-
जाको बहुतक्लेश प्राप्तहोताहै औअनेकपदार्थोंकी हानिभी होती
हैक्योंकिएकगैयादस१०सेरदूधदेतीहैकोई८सेरछः६सेरपांच५से-
रऔरदो २ सेरतक उनकेमध्यछः६ सेरनित्य दूधगिनाजाय कोई
दस१० मासतकदूधदेतीहै कोईछः६ मासतकउसका मध्यस्थआ-
ठमासतक गिनाजाताहै सोएकमासभरमें सवाचारमन दूधहो-
ताहै उसमेंचावलडालके चीनीभीडालदेंतो सौपुरुषतृप्त होसक्ते
हैं जोऐसेहीपीयें तो ८० पुरुषतृप्त होजांयगे और ८०० वा ६४०
पुरुषतृप्तहोसक्ते हैं कोईगाय १५ दफेबियातीहै कोईदसदफे उस
काहमने १२ बक्तारखलिये सो ९६०० सेपुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिर
उसके बछडेऔरबछियांबढेंगे उनसेबहुतबैल औरगाय बढेंगेएक-
कगायसे लाख मनुष्योंका पालन होसक्ताहै उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिरदूधऔर पशुओंकीउत्पत्तिकामूल
हीनष्टहोजाताहैजोबैलआर्यावर्त्तमेंपांचरुपैयोंसेआताथासोअब
३०सेभीनहीआता औरकुछगांव औरनगरकेपास पशुओंकेचर-
नेकेवास्तेउसकोसोमामेंभूमिरखनीचाहियेजिसमेंकिवपशुचरैंजै-
सीदुग्धादिकसमनुष्यके शरीरकीपुष्टिहोतीहै वैसीसूखे अन्नादि-
कोंसेनहीहोती औरबुद्धिभीनहीबढती इस्सेराजाकोयहबात अव-
श्यकरनीचाहिये किजिनपशुओंसे मनुष्यके व्यवहारसिद्ध होतेहैं
औरउपकारहोताहै वकभीनमारेजांय ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिये
जिस्सेसबमनुष्योंकोसुखहोय वैसाहीप्रजास्थ पुरुषोंकोभीकरनाउ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिस्से प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्नरहै यहीबातकरनी सबकोउचितहै देखनाचाहियेकि महाभारतमेंसगरराजाकी एककथालिखीहै उसकाएकपुत्र असमंजानाम थाउसकोअत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसनेअच्छाआचारवाविद्याग्रहणनहिं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकीयुवावस्थाभोहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहीभई फिरउसकाविवाहभीकरादियाएकदिनसरजूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाकेबालकआठ २ दश २ बरसकेजलमें स्नानकरतेथे औरक्रीडा भीकरतेथे सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेगहिरेजलमें फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपुरुषनेबालकको पकडलिया उसकेशरीरमें जल प्रविष्टहोनेसे वह मूर्छितहोगया उसकीदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औरहसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और कहाकितुमारे बालककोयहदशाहै राजाकेपुत्रनेंकरदिई सुनके उसकीमातापिता औरसबकुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके फिरउसबालकको उठाकेजहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको चलेराजासभाकेबीचमें सिंहासनपरबैठेथे सोउनकोआतेदूरसेदेखकेझटऊठकेउनकेपासचलेगयेऔरपूंछाकि इसबालकको क्याभया तबउनकीमातारोनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकोधैर्यदियाकि तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेखकेप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूंछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका भाग्यहैइसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूंछाकितुमअपनीबातकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापुत्रहै जोकिअपनेहाथसेहीप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावैसासत्य २ हालराजासेकहदियातबराजानेंवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलवाडाला औरऔषधोंसे उसीवक्तस्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालकउसकीमाता पिता औरजिसनेबालकनि-
कालाथावहभीवहांथाफिरराजानेसिपाहियोंकोआज्ञादिईकिअ-
समंजाकिससकेचढाकेलेआओ। सिपाईलोगगयेऔरवैसेहीउसको
बांधकेलेआयेअसमंजाकोस्त्रीभी संग२ चलीआईऔरसभामेंखडे-
करदियेराजानेपुत्रकीस्त्रीसे पूछाकितूइसकेसाथजानेमेंप्रसन्नहैवा-
नहींतबउसनेकहाकिअबजोदुःखवासुखहैसोहोयपरन्तुमेरेअभा-
ग्यसऐसापतिमिलासोमैंसाथहीरहूंगीपृथकनहीं तबराजानेअस-
मंजासेकहाकितेरा कुछभाग्यअच्छाथा कियहबालकमरानहींजो
यहमरजातातोतुझको बुरेहवालसेचोरकीनाईंमैंमारडालतापर-
न्तुतुझको मैंमारतातकनहीं सकताहूं सोतूकभीगांवमें वानगरमें
अथवा मनुष्योंके पासखडारहा वा गयातोतुझ को चोरकीनाईं
मारडालेंगे इससेतूऐसेवनमें जाकेरहकिजहांमनुष्य कादर्शनभीन
होय सिपाहियोंसे हुकुमदेदिया किजाओतुमघोरवनमेंइनदोनों
कोछोडआओ उसकोनवस्त्रदिये अच्छे२ नखानेकोदिईनधनदिये
किन्तुजैसेसभामे दोनोंखडेथे वैसेही छोडआये फिरवे वनमेंरहे
औरउनदोनोंसे वनमेंहीपुत्रभया उसकीस्त्रीअच्छीथीसोअपनेपा-
सहीबालककोरक्खा और शिक्षाभीकिई जबपांचवर्षकाभया तब
ऋषियोंकेपास पुत्रकोवहस्त्री रक्खआई औरऋषियोंसेकहाकिम-
हाराज यहआपकाहीबालकहै जैसेयहअच्छाबने वैसाकीजियेतब-
ऋषिलोग बहुतप्रसन्नहोके उसकोरक्खा किइसकोअच्छेप्रका-
रसेशिक्षाकिईजायगी क्योंकियहसगरकापौत्रहै फिरस्त्रीचलीगई
अपनेस्थानपर औरऋषिलोगोंने उसबालकके यथावत्संस्कारकि-
येविद्यापढाई औरसबप्रकारकी शिक्षाभीकिई औरउसनेयथावत्
ग्रहणकिई जबवह ३६ बरसकाहोगया तबउसकोलेकेसगरराजा
केपासऋषिलोगगये औरकहाकियह आपकापौत्रहै इसकीपरी-
क्षाकीजियेसोराजानेउसको परीक्षाकिई औरप्रजा स्वस्थ पुत्र-

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यहोठहरा तबप्रजास्थपुरुषों-
नेंराजासेकहा किअसमंजा मजो आपकापौत्र सोराजाहोनेंकेयो-
ग्यहै तबराजानेकहाकि सब बुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको
प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब
श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिई और उसकाराज्याभिषेकभीहोगया क्यों-
किसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयथे राज्यकार्यमें बहुतपरिश्रमपड-
ताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनेभी जितना
होसक्ताथा उतनाकर्त्तेथें राजाऐसाहोहोनाचाहिये किएकभर्त्त
राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागयाहैउ-
सकेभीनवपुत्रथे सो २५ वर्षकेऊपरसब होगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्र-
मादीथे राजानेऔर प्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसे एक
भीराजाहोनेके योग्यनहींसो भरतराजाने इस्तिहार करकेपुरुष-
औरस्त्रीलोगोंको बोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोंएक
मैदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदि-
या सोजबसबलोग एकदिनइकट्ठे भये परन्तु किसीकोंविदितनभ-
याकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानके ऊपरराजा
चढकेसबसे कहाकिजिनराजा अथवाप्रजास्थ रहीसलोगोंका पुत्र
इसप्रकारकादुष्टहोय उसकोऐसाही दण्डदेना उचितहै जोकिइ-
सवक्तहम अपनेपुत्रोंकोदेंगे सोसदा सबसज्जन लोगइस नीतिको
मानैं औरकरैं फिर मंचानसेउतरे औरनवपुत्रभीबीचमें खडेथे
सब समाजवाले देखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसाम-
नेखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानके ऊपरबांधदि-
ये फिरभीसबसेकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा
हीदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनका सिर नकाटते तोयेह-
मारपीछेआपसमें लडते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकी मर्यादा-
कोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उन
कोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यभ्रष्ट औरधर्मसबनष्टहो-

जांयगे इसमें कुछसन्देह नहीं देखनाचाहिये किआर्यावर्त्त देशमें
ऐसे २ राजाऔर प्रजाश्रेष्ठपुरुषहोतेथे सोइसवक्त आर्यावर्त्त
देशमें ऐसेभ्रष्टाचारहोगयेहैं कोजिनकी संख्याभीनहीं होसक्तीऐ-
सासर्वत्र भूगोलमें देशकोईनहीं ऐसाश्रेष्ठआचारभीकिसीदेशमें
नहोथा परन्तु इसवक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डोंसे
चक्रांकितादिक संप्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके
प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम औरविद्याके छोड़नेसेऐसादेशबिगड़ाहैकि
भूगोलमें किसीदेशकीनहो जैसीकिदुर्दशा महाभारतकेयुद्धकेपी-
छेआर्यावर्त्तदेशकीभईहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यमेंकुछ २ सु-
खआर्यावर्त्त देशमेंभयाहै जोइसवक्तवेदादिक पढ़नेलगें ब्रह्मचर्या-
श्रमआश्रम चालीसवर्षतककरें कन्याऔर बालकसबश्रेष्ठशिक्षा
औरविद्यावालेहोवें इनमत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको
छोड़ैंसत्यधर्म औरपरमेश्वरकी उपासनामें तत्परहोवें तोइसदेश
कीउन्नति औरसुखहोसक्ताहै अन्यथानहीं क्योंकिबिनाश्रेष्ठव्यव
हारविद्यादिकगुणोंसे सुखनहींहोता आजकालजोकोई राजा ज
मीदार वाधना[illegible]भाहै उनकेपास मतमतान्तरके पुरुषऔर
खुशामदीलोग बहुतरहतेहैंवेबुद्धिधनऔरधर्मनष्टकरदेतेहैंइससे
सज्जनलोग इनबातोंको बिचारकेसमझलें और करनेकेव्यवहा-
रोंकोकरैं अन्यथानहीं एकब्रह्मसमाज मतचलाहै वेऐसामानते
हैं नित्यपरमेश्वर सृष्टिकर्त्ताहै अर्थात् जीवादिकनये २ नित्यउत्प
न्नकर्त्ताहै जीवपदार्थऐसाहै किजड़ औरचेतनमिलाभया उत्पन्न
ईश्वरकर्त्ताहै जबवह शरीर धारणकर्त्ताहै तबजड़ांशसे शरीरबन
ताहै और चेतनांशजोहै सोआत्मारहताहैजबशरीरछूटताहैतब
केवलचेतन औरमनआदिक पदार्थरहतेहैं फिरजन्मदूसरानहीं
होता किन्तुपापोंकाभोग पश्चात्तापसेकरलेताहै ऐसेहोक्रमसे अ-
नन्तउन्नतिकोप्राप्तहोताहै यहबातउनकीयुक्ति औरविचारसेवि-
रुद्धहै क्योंकि जोनित्य २ नईसृष्टि ईश्वरकर्त्तातो सूर्य चन्द्रपृथिव्या-

दिकपदार्थोंकीभी सृष्टिनई२ देखनेमेंआतीजैसे पृथिव्यादिककीसृ-
ष्टिनई २ देखनेमेनहीआता ऐसेजीवको सृष्टीभोईश्वरन एकावे
रकिईहै सोकेवल कल्पनामात्रसे ऐसाकथनवलागकहतेहैं किन्तु
सिद्धान्तवातयहनहीहै इससे ईश्वरमें नित्यउत्पत्तिका विचारदोष
आवेगा औरसर्वशक्तिमत्वादिकगुणभीईश्वरमेंनहीरहेंगे क्योंकि
जैसेजीव क्रमसेशिल्पविद्यासे पदार्थोंकोरचनाकर्त्ताहै वैसाईश्वर
भीहोजायगा इससे यहबात सज्जनोंकोमाननेके योग्य नहीं और
एकजन्मवादजोहै सोभो विचारविरुद्धहै क्योंकि अनेकजन्महोतेहैं
सोप्रथमपूर्वार्द्धमेंविचारकियाहैवहीदेखलेना औरपश्चात्तापसेपा-
पोंकोनिवृत्तिमानना यहभीयुक्तिविरुद्धहै सोप्रथम लिखदियाहैकि
पश्चात्तापजो होताहैसो कियेभयेपापोंका निवर्त्तकनहीहोताकि-
न्तुआगेकर्त्तव्य पापोंकानिवर्त्तकहोताहै विनाशरीरसेपापपुण्यों
काफलभोग कभीनहीहोसक्ता औरविना शरीरके जीवरहताही
नही जोमनमेंपश्चात्तापसे पापोंकाफल जीवभोक्ता तोजिस २ दे
श कालऔर जिनजीवोंकेसाथ पापऔरपुण्यकियेथे उनकाभीम
रनसेस्मरणहोता औरजोस्मरणहोतातो फिर जीव मोक्षके
नेसवहीं अपनेपुत्र स्त्रियादिकसंबन्धियों के पासआजाता सोकोई
आतानही इससे यहबातभी उनकीप्रमाणविरुद्धहै और वर्णाश्रम
कोजोसत्यव्यवस्था शास्त्रकोरोतिसे उसकाछेदनकरनाहै सोसवम
नुष्योंके अनुपकारकाकर्महै यहदशमसमुल्लासमें विस्तारसेलिख
दियाहै वहीदेखलेना यज्ञोपवीत केवलविद्यादिक गुणोंका और
अधिकार काचिन्हहै उसकातोडनासाहससे इससे भी अत्यन्तमनु
ष्योंका उपकारनहीहोता किन्तु विद्यादिक गुणोंसेवर्णाश्रम का
स्थापनकरना शास्त्रकोरोतिसे इससेहीमनुष्योंका उपकारहोसक्ता
है सदाचारकी रीतिसे नहीं ब्राह्मणादिकवर्णवाच जोशब्द
हैंउनकोजातिवाचि ब्राह्मलोगजानके निषेधकरतेहैं सोकेवल उन
कोभ्रमहै किन्तु शास्त्रकोरोतिसे मनुष्यादिक जातिवाचकशब्दहैं

सोमनुष्यपशुहस्त्यादिकोंकी एकताकोई नहीं करसक्ता सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहैऔरखानेपीने से
धर्मकिसीका बढ़तानहीं औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरनाकिसबके साथखानाअथवाकिसीकेसाथनहींखानाव
हीधर्ममानलेनायहभी अनुचितबातहै किन्तुनष्टभ्रष्टसंस्कारही
नपदार्थोंकेखाने औरपीनेसे मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यत्र
नहींऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेंमेलाकरनाइसमेंभी हमकोअत्यन्त
श्रेष्ठगुणमालूमनहींदेता क्योंकिइसमें मनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तखर्चहोताहै केवलअंगरेजीपढ़ने सन्-
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकोनहींहै किन्तुसबप्रकारकीपु-
स्तकपढ़नाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातन सत्यसंस्कृतपु-
स्तकोंकोनपढ़ेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहींजानेंगेइससे सबपुरुषार्थसेइन वेदादि-
कोंकोपढ़नाऔरपढ़ानाचाहिये इससबविघ्ननष्टहोजायंगेअन्यथा
नहींऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोड़ेहीदिनोंमें ब्राह्मस-
माजकेदोतीनभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्नन-
हींहै किन्तुईर्ष्याहीएकसे दूसरेकोहोतीहै सोजैसेवैराग्यादिकों-
मेंअनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्ध व्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेहीविरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहींसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढ़ेंतोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहींतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मूसामहम्मदनानक चैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना और जै-
गीषव्यपंचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनहीं गिननायह
भीउनकोभूलहै अन्यबातजोपरमेश्वरकी उपासनादिकवेसबउन-
कीअच्छीहैं इसके आगे जैनमतके विषय मेंलिखा जायगा ॥

इतिश्री मद्दयानन्द सरस्वतिस्वामि कृते स

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ११ ॥

अथ जैनमतविषयाव्याख्यास्यामः॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत प्रथमचलाहै उसकोसाढेतीनहजार वर्षअनुमानसेभयेहैं सोउनके २४ तिर्थ्यङ्कर अर्थात् आचार्य भयेहैं जैनेन्द्र परशनाथ ऋषभदेव गौतमऔर बौधादिक उनके नामहैं उन्ने अहिंसाधर्मपरममानाहै इसविषयमेंवेऐसा कहतेहैं किएकबिन्दुजलमेंअथवाएकअन्नकेकणमें असंख्यातजीवहैं उनजीवोंके पांखआजायतो एकबिन्दुऔर एककणकेजीव ब्रह्माण्डमें नसमावें इतनेहैं इसमेंमुखके ऊपर कपडाबांधरखतेहैं जलकोबहुतछानतेहैं औरसबपदार्थोंको शुद्धरखतेहैं और ईश्वरकोनहीमानते ऐसाकहतेहैं किजगत् स्वभावसेसनातनहै इसकाकर्त्ताकोईनही जब जीवकर्मबन्धनसेछूटजाताहै औरसिद्धहोताहै तब उसकानाम केवलीरखतेहैं और उसीको ईश्वरमानतेहैं अनादिईश्वर कोईनहीहै किन्तुतपोबलसे जीवईश्वररूपहोजाताहै जगत्काकर्त्ताकोईनही जगत्अनादिहैजैसेघासवृक्ष पाषाणादिक पर्वत बनादिकोंमें आपसे आपहीहोजातेहैं ऐसेपृथिव्यादिक भूतभीआपसे आपबनजातेहैं परमाणुका नाम पुद्गलरक्खाहै सोपृथिव्यादिकोंके पुद्गल मानते हैं जबप्रलय होताहै तब पुद्गलजुदे २ होजातेहैं औरजबवे मिलतेहैं तबपृथिव्यादिक स्थूलभूतबन जातेहैं औरजीवकर्मयोगसे अपना २ शरीरधारणकरलेतेहैं जैसाजोकर्म करताहै उसकोवैसाफलमिलताहै आकाशमें चौदहराज्यमानतेहैं उनकेऊपर जोपद्मशिला उसकोमोक्ष स्थानमानतेहैं जबशुभकर्मजीवकरताहै तब उनकर्मोंके बेगसेचौदह राज्योंकोउल्लंघन करके पद्म शिलाके ऊपर विराजमानहोतेहैं चराचरकोअपनी ज्ञानदृष्टिसेदेखतेहैं फिर संसार दुःखजन्ममरणमेंनहीआते वहीआनन्दकरतेहैं ऐसीमुक्तिजैनलोगमानतेहैं और ऐसाभीकहतेहैं किधर्मजोहैसोजैनकाहीहैऔर

सबहिंसकहैं तथा अधर्मी क्योंकिजे हिंसाकरतेहैं वेध्यर्मात्मानहीं
जेयज्ञमेंपशुमारतेहैं औरऐसी २ बातेंकहतेहैं कियज्ञमें जोपशु
माराजाताहै सोस्वर्गको जाताहोय तो अपनापुत्रवा पिता को
नमारडालेंस्वर्गको जानेकेवास्ते ऐसे २ श्लोकउननेबनारक्खे हैं
त्रयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचरा: इसकायह अभिप्रायहै
किईश्वर विषयकिजितनी बातवेदमेंहैं वहधूर्त्तकीबनाईहै जित-
नीफलस्तुति अर्थात् इसयज्ञकोकरैंतो स्वर्गमेंजाय यह बातभा-
ण्डोंनेबनारक्खीहै औरजितना मांसभक्षण पशुमारनेकाविधि-
हैवेदमें सोराक्षसोंनेबनानयाहै क्योंकि मांसभोजनराक्षसोंकाबडा
प्रियहै सबबातअपने खानेपीनेऔरजीविका केवास्तेलोगोंनेबना-
ईहै औरजैनमतहै सोसनातनहै औरयहीधर्महै इसकेविनाकि
सीकोमुक्ति वासुखकभीनहीहोसक्ता ऐसी २ वेबातेंकहतेहैं इन-
सेपूछनाचाहिये किहिंसातुमलोग किसको कहतेहो जीवकहेंकि
किसीजीवकोपीडादेना सोतोबिनापीडाके किसीप्राणिका कुछव्य
वहारसिद्धनहीहोता क्योंकिआपलोगोंकमतमेंहीलिखाहै किए-
कबिन्दुमेंअसंख्यात जीवहैं उसकोलाखवस्त्रछाने तोभीवेजीवपृथ-
कनहीहोसक्ते फिरजलपान अवश्यकियाजाताहै तथा भोजनादि-
कव्यवहार औरनेत्रादिकोंकी चेष्टाअवश्यकिईजातीहै फिरतुमा-
राअहिंसाधर्मतोनहीबना प्रश्न जितनेजीव बचायेजातेहैं उतनेब-
चातेहैं जिसकोहमलोग देखतेहीनहीं उनकोपीडामें हमलोगों
कोअपराधनहीं उत्तर ऐसाव्यवहार सबमनुष्योंकाहैजेमांसाहा-
रीहैंवेभीअश्वादिक पशुओंकोबचालेतेहैं वैसेतुमलोगभी जिनजी-
वोंसेकुछव्यवहारका प्रयोजननहीहै जहांअपनाप्रयोजनहैवहांम-
नुष्यादिकोंको नहीबचातेहो फिर तुमारो अहिंसानहीरही प्रश्न
मनुष्यादिकोंकोज्ञानहै ज्ञानसेवेअपराधकर्त्ते हैं इससेउनकोपीडा
देनेमेंकुछअपराधनहीं वेपश्वादिकजीव बिनाअपराधहैंउनकोपी-
डादेनाउचितनहीं उत्तर यहबात तुमलोगोंकोविरुद्धहैक्योंकिज्ञा-

नवालोंकोपीडादेना औरज्ञानहीनपशुओंको पीडानदेनायहज्ञा-
तविचारशून्यपुरुषोंकोहै क्योंकि जितने प्राणीदेहधारीहैं उनमेंसे
मनुष्य अत्यन्तश्रेष्ठहै सोमनुष्योंका उपकारकरना औरपीडाका
नकरना सबकोआवश्यकहै हिंसानामहैवैरकासो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमेंलिखाहै सर्वथासर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा यहअहिंसाधर्म कालक्षणहै इसकायह अभिप्रायहैकि सबप्र-
कारसे सबकालमें सबभूतोंमेंअनभिद्रोह अर्थात् वैरका जोत्याग
सोकहाताहै अहिंसासो आपलोगअपने संप्रदायमेंतोप्रीतिकरते
हो औरअन्यसंप्रदायोंमेंद्वेष तथा वेदादिकसत्यशास्त्र तथाईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैरऔरद्वेषहै फिरअहिंसाधर्म आपलोगों
काकहनेमात्रहै अपनेसंप्रदायोंके पुस्तकतथाबातभी अन्यपुरुषोंके
पासप्रकाशितनहींकरतेहो यहभीआपलोगोंमें हिंसासिद्धहैईश्वर
कोआपलोगनहींमानतेहैं यह आपलोगोंकी बडीभूलहैऔरस्व-
भावसे जगत्कीउत्पत्तिकामानना यहभीतुमलोगोंकोझूंठबातहैइ-
सकाउत्तर ईश्वरऔरजगत्की उत्पत्तिके विषयमेंदेखलेना प्रथम
जीवकाहोना औरसाधनोंकाकरना पश्चात् वहसिद्धहोगाजबजी-
वादिक जगत्विनाकर्त्तासे उत्पन्नहीनहींहोता औरप्रत्यक्षजगत्में
नियमोंकेजगत्में देखनेसे सनातन जगत्कानियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिरउसकोईश्वर नहींमानना औरसाधनोंसे सिद्धजोभयाउ-
सीकोहीईश्वरमानना यहबात आपलोगोंकोसबझूठहै आपसेआ
पजीवशरीरधारणकरलेतेहैं तोशरीर धारणमेंजीव स्वतन्त्रठह-
रे फिरछोडक्यों देतेहैं क्योंकिस्वाधीनतासे शरीरधारणकरलेते
हैंफिरकभी उसशरीरकोजीव छोडगाहीनहीं जोआपकहेंकिक-
र्मोंकेप्रभावसे शरीरकाहोना और छोडनाभीहोताहै तोपापोंके
फलजीवकभीनहींग्रहणकर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छाकिसीकोनहीं
होतीसदा सुखकीइच्छाहीरहतीहै जबसनातन न्यायकारीईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाकाकरनेवालानहोगा तोयहबातकभीनबनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा पद्मशिलामुक्तिकास्थानमानना यह
बातप्रमाण और युक्तिसेविरुद्धहै केवलकपोलकल्पनामात्रहै और
उसके ऊपरबैठकेंचराचर कादेखनाऔरकर्मवेगसेवहांचलाजा-
नायहभीबात आपलोगोंकोअसत्यहै यज्ञोंकेविषयोंमें आपकुतर्क
करतेहैं सोपदार्थविद्याकेनहींहोनेसे क्योंकिघृतदूध औरमांसादि
कोंकेयथावत् गुणजानते और यज्ञकाउपकारकि पशुओंकोमार-
नेमेंथोडासादुःखहोताहै परन्तुयज्ञमें चराचरकाअत्यन्त उपका-
रहोताहै इनको जोजानते तोकभीयज्ञविषयमें तर्ककरते वेदोंका
यथावतअर्थकेनहीं जाननेसेऐसीबात तुमलोगकहतेहो किधूर्त
भाण्डऔर निशाचरोंनेलिखाहै यहबातकेवल अपनेअज्ञानऔ-
रसंप्रदायोंके दुराग्रहसेकहतेहो और वेदजोहैं सोसबकेवास्तेहित-
कारीहै किसीसंप्रदायकाग्रन्थ वेदनहींहै किन्तु केवलपदार्थविद्या
और सबमनुष्योंके हितकेवास्ते वेदपुस्तकहै पक्षपातउससेकुछन-
हीं इनबातोंकोजानतेतो वेदोंकात्याग और खण्डनकभीनकरते
होवेदविषयमें सबलिखदियाहै वहींदेखलेना और यज्ञमेंपशुको
मारनेसे स्वर्गमेंजाताहै यहबातकिसीमूर्खके मुखसेसुनलिईहोगी
ऐसीबात वेदमेंकहींनहींलिखी जीवोंकेविषयमें वेऐसाकहतेहैंकि
जीवजितने शरीरधारीहैं उनकेपांचभेदहैं एकइन्द्रिय द्वीन्द्रियत्री-
न्द्रिय चतुरिन्द्रिय औरपंचेन्द्रिय जडमेंएक इन्द्रियमानतेहैं अर्थात्
वृक्षादिकोंमें सोयहबात जैनोंकीविचारशून्यहै क्योंकिइन्द्रिय सू-
क्ष्महैंइनसे कभीनहीं देखपडतो परन्तुइन्द्रियका कामदेखनेसेअ-
नुमानहोताहै किइन्द्रियअवश्यहै सोजितनेवृक्षादिकोंकेबीजहैंउ-
नकोपृथिवीमें जबबोतेहैं तब अङ्कुरऊपरआताहै औरमूल नीचे
जाताहै जोनेत्रेन्द्रिय उनकोनहोतातो ऊपरनीचेको कैसेदेखता
इसकामसे निश्चितजानाजाताहै किनेत्रेन्द्रियजडवृक्षादिकोंमेंभी
है तथाबहुतलताहोतीहै सोवृक्षऔर भित्तीके ऊपर चढजातीहै
जोनेत्रेन्द्रियनहोता तोउसकोकैसेदेखता तथास्पर्शेन्द्रियतो सभी

मानतेहैं जोभइन्द्रियभी वृक्षादिकोंमेंहैं क्योंकिमधुरजलमें बागादिकोंमें जितनेवृक्षहोतेहैं उनमेंखाराजलदेनेसे सूखजातेहैंजोभ इन्द्रियनहोतातो स्वादखारेवामीठेका कैसे जानतेतथा श्रोत्रेन्द्रियभीवृक्षादिकोंमेंहै क्योंकिजैसेकोई मनुष्यसोताहोय उसको अत्यन्तशब्दकरनेसे सुनलेताहै तथातोफआदिकशब्दसेभी वृक्षोंमें कम्पहोताहै जोश्रोत्रेन्द्रियनहोतातो कम्पक्योंहोता क्योंकिअकस्मात्भयङ्करशब्दके सुननेसेमनुष्यपशु पक्षीअधिककम्पजातेहैंवैसेवृक्षादिकभीकम्पजातेहैं जोवेकहेंकिवायुकेकम्पसे वृक्षमेंचेष्टाहोजातीहै अच्छातोमनुष्यादिकोंकोभी वायुकीचेष्टासेशब्दसुनपड़ताहै इससेवृक्षादिकोंमेंभी श्रोत्रेन्द्रियहैतथा नासिकाइन्द्रियभीहै क्योंकिवृक्षोंकोरोग धूपकेदेनेसेछूटजाताहै जोनासिकेन्द्रियनहोतातोगन्धकाग्रहण कैसेकरताइससे नासिकाइन्द्रियभी वृक्षादिकोंमेंहै तथात्वचाइन्द्रियभीहै क्योंकिकुमोदिनि कमललज्यावतीअर्थात्छुईमुईओषधि औरसूर्यमुखीआदिक पुष्पोंमेंऔरशीततथाउष्णवृक्षादिकोंमेंभी जानपडतेहैं क्योंकिशीत तथाअत्यन्त उष्णतासेवृक्षादिककुमलाजातेहैं औरसूखभीजातेहैं इससेतत्ततइन्द्रियोंका कर्मदेखनेसेतत्तत् इन्द्रियवृक्षादिकोंमें अवश्यमाननाचाहिये यह भ्रमजैनसंप्रदायवालोंको स्थूलगोलकइन्द्रियोंके नहीदेखनेसेहुआहै सो इससे जैनलोग इन्द्रियोंको नहीजानसकेपरन्तुकार्यद्वारा सबबुद्धिमानलोग वृक्षादिकोंमेंभी इन्द्रियजानतेहैं इसमेंकुछसंदेहनहीं औरजहांजीवहोगा वहांइन्द्रियअवश्यहोंगीक्योंकिइनसबशक्तियोंकाजोसंघात इसीकोजीवकहतेहैं जहांजीवहोगावहांइन्द्रियांअवश्यहोंगी जैनोंकाऐसाभीकहनाहै किताळावबावलीकुआनहीबनवाना क्योंकिउनमेंबहुत जीवमरतेहैं जैसताळावकरानेसेमेंसोउसमेंबैठगीउसकेऊपर मेंघाबैठगाउसको कौआलेजायगाऔरमारभी डालेगाउसकापापताळावबनानेवालेकोहोगाक्योंकिवहताळावनबनातातो यहहत्यानहोती इससेउन्ने कुछ

नहीसमझा क्योंकिउसतालावकेजलसे असंख्यातजीवसुखी होंगे
उसकापुण्य कहांजायगा सोपापके वास्तेतालावकोई नहीबनाता
किन्तु जीवोंकेसुखके वास्तेबनातेहैं इससे पाप नहीहोसक्ता परन्तु
जिस देशमेंजल नहीमिलताहोय उसदेशमें बनानेसे पुण्यहोता-
है जिसदेशमें बहुत जल मिलताहोवै उसदेशमें तडागादिकोंका
बनानाव्यर्थहै औरवेबडे २ मंदिरऔरबडे २ घरबनातेहै उनमें
क्याजीवनहीमरतेहोंगे सोलाखहांरुपैये मन्दिरादिकोंमें मिथ्या
लगादेतेहैं जिनसेकुछसंसारका उपकारनहीहोता और जोउप-
कारकीबातहै उसमेंदोषलगातेहैं फिरकहतेहैं किजैनकाधर्मश्रे
ष्ठहै औरइसकेबिनामुक्तिभी किसीकोनहीहोती सोयहबातउन-
कीमिथ्याहै क्योंकिकभीबात औरऐसेकर्मोंसेमुक्तिकभीनहीहोस-
क्ती मुक्तितो मुक्तिकेकर्मोंसेहुवाचहोतीहै अन्यथानही जितनामूर्ति
पूजनचलाहै सोजैनोंसेहीचलाहै यहभीअनुपकार काकर्महै इससे
कुछउपकारनही संसारमेंबिनाअनुपकारके सोजैनोंको बडाभा
रीआग्रहहै जोकोईकुछपुण्य कियाचाहताहै धनाढ्य सोमन्दिर-
हीबनादेताहै औरप्रकारका दानपुण्यनहीकर्त्तेहैं उनने जैनगा-
यत्रीभी एकबनालिईहै औरएकयतीहोतेहैं उनकोश्वेताम्बर कह
तेहैं दूसराहोताहैदिगम्बर जिसकोमुनिऔर स्रावककहतेहैंउ-
नमेंसेढूंढिये लोगमूर्तिपूजन कोनहीमानते औरलोग मानतेहैं
उनमें एकश्रीपूज्यहोताहै उसका ऐसा नियमहोताहै किइतना
धन जबसेवकलोगदे तबउसकेघरमेंजाय और मुनिदिगम्बर होते
हैं वेभी उनकेघरमें जबजातेहैं तबआगे२थानबिछातेचलेजाते-
हैं औरउनकेमतमें नहोय वहश्रेष्ठभीहोयतो भीउसकोसेवा अ-
र्थात् जलतकभीनहीदेते यहउनका पक्षपातसेअनर्थहै किन्तु जो
श्रेष्ठहोय उसीकी सेवा करनीचाहिये दुष्टकीकभीनही यहसबम-
नुष्योंकेवास्ते उचितहै जेढूंढियहोतेहैं उनकेकेशमें जूआंपडने
यतो भीनहीनिकालते औरहजामत नहीबनवाते किन्तु

साधु जब आता है तब जैनी लोग उसकी दाढ़ी मूंछ और सिर के बा-
ल सब नोंच लेते हैं जो उसवक्त बहु शरीर कम्पावै अथवा नेत्रसे जल
गिरावै तब सब कहते हैं कि यह साधु नहीं भया है क्योंकि इसने श-
रीर के ऊपर मोह है विचार करना चाहिये कि ऐसी २ पीडा और
साधुओं को दुःख देना और उनके हृदयमें दया का लेशभी न होआ-
ना यह उनकी बात बहुत मिथ्या है क्योंकि बालों के नोंचनेसे कुछ
नहीं होता जबतक काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोष हृ-
दयसे नहीं नोंचे जांयगे यह ऊपरका सब ढोंग है उनसे जितने आ-
चार्य भये हैं उनके बनाये ग्रन्थों को वेद मानते हैं सो अठारह ग्रन्थ वे-
हैं तथा महाभारत रामायण पुराण स्मृतियांभी उन लोगोंने अ-
पने मतके अनुकूल ग्रन्थ बनालिये हैं अन्य भगवती गीता ज्ञानचरि-
त्रादिकभी ग्रन्थ नानाप्रकारके बनालिये हैं बहुत संस्कृतमें ग्रन्थ हैं
और बहुत प्राकृत भाषामें रचलिये हैं उनमें अपने सम्प्रदायकी पुष्टि
और अन्य संप्रदायोंका खण्डन कपोलकल्पनासे अनेक प्रकार लि-
खा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सब संसार जैनमा
र्गमें था परन्तु कुछ दिनोंसे जैनमार्गको छोड़दिया है लोगोंने साब
डा अन्याय है क्योंकि जैनमार्ग छोड़ना किसीको उचित नहीं ऐसी २
कथा अपने ग्रन्थोंमें जैनोंने लिखी हैं सो सब संप्रदायवाले अपनी २
कथा ऐसी ही लिखते हैं और कहते हैं इसमें प्रायः अपने मतलाके
लिये बातें मिथ्या २ बनालिई हैं यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्यो
रगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥ यावज्जीवेत्सु-
खं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्। अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भ गु-
ण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः। अग्निरुष्णो ज
लं शीतं शीतस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदं चित्रितं तस्मात् स्वभावात्तद्व्य
वस्थितिः। न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्र
मादीनां क्रियाश्च फलदायकाः। अग्निहोत्रं त्रयो वेदा स्त्रिदण्डं भ-
स्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका धातृनिर्मिता। पशुश्च

निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति ॥ स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते[6] । मृतानामपि जंतूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम् ॥ गच्छतामिह जंतूनां व्यर्थं पाथेयकल्पनम्[7] । स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं गच्छेयुस्तत्र दानतः[8] ॥ प्रासादस्योपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते । यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष विनिर्गतः ॥ कस्माद्भूयो न चायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः[9] । ततश्च जीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह ॥ मृतानां प्रेतकार्याणि न त्वन्यद्विद्यते क्वचित्[10] । त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्त्तनिशाचराः ॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वचः स्मृतम्[11] । अश्वस्यात्र हि शिश्नं तु पत्नीग्राह्यं प्रकीर्त्तितम् ॥ भण्डैस्तद्वत्परं चैव ग्राह्यजातं प्रकीर्त्तितम् । मांसानां खादनं तद्वन्निशाचरसमीरितम् ।

इत्यादिक श्लोक जैनोंने बनारक्खे हैं और अर्थ तथा काम दोनों पदार्थ मानते हैं लोकसिद्ध जो राजा सो ई परमेश्वर और ईश्वर नहीं पृथवी जल अग्नि वायु इन के संयोगसे चेतन उत्पन्न होके इनमें लौ जहो जाता है और चेतन पृथक् पदार्थ नहीं ऐसे २ प्राकृत दृष्टान्त देके निर्बुद्धि पुरुषोंको बहकादेते हैं जो चार भूतों के योगने चेतन उत्पन्न होता तो अब भी कोई चार भूतोंको मिलाके चेतन दिखलादे सो कभी न होदेखपड़ेगा इनस्वभावसे जगतकी उत्पत्ति आदिककी उत्तर ईश्वर और सृष्टि के विषयमें लिखदिया है वहीं देखलेना भूतेभ्योमूर्त्युपादान वत्तदुपादानम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियेसूत्र नास्तिकोंके मत देखाने कहांस्तलि वे जाते हैं और उनका खण्डनभी सो जानलेना जैसे पृथिव्यादिक भूतोंमे बालु पाषाण गेरु अंजनादिक स्वभावसे कर्त्ताकेबिना उत्पन्न होते हैं वैसे मनुष्यादिकभी स्वभावसे उत्पन्न होते हैं न पूर्वापर जन्म न कर्म और न उनका संस्कार किन्तु जैसे जलमें फेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे उत्पन्न होते हैं वैसे भूतोंसे शरीरभी उत्पन्न होता है उसमें जीवभी स्वभावसे उत्पन्न होता है उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसे शरीरकी उत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्ध मानते हो वैसे बालुकादिक-

को उत्पत्तिमें इकारी वालुकादिकोंके पृथिव्यादिकप्रत्यक्ष निमित्त और कारणहै वैसेपृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कारणभी सूक्ष्ममा-ननाहोगा ऐसेअनवस्थादोषभीआजायगाऔरसाध्य समहेत्वाभा सकेनाई यहकथनहोगा औरइससे देहोत्पत्तिमें निमित्तान्तरअ-वश्यतुमको माननाचाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वान्माता पित्रोः ३-गो० यह नास्तिकका अपने पक्षकासमाधानहै किशरीरकी उत्प-त्ति कानिमित्त माताऔर पिताहैं जिनमेंकि शरीरउत्पन्नहोता-है और वालुकादिक निर्बीज उत्पन्नहोतेहैं इससे साध्यसम दोषह मारेपक्षमे नहीं आता क्योंकि मातापिता खानापीनाकरते हैंउ ससे वीर्य बीजशरीरका है जयाग। उत्तर प्राप्तौचानियमात् ४ गो० ऐसातुम मतकहो क्योंकि इसकानियमनहो माताऔरपिताका संयोगहोताहै और वीर्यभी होताहै तोभीसर्वत्र पुत्रोत्पत्तिनहीं दे-खनेमेआती इससे यहजोआपका कहानियमसो भङ्गहोगया इत्या दिकनास्तिक केखण्डनसें न्यायदर्शनमेंलिखाहै जोदेखाचाहै सो देखले दूसरेनास्तिकका ऐसामतहै किअभावा द्भावोत्पत्तिर्नानुप मृद्यप्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात्असत्यसेजगत् कीउत्पत्ति होतीहै क्योंकि जैसेबीजका नाश ... के अङ्कुर उत्पन्नहोताहै वैसे जगत् कीउत्पत्तिहोतीहै उत्तर ...ाताद्प्रयोगः ६गो० यहतु म[illegible]ाकहना अयुक्तहै क्योंकि [illegible] ताहै बीजकेऊपरभागका [illegible] टहोताहैं उसकामर्दन [illegible]होता इससे यहकहना आपकाभिथ्य है तो [illegible]नास्तिक [illegible]त ऐसाहै ईश्वरःकारणं पुरुषकर्माफल्य दर्शनात् ७ गो० [illegible]जितना कर्मकर्ता है उसकाफल ईश्वरदेत [illegible]श्वर [illegible] नदेतातोकर्मकाफलकभीनहोता क्योंकि [illegible]काफल ईश्वर देताहै उसकातोहोताहै और जिसकानहीं [illegible]ता उसका[illegible] इससे ईश्वर कर्मकाफल देनेमेंकारणहै [illegible]तर पुरुषकर्मा[illegible]लानिष्पत्तेः ८ गो० जोकर्मफलदेनेमेंईश्

र कारणहोता तो पापकर्मकर्त्ता तोभोईश्वर फलदेता सो बिनाकर्म करनेसे ईश्वर फलनहीं देता इस्से क्याजानाजाताहै कि जोजीव कर्मजैसा करे वैसा फल आपहीप्राप्तहोताहै इस्से ऐसाकहनाव्यर्थहै जीवह अपनेपक्षको स्थापनकरनेकेवास्ते कहताहै कि तत्कारितत्वादहेतुः ६ गो० ईश्वरही कर्मका फल औरकर्मकरानेवाला है जैसा कर्मकराताहै वैसा जीवकर्त्ताहै अन्यथानहीं जो ईश्वकराता तोपापक्योंकराता और ईश्वरके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसाचाहता वैसाहीहोजाता और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभी जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दुःखसो ईश्वरकोभोहोनाचाहिये और केवल छली कपटी औरपापोंके करानेसे पपोहोजाता इस्से ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर कराताहै चौथे नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्पत्तिः कण्टकतैच्ण्यादिदर्शनात् १० गो० निमित्तके बिनापदार्थों की उत्पत्तिहोतीहै क्योंकि वृक्षमें कांटहोतेहैंवेभीनिमित्तकेबिना ही तीक्ष्णहोतेहैं कण्टकोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंकी चित्रता पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेंआतोहै वैसेहीशरीरादिकसंसारको उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहोतोहै इसका कर्त्ताकोईनहीं उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्ना निमित्ततः ११ गो० बिननिमित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता है वहीउसका निमित्तहै वृक्ष पर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्तजाननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमेश्वरहीहै इस्से तुमारा कहनामिथ्याहै पांचवे नास्तिकका ऐसामतहै कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति विनाशधर्मकत्वात् १२ गो० सबजगत् अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और बिनाशदेखनेमें आताहैजो उत्पत्ति धर्मवालाहै सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवालाहै सो विनाशी कभीनहीहोता आकाशादिभतशरीर पर्यन्त

स्थूलजितना जगतहैऔर बुद्ध्यादिसूक्ष्म जितनाजगत्है सो सबअ नित्यही जाननाचाहिये उत्तर नानित्यता नित्यत्वात् १३ गो० सबअनित्यनहीहैं क्योंकि सबकीअनित्यता जोनित्य होगी तो उस नित्यहोनेसे सब अनित्यनहोभया और जोअनित्यता अनित्यहोगी तो उसके अनित्यहोनेसे सब जगत नित्यभया इससे सब अनित्य है ऐसाजोआपका कहनासो अयुक्तहै फिर [illegible] अपने मतको स्थापन करनेलगा तदनित्यत्वमग्नेर्दाह्यं वि[illegible]श्यानु विनाशवत् १४ गो० वह जोहमने अनित्यता जगत्कीकहि सोभी अनित्यहै क्योंकि जैसेअग्निकाष्ठादिक कानाशकरके अपनेभीनष्टहोजाता है वैसेजगत् कोअनित्यकरके आपभी अनित्यतानष्टहोजातीहै उत्तर नित्यस्याप्रत्याख्यानंयथोपलब्धिव्यवस्थानात् १५ गो० नित्यकाप्रत्याख्यान अर्थात् निषेधकभीनहीहोसक्ता क्योंकि जिसकीउपलब्धिहोतीहै और जोव्यवस्थितपदार्थहै उसकी अनित्यतानहीहोसक्ती जोनित्यहै प्रमाणोंसे औरजोअनित्य सोनित्य २ होही ताहै और अनित्य २ होहोताहै क्योंकि परम सूक्ष्मकारण जोहै सोअनित्यकभीनहीहोसक्ता और नित्यकेगुणभीनित्यहैं तथा जो संयोगसे उत्पन्नहोताहै और [illegible]केगुण वहसबअनित्यहैं नित्यवभीनहीहोसक्ते क्योंकि पृथक [illegible] फिरभी पृथक्होजातेहैं इसमेंकुछ [illegible] छः८ [illegible] वैंनित्यंपंचभूतनित्यत्वात् [illegible] ० जितना आकाशादिक [illegible] तहै जोकुछइन्द्रियोंसे [illegible] सूक्ष्मजानपडताहै सोसबनित्यही है पांचभूतोंके नित्य [illegible] क्योंकि पांचभूतनित्यहैं उनसे उत्पन्न भए [illegible] होहोगा उत्तर नोत्पत्तिविनाशकारणों [illegible] काउत्पत्तिकारण देखपडताहै और वि[illegible]कारण वह [illegible] भीनहीहोसक्ता इत्यादिक समाधानन्या[illegible]नमेंलिखेहैं [illegible]खलेना सातवांनास्तिक कामतयहहै कि [illegible]वें पृथक्भाव [illegible] कत्वात् १८ गो० सबपदार्थ जगत्में पृथ

क २ होहैं क्योंकि ... टिक पदार्थोंके पृथक् २ चिन्ह देखपड़ते
हैं इससे सर्वस्त ... होहैं एकनहीं उत्तर नास्तिकका और क
भावान्निष्पत्तेः १६ ... हबात आपकीअयुक्त है क्योंकि घड़ेमें
गंधादिक गुण ... व दिक घड़े के अवयव भी अनेक प-
दार्थों में एक पद ... लक्षण देख पड़ता है इससे स्वपदार्थ पृ
थक् २ हैं ऐसा ... रा आपका व्यर्थहै अष्टवां नास्तिकका
मतयह है कि स ... ाव सिद्धिरितराभावसिद्धेः २० गो० या-
वत् जगतहै सो ... होहै क्योंकि घड़ेमें वस्त्रकाअभाव और
वस्त्रमें घड़ेका ... गायमें घोड़ेका और घोड़ेमें गायकाअ-
भावहै इससे सब ... उत्तर नस्वभावसिद्धं भावानाम् २१ -
गो० सबअभा ... क्योंकि अपनेमें अपना अभाव कभीनहीं
होता जैसे घ ... और घोड़ेमें घोड़ेका अभाव नहीं होता
है और जो अ ... तो उसकीप्राप्ति और उससे व्यवहार सि-
द्धभी नहींहो ... सबअभावहै ऐसाजोकहना सो व्यर्थ है क्यों-
आपहीअ ... हर आपकहते और सुनतेहो सो कैसेबन
सो कभी ... ऐसे २ वादविवाद मिथ्याजेकर्त्ते हैं वेना-
ह गिनत ... ानसंप्रदायमें अथवा किसीसंप्रदायमेंऐसा-
वाला ए ... तको नास्तिकहीजानलेनाजैनलोगोंमेंप्रा-
सम्प्रका ... सबमिथ्या ... सज्जनोंको जाननाचाहिये य
ानको ... ैं अको पकड़ै यहबातमिथ्याहैतथा संसारमें
ाजोहै ... अरहै यहभीबात उनकोमिथ्याहैक्योंकिमनु-
यापर ... ीसकताहै धर्मकोबड़ानसमझनाऔरअधर्म-
कामर्व ... समझनायहभीउ ...कीबातमिथ्याहैइत्यादिक
तउन ... ्या २कल्पनाहैउनकोसज्जनलोगकभीनमानें

... ानन्दसरस्वतीस्वामिकृतेसत्या ... भाषाविरचिते द्वादशःसमुल्लासः

१२ ॥

गुरु विरजानन्द ...
... पुस्तकालय
पु परिग्रह ... 502

इति